{ संपादकीय }

नई दिल्ली, सोमवार 16 सितम्बर 2024

संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

केजरीवाल के इस्तीफे के निहितार्थ

कथित शराब घोटाले के आरोप में 177 दिनों तक तिहाड़ जेल में रहने के बाद 13 सितंबर को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल को जमानत मिली। रविवार को श्री केजरीवाल ने अगले दो दिनों के भीतर अपने पद से त्यागपत्र देने का ऐलान कर दिया है। यह स्पष्ट करते हुए कि उनके साथी मनीष सिसोदिया भी इस पद पर नहीं बैठेंगे जो इसी आरोप में जेल में ही लम्बा समय बिताकर जमानत पर छूटे हैं। रविवार को पार्टी सहयोगियों के साथ आयोजित एक बैठक में इस्तीफे के फैसले साथ ही उन्होंने बतलाया कि अगला मुख्यमंत्री उनके इस्तीफा देने के दो-तीन दिनों के बाद चुन लिया जायेगा। उन्होंने सरकार से यह मांग की कि दिल्ली विधानसभा के चुनाव भी महाराष्ट्र के साथ नवम्बर में करा लिये जायें जो कि वैसे अगले साल की फरवरी में किये जाने की सम्भावना है। यह अलग बात है कि केन्द्रीय चुनाव आयोग आप की इस मांग को शायद ही माने। संभावना है कि भारतीय जनता पार्टी की सुविधा के अनुसार ही दिल्ली के चुनाव होंगे। माना यह जा रहा है कि केजरीवाल ने इसलिये इस्तीफा दिया क्योंकि काम-काज के लिये कोई गुंजाइश ही नहीं रह गयी है। न तो वे सचिवालय जा सकते हैं और न ही किसी फाइल पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। उन्हें सुप्रीम कोर्ट ने जमानत देते हुए इतनी तरह की शर्तें लगा दी हैं कि वे शायद ही कोई काम कर सकें। दिल्ली चुनाव के पहले सरकार को अनेक तरह के काम पूरे करने हैं। ज़रूरी है कि ऐसा मुख्यमंत्री हो जिसके पास तमाम अधिकार हों।

अरविंद केजरीवाल के इस फैसले के तुरंत बाद भाजपा ने उन पर हमला बोलना शुरु कर दिया है। कोई सवाल उठा रहा है कि पहले इस्तीफा क्यों नहीं दिया, तो कोई आरोप लगा रहा है कि यह अपने जुर्म को स्वीकार करने जैसा है। भाजपा की तरफ से एक नेता ने ये दावा तक किया कि अरविंद केजरीवाल अपनी पत्नी सुनीता केजरीवाल को मुख्यमंत्री बना कर अपनी मर्जी का शासन चला सकते हैं। हालांकि अभी किसी को नहीं पता कि दो दिन बाद मुख्यमंत्री के चेहरे के तौर पर किसे सामने किया जाएगा। जहां तक भाजपा के हमलों का सवाल है, तो यह जाहिर हो गया है कि भाजपा अरविंद केजरीवाल के इस कदम का अनुमान लगा ही नहीं पाई थी। उसके लिए यह अप्रत्याशित फैसला था और वह इसके लिए तैयार नहीं थी।

बहरहाल, यह फैसला ऐसे वक्त पर लिया गया है जब हरियाणा के चुनाव अक्टूबर के पहले हफ्ते में होने जा रहे हैं जिसमें लगभग सभी 90 सीटों पर आम आदमी पार्टी ने अपने प्रत्याशियों के नामों का ऐलान कर दिया है। वैसे राहुल गांधी ने बड़ी कोशिश की थी कि हरियाणा में कांग्रेस और आप मिलकर चुनाव लड़ें। इसे लेकर कांग्रेस और आप में प्रारंभिक चर्चा भी हुई, लेकिन आप ने स्वतंत्र रूप से लड़ना मुनासिब समझा। यह लगभग वैसा ही है जैसा लोकसभा चुनाव आप ने दिल्ली में कांग्रेस के साथ मिलकर लड़ा लेकिन पंजाब में दोनों दल आमने-सामने थे। हालांकि आप और कांग्रेस के अलग-अलग लड़ने से लाभ मिलने की गुंजाइश भाजपा के लिए बढ़ जाती है, इस तथ्य पर आप नेता विचार करेंगे ही। इंडिया गठबन्धन का हिस्सा बने रहने का दावा आप करती है और कई मौकों पर कांग्रेस ने उसे मदद भी की। हरियाणा के चुनावों में भी वह अपने नेताओं की टिकटें काटकर आप को सम्मानजनक संख्या में सीटें देने वाली थी। इसके पहले कि सीटों का बंटवारा हो, आप ने सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े कर दिए। जिससे जनता के बीच सही संदेश नहीं गया। मुमकिन है चुनाव बाद आप और कांग्रेस एक साथ हो जाएं, ताकि किसी भी तरह भाजपा को सत्ता में आने से रोकें। पिछले चुनावों में भी भाजपा को पूर्ण बहुमत नहीं मिला था, लेकिन जजपा के सहयोग से उसने सरकार बना ली थी। हालांकि तब कांग्रेस को साथ देने की स्थिति में आप नहीं थी। वैसे अब यह दावे भी हो रहे हैं कि अरविंद केजरीवाल को जेल से इसलिये जमानत मिली है ताकि वे हरियाणा में दमखम से चुनाव लड़ें और भाजपा विरोधी वोटों को बांट सकें।

लेकिन यह बात याद रखी जानी चाहिए कि जब केजरीवाल को गिरफ्तार किया गया था, उसके बाद दिल्ली के रामलीला मैदान में इंडिया की बड़ी रैली में आप के साथ कांग्रेस के लोग भी थे। पूरी कांग्रेस और इंडिया गठबंधन के दल तब केजरीवाल की पत्नी सुनीता के साथ वैसी ही खड़ी थी, जिस प्रकार से वह झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना के साथ थी। गौरतलब बात यह भी है कि केजरीवाल का मुकदमा कांग्रेस सांसद अभिषेक मनु सिंघवी ने सुप्रीम कोर्ट में लड़कर उन्हें जमानत दिलाई है। यह अलग बात है कि जेल से छूटने के बाद उन्होंने अपना जो पहला भाषण दिया उसमें उन्होंने न तो सिंघवी को धन्यवाद दिया, न ही न्यायपालिका का आभार माना, उन्होंने ऐलान किया कि 'उन्हें भगवान के आशीर्वाद से जमानत मिली है क्योंकि वे सच्चे व ईमानदार हैं।'

यह साफ बतलाता है कि केजरीवाल की राजनीति या रणनीति में कोई खास बदलाव नहीं आया है। वे इंडिया गठबन्धन का हिस्सा रहते हुए हरियाणा के महत्वपूर्ण चुनाव में सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े कर चुके हैं. उससे यही संकेत मिलता है कि वे गठबन्धन का हिस्सा उतना ही रहेंगे जितने में उन्हें फायदा हो। कहा यही जा रहा है कि आप और कांग्रेस का गठबंधन लोकसभा के लिए ही है, विधानसभा के लिए नहीं। जहां तक श्री केजरीवाल के इस्तीफे की बात है, तो जानकारों का मानना है कि अब वे हरियाणा चुनाव में अपने आप को पूरी तरह से झोंक सकेंगे और उन्हें सहानुभूति भी मिलेगी। अब देखना है कि अरविंद केजरीवाल के इस्तीफे से हरियाणा चुनाव में क्या समीकरण बदल पाते हैं, और एक अन्य दिलचस्प सवाल यह है कि क्या भाजपा का दिल्ली की सत्ता में लौटने का ख्वाब एक बार फिर अरविंद केजरीवाल नष्ट कर देंगे, क्योंकि इस इस्तीफे का सबसे अधिक असर तो आखिर में दिल्ली चुनाव में ही पड़ना है, जहां भाजपा लंबे अर्से से सत्ता से बाहर ही है।

पुतिन के सामने डोभाल का झुका हुआ सिर भारत का अपमान है!

जिन्दगी का एक सिद्धांत है। जो भी चीज आप दूसरे पर लागू करोगे वह एक दिन आप पर ही हमला करेगी। यूपीए सरकार के समय भाजपा और मीडिया ने एक शब्द का ईजाद किया था। बाडी लेंग्वेज! 2012-13 में इस शब्द के जरिए ये रोज डां. मनमोहन सिंह सोनिया गांधी शीला दीक्षित और अन्य कांग्रेसी नेताओं का पोस्टमार्टम करते रहते थे। उन्हें अपराधी, भ्रष्टाचारी, डरे हुए और जाने क्या-क्या बनाते रहते थे। शक्ल देखकर।

आज वही बाडी लेंग्वेज अपने असली रूप में विश्व फलक पर सामने आ गई। दुर्भाग्य से इन लोगों ने उसे देश की छवि के रूप में रख दिया। गलत छवि। जो कभी नहीं थी। कमजोर छवि। माफ़ी मांगने की मुद्रा!

जैसे प्रधानमंत्री मोदी ने सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस चन्द्रचूड़ के घर पर खुद के द्वारा की जा रही पूजा की फोटो ट्विट करके चीफ जस्टिस को जवाब देने लायक भी नहीं छोड़ा वैसे ही रूस ने अपने राष्ट्रपति के सामने सिर झुकाए सफाइयां दे रहे भारत के सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल का वीडियो जारी करके भारत की इतने सालों की कमाई अन्तरराष्ट्रीय सम्मान पर एक झटके से गहरा दाग लगा दिया।

भारत जिसके बारे में यह केवल बढ़-बढ़कर बातें करते हैं मदर आफ डेमोक्रेसी, विश्व गुरु, युद्ध रुकवा दिया और केवल रूस-यूक्रेन ही नहीं इजराइल और फिलिस्तीन के युद्ध के लिए भी ऐसा ही दावा किया था। खुद प्रधानमंत्री ने ही कहा कि रमजान में हमने इजराइल से कह दिया कि हमले नहीं होना चाहिए। वह भारत, रूस के राष्ट्रपति पुतिन के पास अपने सुरक्षा सलाहकार को भेज कर कह रहा है कि वैसे तो खुद प्रधानमंत्री मोदी आकर सफाई देना चाहते थे। मगर अभी उन्होंने मुझे भेजा है कि मैं आपको बता सकूं कि यूक्रेन के राष्ट्रपति के साथ मुलाकात में दो लोग उनके साथ और एक मैं अपने प्रधानमंत्री के साथ था। इससे पहले पुतिन मोदी से फोन पर सफाई ले चुके थे। डोभाल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने आपको फोन पर बताया और खुद आकर भी बताएंगे।

क्या है यह? क्या भारत कभी इतना कमजोर था? एक देश से हुई बात को दूसरे देश को बता रहा है! मोहल्ले और गांव के झगड़ों की तरह। एक दबंग से कह रहा है नहीं-नहीं हम उससे इसलिए नहीं मिले थे। यह नहीं कहा था। यह बात नहीं हुई!

और वीडियो में पुतिन का स्टाइल देखिए! कैसे हेडमास्टर की तरह बैठे हुए हैं और डोभाल के बारे में आप खुद फैसला कीजिए कि किस तरह एक डरा और सहमा बच्चा बैठा हुआ है। यह अविभाजित सोवियत रूस नहीं है। यह दुनिया का ठेकेदार बनने वाला अमेरिका भी नहीं है। एक कमजोर युद्ध में उलझा हुआ देश है। रूस अब पहले की तरह महाशक्ति नहीं है। दुनिया का दूसरा ध्रुव।

और जब थे। दोनों महाशक्ति अमेरिका और सोवियत रूस तब इन्दिरा गांधी जिन पर अभी शनिवार को ही हरियाणा में फिर कीचड़ उछालकर आए हैं, उन्होंने कभी भारत की सम्प्रभुता सम्मान से समझौता नहीं किया। सवाल ही नहीं उल्टा, अमेरिका को चुनौती दी। खूब खरी-खोटी सुनाई। यहां तक कहा 1971 में। कहा- सातवां बेड़ा नहीं, आठवां भी भेज दो पाकिस्तान अब दो टुकड़े होकर ही रहेगा।

शकील अख्तर

> भारत में कई प्रधानमंत्री हुए हैं। देश को लेकर उनकी नीतियों की यहां खूब चर्चाएं और हिसाब हुए हैं। मगर कमजोर से कमजोर प्रधानमंत्री ने भी कभी भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार को किसी विदेशी राष्ट्रप्रमुख के सामने सिर झुकाकर सफाइयां देने नहीं भेजा। कोई छोटा राष्ट्र भी ऐसा नहीं करता है। किसी भी देश के लिए उसकी संप्रभुता सबसे बड़ी चीज होती है।

विदेश विभाग में तो परंपराएं, इतिहास, रिकार्ड चलता है ना! जयशंकर तो फॉरेन सर्विसेस के आफिसर रहे हैं। विदेश सचिव के स्तर तक। अब मोदी के विदेश मंत्री हैं। उन्हीं से बुलाकर पूछ लें कि इन्दिरा गांधी ने अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन को कैसी खरी-खरी सुनाई थीं। और यह भी पूछ लें कि सोवियत रूस से कैसे अपनी शर्तों पर बीस साला मैत्री संधि की थी। बता दें कि जयशंकर दोनों जगह मास्को और वाशिंगटन तैनात रहे हैं। भारत के रुआब से वाकिफ।

दस साल सरकार चलाते हो गए। मगर अपनी कोई बात बताने के बदले अभी भी नेहरू, इन्दिरा, राजीव गांधी को कोस रहे हैं। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां दस साल से उनकी सरकार है। केन्द्र में तो इससे कुछ महीने ज्यादा की है। तो वहां चुनाव प्रचार करने गए तो बताना चाहिए था दोनों जगह दस-दस साल सरकार होने से जनता को क्या क्या मिला? मगर बताने को कुछ है नहीं। तो नेहरू, इन्दिरा कांग्रेस को गालियां। हरियाणा की जनता इस बार बता देगी कि उसे बेवकूफ समझने का क्या परिणाम होता है। वैसे भी कुरुक्षेत्र जहां प्रधानमंत्री गए थे लोग उन्हें सुनने बहुत कम आए। प्रधानमंत्री के लिए प्रथम ग्रासे मक्षिका पात हो गया। लोकसभा चुनाव के बाद पहली चुनावी रैली में लोग ही नदारद थे। जो भीड़ मोदी की लोकप्रियता का पैमाना हुआ करती थीं। वह न कुरुक्षेत्र में थी और न जम्मू कश्मीर के डोडा में।

खैर भारत में कई प्रधानमंत्री हुए हैं। देश को लेकर उनकी नीतियों की यहां खूब चर्चाएं और हिसाब हुए हैं। मगर कमजोर से कमजोर प्रधानमंत्री ने भी कभी भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार को किसी विदेशी राष्ट्र प्रमुख के सामने सिर झुकाकर सफाइयां देने नहीं भेजा। कोई छोटा राष्ट्र भी ऐसा नहीं करता है। किसी भी देश के लिए उसकी संप्रभुता सबसे बड़ी चीज होती है।

नेहरू की विदेश नीति तक पर सवाल खड़ा करते हैं। उनके आज तक प्रासंगिक गुट निरपेक्ष आंदोलन का मजाक उड़ाते हैं और खुद विश्व गुरु होने के हसीन सपने में रुस और यूक्रेन दोनों जगह पहुंचकर गले मिलने, कंधे पर हाथ रखने, पीठ पर हाथ मारने जैसे कैमरे के लिए पोज देते हैं वह बैक फायर कर देता है। विदेश नीति कोई देश में भक्तों को, मीडिया को बेवकूफ बनाने जैसी नहीं होती है। सारे विदेश विभाग के अफसर जानते हैं। कभी-कभी बोल भी देते हैं।

जैसे विदेश विभाग के प्रवक्ता ने कहा था रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भाजपा अध्यक्ष नड्डा और खुद प्रधानमंत्री के कहने के बाद कि नहीं रुस यूक्रेन युद्ध रुकवाने के दावे निराधार हैं। ऐसा कुछ नहीं हुआ था।

वह तो शुक्र है रुस की न्यूज एजेन्सी स्पूतनिक ने डोभाल के वीडियो का थोड़ा सा हिस्सा ही डाला। रूस पुराना दोस्त है हमारा। नेहरू-इन्दिरा का सम्मान करने वाला। जानता है कि किसी एक व्यक्ति के विश्व गुरु बनने के दावों की सज़ा पूरे देश को और उस देश के अन्तरराष्ट्रीय सम्मान को नहीं दी जा सकती।

हालांकि वीडियो का इतना हिस्सा डालना भी अच्छी बात नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी को कड़ा विरोध करना चाहिए था। मगर क्या उन्होंने किया? नहीं! वीडियो के आने के बाद वे नेहरू, इन्दिरा, राजीव, राहुल, कांग्रेस का विरोध करने हरियाणा और जम्मू-कश्मीर पहुंच गए। सारे आरोप लगा दिए। अरबन नक्सल, आरक्षण विरोधी, वंशवाद कोई तोहमत नहीं छोड़ी और फिर वही बात कही कि जब तक मैं हूं, यह नहीं होने दूंगा। कभी नहीं कहते भाजपा नहीं होने देगी। सब कुछ वे ही हैं। मोदी का परिवार, मोदी की गारंटी, मोदी सरकार। भाजपा कहीं नहीं।

इसलिए उनकी हुकूमत कायम है और भाजपा 303 से 240 पर आ गई। भाजपा समझ रही है। बाकी लोगों की तरह वह भी डरी हुई है तो कुछ नहीं बोल रही। मगर मोदी मोदी मोदी! भगवान ने सीधा मुझे भेजा है। मां की कोख से जन्म नहीं हुआ जैसे दावों पर आरएसएस प्रमुख भागवत भी तंज कर चुके हैं। कहा कि दुनिया कहे कि आप अवतार हैं तो समझ में आता है मगर खुद कहो कि मैं नान बायलोजिकल (शरीर से पैदा न होना) हूं तो यह अस्वीकार्य है।

भाजपा आरएसएस सब समझते हैं कि इन बड़े-बड़े दावों का परिणाम क्या होता है? एक झांकी अभी रूस ने दिखाई। अगर नहीं संभले तो फिर कांग्रेस और जनता तो जो करेगी वह करेगी ही खुद बीजेपी आरएसएस भी चुप नहीं बैठेंगे। हरियाणा, जम्मू-कश्मीर का रिजल्ट आने दीजिए!

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

सरदार सरोवर नर्मदा में मनमानी

सरदार सरोवर, नर्मदा घाटी में नियोजित 30 बड़े बांधों में से एक महाकाय बांध! इस पर विस्थापितों ने पहाड़ी- निमाड़ी और तीन राज्यों के आदिवासी, किसान, मजदूर, कारीगर, पशुपालक, मछुआरे, व्यापारी...सभी ने गठित की एकजुटता से, अपने अधिकार, कानूनी और संवैधानिक उल्लंघन आदि पर 39 सालों से किया संघर्ष आज भी जारी है! ट्रिब्यूनल के फैसले पर 45 साल बाद जब पुनर्विचार होने जा रहा है, तो उससे भी पहले देश और प्रदेश की जनता ने जाननी चाहिए हकीकत, लाभ-हानि की; ताकि सोच हो, भविष्य की!

सरदार सरोवर बांध परियोजना की लाभ हानि का टाटा की कंपनी से (टीईसीएस) जल्दबाजी में विश्व बैंक से कर्जा उठाने के लिए, कई बुनियादी डाटा उपलब्ध न होते हुए, अध्ययन करवाया गया था। तब 1983 में 4200 करोड़ रुपए की लागत आंकी थी। जबकि 6400 करोड़ रुपए की लागत को योजना आयोग की मंजूरी 1988 में मिली थी। अब गुजरात विधानसभा में प्रस्तुत हुआ है कि उस परियोजना की लागत 90,000 करोड़ रुपए तक बढ़ी है। इस परिप्रेक्ष्य में आज भी मध्यप्रदेश और गुजरात तथा महाराष्ट्र और गुजरात के बीच कई वित्तीय मुद्दों पर विवाद जारी है। सबसे गंभीर हकीकत है कि गुजरात शासन कई सारे नये प्रस्ताव रखकर मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र से बड़ी राशि वसूलना चाहती है।

मध्यप्रदेश की सरदार सरोवर की डूब में आई शासकीय भूमि और वनभूमि (जैसे, महाराष्ट्र की भी) की भरपाई की राशि करीबन 7000 करोड़ होते हुए, उसकी भी पूर्ति आज तक नहीं हुई है, जो परियोजना का हिस्सा और गुजरात का कानूनी फर्ज है! सरदार सरोवर में 192 गांव और 1 नगर को डूब में लाकर भी जलाशय के एक बूंद पर म.प्र. को नहीं है हक! तो इस महाकाय परियोजना से क्या हुआ है लाभ? कितनी भुगती है हानि राज्य ने? इस पर होगा कोई विचार या पुनर्विचार? यह दिसंबर 2024 के पहले (45 साल पूर्ति होने पर ट्रिब्यूनल फैसले पर ही पुनर्विचार जबकि नियोजित है, तो उसके पहले) होगा या नहीं, यह अहम् सवाल है!

मेधा पाटकर

> मोरारजी देसाई जब प्रधानमंत्री बने, तभी 10 साल बाद नर्मदा ट्रिब्यूनल का फैसला आया! सबसे अधिक बांध के- जलाशय के पानी पर अधिकार मिला, कच्छ- सौराष्ट्र जैसे सूखाग्रस्त क्षेत्रों के नाम, गुजरात को ! प्रत्यक्ष में कच्छ तरस रहा, वहां पहुंची शाखा नहर से आगे माइनर नेटवर्क का निर्माण न होने से रापार जैसे एकाध तहसील के कुछ किसान छोड़कर अन्यों को नहीं मिली सिंचाई आज तक! पीने का पानी भी बेचा जाता है तो कच्छ की बहुतांश ग्राम पंचायतें नहीं खरीदती है।

महाराष्ट्र राज्य ने एक अवैध कार्य किया है। राज्य का विरोध नकारकर, गुजरात के दबाव- प्रभाव में ट्रिब्यूनल ने दिया मात्र 0.25 एमएएफ याने 11 टीएमसी का पानी, जो महाराष्ट्र को खुद के ही नर्मदा क्षेत्र में उपयोग में लाना था। लेकिन 2015 में उसमें से आधा याने 5.5 टीएमसी पानी नर्मदा में बहां कर गुजरात को देना तय किया और महाराष्ट्र के अधिकारियों के हस्ताक्षर से एक अनुबंध हुआ, जो नर्मदा ट्रिब्यूनल फैसला याने कानून का सरासर उल्लंघन है! इसके बदले उकई बांध (गुजरात) का पानी लेकर पुनर्बसाहटों को देने की घोषणा भी फिजूल है। उर्वरित पानी भी राज्य शासन, नर्मदा की 7 उपनदियों पर 7 बांध बनाकर सतपुड़ा में बड़े टनेल द्वारा तापी की घाटी में ही परिवर्तित करने की योजना आगे धकेल रही है, जो नर्मदा घाटी के 300+ आदिवासी गांवों पर डूब क्षेत्र के बचे फलियों के आदिवासियों पर भी वंचना से अत्याचार ही होगा। बड़े टनेल से सतपुड़ा भी धंसने लगेगा। सभी ग्रामसभाओं का विरोध 'पेसा' कानून के तहत शासन को आदेश है। यह एक नदी घाटी से दूसरी घाटी में पानी का वितरण है, जो कार्य आंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अब नामंजूर होता गया है।

मोरारजी देसाई जब प्रधानमंत्री बने, तभी 10 साल बाद नर्मदा ट्रिब्यूनल का फैसला आया! सबसे अधिक बांध के- जलाशय के पानी पर अधिकार मिला, कच्छ-सौराष्ट्र जैसे सूखाग्रस्त क्षेत्रों के नाम, गुजरात को ! प्रत्यक्ष में कच्छ तरस रहा, वहां पहुंची शाखा नहर से आगे माइनर नेटवर्क का निर्माण न होने से रापार जैसे एकाध तहसील के कुछ किसान छोड़कर अन्यों को नहीं मिली सिंचाई आज तक! पीने का पानी भी बेचा जाता है तो कच्छ की बहुतांश ग्राम पंचायतें नहीं खरीदती है। कच्छ में पानी जाने से हम आंदोलनकारियों ने रोका, यह तो चुनावी प्रचार था ही; लेकिन हकीकत भी साबित करती है, कि सालों से कच्छ में अदानी बंदरगाह, ताप विद्युत परियोजना, जिंदल स्टील जैसी कंपनियों को मिला और कुछ शहरों को भी! सौराष्ट्र में भी छोटी नहरों की टूट-फूट जैसी समस्याएं और मुख्य नहर से निजी पंप द्वारा पानी लेने की खर्चिक नौबत से किसान परेशान है। महाराष्ट्र, गुजरात के पीढ़ियों पुराने आदिवासी, पहाड़ी जंगल और मध्यप्रदेश के सबसे अधिक पहाड़ी- निमाड़ी गांव डूबोकर, कच्छ तक पहुंचे पानी में से कुछ लाख लिटर्स पानी व्यर्थ बहाया जा रहा है, कच्छ की ही रणभूमि में... जहां अगरिया समाज की नमक उत्पादन की आजीविका बर्बाद हो रही है; जिनकी महिलाएं रो पड़ी थीं, हमें मिलने पर! क्या कहें? हंसे या रोए?

गुजरात के नीचेवास में, 151 किलोमीटर तक फैले, नर्मदा, भरूच, बड़ौदा, इन तीन जिलों के गांवों के मछुआरे, आदिवासी, किसान और नगरवासी भी काफी भुगत रहे हैं।

सरदार सरोवर के पर्यावरणीय असर के मुद्दों में अरबी समंदर का 2013 से नर्मदा में 60 किलोमीटर तक घूसना याने 'सी इंग्रेस' की चर्चा नहीं के बराबर है। इससे नर्मदा का पानी और भूजल में भी खारापन आया है, जो गुजरात के गांव, शहर के निवासियों पर, खेती और मत्स्य व्यवसाय पर आघात है। राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण के 2022 के फैसले बाद, सर्वोच्च न्यायालय के भी 4 मार्च 2024 के, नर्मदा में जल परिवहन से पर्यटन के विरोधी फैसले के बावजूद 'क्रूज़' चलाने की अवैध प्रक्रिया और कार्य आज भी जारी है!

'नर्मदा घाटी विकास' के तहत आगे धकेलती योजनाओं का भविष्य इसके साथ देखना होगा। इसी माह में घोषित म.प्र. के नर्मदा घाटी विकास विभाग के बजट का ऊपरी क्षेत्र के बांध और लिंक परियोजनाओं पर आबंटित हिस्सा, जो 5700 करोड़ में से 4700 करोड़ है। इसमें 1970 के दशक में बने बर्गी परियोजना के नहरों के लिए आबंटन सही है; लेकिन पूर्व में बनी नहरे दशकों तक सूखी रही क्यों? बर्गी से लेकर ओंकारेश्वर और इंदिरा सागर तक के बांधों से प्रभावितों के उर्वरित पुनर्वास कार्य पर ध्यान नहीं? आधे अधूरे कार्यों की पूर्ति से भी अधिक प्राथमिकता अन्य बांध और नदी जोड़ परियोजनाओं को (जिसमें बड़ी मात्रा में नर्मदा या जलाशयों से उद्वहन की योजनाएं हैं) देना क्यों हो रहा है? 1979 में पारित नर्मदा ट्रिब्यूनल फैसले पर, 45 साल पूर्ति के बाद याने दिसंबर 2024 के बाद पुनर्विचार होगा, तो मध्यप्रदेश के अपने ही जलग्रहण क्षेत्र के 18.25 एमएएफ पानी पर दिया अधिकार वापस खींचा न जाए, इसलिए! लेकिन सवाल यही है कि बसानिया, राघवपुर जैसे बांधों को, पर्यावरणीय अध्ययन सह मंजूरी न मिलते, प्रशासकीय मान्यता से बढ़ाएंगे? क्या इनसे विस्थापित और प्रभावित होने वाले आदिवासी और अन्य किसानों, मजदूरों के लिए, 2002 की मध्यप्रदेश की पुनर्वास नीति के तहत, पुनर्वास योजना तैयार है?

नर्मदा घाटी के 30 बड़े और 135 मझौले बांधों के अलावा 3000 छोटे बांध भी थे मूल नर्मदा घाटी विकास योजना में। छोटे बांधों पर कितना रखा गया भरोसा? क्या उन्हें दी प्राथमिकता? जलग्रहण की छोटी इकाइयों का विकास क्यों नहीं बना आधार, जल- जंगल- जमीन बचाकर प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग का? आजतक जो बने हैं बांध, बर्गी से सरदार सरोवर तक, उनमें से एकेक की विशेष कहानी है, जो यहां बयां करना नामुमकिन है... फिर भी नर्मदा घाटी की, बड़े बांधों से लेकर बैराज, लिंक सहित सभी परियोजनाओं का 'एकत्रित असर' का अध्ययन जरूरी है। अमेरिका के पदचिन्हों पर कदम बढ़ाये हमारे देश ने! टेनेसी नदी घाटी योजना की नकल की गई दामोदर घाटी योजना बनाकर, जो आज भी अधूरी ही क्या, विवादग्रस्त भी है। भाखड़ा नांगल को भी पहले 'आधुनिक मंदिर' कहने वाले पंडित नेहरू जी ने ऐसे बांधों को 'भव्यता की बीमारी' बताकर नकारा! अमेरिका ने ही 1994 से बड़े बांधों के निर्माण पर रोक लगा दी, और आजतक तो 1951 बांधों को निरस्त किया, जबकि यूरोप खंड के देशों ने कुल 4000 बांधों को निरस्त किया! क्या नर्मदा ही नहीं, हर नदी घाटी की और भारत की जनता यह जानती है? इसके लिए 'नदी घाटी' एक इकाई मानकर अध्ययन ही आधार बने, यह जानने के लिए कि आज तक बने बड़े बांध, बड़े उद्वहन... सभी से क्या खोया है और क्या पाया है?

इस परिप्रेक्ष्य को संवेदना के साथ देखें और जाने! सही विकास, विस्थापन, विनाश और बीभत्स विषमता के बिना, निरंतर और न्यायपूर्ण हो, इसके प्रति हम समर्पित हैं।

आपके पत्र

आर्थिक तंत्र पर बोझ बनती प्राकृतिक विपदाएं

आपदा सदैव अनअपेक्षित घटना होती है। जो मानवीय नियंत्रण से सदैव से बाहर होती है। प्राकृतिक आपदा अल्प समय में बिना किसी पूर्व सूचना के घटित होती है, जिससे मानव जीवन के सारे क्रियाकलाप अवरुद्ध हो कर,जान और माल की बड़ी हानि होती है। आर्थिक तंत्र, विकास नष्ट हो जाते हैं। आपदा की विद्रूपता, भयानक स्वरूप एवं निरंतरता मानव जीवन और समाज और देश को बड़ी हानि पहुंचा कर उस देश की आर्थिक स्थिति में गहरी चोट करते हैं राष्ट्र को आर्थिक रूप से बहुत पीछे खींच कर ले जातें हैं।

जापान पृथ्वी के ऐसे क्षेत्र में अवस्थित है, जहां भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाएं सदैव आती रहती हैं। जापान में आपदा प्रबंधन की अत्याधुनिक तकनीक को याकोहामा रणनीति कहा जाता है। जापान में आपदा प्रबंधन की साल भर नियमित रूप से मॉनिटरिंग कर एक्सरसाइज की जाती रहती है, एवं आपदाओं पर निरंतर नजर रखी जाती है,एवं इसके निदान के लिए पूर्व से ही सुनियोजित योजना बनाकर नागरिकों को सुरक्षित कर लिया जाता है। जापान आपदा प्रबंधन में विश्व में अग्रणी देश माना जाता है। भारत को भी इसी तरह की आपदा प्रबंधन को अपनाकर अन्य आपदाओं के साथ सतर्क होकर कार्रवाई की जानी चाहिए।

आपदाओं के प्रति मानवीय सभ्यता के संदर्भ में समाज के आर्थिक सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग को ज्यादा प्रभावित करती है एवं समाज का सबसे संवेदनशील तबका यानि वृद्ध व्यक्ति, महिलाएं, बच्चों, दिव्यांग लोगों को प्राकृतिक आपदाओं से सबसे ज्यादा खतरा बना रहता है। आपदा के समय सबसे ज्यादा निम्न आय वर्ग तथा मजदूर तबके के व्यक्ति प्रभावित होतें हैं। उनकी दिनचर्या सामूहिक रूप से छिन्न-भिन्न हो जाती है। आर्थिक साधन भी नष्ट हो जाते हैं, जिससे उसे आजीविका की एक बड़ी विडंबना सताने लगती है।

भारत के भू भाग का लगभग 58प्रतिशत क्षेत्र भूकंप की संभावना वाला क्षेत्र है, जिसमें हिमालयिन क्षेत्र,पूर्वोत्तर राज्य, गुजरात का कुछ क्षेत्र, अंडमान निकोबार द्वीप समूह भूकंप की दृष्टि से सबसे सक्रिय क्षेत्र रहे हैं। देश के 65 से 68प्रतिशत भूभाग पर कभी कम कभी ज्यादा भीषण रूप से सूखा पड़ता है, इसी तरह भारत के पश्चिमी और प्रायद्वीपीय राज्य में मुख्यत: शुष्क तथा अर्ध शुष्क न्यून नमी वाले क्षेत्र सूखे से सदैव प्रभावित रहते हैं। बाढ़ से प्रभावित भूमि का विस्तार क्षेत्र देश के 12प्रतिशत है, यानि 7 करोड़ हेक्टेयर जमीन में भूकंप आने की संभावना सदैव बनी रहती है। हिमालय क्षेत्र देश के पर्वतीय क्षेत्र में भूस्खलन की गंभीर समस्या की संभावना सदैव बनी रहती है। देश के विशाल तटवर्ती क्षेत्र में चक्रवात तथा सुनामी की भयावह स्थिति की संभावना रहती है। भारत ने विश्व के साथ-साथ कोरोना संक्रमण की भयानक महामारी से प्रभावित होकर हजारों लाखों नागरिकों की जान गंवा कर इस आपदा से जंग लड़ी है, यह कोविड-19 की महामारी या आपदा प्राकृतिक है या मानव निर्मित यह तो भविष्य ही बताएगा, किंतु इस महामारी ने पूरे वैश्विक स्तर पर आकस्मिक रूप से मानव जीवन में मृत्यु का तांडव मचा के रख दिया था। ऐसी ही अनपेक्षित आपदाओं का पूर्वानुमान अथवा आकलन किया जाना पहले से संभव नहीं हो सकता है।

संजीव ठाकुर

ललित सुरजन की कलम से

हिंदी :विसंगतियां व विडंबनाएं

'हिन्दी भाषी प्रदेशों में प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर हिन्दी की जो स्थिति देखते हैं, निराशा से मन वहीं घिर जाता है। प्राथमिक शिक्षा पर %असर% नामक जो वार्षिक रिपोर्ट आती है उसमें सरकारी स्कूलों की बात होती है, गणित की कमजोरी का उल्लेख होता है; लेकिन जिस भाषा में सारा जीवन व्यवहार होना है, उसकी तरफ कोई तवज्जो नहीं दी जाती। एक ओर जहां पहली कक्षा से अंग्रेजी पढ़ाने की योजनाएं चल रही हैं वहीं मातृभाषा या राष्ट्रभाषा के प्रति बेरुखी पर क्यों नहीं चिंता होना चाहिए?

उच्च शिक्षा में तो हाल बेहाल हैं। अधिकतर विद्यार्थी हिन्दी में एम.ए. इसलिए करते हैं कि उन्हें यह विषय स्नातकोत्तर उपाधि पाने का सबसे सरल उपाय लगता है। विषय में उनकी रुचि अक्सर नहीं होती और उपाधिधारी अनेक व्यक्ति हिन्दी में खुद को भलीभांति अभिव्यक्त नहीं कर पाते। एम.ए. ही क्यों, हिन्दी साहित्य में पीएचडी करने वालों की भी रुचि न तो भाषा में होती, न तो साहित्य में। उनके लिए वह नौकरी पा जाने का एक जरिया मात्र है। जब शिक्षा प्राप्ति के दौरान यह स्थिति है तो आगे चलकर क्या होगा इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है। किन्तु हम विद्यार्थियों को ही क्यों दोष दें? हिन्दी का पूरा तंत्र जिनके जिम्मे है वे लोग क्या कर रहे हैं? इसमें हिन्दी अखबार, टीवी चैनल, सरकारी उपक्रमों के राजभाषा विभाग, हिन्दी सेवा के नाम पर चल रही संस्थाएं, विश्व हिन्दी सम्मेलन इत्यादि सब शामिल हैं।'

(देशबन्धु में 13 सितम्बर 2018 को प्रकाशित)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2018/09/blog-post_12.html

गुरवाणी विचार

मांझ मगला 5

बारहा माह से महीना अंसु
असनि प्रेम उमाहड़ा किओ मिलिये हरि आये
मनि तनि पिआस दरसन छणी कोई आण मिलावे माये
संत सहाई प्रेम के हऊं तिनि के लागा पाये
जिनि चाखिआ प्रेम रस से तृप्त रहे आघाये
आप तिआग बिनती करहि लेहु प्रभु लड़ि लाये
जो हरि केत मिलाइआ सि विहुड़ कतहि न जाये
प्रभु विण दूजा को नहीं नानक हरि सरणयें।
असु सुखी वसंदिया जिना मइआ हरि राये।

गुरुवाणी की यह पंक्तियां बारहा माह माझ राग से ली गई है। जो पांचवे नानक मन को समझाइश दे रहे हैं। भादो माह की उमस भरे मौसम के बाद असोंण माह की सुहावनी त्रस्तु में मेरे मन में प्रभु प्रेम का रस हिलोरे ले रहा है और चाह रहा है किस तरह और कैसे प्रभु परमात्मा से मिलाप हो सके। प्रभु सिमरन भजन करने पर ही उससे मिलाप हो सकेगा। इसके लिए हमें ऐसी साध संगत में जाना पड़ेगा जहां हर वक्त प्रभु परमात्मा की कथा कीर्तन का प्रवाह चलता रहता है। कहा भी गया है कि अगर हमें बैकुंठ की तलब है तो वह साध संगत में मिल सकती है। कहा भी गया है- साध संगत बैकुंठे आये।

हमारे अच्छे भाग हों तभी हमारा साध संगत से मिलाप हो पाता है- बिन मांगा सत संग न लगै। बिन संगत मैल भरीजै जीयो।

बिना प्रभु परमात्मा के मिलाप के बिना हमें सुख चैन मिल ही नहीं सकता इसीलिए तो गुरवाणी हमें समझा रही है-

जो सुख को चाहे सदा शरण राम की लेहि।

अगर एक बार हमने प्रभु परमात्मा के स्नेह का रसास्वादन कर लिया तो फिर हम उसका बखान नहीं कर पाएंगे। जैसे एक गूंगा व्यक्ति मिठाई खाकर उसका स्वाद बताने में असमर्थ है वैसे ही हम उस प्रभु के प्यार का बखान नहीं कर पाएगे-

बिन ऐह चाखी सोई जाने जिओं गूंगे की मठिआई।
रतन लुकाये लूके नांही जे को रहे लुकाई।

जिस-जिस जीव को प्रभु परमात्मा के स्वादानंद की प्राप्ति हो जाती है फिर वे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के विचारों से बच जाते हैं। हालांकि इनसे पूर्ण रूप से निजात तो नहीं मिल पाती पर इन पर प्रभु कृपा से काबू पाया जा सकता है फिर तो माया, मोह का स्वाद भूल जाते हैं इसीलिए हमें हर वक्त प्रभु परमात्मा की सिमरन बंदगी में समय बिताना चाहिए-

सांस सांस सिमरो गोविंद मन अंतर की उतरे चिंद।

प्रभु परमात्मा ने कभी यह नहीं कहा है कि कार विहार छोड़ कर प्रभु चिंतन में ही लग जाएं। हमें अपने और अपने परिवार के उदर पोषण हेतु कार विहार भी करना है। सिख धर्म का सिद्धांत ही यही है-

कीरत करो नाम जपो और वंड छको। भक्त त्रिलोचन जी को कुछ इस तरह समझाया गया है- नामा कहे त्रिलोचना मुख ते नाम संभाल।
हाथ पांव से काम सब चित निरंजन नालि।।

इसी बात को गुरुदेव अस्से मांह का उदाहरण देकर समझा रहे हैं कि वे जीव स्त्रियां जो हर वक्त उठते बैठते अपना मन प्रभु परमात्मा की सिमरन भक्ति में लगाये रखती हैं। वे ही प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन सुखी बनाए रखती है पर यह संभव तभी हो सकता है जब प्रभु परमात्मा की उन पर विशेष कृपा दृष्टि हो जाए इसीलिए हमें हर वक्त प्रभु परमात्मा से अरदास करते रहना चाहिए।

तुम करो दया मेरे साईं।
ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुध धिआई।

इंदर सिंह आहुजा

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770
ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

https://t.me/AllNewsPaperPaid

अलविदा येचुरी

असमय निधन

सीताराम येचुरी का असमय निधन माकपा और भारतीय वाम राजनीति को तगड़ा धक्का है। माकपा महासचिव तथा वरिष्ठ वामपंथी विचारक सीताराम येचुरी अब हमारे बीच नहीं हैं। उनकी मृत्यु दिल्ली में लंबी बीमारी के बाद हुई। भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय वामपंथी राजनेता येचुरी ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी–मार्क्सवादी और भारतीय राजनीति में गहरा खाली स्थान छोड़ा है। पार्टी के महासचिव तथा भारतीय वामपंथी आंदोलन के प्रमुख विचारक के रूप में सीताराम येचुरी को माकपा के भीतर वैचारिक विभाजनों के बीच सेतु की भूमिका निभाने की क्षमता के कारण जाना जाता था। वे गुटों में विभाजित पार्टी में एकजुटता पैदा करते थे। उनके नेतृत्व में माकपा ने खासकर अपने मजबूत गढ़ों–पश्चिम बंगाल व केरल में घटती प्रासांगिकता की चुनौतियों से निपटने का प्रयास किया। येचुरी के व्यावहारिक दृष्टिकोण ने मार्क्सवादी कट्टरता तथा आधुनिक राजनीति की आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हुए अक्सर दक्षिणपंथी शक्तियों, खासकर भाजपा पर लगाम लगाने के लिए गैर–वामपंथी पार्टियों से गठबंधनों को प्रोत्साहित किया। महासचिव के रूप में उनका कार्यकाल ऐसे युग में पार्टी को पुनर्जीवित करने के प्रयासों से रेखांकित होता है जब कम्युनिस्ट विचारधाराओं का आकर्षण कमजोर हुआ है। संकटों के बीच प्रसन्न तथा सहज बने रहने के स्वभाव ने पार्टी में उनके अनेक प्रशंसक बनाए थे। युवा पीढ़ी से संवाद करने की उनकी क्षमता वास्तव में उल्लेखनीय थी। उनका प्रभाव माकपा और व्यापक वाम गठबंधनों से बाहर तक था जिससे वे देश में प्रगतिशील राजनीतिक विमर्श निर्धारित करने वाली एक प्रमुख शक्ति बन गए थे।

माकपा ने हाल ही में अपने दो प्रमुख नेताओं को खोया है। केवल एक महीने पहले बुद्धदेव भट्टाचार्य का निधन हुआ था और अब येचुरी के दिवंगत होने के बाद पोलिट ब्यूरो में खाली स्थान भरना कठिन होगा। जहां बुद्धदेव भट्टाचार्य ने वामपंथ में व्यावहारिक अर्थशास्त्र को प्रवेश दिया था, वहीं सीताराम येचुरी ने वामपंथी राजनीति को ज्यादा मध्यमार्गी ध्रुवीकरण की ओर बढ़ाया था। येचुरी का निधन माकपा के लिए बड़ी चुनौती है। पार्टी के भीतर आंतरिक टकरावों से निपटने की उनकी क्षमता ने ही पार्टी को वैचारिक आधार पर विभाजन से बचाया था। यह टकराव कट्टरपंथियों तथा ज्यादा व्यावहारिक राजनीति के पक्षधर नेताओं के बीच था। उनकी अनुपस्थिति नेतृत्व में ऐसा खाली स्थान छोड़ सकती है जिसके कारण वर्तमान तनाव और गंभीर हो सकते हैं। येचुरी के वारिस का चयन यह तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा कि माकपा अपने मध्यमार्गी दृष्टिकोण पर चलती रहेगी अथवा वह ज्यादा कट्टरपंथी दिशा में झुकेगी। लेकिन अपनी बौद्धिक क्षमता तथा राजनीतिक समझ के कारण येचुरी जैसे कद्दावर नेता की पूर्ति करना आसान नहीं होगा। हालिया वर्षों में वामपंथी पार्टियां भारत के अधिकांश भागों में चुनावी प्रासांगिकता बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही हैं क्योंकि भाजपा और क्षेत्रीय पार्टियों ने उस खाली स्थान को भर दिया है जिस पर परंपरागत रूप से वामपंथ का कब्जा था। एक सज्जन राजनेता के रूप में भारतीय राजनीति सीताराम येचुरी को हमेशा याद रखेगी। वे पार्टी राजनीति से ऊपर उठ कर भारतीय राजनीति में विचारों के व्यापक गठबंधन बनाने में सक्षम थे। येचुरी की अनुपस्थिति का गंभीर अनुभव न केवल उनके कामरेडों को, बल्कि हर ऐसे व्यक्ति को होगा जो उनको एक दयालु व सद्भावनापूर्ण नेता के रूप में देखता था।

जसवंत सिंह ने निभाई जिम्मेदारी

जसवंत सिंह ने अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता से कंधार विमान अपहरण कांड से निपटने का काम किया। उन्होंने 161 बंधकों की रिहाई सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली।

भूपिंदर सिंह
(लेखक, सेवानिवृत्त सेनाधिकारी हैं)

जसवंत सिंह ने अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता से कंधार विमान अपहरण कांड से निपटने का काम किया। उन्होंने 161 बंधकों की रिहाई सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। हालिया ओटीटी सीरीज़– 'आईसी–814' में पात्रों के गलत नामकरण पर लोगों का 'भारी गुस्सा' उमड़ कर सामने आया। आखिरकार सरकार के दबाव में सीरीज़ जारी करने वाले प्लेटफार्म ने अपहरणकर्ताओं के असली नाम शामिल करने पर सहमति जताई। हालांकि, इसके साथ ही अपरिहार्य रूप से सैनिक–राजनेता और विद्वान जसवंत सिंह द्वारा कंधार विमान अपहरण कांड से निपटने में निभाई भूमिका भी सामने आई। निसंदेह इस विमान अपहरण कांड ने भारतीय प्रशासन में व्याप्त भयानक कुप्रबंधन के कारण एक काली छाया छोड़ी थी। इससे खुफिया एजेंसियों के बीच समन्वय व एकजुटता की कमी के साथ विभिन्न पक्षों के बीच कमजोर जुड़ाव भी दिखा जिसके कारण विमान को अमृतसर से उड़ने की अनुमति दी गई।

लेकिन जनता की स्मृति में अभी जसवंत सिंह की वह छवि बनी हुई है जब वे आईसी–814 विमान के यात्रियों तथा चालक दल के सदस्यों को रिहा कराने के लिए तीन आतंकियों को लेकर कंधार गए थे। उस समय बहुत से लोगों ने इसे तत्कालीन केन्द्र सरकार की 'संप्रभु कमजोरी' के रूप में देखा, जबकि दूसरे लोगों का मानना था कि तत्कालीन असंभव दिखने वाली परिस्थितियों में बंधकों की रिहाई के लिए बातचीत ही एकमात्र माध्यम था। लेकिन यह तथ्य भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है कि उस समय बंधकों और विमान को अपहरणकर्ताओं से मुक्त कराने के लिए 'एंटेबे शैली' की छापामार कार्रवाई लगभग असंभव हो गई थी।

स्वयं जसवंत सिंह ने इस प्रकरण के बारे में कहा, 'यह बुरे निर्णय और बहुत बुरे निर्णय के बीच एक विकल्प था।' अपहृत विमान के बंधकों की रिहाई के लिए बातचीत सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति–सीसीएस का एक सामूहिक निर्णय था। उस समय सीसीएस की अध्यक्षता तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने की थी और उसमें गृह मंत्री, एनएसए, रक्षा मंत्री तथा विदेश मंत्री जसवंत सिंह शामिल थे। लेकिन ऐसे में सवाल उठता है कि बाद में इसका दोष केवल जसवंत सिंह पर क्यों डाला गया? इसका जवाब कई तरीके से दिया जा सकता है। पहला, एक व्यक्ति के रूप में जसवंत सिंह की दृढ़ता तथा उनके द्वारा अपना 'कर्तव्य' समझने की भावना थी, जबकि दूसरा, वे दूसरों की तुलना में उस स्थिति की गंभीरता को ज्यादा बेहतर तरीके से समझते थे। हालांकि, दूसरे लोग भी इस जटिल व सवालिया फैसले का समान रूप से हिस्सा थे। इसके साथ ही यह सवाल भी है कि आखिरकार जसवंत सिंह ने अपने साथियों का दोष अपने ऊपर लेने से पूरी ताकत के साथ इनकार क्यों नहीं कर दिया? उस समय निकटस्थ लोगों का मानना था कि इसका संबंध जसवंत सिंह की अपनी छवि की भावना तथा अंतर्निहित चेतना से गंभीर रूप से जुड़ा था। सम्मानित सैनिक हमेशा अपने काम को बिना किसी हिचक के या कोई महानता की भावना प्रदर्शित किए करते हैं।

मेजर जसवंत सिंह प्रशंसनीय 'सेंट्रल इंडिया हार्स' के एक घुड़सवार थे और उन्होंने समय–पूर्व भारतीय सेना से त्यागपत्र दे दिया था। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपने पूरे सार्वजनिक जीवन में सैनिक सेवा के दौरान प्राप्त विरासत और मूल्यों का सम्मान किया। सेना ने उनको परिभाषित किया था और उन्होंने बिना किसी 'सेवानिवृत्ति लाभ' के उसे छोड़ा था। उन्होंने कहा था, 'मेरी सेवा ही मेरा लाभ है। सेना ने मुझे जो दिया है, जो सिखाया है और उसने मुझ में जो छोड़ा है वही मेरी अमूल्य पेंशन है।' ऐसा ही 'सज्जन और अधिकारी' वाला गुण पूर्व अमेरिकी रक्षा सचिव जेम्स मैटिस में था। उन्होंने डोनाल्ड ट्रंप के बेलगाम प्रबंधन से असहमति व्यक्त करते हुए भी फ्रांसीसी अभिव्यक्ति 'डिवार डी रिजर्व', यानी मौन रहने का दायित्व निभाया था।

जब आईसी–814 के बारे में एक के बाद दूसरा गलत कदम उठाया जा रहा था और कोई भी स्थिति की जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार नहीं था तब जसवंत सिंह सामने आए और उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अविश्वसनीय तालिबान तथा अनैतिक आईएसआई के बीच से कंधार जाकर बंधकों को रिहा कराने का प्रस्ताव किया। उस समय आमतौर से बड़बोले और सभी जगह उपस्थित रहने वाले मंत्री मीडिया को बाइट देने या बंधकों के परेशान संबंधियों से बातचीत करने में हिचकते थे क्योंकि वे स्थिति की गंभीरता तथा अत्यन्त निराशाजनक स्थिति से परिचित थे। स्थिति लगातार बदल रही थी तथा कुछ भी हो सकता था जिससे निपटने के लिए त्वरित निर्णय लेना जरूरी था और ऐसे में जसवंत सिंह ने सामने आकर मोर्चा संभाला। उनके सहयोगी जहां बेहतर राजनेता थे, वहीं जसवंत सिंह अपने देश के लिए सैनिक थे और उनकी यही सैनिक चेतना सर्वप्रथम एवं सर्वोपरि थी। पहले विपक्ष के सांसद और बाद में रक्षा, विदेशी मामलों और वित्त के कैबिनेट मंत्री तथा बाद में एक बार फिर विपक्षी सांसद के रूप में वे अक्सर राष्ट्रपति भवन जाते थे। वहां हमेशा सिविलियनों के समूह में वे 'बावर्दी' लोगों से आंख मिला कर गरिमापूर्ण ढंग से सिर झुकाते या सैल्यूट किए जाने पर सैल्यूट करते थे।

इन सभी विविधतापूर्ण पेशेवर क्षमताओं में उनका एकमात्र और अराजनीतिक सवाल राष्ट्रपति अंगरक्षकों के कल्याण या उनके शानदार घोड़ों के बारे में होता था। ऐसा करते समय भी उनकी आंखों में विनम्रता के भाव हमेशा बने रहते थे। आईसी–814 प्रकरण आदि के बारे में जसवंत सिंह के अनेक निर्णयों पर सवाल उठते रहे, पर वे हमेशा मूलत: एक गरिमापूर्ण, सभ्य एवंव तार्किक स्वर बने रहे।

जब उनके अपने राजनीतिक समूह में हवायें बदलीं तो उनको नई संवेदनशीलताओं के आधार पर 'बाहरी' बना दिया गया। ऐसी स्थितियों में एक आदर्श सैनिक के रूप में उन्होंने अपना शिविर छोड़ दिया, पर वे 'दूसरे पक्ष' में नहीं गए, जबकि बहुत से अन्य लोगों ने ऐसा ही किया। वे इतने गरिमापूर्ण थे कि ऐसा कर ही नहीं सकते थे। इसलिए सैनिक शब्दावली में वे रात में खामोशी से एक जहाज की तरह निकल गए, अपने साथियों और पार्टी तथा देश की रक्षा की। उन्होंने कंधार विमान अपहरण कांड के समय बंधकों की सुरक्षा के लिए भी ऐसी ही कदम उठाया था।

उन्होंने एक सैनिक की तरह 'अ काल टु ऑनर' का अवसर आने पर तत्कालीन स्थितियों का गहन आंकलन किया था। उनके सामने अपहृत आईसी–814 विमान के कंधार ले जाने के बाद उसमें फंसे बंधक यात्रियों तथा चालक दल के कुल 161 सदस्यों को मुक्त कराने का 'सही' निर्णय लेने अथवा आतंकवाद के खिलाफ कठोरता से खड़े होकर उन सभी बंधकों को मरने के लिए 'छोड़ देने' का विकल्प था। वर्तमान स्थितियों में अतीत का पूर्वावलोकन करते हुए यह सवाल महत्वपूर्ण हो जाता है कि यदि अपहृतों को छुड़ाने के लिए आतंकियों को रिहा करने का निर्णय न लिया जाता और सभी बंधकों की हत्या हो जाती तो क्या इतिहास इस प्रकरण को सही ठहराता। ऐसे में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा उनकी अध्यक्षता वाली कैबिनेट सुरक्षा समिति–सीसीएस ने सही निर्णय करते हुए 'जीवन' का पक्ष लिया। इसका कारण यह भी था कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लंबी चलनी थी जो आज भी जारी है। लेकिन केवल बंधकों को अपने साथ ले जाने और अपनी जान जोखिम में डालने वाले जसवंत सिंह की छवि खराब करना किसी प्रकार उचित नहीं है।

जसवंत सिंह पुरानी सैनिक शब्दावली में कहे जाने वाले 'जेंटलमैन' का अर्थ भलीभांति समझते थे। वे हमेशा अपने सभी निर्णयों के साथ मजबूती से खड़े होते थे, चाहे उनको गलत समझा जाए या सही। उन्होंने कभी दूसरों पर खराब स्थितियों के कारण दोषारोपण नहीं किया, जबकि दूसरे उन पर दोष लगाने से पीछे नहीं रहते थे, लेकिन एक 'जेंटलमैन सैनिक' की तरह उन्होंने उनको सहन किया। वर्तमान समय में पूर्वावलोकन करते हुए पूर्व विदेश, रक्षा एवं वित्त मंत्री मेजर जसवंत सिंह का समुचित मूल्यांकन करते हुए उनको सम्मानपूर्वक याद किया जाना चाहिए।

ओजोन लेयर को बचाने की अनिवार्यता

डॉ सुशील द्विवेदी
(लेखक पर्यावरण मामलों के जानकार हैं)

हर साल पूरी दुनिया में 16 सितंबर को ओजोन दिवस मनाया जाता है। दरअसल, पृथ्वी के संरक्षण के लिए ओजोन परत की काफी अहम भूमिका होती है। वैज्ञानिकों के मुताबिक अगर पृथ्वी के चारों और ओजोन परत का यह सुरक्षा कवच नहीं होता तो शायद सौरमंडल के अन्य ग्रहों की तरह हमारी पृथ्वी भी जीवन–विहीन होती।

हर साल ओजोन दिवस मनाने का उद्देश्य है कि लोगों को इसके बचाव के लिए जागरूक किया जाए और इसके महत्व को समझा जा सकें। इस दिवस को मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल की याद में मनाया जाता है, जो एक पर्यावरण समझौता था। संयुक्त राष्ट्र और 45 अन्य देशों ने 16 सितंबर 1987 को ओजोन लेयर को नुकसान पहुंचाने वाले पदार्थों पर मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए थे। ये समझौते क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी), हैलोन्स, कार्बन टेट्राक्लोराइड और मिथाइल क्लोरोफॉर्म सहित ओजोन क्षयकारी पदार्थों (ओडीएस) के खिलाफ स्थापित किया गया था। अभी तक विश्व के 197 देश इस प्रोटोकॉल या संधि पर हस्ताक्षर कर ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले रसायनों के इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए हामी भर चुके हैं।

इस संधि के लागू होने से सीएफसी और अन्य हानिकारक रसायनों के उत्सर्जन में धीरे–धीरे कमी भी दर्ज की गई. मगर साल 2019 में प्रकाशित विख्यात साइंस जर्नल नेचर की एक रिपोर्ट के मुताबिक अब भी चीन, दक्षिणी कोरिया और न्यूजीलैंड जैसे कई देश पर्यावरण से जुड़े अंतरराष्ट्रीय समझौतों का उल्लंघन करते हुए अपने उद्योग–धंधों में ओजोन परत के लिए घातक गैसों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल कर रहे हैं।

विश्व ओजोन दिवसका मूल विषय है 'मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल- जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाना' जो ओजोन परत की रक्षा करने और वैश्विक स्तर पर व्यापक जलवायु के अनुकूल कार्रवाई से जुड़ी पहलों को आगे बढ़ाने में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। विश्व ओजोन दिवस 2024 का मूल विषय भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसे बचाने के लिए सतत जलवायु के अनुकूल कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर देता है। इस थीम के जरिए हमें ये बताने की कोशिश की गई है कि जीवन के लिए इस वक्त ऑक्सीजन जितना जरूरी है, उतना ही ओजोन भी अहम है।

ओजोन एक हल्के नीले रंग की गंधयुक्त गैस होती है, जो ऑक्सीजन के तीन अणुओं से मिलकर प्राकृतिक रूप से बनती है और हमारे वायुमंडल में बहुत कम मात्रा (0.00004 प्रतिशत) में पाई जाती है।

जब सूर्य की किरणें वायुमंडल से ऊपरी सतह पर ऑक्सीजन से टकराती हैं तो उच्च ऊर्जा विकिरण से इसका कुछ हिस्सा ओजोन में तब्दील हो जाता है।

पृथ्वी के धरातल से लगभग 30 से 40 किलोमीटर की ऊंचाई पर वायुमंडल के समताप मंडल या स्ट्रेटोस्फियर में ओजोन गैस का एक 3 मिलीमीटर पतला आवरण है. यह आवरण धरती के लिए सुरक्षा कवच या फिल्टर की तरह काम करता है. यह सूरज से आने वाली अल्ट्रा वॉयलेट रेडिएशन यानी पराबैंगनी किरणों को लगभग 97 से 99 प्रतिशत तक सोख लेता है. इससे सूरज से निकलने वाली खतरनाक अल्ट्रावायलेट किरणें सीधे पृथ्वी तक नहीं पहुंच पाती हैं।

क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) को ओजोन परत को नष्ट करने के मुख्य कारण के रूप में पहचाना गया है, लेकिन इसमें ब्रोमीन, अन्य हैलोजन यौगिक और नाइट्रोजन ऑक्साइड भी होते हैं जो नुकसान पहुंचाते हैं। सीएफसी को 1930 के दशक में रेफ्रिजरेटर के लिए सस्ते, गैर–ज्वलनशील शीतलक के रूप में थॉमस मिजले द्वारा खोजा गया था। उनका उपयोग रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनिंग, फास्ट फूड पैकेजिंग और प्रोपेलेंट में किया गया है। सीएफसी बहुत स्थिर हैं।

वे धीरे–धीरे क्षय करते हैं और एक सदी तक वातावरण में रहते हैं।सीएफसी बढ़ता है और धीरे–धीरे स्ट्रैटोस्फियर में जमा होता है जहां वे सूरज की पराबैंगनी प्रकाश से टूट जाते हैं, इसलिए क्लोरीन परमाणुओं को छोड़ते हैं। क्लोरीन ओजोन पर हमला करता है, एक क्लोरीन परमाणु 100,000 ओजोन अणुओं को नष्ट करने में मदद कर सकता है।

अब अगर कल्पना करें कि ओजोन परत पृथ्वी के ऊपर से पूरी तरह से हट जाए तो क्या होगा? ऐसा होने पर कई तरह के बदलाव देखने को मिलेंगे, इंसानों में कैंसर जैसी बीमारियां फैलने लगेंगीं और सूरज की खतरनाक किरणों का असर पूरी दुनिया में दिखेगा. सूरज की इन किरणों से प्रतिरोधक क्षमता काफी कम हो जाएगी. इसके अलावा बर्फ तेजी से पिघलने लगेगी, जिससे एक बड़ी तबाही हो सकती है. यानी इस सुरक्षा कवच के बिना धरती में जीवन खत्म हो सकता है। ओजोन परत की रक्षा के लिए, दुनिया भर की सरकारों को इन हानिकारक गैसों के उत्सर्जन को कम करने के उपाय करने चाहिए।

अन्यथा, कई पौधे सौर विकिरण से पीड़ित हो सकते हैं, त्वचा कैंसर बढ़ जाएगा, और कुछ और गंभीर पर्यावरणीय समस्याएं होंगी। व्यक्तिगत स्तर पर, नागरिकों के रूप में, आप जो कर सकते हैं वह एरोसोल उत्पादों को खरीदना है जिसमें ओजोन को नष्ट करने वाले कण शामिल नहीं हैं या बने हैं। इस अणु की सबसे विनाशकारी गैसों में से हैं।

सीएफ़सी (क्लोरोफ्लोरोकार्बन)। वे सबसे विनाशकारी हैं और एक एरोसोल के रूप में जारी किए जाते हैं। उनका वातावरण में बहुत लंबा जीवन है और इसलिए, जो 20वीं शताब्दी के मध्य में जारी किए गए थे, वे अभी भी नुकसान पहुंचा रहे हैं। हलोजनयुक्त हाइड्रोकार्बन, यह उत्पाद अग्निशामक यंत्रों में पाया जाता है। सबसे अच्छी बात यह सुनिश्चित करना है कि हम जो एक्सटिंगुइशर खरीदते हैं उसमें यह गैस न हो।

मिथाइल ब्रोमाइड. यह लकड़ी के बागानों में इस्तेमाल किया जाने वाला कीटनाशक है। पर्यावरण में छोड़े जाने पर यह ओजोन को नष्ट कर देता है। इन लकड़ियों से बने फर्नीचर को खरीदना आदर्श नहीं है। ऐसे सौंदर्य प्रसाधन, एयरोसोल और प्लास्टिक के कंटेनर, स्प्रे जिसमें क्लोरोफ्लोरोकार्बन विद्यमान हैं, उन उत्पादों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। रुई के गद्दे और तकियों का प्रयोग करें व फोम के उपयोग से बचे।

थर्माकोल अथवा स्टायरोफोम के बने डिस्पोजेबल के स्थान पर मिट्टी के कुल्हड़ों, पेड़ों के पत्तों या फसल अवशिष्ट से बने थाली प्लेट व ग्लास का प्रयोग करें। विश्व ओजोन दिवस एक अवसर है कि हम ओजोन परत के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाएं और लोगों को संरक्षण के लिए प्रेरित करें।

आप की बात

विवादास्पद बयान

उत्तर प्रदेश के 10 विधानसभा उप–चुनाव के मुहाने पर खड़ी प्रदेश की राजनीति में सपा अध्यक्ष के बयान पर पक्ष विपक्ष में जोरदार बहस जारी है। अखिलेश यादव ने कहा था कि मठाधीश और माफ़िया में कोई ज्यादा फ़र्क़ नहीं है। इस पर न केवल बीजेपी ने उनको कटघरे में खड़ा किया है बल्कि साधु संतों की जमात ने भी इस पर गहरी नाराजगी जाहिर की है। उन्होंने इसे सनातन धर्म का अपमान करार दिया है। इसी प्रकार सपा अध्यक्ष ने सुल्तानपुर एनकाउंटर के संदर्भ में जाति देखकर एनकाउंटर वाला बयान दिया है। इस पर उत्तर प्रदेश पुलिस के डीजीपी ने बाकायदा प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सपा अध्यक्ष के सारे आरोपों को सिरे से खारिज किया है और वीडियो दिखाकर स्थिति स्पष्ट की है। उनके इस बयान पर भाजपा सहयोगी राजभर और निषाद ने भी कहा है कि अखिलेश को मुठभेड़ में मारे जाने वाले जाति विशेष के लोगों पर ही दुख होता है, जबकि अनेक ओबीसी व दलित बदमाश भी पुलिस पर हमला करने के कारण मारे जाते हैं। लेकिन सपा नेता ने कभी इन पर दु:ख प्रकट नहीं किया। सपा अध्यक्ष को समझना चाहिए कि ऐसे बयान देकर वे सपा का विस्तार करने के बजाय उसे एक संकुचित खांचे में बंद कर देंगे। ऐसे विवादित बयानों से प्रदेश की प्रगति और माहौल प्रभावित होते हैं।

– **वीरेंद्र कुमार जाटव,** दिल्ली

हिन्दू-विरोधी चेहरा

अखिलेश यादव का हिंदू–विरोधी चेहरा एक बार फिर सामने आ गया। उन्होंने एक बयान में कहा कि मठाधीश और माफ़िया में ज़्यादा फ़र्क़ नहीं होता। उनका का यह बयान न केवल निंदनीय बल्कि हिंदू धर्म की मान्यताओं व संस्थाओं का अपमान करने वाला भी है। वर्तमान मुख्यमंत्री से उनका विरोध किसी से छुपा नहीं है। वह पहले भी योगी आदित्यनाथ की वेशभूषा व भाषा को लेकर कई आरोप लगा चुके हैं। समाजवादी पार्टी से संबंधित कई अपराधियों को यह सरकार जेल की सलाखों के पीछे पहुँचा चुकी है, कुछ का तो एनकाउंटर हो गया है व बुलडोजर एक्शन में कई सपा नेताओं के मकान ज़मींदोज हो चुके है। सपा प्रमुख इससे परेशान हैं। वे अब वह हिंदू धर्म पर अमर्यादित टिप्पणी कर अपने वोटबैंक को ख़ुश करना चाहते हैं। अखिलेश का यह बयान आदि शंकराचार्य का भी अपमान है जिन्होंने सनातन धर्म के प्रसिद्ध चारों धाम व मठ परंपरा की शुरुआत की थी। इस बयान से संत समाज भी शुब्ध है व संतों की कड़ी प्रतिक्रियाएँ सामने आ रही है। अखिलेश यादव को इसलिए भी अपने बयान के लिए माफ़ी माँगनी चाहिए क्योंकि वे चुनाव के समय हिंदओ के वोट पाने के लिए मंदिर–मंदिर दौड़ लगाते हैं।

– **पुनीत अरोड़ा,** मेरठ

विदेश यात्राओं की सुर्खियां

विदेश यात्रा चाहे प्रधानमंत्री की हो या विपक्ष के नेता की, हमेशा सुर्खियों में बनी रहती है। प्रधानमंत्री पर तो विपक्ष विदेशी यात्राओं को लेकर तंज कसता रहता है, जबकि आज विदेशों से मजबूत व्यापारिक व राजनयिक संबंध यह समझने के लिए पर्याप्त है कि मोदी की यात्राएं कितनी फायदेमंद रही हैं। इसके ठीक विपरीत विपक्ष के नेता राहुल गांधी की विदेश यात्रायें हैं। उनकी अमेरिकी यात्रा में सामने आई मेल मुलाकात और बयानबाजियां न देश हित में है और न कांग्रेस व विपक्ष के लिए फायदेमंद। अमेरिका में राहुल ने विभिन्न मुद्दों पर विवादास्पद बयान दिए तो घोषित भारत–विरोधी नेताओं इल्हान उमर, प्रमिला जयपाल और डोनाल्ड लू जैसों से मुलाकात भी की। आज जब भारत की प्रतिष्ठा दुनिया में लगातार बढ़ती जा रही है और दुनिया भर के नेता हमारे साथ राजनयिक संबंध व व्यापार बढा़ने के इच्छुक हैं, ऐसे में हमारे देश की एकता और अखंडता के खिलाफ बोलने वाले अमेरिकी नेताओं से मिलने की उचित वजह शायद इंडियन ओवरसीज कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ही जानते होंगे। विडंबना है कि भाजपा और मोदी का विरोध करते–करते राहुल गांधी भारत–विरोध करने लगते हैं और कांग्रेसी इसे उचित ठहराते हैं।

– **अमृतलाल मारू,** इंदौर

येचुरी का आदर्श

सीताराम येचुरी के निधन उपरांत परिवार द्वारा उनका देहदान एम्स अस्पताल को किया गया। यह निश्चित रूप से स्वागत योग्य कदम है। बड़े नेता जनता के आदर्श होते हैं। यदि वह कोई अच्छा कार्य शुरू करते हैं तो जनता भी उनसे प्रेरणा लेकर अच्छे कार्य करने का प्रयास करती है। अभी अंगदान और देहदान के मामले में हमारे देश में कोई खास जागृति नहीं है। ऐसे में यदि येचुरी परिवार की तरह बड़े नेताओं के परिवार द्वारा ऐसा निर्णय लिया जाए या बड़े नेता स्वयं जीते–जी देहदान का फॉर्म भर दे तो इससे जनता भी प्रेरित होगी। वैसे सीताराम येचुरी के पहले भी अनेक माकपा नेताओं ने देहदान किया है। कुछ साल पहले गायत्री परिवार ने भी देहदान का अभियान चलाया था जिससे प्रेरित होकर अनेक पत्रकारों, समाजसेवियों, प्रोफेसरों, आदि ने देहदान का संकल्प लिया था। इनमें से अनेक के देहदान व अंगदान हुए भी। लेकिन अनेक मामलों में परिवारीजन ही मृतक की इच्छा पूरी नहीं करते हैं। अत: सीताराम येचुरी व अन्य देहदानियों के उदाहरणों से प्रेरणा लेते हुए ऐसे अभियानों को व्यापक रूप देने के प्रयास करने चाहिए।

– **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई–मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

सम्पादकीय

जम्मू-कश्मीर में आतंक का दंश

जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ अभियान के संबंध में दावे चाहे जो भी हों लेकिन वास्तविकता यही है कि वहां आए दिन आतंकवादियों के हमले हो रहे हैं। चुनाव की दहलीज पर खड़े जम्मू-कश्मीर के लोग मतदान का इंतजार कर रहे हैं। पहले चरण में 18 सितम्बर को मतदान होना है। ऐसे समय पर आतंकवादी चुनाव पर असर डालने की फिराक में हैं। 5 अगस्त, 2019 में अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद कश्मीर में अमन की वापसी और विकास के नए दौर की शुरूआत हुई है लेकिन आतंकवादी संगठनों का दंश देश के सुरक्षा बलों को झेलना पड़ रहा है। सुरक्षा बलों के अधिकारी और जवान शहीद हो रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चुनावी रैली से पहले किश्तवाड़ में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में दो जवानों की शहादत ने चिंताएं बढ़ा दी हैं। हालांकि सुरक्षा बलों ने तीन आतंकवादियों को भी मार गिराया है। चार दशकों में डोडा में किसी प्रधानमंत्री की पहली रैली हुई है। डोडा, किश्तवाड़ और रामवन जिलों में 8 विधानसभा क्षेत्रों में पहले चरण का मतदान होगा। इसके साथ ही दक्षिणी कश्मीर के अनंतनाग, पुलवामा, शोपियां और पुलगाम जिलों में भी 16 सीटों पर मतदान होने वाला है। जम्मू-कश्मीर चुनावों में सुरक्षा की चुनौती बनी हुई है। पिछले चार महीनों में लगभग दो दर्जन से भी ज्यादा जवान शहीद हो चुके हैं।

जम्मू क्षेत्र आमतौर पर कई वर्षों से कश्मीर की अपेक्षा ज्यादा शांत रहा है। मगर बीते कुछ समय से इसके कुछ इलाकों में भी आतंकवादी गतिविधियां बढ़ी हैं। लोकसभा चुनावों में जिस तरह से राज्य के लोगों ने उत्साह के साथ मतदान किया उससे विधानसभा चुनावों में भी लोगों के बढ़-चढ़कर भाग लेने की उम्मीद बन रही है। आतकंवादी संगठनों के पाकिस्तान में बैठे आकाओं को यह सब सहन नहीं हो रहा। अगर राज्य में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूती मिलती है और लोग अधिक से अधिक वोट डालकर लोकतंत्र में अपनी आस्था व्यक्त करते हैं, सरकार में जनता की भागीदारी बढ़ती है तो इससे आतंकवादी गिरोहों के नापाक इरादों पर पानी फिर जाएगा। यही कारण रहा कि आतंकवादी सुरक्षा बलों या रोजी-रोटी कमाने के लिए बाहर से आए प्रवासी लोगों की हत्याएं करने में लगे हुए हैं। आतंकवादियों ने कभी बिहार के मजदूरों को निशाना बनाया तो कभी उत्तर प्रदेश के श्रमिकों को। 90 के दशक में जम्मू खासकर कठुआ आतंकवादियों का ठिकाना हुआ करता था।

कश्मीर के सबसे अस्थिरता के दौर में कठुआ पनाहगार बना हुआ था। अब एक बार फिर ऐसा ही दिख रहा है। दरअसल इस जिले की बनावट ऐसी है जहां छिपना-छिपाना आसान है। जंगलों से सटे क्षेत्र में हमले के बाद आतंकवादी गायब हो जाते हैं। जिले के एक तरफ हिमाचल की सीमा लगती है तो दूसरी तरफ हिमाचल और पंजाब हैं। आतंकवादी गुट लगातार हमले कर क्षेत्र में अस्थिरता और डर पैदा करना चाह रहे हैं ताकि राजनीतिक ढांचे के साथ-साथ आम लोगों की भावनाओं से भी छेड़छाड़ की जा सके। घाटी में अनुच्छेद 370 हटाने के बाद कई आतंकवादी गुट छद्म नामों से सक्रिय हो चुके हैं। टीआरएफ, जम्मू-कश्मीर गजनबी फोर्स, कश्मीर टाइगर्स, जम्मू-कश्मीर रजिडैंट्स फोर्स, पीपल्स एंटी फासिस्ट फ्रंट इन्हीं में से हैं।

आर्थिक तंत्र पर बोझ बनती प्राकृतिक विपदाएं

आपदा प्रबंधन में जापान से सीख ली जा सकती है। क्योंकि जापान आपदा प्रबंधन में विश्व में अग्रणी देश माना जाता है। जापान पृथ्वी के ऐसे क्षेत्र में अवस्थित है, जहां भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाएं सदैव आती रहती हैं। जापान में आपदा प्रबंधन की अत्याधुनिक तकनीक को याकोहामा रणनीति कहा जाता है। जापान में आपदा प्रबंधन की साल भर नियमित रूप से मॉनिटरिंग कर एक्सरसाइज की जाती रहती है, एवं आपदाओं पर निरंतर निगरानी तथा नजर रखी जाती है,एवं इसके निदान के लिए पूर्व से ही सुनियोजित योजना बनाकर नागरिकों को सुरक्षित कर लिया जाता है। भारत को भी इसी तरह आपदा प्रबंधन को अपनाकर अन्य आपदाओं के साथ सतर्क होकर कार्रवाई की जानी चाहिए।

संजीव ठाकुर

आपदा सदैव अनअपेक्षित घटना होती है। जो मानवीय नियंत्रण से सदैव से बाहर होती है। प्राकृतिक आपदा अल्प समय में बिना किसी पूर्व सूचना के घटित होती है, जिससे मानव जीवन के सारे क्रियाकलाप अवरुद्ध हो कर,जान और माल की बड़ी हानि होती है । आर्थिक तंत्र,विकास नष्ट हो जाते हैं। आपदा की विद्रूपता, भयानक स्वरूप एवं निरंतरता मानव जीवन और समाज और देश को बड़ी हानि पहुंचाकर उस देश की आर्थिक स्थिति में गहरी चोट करते हैं राष्ट्र को आर्थिक रूप से बहुत पीछे खींच कर ले जातें हैं। आपदाओं के प्रति मानवीय सभ्यता के संदर्भ में समाज के आर्थिक सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग को ज्यादा प्रभावित करती है एवं समाज का सबसे संवेदनशील तबका यानी वृद्ध व्यक्ति, महिलाएं, बच्चों, दिव्यांग लोगों को प्राकृतिक आपदाओं से सबसे ज्यादा खतरा बना रहता है। आपदा के समय सबसे ज्यादा निम्न आय वर्ग के व्यक्ति तथा मजदूर तबके के व्यक्ति प्रभावित होतें हैं उनकी दिनचर्या सामूहिक रूप से छिन्न-भिन्न हो जाती है आर्थिक साधन भी नष्ट हो जाते हैं, जिससे उसे आजीविका की एक बडी विडंबना सताने लगती है।

भारत के भू भाग का लगभग 58त्न क्षेत्र भूकंप की संभावना वाला क्षेत्र है, जिसमें हिमालयिन क्षेत्र,पूर्वोत्तर राज्य, गुजरात का कुछ क्षेत्र, अंडमान निकोबार द्वीप समूह भूकंप की दृष्टि से सबसे सक्रीय क्षेत्र रहें है। देश के 65 से 68त्न भूभाग पर कभी कम कभी ज्यादा भीषण रूप से सूखा पड़ता है, इसी तरह भारत के पश्चिमी और प्रायद्वीपीय राज्य में मुख्यत: शुष्क तथा अर्ध शुष्क न्यून नमी वाले क्षेत्र सूखे से सदैव प्रभावित रहते हैं। बाढ़ से प्रभावित भूमि का विस्तार क्षेत्र देश के 12त्न है, यानी 7 करोड़ हेक्टेयर जमीन में भूकंप आने की संभावना सदैव बनी रहती है। हिमालय क्षेत्र देश के पर्वतीय क्षेत्र में भूस्खलन की गंभीर समस्या की संभावना सदैव बनी रहती है। देश के विशाल तटवर्ती क्षेत्र में चक्रवात तथा सुनामी की भयावह स्थिति की संभावना रहती है।भारत नें विश्व के साथ-साथ करोना संक्रमण की भयानक महामारी से प्रभावित होकर हजारों लाखों नागरिकों की जान गवा कर इस आपदा से जंग लडी है, यह कोविड-19 की महामारी या आपदा प्राकृतिक है या मानव निर्मित यह तो भविष्य ही बताएगा, किंतु इस महामारी ने पूरे वैश्विक स्तर पर आकस्मिक रूप से मानव जीवन में मृत्यु का तांडव मचा के रख दिया था। ऐसी ही अनपेक्षित आपदाओं का पूर्वानुमान अथवा आकलन किया जाना पहले से संभव नहीं हो सकता है। ऐसे में राष्ट्रीय अन्य योजनाओं के साथ-साथ आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अत्यधिक सावधानी पूर्वक योजना तथा विभाग बनाने चाहिए, देश में जापान जैसे देश की तरह आपदा प्रबंधन से निपटने के लिए अत्याधुनिक आपदा प्रबंधन सिस्टम को तैनात कर तैयार रखने की आवश्यकता होगी। भारत को आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विभाग को चुस्त-दुरुस्त तथा अत्याधुनिक तकनीक से युक्त रखने की आवश्यकता है। तूफानी चक्रवात,सुनामी,भूस्खलन, भूकंप, सूखा बाढ़ के अलावा अब कोविड-19 यानी करोना संक्रमण जैसी खतरनाक बीमारियां भारत देश को अपना निशाना बना कर रखा है ।ऐसे में भारत में मध्यम दर्जे का या निम्न दर्जे का आपदा प्रबंधन सिस्टम किसी भी काम का ना रहेगा, एवं इससे भारी जानमाल की हानि होने की संभावना सदैव बनी रहेगी। भारत में आपदा प्रबंधन के लिए 1990 में कृषि मंत्रालय के अंतर्गत डिजास्टर मैनेजमेंट सेल स्थापित किया गया था। लेकिन 1993 में लातूर के भूकंप तथा 1998 में मालपा के भूस्खलन तथा 1999 में ओडिशा में सुपर साइक्लोन तथा 2001 में भुज के भूकंप के बाद देश में एक मजबूत आपदा प्रबंधन की व्यवस्था की जरूरत को महसूस करते हुए जे,सी, पंत जी की अध्यक्षता में हाई पावर कमेटी की रिपोर्ट में एक सुव्यवस्थित तथा व्यापक सिस्टम तथा विभाग की स्थापना की आवश्यकता प्रतिवेदित की गई थी। 2002 में आपदा को देश की आंतरिक सुरक्षा का मामला मानते हुए आपदा को गृह मंत्रालय के अंतर्गत समाविष्ट किया गया। आपदा प्रबंधन के इतिहास में 2005 में एक बड़ा परिवर्तन लाया गया भारत सरकार ने आपदा को अपनी कार्ययोजना के एक चक्रीय क्रम के रूप में प्रबंधित किया, जिसमें आपदा आ जाने के बाद इसके बचाव, नुकसान की भरपाई, निदान तथा आपदा आने के पूर्व की तैयारी तथा योजना को मूर्त रूप देने का एक सुनियोजित तरीका तैयार किया गया था।

आपदा से खतरे का स्तर सभी इंसानों के लिए सदैव एक जैसा होता है। किंतु समाज के विभिन्न वर्गों में खतरे से निपटने तथा जूझने की क्षमता अलग-अलग होती है। निम्न वर्ग का तबका अन्य लोगों की अपेक्षा आपदा से ज्यादा प्रभावित होता है। अत: सरकार को गरीब तथा वंचित वर्ग के तबके के लिए आपदा प्रबंधन में विशेष प्रावधान दिया जाना चाहिए। आपदाओं के प्रबंधन एवं अनुसंधान व त्वरित कार्रवाई के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान तथा राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल का गठन किया गया है। यह आपदा राशि कार्रवाई बल पर किसी खतरनाक आपदा की स्थिति में रासायनिक, जैविक, परमाणु विकिरण तथा अन्य प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदा के संबंध में विशिष्ट कार्यवाही के निर्वहन का उत्तरदायित्व है। ईस संस्था ने बंगाल तथा उड़ीसा के तटीय क्षेत्र में आई सुनामी में काफी बड़ी संख्या में लोगों की जान भी बचाई है। चक्रवाती तूफान से निपटने में हमारे समुचित प्रयासों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हाल के वर्षों में आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। परंतु पिछले 3 वर्षों से करोना संक्रमण से हुई बड़ी संख्या में मृत्यु ने देश को हिला कर रख दिया था।अगर आपदा प्रबंधन सिस्टम को लगातार मॉनिटर किया जाता एवं उस सिस्टम के अधिकारी जिम्मेदार व्यक्ति सचेत एवं सजग रहते, तो द्वितीय लहर में इस तरह हड़कंप संक्रमण एवं मृत्यु का सामना नहीं करना पड़ता। भारत को आपदा प्रबंधन के सिस्टम पर फिर से आंकलन कर एक नई व्यूह रचना बनाकर गरीब तबके निचले व्यक्ति तथा समग्र रूप से मानव जाति की सुरक्षा के लिए नए-नए उपाय करने चाहिए क्योंकि आपदा कभी बताकर नहीं आती है।

शख्सियत

हम क्या हैं ये हमारा व्यक्तित्व ही बयां करता है। लोगों की भावना व पीड़ितों के दर्द को समझना ही इंसानियत है। बाकि तो महज दिखावा है

नमस्कार मित्रों हमारी आज की शख्सियत कॉलम के स्टार हैं जीवांत व्यक्तित्व के धनी अलवर ग्रामीण विधायक व राजस्थान विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली। मिलनसार,व्यवहारिक और लोगों के साथ अपनेपन की भावना बनाए रखने वाले जूली और अलवर जिलें में ही नहीं अपितू पूरे प्रदेश में अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। कुछ दिन पहले तो विधानसभा में बहरोड़ विधायक ने कह ही ड़ाला कि ये आने वाले समय के मुख्यमंत्री हैं। टीकाराम जूली का जन्म अलवर के ग्राम.काठूवास,तहसील मांढण जिला कोटपूतली-बहरोड में 3 सितंबर1980 को हुआ। पिता लेखराम ठेकेदार का काम करते थे। व्यवहारशील और समाजसेवी थे इसलिए पिता के गुण पुत्र में भी समायोजित हो गए। इनकी शिक्षा बी.ए, एलएलबी व एलएलएम रही। राजनैतिक पर्दापण खुद के जन्मदिवस पर सन 1998 में हुआ। अपने राजनैतिक गुरू डॉ.जसवंत यादव की मदद से 2005 से 2008 तक जिले के प्रथम नागरिक की कुर्सी पर विराजमान हुए। यानि जिला प्रमुख बने। वर्तमान पद विधायक अलवर ग्रामीण व नेता प्रतिपक्ष राजस्थान विधानसभा पद को सुशोभित कर रहे हैं। विधायक अलवर ग्रामीण 2008-2013 तक रहे। समन्वयक, एस.सी विभाग जयपुर संभाग 2014 में व जिला अध्यक्ष,जिला कांग्रेस कमेटी अलवर 2016 में पुन: विधायक अलवर ग्रामीण 2018 में बनकर राज्य की गहलोत सरकार में राज्यमंत्रीश्रम, कारखाना एवं बॉयलर्स निरीक्षण विभाग स्वतंत्र प्रभार सहकारिता एवं इंदिरा गांधी नहर परियोजना विभाग राजस्थान सरकार 2018 तक फिर केबिनेट मंत्री बने-सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग एवं कारागार विभाग राजस्थान सरकार 2021 तक रहे। कांग्रेस पार्टी की अन्य जिम्मेदारियाँ जैसे बिहार, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश हरियाणा, असम, आदि में कॉर्डिनेटर व पर्यवेक्षक का सफ्लता पूर्वक दायित्व निर्वहन । भारत जोडो यात्रा के दौरान मालाखेडा अलवर ग्रामीण विधानसभा में विशाल जनसभा का सफ्ल आयोजन-वर्तमान में कांग्रेस पार्टी के लिए दिन रात समर्पण। मैं तो इस व्यक्तित्व के लिए बस इतना कहना चाहूंगा कि इतने बड़े पद पर रह कर भी अपनी जमीन जो व्यक्ति नहीं छोड़ता वही शख्स शख्सियत बनता है। हर किसी के दु:ख दर्द में शामिल होना इनकी परिवरिश से मिला हुआ है। लोगों की भावनाओं के कद्र कर पिड़ितों के भाव को समझना इनके अच्छे संस्कार बयां कर रहा है। समाज के लिए युवाओं के लिए ऐसे लोग आर्दश हैं सच में।

टीकाराम जूली
(नेता प्रतिपक्ष,राजस्थान विधानसभा)

मुझे आज भी एक वाक्या याद है किसी गाँव में ये मंच से सभा को संबोधित कर रहे थे जब ये कैबिनेट मंत्री थे तो एक पाँव से दिव्यांग व्यक्ति चल कर आया तो उससे बोले आ भाई साडू भाई तो बाद में लोगों ने पूछा ये आपके गाँव का नहीं ये आपकी जाति का नहीं ये आपका रिश्तेदार नहीं फिर साडू कहां से हुआ तो बड़ी सहतजा से बोले दोनों भाई हम पाँव से दिव्यांग हैं इसलिए साडू भाई हुए ना,,पूरी सभा में आनन्द का माहौल बन गया,सब ठहाका लगाकर हंसने लगे। ये बातें चाहे कैसी भी हों दोस्तों ये बता रही हैं कि अमुख व्यक्ति को ना पद का गुमान है ना ही मद का गुमान है। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है। आशा करते हैं आने वाले समय में आप स्टेट का प्रतिनिधित्व सीएम के रूप में करें।

रूपक शर्मा

आज का इतिहास

16 सितंबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- ब्रिटेन ने 1795 में दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन पर कब्जा किया।
- निगवेल हिदाल्गो ने 1810 में स्पेन से मैक्सिको की आज़ादी के लिए संघर्ष शुरु किया।
- भूटान ने 2003 में अहम सामरिक कदम उठाते हुए भारतीय हितों के खिलाफ अपनी जमीन के इस्तेमाल नहीं होने देने का आश्वासन दिया।
- वन टू गो एयरलांइस का विमान 2007 को थाईलैंड में दुर्घटनाग्रस्त होने से 89 लोगों की मौत।
- आज ही के दिन वाशिंगटन में 2013 को एक बंदूकधारी ने नौसेना के एक शिविर में 12 लोगों की गोली मारकर हत्या की।
- मैक्सिको की स्वतंत्रता को 1821 में मान्यता मिली।
- फ्रांसीसी उपनिवेश से दास प्रथा 1848 में खत्म की गई।
- ब्रिटेन में 1861 को पोस्ट ऑफिस में बचत खाता खुलने की शुरुआत।
- 'जनरल मोटर्स निगम' की स्थापना 1908 में की गई।
- इटली के साम्राज्यवाद के विरुद्ध लीबिया राष्ट्र के संघर्ष के नेता उमर मुख्तार को 1931 में फांसी दे दी गयी।
- सोवियत संघ की सेना के जनरल वातुतिन ने 1943 में दोबारा रोमनी पर कब्जा किया।
- टोक्यो के सईतामा में 1947 को चक्रवाती तूफान कैथलीन से 1,930 लोगों की मौत हो गई।
- युवान पेरॉन अर्जेंटिना से 1955 को विदा।
- मलया सिंगापुर ब्रिटिश नार्दन वौनियो से मलेशिया का गठन 1963 में हुआ।
- फेडरेशन ऑफ मलय में उत्तरी बोर्नेयो, सारावाक और सिंगापुर मिला कर 1963 में नया देश बनाया गया।
- मलय में सिंगापुर का सि मिला कर मलेशिया किया गया हांलाकि 1965 में मलेशिया अलग हो गया।
- सोवियत संघ ने 1967 में पूर्वी कजाख में परमाणु परीक्षण किया।
- केप वर्डे, मोजाम्बिक, साओ टोमे और प्रिंसिप संयुक्त राष्ट्र 1975 में शामिल हुए।
- पापुआ न्यू गिनी ने 1975 में आस्ट्रेलिया से स्वतंत्रता हासिल की।
- ईरान में 1978 को आए भूकंप में 20 हजार से भी ज्यादा लोग मारे गए।
- जनरल जिया उल हक़ पाकिस्तान के राष्ट्रपति 1978 में निर्वाचित।
- सोने की खदान में 1986 को फंस जाने के कारण सैकड़ों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा.
- भूटान ने 2003 में भारतीय हितों के ख़िलाफ़ अपनी ज़मीन के इस्तेमाल नहीं होने देने का आश्वासन दिया।

विशेष आलेख

कल के कार्यबल के लिए आवश्यक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कौशल

विजय गर्ग

एआई-संचालित नौकरियों के लिए तैयारी करने और भविष्य के लिए तैयार रहने के लिए, पेशेवरों को तकनीकी, विश्लेषणात्मक और सॉफ्ट कौशल का मिश्रण विकसित करने की आवश्यकता है अपने करियर को भविष्य-सुरक्षित करें एआई-संवर्धित व्यवसायों के लिए आवश्यक 5 कौशल अपने करियर को भविष्य-सुरक्षित करें- एआई-संवर्धित व्यवसायों के लिए आवश्यक 5 कौशल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, एआई, अब केवल एक उभरती हुई प्रवृत्ति नहीं है; यह हमारे काम करने के तरीके को नया आकार दे रहा है और आगे बने रहने के लिए किन कौशलों की आवश्यकता है, इसे फिर से परिभाषित कर रहा है। जीटीआव पर लगभग आधे नए कोड अब एआई-जनरेटेड हैं, और ऐआई गुणवत्ता से समझौता किए बिना 15 प्रतिशत दैनिक कार्यों को तेजी से पूरा कर रहा है। एआई का प्रभाव निर्विवाद है, और यह यहीं रहेगा। तो, सवाल यह नहीं है कि क्या एआई नौकरी बाजार में पहले से मौजूद चीज़ों को बदल देगा। अब, यह इस बारे में है कि हम कितनी तेजी से इन तकनीकों को अपनाते हैं, कौशल बढ़ाते हैं और हमारे लिए काम करते हैं। इसी तरह हम अपने करियर को भविष्य में सुरक्षित बना सकते हैं, खेल में आगे रह सकते हैं और नवाचार की अगली लहर चला सकते हैं। एआई और मनुष्य के बीच तालमेल जैसे कैलकुलेटर या क्विकबुक ने अकाउंटेंट की जगह नहीं ली, एआई यहां नौकरियां छीनने के लिए नहीं बल्कि उन्हें बढ़ाने के लिए है। दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करके, एआई हमें उस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मुक्त करता है जो हम सबसे अच्छा करते हैं- रचनात्मकता, निर्णय और भावनात्मक बुद्धिमत्ता। उदाहरण के लिए, मार्केटिंग में, ऐआई डेटा की कमी कर सकता है और ग्राहकों को विभाजित कर सकता है, जिससे विपणक को ऐसे अभियान तैयार करने की अनुमति मिलती है जो वास्तव में दर्शकों से जुड़ते हैं। जबकि एआई दस व्यक्तियों की टीम को सौ की तरह प्रदर्शन करने की अनुमति देता है, जटिल निर्णय लेने और विश्वास बनाने के लिए मनुष्य अभी भी आवश्यक हैं। यह वह जगह है जहां एआई प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता है और जहां मानव कौशल फर्क लाएगा। एआई-संचालित कार्यबल के लिए आवश्यक कौशल .एआई ने पांच महत्वपूर्ण एआई कौशलों की रूपरेखा तैयार की है जो भविष्य के कार्यबल के लिए आवश्यक हैं। 1. अनुकूलनशीलता और आजीवन सीखना एआई और ऑटोमेशन नौकरी बाजार को पहले से कहीं अधिक तेजी से बदल रहे हैं। भूमिकाएँ लगातार विकसित हो रही हैं, और नई भूमिकाएँ भी उतनी ही तेज़ी से उभर रही हैं। प्रासंगिक बने रहने के लिए, आपको अनुकूलनशील होने और आजीवन सीखने के लिए प्रतिबद्ध रहने की आवश्यकता है। आगे बढ़ने, अपने कौशल को उन्नत करने और नए अवसरों को अपनाने के लिए तैयार रहें। 2. डेटा साक्षरता और विश्लेषणात्मक कौशल हम डेटा-संचालित दुनिया में रहते हैं, और डेटा नया सोना है। हर निर्णय, हर रणनीति और हर नवाचार डेटा पर निर्भर करता है। फिर भी, 43त्न आईटी नेताओं का कहना है कि उनकी टीमों में एआई और मशीन लर्निंग में आवश्यक विशेषज्ञता का अभाव है। यह एक बहुत बड़ा अंतर और एक बड़ा अवसर है। आगे बढ़ने के लिए, आपको डेटा-साक्षर होने की आवश्यकता है। इसका मतलब केवल स्प्रेडशीट बनाने का तरीका जानने से कहीं अधिक है; इसका मतलब यह समझना है कि डेटा से अंतर्दृष्टि कैसे निकाली जाए, उन अंतर्दृष्टि की व्याख्या कैसे की जाए और निर्णय लेने के लिए उनका उपयोग कैसे किया जाए। इसका मतलब है कि डेटा विज़ुअलाइज़ेशन टूल के साथ कैसे काम करना है, सांख्यिकीय विश्लेषण करना और डेटा द्वारा बताई गई कहानियों को समझना। लेकिन बात यह है- डेटा साक्षरता केवल डेटा वैज्ञानिकों के लिए नहीं है। यह मार्केटिंग से लेकर वित्त और मानव संसाधन तक सभी के लिए है। यदि आप डेटा को समझ सकते हैं, तो आप नवाचार करने, प्रक्रियाओं को अनुकूलित करने और किसी भी भूमिका में मूल्य बनाने के नए तरीके खोज सकते हैं। 3. आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान जैसे-जैसे एआई डेटा एंट्री, शेड्यूलिंग और यहां तक कि ग्राहक सेवा के कुछ पहलुओं जैसे नियमित कार्यों को संभालता है, मानव कार्यबल को उन कार्यों को दोगुना करने की आवश्यकता होगी जो मशीनें नहीं कर सकती हैं- गंभीर रूप से सोचें और जटिल समस्याओं को हल करें। एआई पैटर्न या रुझानों की पहचान कर सकता है, लेकिन यह अस्पष्टता को दूर नहीं कर सकता है या मानवीय बारीकियों के आधार पर निर्णय नहीं ले सकता है। गंभीरसोच का अर्थ है धारणाओं पर सवाल उठाना, विभिन्न कोणों से जानकारी का विश्लेषण करना और तर्क और साक्ष्य के आधार पर निर्णय लेना। समस्या-समाधान चुनौतियों का नया समाधान खोजने के बारे में है - एक नई बाज़ार रणनीति, एक उत्पाद सुविधा, या एक जटिल परियोजना। ये कौशल भविष्य की मुद्रा हैं। वे आपको मूल्य जोड़ने, नवाचार को बढ़ावा देने और ऐसे समाधान बनाने की अनुमति देंगे जिन्हें एआई दोहरा नहीं सकता है। 4. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सहयोग एआई-संचालित दुनिया में जहां रोजमर्रा का 40त्न काम स्वचालित होगा, सहानुभूति, सक्रिय श्रवण और संघर्ष समाधान जैसे कौशल प्रमुख कारक बन जाएंगे जो किसी व्यक्ति की प्रतिस्पर्धात्मकता निर्धारित करेंगे। पेशेवरों को जटिल कार्यस्थल गतिशीलता को नेविगेट करने, मजबूत रिश्ते विकसित करने और सहकर्मियों, ग्राहकों और हितधारकों के साथ प्रभावी ढंग से सहयोग करने के लिए उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करनी चाहिए। 5 . नैतिक जागरूकता और वैश्विक समझ एआई सिर्फ नौकरियाँ नहीं बदल रहा है; यह दुनिया बदल रहा है . और इसके साथ ही नए नैतिक विचार भी आते हैं। जैसे-जैसे एआई व्यावसायिक प्रक्रियाओं में अधिक एकीकृत होता जा रहा है, पेशेवरों को डेटा गोपनीयता, एल्गोरिथम पूर्वाग्रह और स्वचालन के सामाजिक प्रभाव जैसे मुद्दों के बारे में पता होना चाहिए। व्यवसाय अब स्थानीय बाजारों तक ही सीमित नहीं हैं - वे विश्व स्तर पर संचालित होते हैं। विभिन्न संस्कृतियों, विनियमों और बाज़ार की गतिशीलता को समझना आवश्यक है। एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य ऐसी रणनीतियाँ बनाने में मदद करता है जो विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में समावेशी, नैतिक और प्रभावी हों। एआई की शक्ति जिम्मेदारी के साथ आती है। आपको यह सोचने की ज़रूरत है कि तकनीक का उपयोग कैसे किया जाता है, यह किसको प्रभावित करती है और इसके क्या अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, अपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताप और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष
हेल्थ का ध्यान रखने और खासकर बाहर के खाने-पीने से परहेज करने की सलाह आपको दी जाती है। आज आपमें क्रोध की मात्रा अधिक रहेगी, इसलिए वाणी में गुस्सा ना रखें। परिजनों से उग्र चर्चा के कारण मनमुटाव न हो।

वृष
स्वजनों एवं परिजनों के साथ विवाद हो सकता है। आय की अपेक्षा खर्च अधिक होगा और ज्यादा परिश्रम के बाद ही सफलता मिलेगी। दुर्घटना हो सकती है, सावधान रहें। आज आपका दिन बहुत लाभदायी है।

मिथुन
बाहर जाना हो सकता है। माता के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। सरकारी लाभ होगा एवं स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आज आप का दिन मध्यम फलदायी रहेगा। पहले से निर्धारित काम के लिए आपका प्रयास ज्यादा रहेगा।

कर्क
नौकरी में आपके अधिकारी खुश रहेंगे। आपकी पदोन्नति के योग हैं। अधिकारियों के साथ किसी महत्वपूर्ण बात पर चर्चा होगा। परिजनों के साथ खुले मन से बातचीत होगी। घर के डेकोरेशन पर कुछ खर्च हो सकता है। मित्रों से मुलाकात होगी। आज कोई नया काम शुरू ना करें।

सिंह
संतान पक्ष से अच्छे समाचार मिलेंगे। नौकरीपेशा लोगों से आपको लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। वैवाहिक सुख की अनुभूति होगी। आज का दिन आपके लिए अनुकूल है। आप आज हर काम सरलता से पूरे कर पाएंगे।

कन्या
आपका शारीरिक एवं मानसिक आरोग्य अच्छा रहेगा। जरूरी कामों पर धन खर्च होगा। बीमार व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। दफ्तर में सहकर्मियों का अच्छा साथ मिलेगा। महिलाओं के मायके से समाचार आने के योग हैं।

तुला
मित्र एवं प्रियजन आपके प्रवास को आनंद से भर देंगे। नए वस्त्रों की खरीदी के योग हैं। तन-मन की तंदुरस्ती अच्छी रहेगी। अच्छे भोजन एवं वैवाहिक सुख की अनुभूति होगी। आज आप के घर में सुख शांति और आनंद का माहौल रहेगा।

वृश्चिक
अविवाहितों को योग्य जीवनसाथी मिलने के योग हैं। धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। मित्रों से अचानक हुई मुलाकात आनंददायी रहेगी। मित्रों से लाभ होगा। आज आपको अच्छा खाना नसीब होगा। मित्रों से लाभ होगा।

धनु
आज धन का व्यय अधिक होगा। आज नियम विरुद्ध कामों से दूर रहें। आज आपका दिन आनंद-प्रमोद में गुजरेगा। रोमांस के लिए आज का दिन अच्छा है और किसी खास व्यक्ति का साथ आपको आनंद देगा।

मकर
माता से लाभ होने के संकेत आपको मिल रहे हैं। मित्र और संबंधियों से घर का वातावरण अच्छा रहेगा। आज अचानक होने वाली घटनाओं से आप चिंतित रहेंगे। स्वास्थ्य खराब होने और आंखों में दर्द होने की आशंका बनी रहेगी।

कुंभ
आज आपके धार्मिक एवं मांगलिक कामों में व्यस्त रहने की संभावना ज्यादा रहेगी। आप में आज क्रोध की मात्रा अधिक रहेगी, इसलिए आप सावधान ही रहें। संतान एवं व्यापार की परेशानियों के कारण आपका मन अशांत रहेगा।

मीन
आप तन-मन से स्वस्थ होकर कई तरह के काम आसानी से पूरे कर पाएंगे। सफलता मिलने से आपके उत्साह में वृद्धि होगी। आज भाग्य आपका साथ देगा। इनकम बढ़ेगी। परिजनों के साथ आनंद एवं उल्लास से समय गुजरेगा। धन लाभ होगा।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

देवीय शक्ति से सम्पन्न है मंगल का प्रतीक स्वस्तिक

-आत्माराम यादव पीव वरिष्ठ पत्रकार

जीवन में प्रत्येक मनुष्य चिरन्तन,सत्य, शास्वत शाति और अनन्त दिव्य सौन्दर्य को सहज ही प्राप्त करने के आशय से जन्म लेता है किन्तु वह दिव्यता और शुभसंस्कारों से पृथक आसुरी शक्तियों की शरण में रहकर अपने प्रारब्धमयी भाग्य से वंचित रह जाता है। यह संसार सदाचार सम्पन्न है जिसमें मनोभावों को व्यक्त करने या परिभाषित करने में व्यक्ति की चेष्टायें प्रतिफल अपने धर्म और स्वभाव का परित्याग कर उसे अधोगामी बनाती है, जबकि उसका जन्म उर्ध्वगामी मार्ग का अनुसरण कर परमस्वरूप को प्राप्ति के लिये हुआ है।जीवन की इस प्रासंगिकता को वेदों के ऋषियों ने अपनी दिव्यदृष्टि से आभासित कर लिया था तभी सत्य और शांति का संदेश देने के लिये किसी भावना से परे शब्दों में व्यक्त किये बिना मौन अभिव्यक्तिस्वरूप मांत्रिक प्रतीक जिस चिन्ह को अंकित कर पूजा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया गया वह स्वस्तिक था जो तभी से भारतीय संस्कृति में मंगल का प्रतीक के रूप में धर्म देवार्चन में अग्रणी स्थान प्राप्त किये हुये है। विश्व में भारत अनूठा देश है जहाँ स्वास्तिक सम्पन्न अग्रणी गौरवमयी अक्षुण्णता का प्रतिनिधित्व करने के लिये हम प्रतीक चिन्हों को पूर्णता प्रदान करके एक नया इतिहास रचते आये है, जिसमें स्वस्तिक चिन्ह हर शुभकार्य के लिये प्रथमस्थान पर पूज्य है तभी भारत ही नहीं अपितु दुनिया के अनेक देशों में स्वस्तिक को मांगलिक प्रतीक के रूप में स्वीकारा है।

स्वस्तिक का जन्म भारत में हुआ। भारत देश ही है जो वसुदेव कुटुम्बकम की भावना लिये सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की कामना करता है। स्वस्तिक का अर्थ ही होता है आशीर्वाद, मंगल या पुण्यकार्य की प्राप्ति कराने वाला। इतिहास के गर्भ में, विश्वका आदिसाहित्य ऋग्वेद की ऋचाओं में स्वस्तिक का प्रयोग सूर्य के रूप में मिलता है। स्वस्तिक शब्द सु अस.क से निर्मित है। सु का अर्थ-अच्छा, अस का अर्थ सत्ता या अस्तित्व और क का अर्थ कर्ता, करने वाला होता है। अतएव सिद्ध है स्वस्तिक का अर्थ-अच्छा करने वाला,मंगल करने वाला है। स्वस्ति मात्र उत पिने नो अस्तु, स्वस्ति गोम्यों जते पुरुषेभ्यः। विश्वं सुभूतं सुविन्नं, नो अस्तु जेगेव द्दशेम सूर्यम्।। अथर्ववेद 1.-31-4 की इस ऋचा का अर्थ है कि हमारी माता के लिये कल्याण हो। पिता के लिये कल्याण हो। हमारे गोधन के लिये मंगल हो। विश्व के समस्त प्राणियों का मंगल हो। हमारा यह सम्पूर्ण संसार उत्तम धन और उत्तम ज्ञान से सम्पन्न हो। हमलोग चिरकाल तक प्रतिदिन सूर्य के दर्शन करते रहे,हम दीर्घजीवी हों। वेद का ऋषि सत्य,शिव और सुन्दर के रंगमंच पर विराजित होकर सभ्यता के आदिकाल में स्वस्तिक को लेकर यह कहे तो निश्चित ही यह मांत्रिकसूत्र शोध-परिमार्जन के लिये एक चुनौती है। वेदों में प्रकाश,कल्याण,दीघार्यु की कामना के साथ स्वस्तिक विश्वजनीन प्रतीक होने से विलक्षण है। विलक्षणता इस बात से आभासित होती है कि स्वस्तिक को आयु, प्रकाश, सूर्य और आकाश का मूर्त वाङ्मय भी कहा जाकर इसकी चार भुजाओं को चार दिशाओं की उपमा दी गयी है। स्वस्तिक के मध्य को विष्णु की नाभि और चारों भुजाओं को ब्रम्हाजी के चार मुख माना है। स्वस्तिक की चार भुजाओं को सतयुग,त्रेता,द्वापर और कलयुग इन चार युगों की संज्ञा मिली है वही चार आश्रम, चार वर्ण, चार धाम के संकेतों का प्रतीक भी मानते है। स्वस्तिक की रूपरेखा और आकार प्रकार को लेकर योगी इस स्वस्तिक चिन्ह को हठयोग का आसन कहते है तो वहीं यह एक यांत्रिक स्वरूप में होने पर चतुष्पद अथवा चौराहा के लिये प्रयोग में लाया गया है। अनादि काल से स्वस्तिक भारतीय संस्कृति में मंगलप्रतीक का स्थान धारण किये जाने के कारण सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है तभी इस मांगलिक चिन्ह स्वस्तिक को गणेशपूजन से पूर्व ही विशेष अवसरों-उत्सवों आदि में अंकित किया जाकर पूजा जाता है। श्रीराम और श्रीकृष्ण के अवतार के समय यह प्रतीक चिन्ह स्वस्तिक उनके चरणों में भी अंकित होने के शुभाशुभ संकेत मिलते है।

स्वस्तिक की मांगलिक दिव्यता के दर्शन दो लकड़ियों में यज्ञ के प्रारम्भ में अग्नि पैदा करने के लिये किया जाता है जो स्वमेव ही स्वस्तिक को प्रकाश के प्रतीक का प्रमाण बन जाता है। श्रीरामचरित मानस में श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता को प्रगाढ़ता का लेपन करने के लिये हनुमान द्वारा इसी प्रकार दो लकड़ियों को धनाकार स्वरूप देते हुये घर्षण से अग्नि प्रज्जलित करने का उदाहरण भी स्वस्तिक को मैत्री अवसर पर दिखता है। विघ्नहर्ता गणेश की पूजा-अर्चना पर वैभवदात्री देवी लक्ष्मी के साथ शुभ-लाभ स्वस्तिक पूजा में होते है वहीं किसी भी ज्योतिषाचार्य द्वारा किसी भी जातक की जन्मकुण्डली बनाते समय, विवाह हेतु कुण्डली मिलान में ग्रहदिशा मिलने, शादी पत्रिका तैयार करने, विवाह आमंत्रण सहित सभी मांगलिक अवसरों पर सर्वप्रथम स्वस्तिक अंकन की शुभता विभूषित होती है। हिन्दू संस्कृति में सृष्टि के आदिकाल से स्वस्तिक कल्याण का वाचक रहा है विश्व की समस्त सभ्यजातियों में हिन्दू जाति अपना उपासना-पूजा-पाठ आदि में प्रतीकों को विशेष महत्व देती है जिसे समझने के लिये सीमित बुद्धिजीवों के लोगों के मस्तिष्क और जिव्हा के पंख झड़ जाते हैं, उस बीच के लिये स्वस्तिक प्रतीक का हाथ पकड़कर हिन्दू सरलता एवं सहजता से उसे हृदयंगम कर लेते है। स्वस्तिक, अग्नि और सूर्य भगवान के प्रतीक है तो जैन धर्म में एक दूसरे को परस्पर काटने वाली स्वस्तिक रेखायें पुरुष और प्रकृति , आत्मा और परमात्मा का प्रतीक है अतएव यह सिद्ध है कि दोनों रेखाओं के एक दूसरे को परस्पर काटने पर चार भाग होने पर निर्मित होने वाला स्वस्तिक ही सर्वश्रेष्ठ स्थान रखता है। जितना महत्वपूर्ण स्वस्तिक चिन्ह है उतना ही महत्व का स्वस्तिक मंत्र है जिसे हर मांगलिक अवसर पर स्वास्तिवाचन द्वारा उच्चारित किया जाता है-ओम स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। ओम शान्तिः शान्तिः शान्तिः। इस स्वस्तिक मंत्र का प्रयोग हर शुभ कार्य में, वैवाहिक मण्डप में, शगुन में, तिलक के अलावा हर षोड्स संस्कारों सहित हर मांगलिक कार्य के प्रारम्भ में स्वस्तिवाचन द्वारा सम्पन्न होता है। अनेक धर्मो में स्वस्तिक को मान्यता दी है। ईसाई धर्म में क्रास का चिन्ह स्वस्तिक का ही रूपान्तरण है। बोद्धों और जैनियों ने भी स्वस्तिक चिन्ह को महत्व देते हुये इसका प्रयोग किया है। अशोक के शिलालेखों में स्वस्तिक का प्रयोग मिलता है और जैन धर्म में भी इतिहासवेत्ताओं ने इसके प्रयोग को सराहा है। प्रायः दुनिया के सभी देशों में, अपनी-अपनी मान्यता एवं नियम के तहत स्वस्तिक को पूजनीय मानकर विश्वकल्याण की उपमा से विभूषित किया है। जैन धर्म में अक्षत पूजा के समय स्वस्तिक बनाकर तीन बिन्दु बनाते है जो देव, नरक, तिर्यक एवं मनुष्य का प्रतीक माने जाते है और बिन्दुओं को सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान एवं सम्यक चरित्र का एवं मध्य स्थान को मुक्ति का स्थान सिद्धशिला कहते है। ऐसे अनेक उदाहरण है जो स्वस्तिक के आदर्शो का गान करते मिलेगे तभी सत्य की प्राप्ति और शान्ति की अनुभूति के लिये स्वस्तिक विश्वकल्याण का प्रणेता बनने को तत्पर है। स्वस्तिक विश्वकल्याण का दूत है। स्वस्तिक हिन्दुओं का मांगलिक प्रतीक है तभी शास्वत शांति, चिरन्तन सत्य, और जनकल्याण के लिये स्वस्तिक के उपासक भारत के चरणों में नतमस्तक होकर हिन्दु संस्कृति के गीत गाये और दैवीय शक्ति से सम्पन्न स्वस्तिक विश्व का शांतिदूत बन जाये।

महान वास्तुकार थे भगवान विश्वकर्मा

-रमेश सर्राफ धमोरा

17 सितम्बर जयंती पर विशेष

हर वर्ष 17 सितम्बर को विश्वकर्मा जयंती मनायी जाती है। यह कन्या संक्राति पर पड़ता है। यह वह दिन है जब सूर्य सिंह राशि से कन्या राशि में प्रवेश करता है। हर साल 17 सितंबर को यह पूजा की जाती है। लेकिन इस बार लोगों के मन में 16 सितंबर को लेकर संशय बना हुआ है। इस बार सूर्य 16 सितंबर की शाम को 7 बजकर 29 मिनट पर कन्या राशि में प्रवेश कर रहे हैं। इसलिए विश्वकर्मा जयंती अगले दिन यानी कि 17 सितंबर को मनाई जाएगी।

विश्वकर्मा जयन्ती भारत के जम्मू कश्मीर, पंजाब, हिमाचल, हरयाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, असम, ओडिशा, त्रिपुरा, बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में मनायी जाती है। नेपाल में भी विश्वकर्मा पूजा को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। विश्वकर्मा के पूजन और उनके बताये वास्तुशास्त्र के नियमों का अनुपालन कर बनवाये गये मकान और दुकान शुभ फल देने वाले माने जाते हैं। इनमें कोई वास्तु दोष नहीं माना जाता।

विश्वकर्मा पूजा एक ऐसा त्योहार है जहां शिल्पकार, कारीगर, श्रमिक भगवान विश्वकर्मा का त्योंहार मनाते हैं। कहा जाता है कि भगवान ब्रह्मा के पुत्र विश्वकर्मा ने पूरे ब्रह्मांड का निर्माण किया था। विश्वकर्मा को देवताओं के महलों का वास्तुकार भी कहा जाता है। इसलिए भगवान विश्वकर्मा को दुनिया का सबसे पहला इंजीनियर और वास्तुकार माना जाता है। विश्वकर्मा दो शब्दों से विश्व (संसार या ब्रह्मांड) और कर्म (निमार्ता) से मिलकर बना है। इसलिए विश्वकर्मा शब्द का अर्थ है। दुनिया का निमार्ता यानि की दुनिया का निर्माण करने वाला। औद्योगिक श्रमिकों द्वारा इस दिन बेहतर भविष्य, सुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों और अपने-अपने क्षेत्र में सफलता के लिए प्रार्थना की जाती हैं। विश्वकर्मा जयन्ती के दिन देश के कई हिस्सों में काम बंद रखा जाता है और खूब पंतगबाजी की जाती है। विभिन्न प्रदेशों की सरकार विश्वकर्मा जयन्ती पर अपने कर्मचारियों को सावेतनिक अवकाश प्रदान करती है।

यह त्योहार मुख्य रूप से दुकानों, कारखानों और उद्योगों द्वारा मनाया जाता है। इस अवसर पर, कारखानों और औद्योगिक क्षेत्रों के श्रमिक अपने औजारों की पूजा करते हैं और भगवान विश्वकर्मा से उनकी आजीविका सुरक्षित रखने के लिए प्रार्थना करते हैं। वे मशीनों के सुचारू संचालन के लिए प्रार्थना करते हैं और विश्वकर्मा पूजा के दिन अपने उपकरणों का उपयोग करने से परहेज करते हैं।

विश्वकर्मा शिल्पशास्त्र के आविष्कारक और सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता माने जाते हैं। जिन्होंने विश्व के प्राचीनतम तकनीकी ग्रंथों की रचना की थी। इन ग्रंथों में न केवल भवन वास्तु विद्या, रथ आदि वाहनों के निर्माण बल्कि विभिन्न रत्नों के प्रभाव व उपयोग आदि का भी विवरण है। माना जाता है कि उन्होंने ही देवताओं के विमानों की रचना की थी। भगवान विश्वकर्मा की उत्पत्ति ऋग्वेद में हुई है। जिसमें उन्हें ब्रह्मांड (पृथ्वी और स्वर्ग) के निमार्ता के रूप में वर्णित किया गया है। भगवान विष्णु और शिव लिंगम की नाभि से उत्पन्न भगवान ब्रह्मा की अवधारणाएं विश्वकर्मण सूक्त पर आधारित हैं।

विश्वकर्मा प्रकाश को वास्तु तंत्र का अपूर्व ग्रंथ माना जाता है। इसमें अनुपम वास्तु विद्या को गणितीय सूत्रों के आधार पर प्रमाणित किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सभी पौराणिक संरचनाए भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित हैं। भगवान विश्वकर्मा के जन्म को देवताओं और राक्षसों के बीच हुए समुद्र मंथन से माना जाता है। पौराणिक युग के अस्त्र और शस्त्र भगवान विश्वकर्मा द्वारा ही निर्मित हैं।

विश्वकर्मा वैदिक देवता के रूप में सर्वमान्य हैं। इनको गृहस्थ आश्रम के लिए आवश्यक सुविधाओं का निमार्ता और प्रवर्तक भी कहा गया है। अपने विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान के कारण देव शिल्पी विश्वकर्मा मानव समुदाय ही नहीं वरन देवगणों द्वारा भी पूजित हैं। देवता, नर, असुर, यक्ष और गंधर्व सभी में उनके प्रति सम्मान का भाव है। भगवान विश्वकर्मा के पूजन- अर्चन किये बिना कोई भी तकनीकी कार्य शुभ नहीं माना जाता। इसी कारण विभिन्न कार्यों में प्रयुक्त होने वाले औजारों, कल-कारखानों और विभिन्न उद्योगों में लगी मशीनों का पूजन विश्वकर्मा जयंती पर किया जाता है।

धर्मग्रंथों में विश्वकर्मा को सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी का वंशज माना गया है। ब्रह्माजी के पुत्र धर्म तथा धर्म के पुत्र वास्तुदेव थे। जिन्हें शिल्प शास्त्र का आदि पुरुष माना जाता है। इन्हीं वास्तुदेव की अंगिरसी नामक पत्नी से विश्वकर्मा का जन्म हुआ। अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए विश्वकर्मा भी वास्तुकला के महान आचार्य बने। मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ इनके पुत्र हैं। इन पांचों पुत्रों को वास्तु शिल्प की अलग-अलग विधाओं में विशेषज्ञ माना जाता है। पौराणिक साक्ष्यों के मुताबिक स्वर्गलोक की इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरुणपुरी, कुबेरपुरी, असुरराज रावण की स्वर्ण नगरी लंका, भगवान श्रीकृष्ण की समुद्र नगरी द्वारिका और पांडवों की राजधानी हस्तिनापुर के निर्माण का श्रेय भी विश्वकर्मा को ही जाता है। पौराणिक कथाओं में इन उत्कृष्ट नगरियों के निर्माण के रोचक विवरण मिलते हैं। उड़ीसा का विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर तो विश्वकर्मा के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण माना जाता है। विष्णु पुराण में उल्लेख है कि जगन्नाथ मंदिर की अनुपम शिल्प रचना से खुश होकर भगवान विष्णु ने उन्हें शिल्पावतार के रूप में सम्मानित किया था।

महाभारत में पांडव जहां रहते थे उस स्थान को इंद्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था। इसका निर्माण भी विश्वकर्मा ने किया था। कौरव वंश के हस्तिनापुर और भगवान कृष्ण के द्वारका का निर्माण भी विश्वकर्मा ने ही किया था। सतयुग का स्वर्ग लोक, त्रेता युग की लंका, द्वापर की द्वारिका और कलयुग के हस्तिनापुर आदि के रचयिता विश्वकर्मा जी की पूजा अत्यन्त शुभकारी है। सृष्टि के प्रथम सूत्रधार, शिल्पकार और विश्व के पहले तकनीकी ग्रन्थ के रचयिता भगवान विश्वकर्मा ने देवताओं की रक्षा के लिये अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया था। विष्णु को चक्र, शिव को त्रिशूल, इंद्र को वज्र, हनुमान को गदा और कुबेर को पुष्पक विमान विश्वकर्मा ने ही प्रदान किये थे। सीता स्वयंवर में जिस धनुष को श्रीराम ने तोड़ा था वह भी विश्वकर्मा के हाथों बना था। जिस रथ पर निर्भर रह कर श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन संसार को भस्म करने की शक्ति रखते थे उसके निमार्ता विश्वकर्मा ही थे। पार्वती के विवाह के लिए जो मण्डप और वेदी बनाई गई थी वह भी विश्वकर्मा ने ही तैयार की थी।

माना जाता है कि विश्वकर्मा ने ही लंका का निर्माण किया था। इसके पीछे कहानी है कि शिव ने माता पार्वती के लिए एक महल का निर्माण करने के लिए भगवान विश्वकर्मा को कहा तो विश्वकर्मा ने सोने का महल बना दिया। इस महल के पूजन के दौरान भगवान शिव ने राजा रावण को आंमत्रित किया। रावण महल को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया और जब भगवान शिव ने उससे दक्षिणा में कुछ देने को कहा तो उसने महल ही मांग लिया। भगवान शिव ने उसे महल देकर वापस पर्वतों पर चले गए। विश्वकर्मा ने देवताओं के लिए, उड़ने वाले रथों का निर्माण किया था। विश्वकर्मा ने देवताओं के राजा इंद्र का हथियार वज्र का निर्माण किया था। वज्र को ऋषि दधीचि और अस्त्र की हड्डियों से बनाया गया है। भगवान कृष्ण का सुदर्शन चक्र उनकी शक्तिशाली रचनाओं में से एक था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस स्वतंत्रता दिवस के मौके पर कामगारों के लिए बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि विश्वकर्मा जयंती पर देश में एक नई योजना ह्यविश्वकर्मा योजनाह्व को लॉन्च किया जाएगा। इस योजना के तहत देश में फर्नीचर या लकड़ी का काम करने वाले, सैलून चलाने वाले, जूते बनाने वाले और मकान बनाने वाले कामगारों को आर्थिक मदद मुहैया कराई जाएगी। उन्होंने कहा विश्वकर्मा जयंती पर सरकार 13 से 15 हजार करोड़ रुपये की एक योजना को लॉन्च करेंगी। इस तरह उन लोगों की सहायता हो सकेगी जो परांपरिक तरीके से कौशल से अपनी जीवका चलाते है। ये अपना भरणपोषण औजारों और हाथ से काम करके करते है। उन्होंने कहा कि इनमें सुनार हों, राजमिस्त्री हों, कपड़े धोने वाले हों या बाल काटने वाले के परिवार हों। ऐसे लोगों को इस योजना से आर्थिक ताकत प्रदान की जा सकेगी।

आर्थिक तंत्र पर बोझ बनती प्राकृतिक विपदाएं

संजीव ठाकुर

आपदा सदैव अनअपेक्षित घटना होती है। जो मानवीय नियंत्रण से सदैव से बाहर होती है। प्राकृतिक आपदा अल्प समय में बिना किसी पूर्व सूचना के घटित होती है, जिससे मानव जीवन के सारे क्रियाकलाप अवरुद्ध हो कर,जान और माल की बड़ी हानि होती है। आर्थिक तंत्र,विकास नष्ट हो जाते हैं। आपदा की विद्रूपता, भयानक स्वरूप एवं निरंतरता मानव जीवन और समाज और देश को बड़ी हानि पहुंचाकर उस देश की आर्थिक स्थिति में गहरी चोट करते हैं राष्ट्र को आर्थिक रूप से बहुत पीछे खींच कर ले जाते हैं।

आपदा प्रबंधन में जापान से सीख ली जा सकती है। क्योंकि जापान आपदा प्रबंधन में विश्व में अग्रणी देश माना जाता है। जापान पृथ्वी के ऐसे क्षेत्र में अवस्थित है, जहां भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाएं सदैव आती रहती हैं। जापान में आपदा प्रबंधन की अत्याधुनिक तकनीक को याकोहामा रणनीति कहा जाता है। जापान में आपदा प्रबंधन की साल भर नियमित रूप से मॉनिटरिंग कर एक्सरसाइज की जाती रहती है, एवं आपदाओं पर निरंतर निगरानी तथा नजर रखी जाती है,एवं इसके निदान के लिए पूर्व से ही सुनियोजित योजना बनाकर नागरिकों को सुरक्षित कर लिया जाता है। भारत को भी इसी तरह आपदा प्रबंधन को अपनाकर अन्य आपदाओं के साथ सतर्क होकर कार्रवाई की जानी चाहिए।

आपदाओं के प्रति मानवीय सभ्यता के संदर्भ में समाज के आर्थिक सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग को ज्यादा प्रभावित करती है एवं समाज का सबसे संवेदनशील तबका यानी वृद्ध व्यक्ति, महिलाएं, बच्चों, दिव्यांग लोगों को प्राकृतिक आपदाओं से सबसे ज्यादा खतरा बना रहता है। आपदा के समय सबसे ज्यादा निम्न आय वर्ग के व्यक्ति तथा मजदूर तबके के व्यक्ति प्रभावित होते हैं उनकी दिनचर्या सामूहिक रूप से छिन्न-भिन्न हो जाती है आर्थिक साधन भी नष्ट हो जाते हैं, जिससे उसे आजीविका की एक बड़ी विडंबना सताने लगती है।

भारत के भू भाग का लगभग 58% क्षेत्र भूकंप की संभावना वाला क्षेत्र है, जिसमें हिमालयन क्षेत्र,पूर्वोत्तर राज्य, गुजरात का कुछ क्षेत्र, अंडमान निकोबार द्वीप समूह भूकंप की दृष्टि से सबसे संवेदनशील रहे हैं। देश के 65 से 68% भूभाग पर कभी कम कभी ज्यादा भीषण रूप से सूखा पड़ता है। इसी तरह भारत के पश्चिमी और प्रायद्वीपीय राज्य में मुख्यतः शुष्क तथा अर्ध शुष्क न्यून नमी वाले क्षेत्र सूखे से सदैव प्रभावित रहते हैं। बाढ़ से प्रभावित भूमि का विस्तार क्षेत्र देश का 12% है, यानी 7 करोड़ हेक्टेयर जमीन में भूकंप आने की संभावना सदैव बनी रहती है। हिमालय क्षेत्र देश के पर्वतीय क्षेत्र में भूस्खलन की गंभीर समस्या की संभावना सदैव बनी रहती है। देश के विशाल तटवर्ती क्षेत्र में चक्रवात तथा सुनामी की भयावह स्थिति की संभावना रहती है भारत ने विश्व के साथ-साथ करोना संक्रमण की भयानक महामारी से प्रभावित होकर हजारों लाखों नागरिकों की जान गवा कर इस आपदा से जंग लडी है, यह कोविड-19 की महामारी या आपदा प्राकृतिक है या मानव निर्मित यह तो भविष्य ही बताएगा, किंतु इस महामारी ने पूरे वैश्विक स्तर पर आकस्मिक रूप से मानव जीवन में मृत्यु का तांडव मचा के रख दिया था। ऐसी ही अनपेक्षित आपदाओं का पूर्वानुमान अथवा आकलन किया जाना पहले से संभव नहीं हो सकता है। ऐसे में राष्ट्रीय अन्य योजनाओं के साथ-साथ आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अत्यधिक सावधानी पूर्वक योजना तथा विभाग बनाने चाहिए, देश में जापान जैसे देश की तरह आपदा प्रबंधन से निपटने के लिए अत्याधुनिक आपदा प्रबंधन सिस्टम को तैनात कर तैयार रखने की आवश्यकता होगी।

भारत को आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विभाग को चुस्त-दुरुस्त तथा अत्याधुनिक तकनीक से युक्त रखने की आवश्यकता है। तूफानी चक्र वात, सुनामी, भूस्खलन, भूकंप, सूखा बाढ़ के अलावा अब कोविड-19 यानी करोना संक्रमण जैसी खतरनाक बीमारियां भारत देश को अपना निशाना बना कर रखा है ऐसे में भारत में मध्यम दर्जे का या निम्न दर्जे का आपदा प्रबंधन सिस्टम किसी भी काम का ना रहेगा, एवं इससे भारी जानमाल की हानि होने की संभावना सदैव बनी रहेगी। भारत में आपदा प्रबंधन के लिए 1990 में कृषि मंत्रालय के अंतर्गत डिजास्टर मैनेजमेंट सेल स्थापित किया गया था। लेकिन 1993 में लातूर के भूकंप तथा 1998 में मालपा के भूस्खलन तथा 1999 में ओडिशा में सुपर साइक्लोन तथा 2001 में भुज के भूकंप के बाद देश में एक मजबूत आपदा प्रबंधन की व्यवस्था की जरूरत को महसूस करते हुए जे,सी, पंत जी की अध्यक्षता में हाई पावर कमेटी की रिपोर्ट में एक सुव्यवस्थित तथा व्यापक सिस्टम तथा विभाग की स्थापना की आवश्यकता प्रतिवेदित की गई थी। 2002 में आपदा को देश की आंतरिक सुरक्षा का मामला मानते हुए आपदा को गृह मंत्रालय के अंतर्गत समाविष्ट किया गया। आपदा प्रबंधन के इतिहास में 2005 में एक बड़ा परिवर्तन लाया गया भारत सरकार ने आपदा को अपनी कार्ययोजना के एक चक्रीय क्रम के रूप में प्रबंधित किया, जिसमें आपदा आ जाने के बाद इसके बचाव, नुकसान की भरपाई, निदान तथा आपदा आने के पूर्व की तैयारी तथा योजना को मूर्त रूप देने का एक सुनियोजित तरीका तैयार किया गया था। आपदा से खतरे का स्तर सभी इंसानों के लिए सदैव एक जैसा होता है। किंतु समाज के विभिन्न वर्गों में खतरे से निपटने तथा जूझने की क्षमता अलग-अलग होती है। निम्न वर्ग का तबका अन्य लोगों की अपेक्षा आपदा से ज्यादा प्रभावित होता है। अतः सरकार को गरीब तथा वंचित वर्ग के तबके के लिए आपदा प्रबंधन में विशेष प्रावधान किया जाना चाहिए। आपदाओं के प्रबंधन एवं अनुसंधान व त्वरित कार्रवाई के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान तथा राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल का गठन किया गया है। यह आपदा राशि कार्रवाई बल पर किसी खतरनाक आपदा की स्थिति में रासायनिक, जैविक, परमाणु विकिरण तथा अन्य प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदा के संबंध में विशिष्ट कार्यवाही के निर्वहन का उत्तरदायित्व है। इस संस्था ने बंगाल तथा उड़ीसा के तटीय क्षेत्र में आई सुनामी में काफी बड़ी संख्या में लोगों की जान भी बचाई है। चक्रवाती तूफान से निपटने में हमारे समुचित प्रयासों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हाल के वर्षों में आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। परंतु पिछले 3 वर्षों से करोना संक्रमण से हुई बड़ी संख्या में मृत्यु ने देश को हिला कर रख दिया था।अगर आपदा प्रबंधन सिस्टम को लगातार मॉनिटर किया जाता एवं उस सिस्टम के अधिकारी जिम्मेदार व्यक्ति सचेत एवं सजग रहते, तो द्वितीय लहर में इस तरह हड़कंप संक्रमण एवं मृत्यु का सामना नहीं करना पड़ता। भारत को आपदा प्रबंधन के सिस्टम पर फिर से आंकलन कर एक नई व्यूह रचना बनाकर गरीब तबके निचले व्यक्ति तथा समग्र रूप से मानव जाति की सुरक्षा के लिए नए-नए उपाय करने चाहिए क्योंकि आपदा कभी बताकर नहीं आती है।

जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावः विमर्श के विषय

कभी किसी जमाने की बात याद है न?! जब प्रत्येक राष्ट्रीय कानून, प्रस्ताव, प्रावधान आदि पर लिखा जाता था Except Jammu and Kashmir- जम्मू और कश्मीर को छोड़कर!! अब देश में वैसा नहीं होता है। अब जम्मू कश्मीर शेष भारत के नवनिर्माण में सहयोग दे रहा है। आज का कश्मीर नये भारत का नया कश्मीर है।

जिस कश्मीर में दशकों तक ऐसा आतंकी वातावरण रहा कि वहाँ भारतीय भी जाने की कल्पना नहीं करते थे उस कश्मीर में मोदी सरकार ने जी ट्वेंटी का सम्मेलन करवा दिया, यही नया कश्मीर है।

अनुच्छेद 370 को इस प्रदेश की नियति मानने और बताने वाले लोग वस्तुतः बदनियत लोग थे, ये अब मुख्यधारा से बाहर हैं। कांग्रेस ने भी फारूख अब्दुल्ला और उसके अन्य प्रिय कश्मीरी अलगाववादियों, उग्रवादियों व आतंकवादियों के साथ चलते हुए अनुच्छेद 370 हटाने का विरोध किया था। 370 के उन्मूलन के बाद एक बना था, गुपकार गठबंधन। अब्दुल्ला परिवार व कांग्रेस इस गुपकार गठबंधन के प्रमुख चट्टे-बट्टे थे। ये चाहते है कि 370 कश्मीर में पुनर्स्थापित हो। अनुच्छेद 370 के संदर्भ में आज कांग्रेस की स्थिति साँप-छछून्दर के जैसी है। कश्मीर में वह अलगाववादियों, उग्रवादियों, आतंकियों, देश विरोधियों के साथ खड़े होकर 370 की पक्षधर दिखती है। यही कांग्रेस शेष भारत में अपनी इस केंचुली को उतारकर 370 के विषय में दोहरे चरित्र की बात करती है। जब समूचा भारत देश अनुच्छेद 370 के उन्मूलन को लेकर प्रसन्न हो रहा था तब कांग्रेस देश की इस प्रसन्नता से अलग होकर मुँह फुलाए बैठी थी। कांग्रेसी अभिषेक सिंघवी ने तब कहा था कि "प्रथम दृष्टया, हम 370 को निरस्त करने के तरीकों पर निर्णय से असहमत हैं!" 6 अगस्त, 2019 को कांग्रेस की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक में, अनुच्छेद 370 को निरस्त करने लेकर मोदी सरकार पर हमला किया था। इस बैठक में उसने370 का सम्मान करते रहने का प्रस्ताव पारित किया था। ऐसा विरोध भला देश विरोध नहीं तो और क्या था?! शेष राष्ट्र के सामने कांग्रेस अपने दोहरे चरित्र पर बड़ी बेशर्मी से स्वयं को ह्यगुपकार गैंग से अलग बताती है। यही कांग्रेस अनुच्छेद 370 हटने के ठीक एक दिन पूर्व फारूक अब्दुल्ला के निवास पर पीडीपी सहित कई अन्य अलगाववादियों के साथ गले में हाथ डालकर बैठी थी और अनुच्छेद 370 के पक्ष में संयुक्त वक्तव्य जारी कर रही थी। यही कांग्रेस, अनुच्छेद 370 के हटने के एक वर्ष बाद भी कश्मीर में पुनः गुपकार रोड पर पुनः इन उग्रवादियों के साथ खड़ी दिखाई देती है। कांग्रेस, अब्दुल्ला और पीडीपी वाले इस अलगाववादी गठबंधन ने एक वर्ष बाद भी यह कहा था कि- अनुच्छेद 370 और 35 को पुनर्स्थापित करने हेतु ये लोग प्रतिबद्ध हैं। कश्मीर के इस विधानसभा चुनाव में कश्मीर की जनता को कांग्रेस से यह पूछना चाहिए कि कश्मीर छोड़कर शेष राष्ट्र में वह अनुच्छेद 370 को हटाने के पक्ष में क्यों खड़ी दिखती है? ये दोहरा चरित्र क्यों है?! शेष राष्ट्र में वह अब्दुल्ला व मुफ्ती परिवार से दूरी का प्रदर्शन करती है और अब विस चुनाव भी उनके साथ ही लड़ती है। कश्मीर की जनता को इन दोहरे और डुप्लीकेट चरित्र वाले लोगों का बहिष्कार करना चाहिये। गुपकार गठबंधन स्पष्ट तौर पर विदेशी शक्तियों का एक Bomb Toy है और कांग्रेस, अब्दुल्ला, पीडीपी इसके साथ खड़े हुए हैं।

डॉ. पंडित श्यामाप्रसाद मुखर्जी के संकल्प ह्यएक देश, एक विधान, एक प्रधानह्व के संकल्प को शिरोधार्य किए हुए भाजपा ने अपनी संकल्पशक्ति से भारत के मुकुटमणि को 370 व 35 ए के दंश से मुक्ति दिलाई है। कश्मीर का विकास अब शेष देश के समान आगे बढ़ता हुआ दिखता है। वर्ष 2020-21 में 15वें वित्त आयोग की अनुशंसा के अनुसार, जम्मू और कश्मीर प्रदेश एवं लद्दाख हेतु क्रमशः 30757 करोड़ रु. और 5959 करोड़ रु. का अनुदान दिया गया है। भाजपा की केंद्र सरकार ने कश्मीर में लोकतंत्र को पुनर्जीवित किया है। वर्ष 2018 में भाजपा की संकल्प शक्ति से कश्मीर में पंचायत चुनाव हुए, जिसमें 74.1 प्रतिशत मतदान हुआ, वर्ष 2019 में ह्यब्लॉक डेवलपमेंट काउंसिल चुनाव में 98.3 प्रतिशत मतदान हुआ। इसके बाद जिला स्तर के चुनाव में भी यही गाथा दिहराई गई। आज कश्मीर में आयुष्मान योजना से 4.4 लाख लाभार्थियों की सूची बन गई है। प्रधानमंत्री किसान योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना ने कश्मीर में देश के शेष राज्यों की अपेक्षा अधिक सफलता अर्जित की है। कश्मीर के मूल निवासियों के अधिकारों को सुरक्षित किया गया है। नई मूल निवासी परिभाषा के अनुसार 15 वर्ष या अधिक समय तक जम्मू-कश्मीर में रहने वाले व्यक्ति भी अब अधिवासी माने जाएंगे इससे कश्मीर की जनता सुरक्षित हुई है। कश्मीरी पंडितों की वापसी के लिए छः हजार आवासों का निर्माण हो गया है। जम्मू-कश्मीर से बाहर विवाह करने वाली लड़कियों और उनके बच्चों के अधिकारों का संरक्षण भी सुनिश्चित किया गया है। कश्मीर में पहली बार दस हजार रिक्त नौकरियों को सूचीबद्ध करके इन पर नियुक्तियों का कार्य प्रारंभ किया गया है। इसके दूसरे चरण में लगभग साढ़े बारह हजार नौकरियों हेतु भर्ती अभियान चलाया गया है। मोदी सरकार ने कश्मीर में हिमायत योजना से लगभग नब्बे हजार युवाओं को प्रशिक्षण दिया है। भाजपा की केंद्र सरकार ने पचास नये महाविद्यालय प्रारंभ किए हैं जिसमें लगभग सात हजार कश्मीरी छात्र नये कश्मीर का भाग्य रहे हैं। सात मेडिकल कॉलेज व पाँच नर्सिंग कॉलेज प्रारंभ किए गए हैं। आईआईटी जम्मू को अपना कैंपस और एम्स की भेंट मिली है। अटल टनल प्रारंभ होने के साथ साथ चिनाब पर विश्व का सबसे ऊंचा 467 मीटर का पुल अब कश्मीर को वैश्विक नक्शे पर एक आतंकग्रस्त नहीं अपितु एक विकसित प्रदेश के रूप में दिखाता है। कश्मीर में आज ऐसी कई नई-नई योजनाएं प्रारंभ हो रहीं हैं। एक समय था जब कश्मीर के जंगल उजाड़कर देश भर में बनने वाली पेंसिल की लकड़ी पुलवामा से जाती थी। आज मोदी सरकार की कल्पनाशीलता से पुलवामा का उक्खूँ गाँव देश भर की पेंसिल खपत की लगभग नब्बे प्रतिशत पेंसिल और बड़ी मात्रा में क्रिकेट बैट सप्लाई करके अपने उत्पाद का उच्चतम मूल्य प्राप्त कर रहा है और सबसे बड़ी इसके लिए वह अपने अमूल्य देवदार के वृक्षों को भी नहीं काटकर पर्यावरण सुरक्षा भी कर रहा है। पहले कश्मीर से पेंसिल की लकड़ी जाती थी, अब वैल्यू एडिशन के साथ पेंसिल जाती है और स्थानीय बहुमूल्य लकड़ी भी नहीं काटी जा रही है।

कश्मीर में दस वर्षों बाद होने जा रहे विस चुनावों में भाजपा का स्पष्ट कहना है कि वह कश्मीर को रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियों से मुक्ति दिलायेगी और कश्मीर को कश्मीरियत सुरक्षित रखेगी। जम्मू व श्रीनगर में मेट्रो रेल प्रारंभ होगी। किसानों का बिजली बिल आधा ही लिया जाएगा। सौ हिंदू मंदिरों का पुनर्निर्माण करके कश्मीरी संस्कृति को सुरक्षित किया जाएगा। भाजपा प्रत्येक कश्मीरी महिला को अठ्ठारह हजार रुपये प्रतिवर्ष व प्रति वर्ष दो गैस सिलेंडर भी निःशुल्क देगी। वृद्धावस्था, विधवा और विकलांगता पेंशन को एक से तीन हजार रुपये कर दिया जाएगा।

कश्मीर में पांच अगस्त 2019 के पश्चात जो नया अध्याय प्रारंभ हुआ था उसमे लगभग तीन वर्षों का कोरोना कालखंड का दंश भी शामिल है। कोरोना के बाद भी कश्मीरी पर्यटन आज सफलता के नये आयाम छू रहा है तो इसके पीछे दिल्ली और श्रीनगर में स्थापित नये शक्ति-सूत्र ही कार्य कर रहें हैं। इस विधानसभा चुनाव में कश्मीर की जनता दिल्ली को और अधिक मजबूती से पकड़ेगी और नये युग का आरंभ करेगी ऐसी आशा है।

-प्रवीण गुगनानी

प्रधानमंत्री की गणेश पूजा में उपस्थिति के संदर्भ को समझें

भारत के प्रधानमंत्री द्वारा भारत के मुख्य न्यायाधीश के निवास पर गणेश पूजा में भाग लेना एक ऐसा कार्य है जिसे आलोचना का पात्र बनने वाली घटना की बजाय सम्मान और एकता के प्रतीक के रूप में देखा जाना चाहिए। भारतीय शासन की जटिल संरचना में, जहां न्यायपालिका और कार्यपालिका अलग-अलग लेकिन परस्पर निर्भर स्तंभों के रूप में कार्य करती हैं, ऐसे संकेत राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक सद्भाव को दर्शाते हैं।

न्यायपालिका और कार्यपालिका भारतीय लोकतंत्र के 2 महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। हालांकि वे अपने कार्यों में अलग-अलग हैं, लेकिन उनका उद्देश्य एक समान है संविधान का संरक्षण और लोगों का कल्याण। कार्यपालिका के प्रमुख के रूप में प्रधानमंत्री और न्यायपालिका के प्रमुख के रूप में भारत के मुख्य न्यायाधीश, सरकार की 2 महत्वपूर्ण शाखाओं के नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी व्यक्तिगत या धार्मिक घटनाओं में भागीदारी देश के शासन में उनकी संबंधित भूमिकाओं के प्रति आपसी सम्मान और समझ को दर्शाती है। भारत के मुख्य न्यायाधीश के आवास पर गणेश पूजा में प्रधानमंत्री की भागीदारी के आलोचकों को याद रखना चाहिए कि गणपति पूजा करना कोई अपराध नहीं है, बल्कि यह भारत के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का एक गहरा हिस्सा है। गणेश पूजा का महत्व, खासकर जब महान स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक द्वारा इसके पुनरुद्धार के लेंस के माध्यम से देखा जाता है, तो यह इसके गहरे उद्देश्यों एकता, राष्ट्रवाद और सामूहिक शक्ति की याद दिलाता है। भारतीय परंपरा में, कर्ता शब्द का अर्थ परिवार के मुखिया या प्रबंधक से है, जो पूरे परिवार की भलाई के लिए जिम्मेदार होता है। इसी तरह, प्रधानमंत्री और मुख्य न्यायाधीश अपने-अपने क्षेत्रों कार्यपालिका और न्यायपालिका के कर्ता के रूप में कार्य करते हैं। जबकि उनकी भूमिकाएं अलग-अलग हैं, उनके उद्देश्य अक्सर एक जैसे होते हैं, खासकर राष्ट्रीय हित, कानून और न्याय के मामलों में।

www.uttarshakti.com epaper

क्रूरतम और वीभत्स मुकाम मानव विवेक के लिए स्वीकार करना नामुमकिन

लोग जब बलात्कार जैसी घटना को नजारे की तरह देखने लगें, तो निशब्द होने के अलावा किसी विवेकशील व्यक्ति के पास और क्या बच जाता है? उज्जैन में जो दिखा, उसे मानवीय चेतना पर प्रहार के अलावा और क्या कहा जा सकता है? उज्जैन में जो हुआ, मानव विवेक के लिए उसे सहज स्वीकार करना नामुमकिन है। कोई मुजरिम सरेआम फुटपाथ पर बलात्कार करे, यही अपने-आप में आहत करने वाली बात है। उससे भी ज्यादा संवेदना को चोटिल करने वाला पहलू यह है कि राहगीर उसे देखते रहें, उनमें से कुछ अपने स्मार्टफोन पर वीडियो बनाएं, और फिर वीडियो को कुछ बड़ा हासिल कर लेने जैसे भाव के साथ सोशल मीडिया पर अपलोड करें! घटना को रोकने की कोशिश तो दूर, उन दर्शकों में से कोई ऐसा नहीं निकला जो कम-से-कम शोर मचाता या पुलिस हेल्पलाइन नंबर पर फोन करता। यहां तक कि घटना हो जाने के बाद भी किसी ने पुलिस को सूचना देने की जरूरत नहीं समझी! लोग जब बलात्कार जैसी घटना को नजारे की तरह देखने लगें, तो निशब्द होने के अलावा किसी विवेकशील व्यक्ति के पास और क्या बच जाता है? ऐसी घटनाएं पहले हत्या और दूसरे अपराधों के मामले में हुई हैं। आपदा एवं मानवीय त्रासदी के कई मौकों पर भी देखा गया है कि लोग पीड़ित की मदद करने के बजाय वीडियो बनाने और उसे सोशल मीडिया पर डालने में मशगूल रहे। यह बेहिचक कहा जा सकता है कि उज्जैन में यह ट्रेंड अपने क्रूरतम और वीभत्स मुकाम तक पहुंच गया। बलात्कार जैसे सिरे से अस्वीकार्य जुर्म के समय भी लोगों की संवेदना इतनी कुंद पड़ी रहे, तो फिर न्याय या व्यवहार में मानवीयता बने रहने की कितनी उम्मीद बची रहेगी? इस सामाजिक मनोविज्ञान के बीच ये समझना आसान हो जाता है कि क्यों पिछले दस वर्षों में कानून के राज को निष्प्रभावी करने का एक राजनीतिक प्रयोजन बिना किसी सार्थक प्रतिरोध के आगे बढ़ता चला गया है। मगर, यह लोगों को समझना चाहिए कि जिस तरह वे जघन्यतम अपराधों के सामने भी असंवेदनहीन होते जा रहे हैं, उसका परिणाम देर-सबेर सबको भुगतना होगा। सामाजिक चेतना ही कानून और कानून लागू करने वाली एजेंसियों का प्रेरक तत्व होती है। इसका अभाव समाज को अराजकता और फिर बर्बरता की तरफ ले जाता है। उज्जैन में आखिर जो दिखा, उसे मानवीय चेतना पर प्रहार के अलावा और क्या कहा जा सकता है?

जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव

कुछ राज्यों में विधानसभा चुनाव होते हैं । अभी मात्र हरियाणा और जम्मूकश्मीर में चुनाव की तारीखों का ऐलान हुआ है । पिछली बार महाराष्ट्र के चुनाव हरियाणा के साथ हुये थे । महाराष्ट्र की विधानसभा हरियाणा की विधानसभा के 22-23 डिन बाद खत्म हो जायेगी । विपक्षी दल आरोप लगा रहे हैं कि महाराष्ट्र में सत्ताधारी तीन पार्टियों के बीच सीट बंटवारे को लेकर उलझ है । असल में अभी शिवसेना (शिंदे) का मुख्यमंत्री है । देवेन्द्र फडणवीस पूरे मुख्यमंत्री थे । परन्तु केन्द्र के निर्देश पर पुणे उपमुख्यमंत्री पद संभालना पड़ रहा है । अजित गुट भी अभी त्रिशंकु की स्थिति में हैं । उसका कोई नुमाइंदा केन्द्रीय मंत्रिमंडल में जगह नहीं पा सका है । भाजपा चाहती है कि महाराष्ट्र में उनकी पार्टी का मुख्यमंत्री हों । यह शिंदे गुट को पसंद नहीं आयेगा । तो वह असमंजस में है । शिंदे गुट कांग्रेस या शरद गुट एन.सी.पी. से समझौता नहीं कर सकती । अजित गुट इतनी सीटें नहीं जीतेगा कि वह गठबंधन करके सरकार बना लें । पिछले दिनों गृहमंत्री अमित शाह दो दिन के दौरे पर जम्मू कश्मीर रही थे । उन्होंने घोषणा की है कि अगली सरकार उनकी ही बनेगी । असल में उन्हें जम्मू के हिन्दू वोटों पर भरोसा है । कश्मीर में तो उन्होंने पहले चरण के चुनाव में पांच-सात सीटों पर अपना उम्मीदवार ही नहीं खड़ा किया है । असल में वहां हिन्दू उम्मीदवार मिलना कठिन है । मिल भी जाए तो वह जीतेगा नहीं और मुसलमान उनकी पार्टी में बड़ी संख्या में शामिल नहीं है । जो मुसलमान भाजपा में शामिल हैं, उनके बहुत बड़ा वोट बैंक नहीं है । यही बीजेपी की दुविधा है । जिस प्रकार योगी आदित्यनाथ और डॉ. मोहन यादव हिन्दुत्व की बात करते हैं उस सिद्धांत को देखते हुए भी ज्यादा मुसलमान भाजपा में नहीं जायेंगे । गुलाम नबी आजाद से भाजपा गठबंधन कर सकती है, परन्तु गुलाम नबी आजाद काफी ज्यादा सीटें नहीं जीत पाएंगे । उनकी पार्टी के पास काडर ही नहीं है । लगता है कि वे अकेले उसे पार्टी के सर्वेसर्वा हैं । गृहमंत्री ने कहा है कि उनकी पार्टी की सरकार बनने पर हिन्दू पंडितों की वापसी होगी और पर्यटन में बढ़ावा देकर रोजगार सर्जित होंगे । अब पांच साल से 370 हटने के बाद उपराज्यपाल सरकार चला रहे हैं । तो इन पांच सालों में कितने कश्मीरी पंडितों की वापसी हुई है । जहां तक पर्यटन का सवाल है आप कश्मीर में.ए.सी. चलने लगे हैं तो पर्यटक क्यों कश्मीर जायेंगे । वैसे भी वहां बाहरी लोग आतंकवादियों की निशाने पर हैं, तो लोग आशंकित रहते हैं । असल में प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ के कारण न केवल कश्मीर बल्कि मसूरी, नैनीताल में भी अब लोग पंखे चलाते हैं । शायद अगले कुछ सालों में ए.सी. भी चलने लगे । कश्मीर में सेब की उपज भी कम हो रही है । अतः पर्यटन अब ज्यादा संख्या में कश्मीर का रुख नहीं करेंगे । बेरोज़गारी पूरे भारत की समस्या है ।

बुढ़ापे का स्वास्थ्य सुरक्षा कवच बनाने की सराहनीय पहल

आरती कुमारी

केंद्र सरकार ने अब सत्तर साल से ऊपर के सभी वरिष्ठ नागरिकों को 'आयुष्मान भारत' योजना में शामिल करने का निर्णय लिया है, जो सुखद एवं स्वागतयोग्य कदम है। अपने देश के करीब साढ़े चार करोड़ परिवार के छह करोड़ बुजुर्ग इस योजना के अंतर्गत मुफ्त इलाज करा सकेंगे। दरअसल वर्ष 2018 में शुरू हुई आयुष्मान भारत योजना में अब तक केवल गरीब परिवार ही शामिल हो सकते थे, जिन्हें पांच लाख का कैशलेस कवर दिया जाता था। अब इस सार्वभौमिक स्वास्थ्य योजना का लाभ सभी बुजुर्गों को दिया जाएगा। इस योजना से हम एक ऐसी दुनिया बना सकेंगे जहाँ हर बुजुर्ग अपने बुढ़ापे को गरिमा, आत्मसम्मान, सुरक्षा और स्वस्थता के साथ जी सकेंगे। इसके लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी जनकल्याणकारी सरकार को साधुवाद दिया जाना चाहिए। पारिवारिक एवं सामाजिक घोर उपेक्षा एवं उदासीनता के कारण बुढ़ापा अपने आप में एक रोग ही बनता गया है। जब आय के स्रोत सिमट जाते हैं और बच्चों से पर्याप्त मदद नहीं मिलती तो शरीर में रोग दस्तक देने लगते हैं, फिर महंगे इलाज की चिंता और बढ़ जाती है। संयुक्त परिवारों के विघटन और एकल परिवारों के बढ़ते चलन ने इस स्थिति को नियंत्रण से बाहर कर दिया है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार की नयी पहल का बेहतर तरीके से क्रियान्वयन हुआ तो यह फैसला इस आयुवर्ग के बुजुर्गों की सेहत को लेकर सुरक्षा कवच का काम करेगा। यह जरूरत इसलिए भी महसूस की जा रही थी क्योंकि आने वाले बीस वर्ष में भारत की बुजुर्ग आबादी तीन गुना होने की संभावना है। नये भारत-विकसित भारत की उन्नत एवं आदर्श संरचना बिना वृद्धों की सम्मानजनक स्थिति के संभव नहीं है। यदि परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रुग्णावस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण-पोषण एवं उचित स्वास्थ्य-सेवाओं को तरस रहे हैं तो यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं शर्म का विषय है। वर्तमान युग की बड़ी विडम्बना एवं विसंगति है कि वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, वृद्धों की उपेक्षा स्वस्थ एवं सुसंस्कृत परिवार परम्परा पर तो काला दाग है ही, शासन-व्यवस्थाओं के लिये भी लज्जाजनक है। हम सुविधावादी एकांगी एवं संकीर्ण सोच की तंग गलियों में भटक रहे हैं तभी वृद्धों की आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहशत है, दिल में अन्तहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलाने एवं उनके स्वास्थ्य विषयक खर्चो एवं चिन्ताओं को दूर करने के लिये केन्द्र सरकार ने आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अन्तर्गत 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को वित्तीय लाभ देने का फैसला लिया है, वह सराहनीय एवं प्रासंगिक निर्णय है। इस फैसले की जरूरत इसलिए थी क्योंकि सामाजिक सुरक्षा के मामले में भारत बहुत पीछे है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे 2019-21 की रिपोर्ट से पता चलता है कि देश में ऐसे परिवारों की संख्या केवल 41 प्रतिशत है, जिनके कम से कम एक सदस्य का स्वास्थ्य बीमा हो। बिहार, महाराष्ट्र जैसे बड़ी आबादी वाले राज्यों में तो यह राष्ट्रीय औसत के करीब आधे के बराबर है। स्वास्थ्य बीमा को लेकर यह उदासीन रवैया हमारी उस आदत की वजह से है, जिसमें ज्यादातर लोग यह सोचते हैं कि जब बीमारी आएगी तो देखा जाएगा। बहुत से लोग जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा को एक ही चीज समझ लेते हैं। लेकिन, जब बीमारी सिर पर आती है, तो पूरे घर के बजट को तहस-नहस एवं असंतुलित कर देती है। सरकार का मौजूदा कदम कई परिवारों को ऐसे आर्थिक दुष्चक्र में फंसने से बचा सकता है। भारत में इलाज दिनों-दिन महंगा होता जा रहा है। जब आय के स्रोत सिमट जाते हैं और बच्चों से पर्याप्त मदद नहीं मिलती तो शरीर में रोग दस्तक देने लगते हैं, फिर महंगे इलाज की चिंता और बढ़ जाती है। अकसर भारत में कर्मचारी व आम लोग सोचते हैं कि वे जीवन भर आयकर चुकाते हैं, लेकिन बुढ़ापे में सरकार की ओर से सामाजिक सुरक्षा ना के बराबर होती है। लेकिन अब मोदी सरकार ने लोकतंत्र के सामाजिक कल्याणकारी स्वरूप को तरजीह दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार अनेक स्वस्थ एवं आदर्श समाज-निर्माण की योजनाओं को आकार देने में जुटी है, उसने वृद्धों को लेकर भी चिन्तन करते हुए वृद्ध-कल्याण योजनाओं को लागू किया है। इन योजनाओं को लागू करने की जरूरत इसलिये सामने आयी है कि वृद्धों को आत्म-गौरव के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा, बंधन माना जाने लगा है। वृद्धों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते पारिवारिक-सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। अब जब स्वास्थ्य बीमा का दायरा बढ़ाया गया है तो यह उम्मीद की जानी चाहिए कि खर्च को लेकर परिजनों का डर कम होगा। इस योजना का पूरा खाका सामने आना बाकी है। लेकिन यह सुनिश्चित तो करना ही होगा कि बीमा सुरक्षा कवच होने के बावजूद बुजुर्ग मुफ्त उपचार से वंचित न रह जाएं। खास तौर से सरकारी स्वास्थ्य बीमा योजनाओं को लेकर निजी अस्पतालों के रवैये को देखते हुए यह चिंता ज्यादा जरूरी हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार भारत में औसत आयु 67.3 साल है। पिछले दो दशकों में ही औसत आयु में पांच बरस से अधिक का इजाफा हो चुका है। निश्चित ही यह अच्छी खबर है, लेकिन इसके साथ यह चिंता भी जुड़ी हुई है कि देश में दिल से जुड़े रोगों और डायबिटीज के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। अन्य रोग भी तेजी से बढ़ रहे हैं। अनुमान लगाया गया है कि भारत में 60 वर्ष से ज्यादा उम्र की जो आबादी वर्ष 2011 में 8.6 प्रतिशत थी, वह बढ़कर 2050 तक 19.5 फीसदी हो जाएगी। यह भी अनुमान है कि 2030 तक भारत में स्वास्थ्य देखभाल का 45 प्रतिशत खर्च बुजुर्ग मरीजों पर होगा। ऐसे में बुजुर्गों के सामने अनेक अन्य समस्याओं के साथ नई एवं असाध्य बीमारियां और उनका महंगा इलाज बड़ी समस्या है। ऐसी स्थितियों में अब इस योजना का लाभ सभी बुजुर्गों को दिया जाएगा। बहुत संभव है कि इस समय जब कुछ राज्यों में चुनाव की प्रक्रिया चल रही है तो इस घोषणा के राजनीतिक निहितार्थों पर चर्चा हो सकती है। लेकिन भाजपा ने 2024 में लोकसभा चुनाव के लिये जारी घोषणापत्र में किये वायदे को ही आकार दिया है। वरिष्ठ नागरिक इस योजना का लाभ निजी व राजकीय अस्पतालों में ले सकते हैं। वहीं सरकार की ओर से बताया गया है कि जो सत्तर साल से अधिक के नागरिक प्राइवेट बीमा योजना या फिर राज्य कर्मचारी बीमा योजना का लाभ ले रहे हैं, वे भी नई योजना का लाभ लेने के अधिकारी होंगे। लेकिन उन्हें इस योजना के लिये आवेदन करना होगा। सरकार ने फिलहाल इस योजना के लिये करीब साढ़े तीन हजार करोड़ का बजट रखा है और आवश्यकता पड़ने पर बजट बढ़ाने की बात कही है। सरकार ने बजट में स्वास्थ्य के लिए कोटा बढ़ाया है। हालांकि चीन और अमेरिका की तुलना में यह अब भी कम है। मेडिकल सुविधाएं एवं साधन बढ़ाने के साथ यह इंतजाम भी करना होगा कि आम जनता उसका फायदा उठा सके। सरकार का हालिया फैसला इसी दिशा में उठाया गया कदम है, लेकिन यह भी सुनिश्चित करना होगा कि योजना को सही ढंग से लागू किया जाए। मुफ्त उपचार से भी बड़ी जरूरत सत्तर साल की उम्र पार वरिष्ठ नागरिकों की नियमित सेहत जांच की है। अस्पतालों की भीड़ में जांच कराना इनके लिए मुश्किल भरा हो सकता है। ऐसे में बुजुर्गों के घर तक मोबाइल स्वास्थ्य जांच सेवा भी इस योजना में लागू हो तो सोने पर सुहागा हो सकता है। सरकार को भविष्य में वृद्धों के लिये अलग से अस्पताल संचालित करने के बारे में भी सोचना चाहिए।

मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में परदे के पीछे यौन शोषण और दरिंदगी!

मनोज कुमार अग्रवाल

मलयालम फिल्म इंडस्ट्री का एक ऐसा कुरूप चेहरा सामने आया है जिसे जानकर नारी अस्मिता सम्मान और बेटी बचाओ के सारे नारे महज कागजी या बेमानी हो जाते हैं। इसी कड़ी में मलयालम फिल्मों के जाने माने अभिनेता और सत्तारूढ़ मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के विधायक एम. मुकेश के खिलाफ बलात्कार का मामला दर्ज किया गया है. पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी. मुकेश पर एक अभिनेत्री ने आरोप लगाया है कि अभिनेता ने कई साल पहले उसका यौन उत्पीड़न किया था जिसके आधार पर यह मामला दर्ज किया गया। देश भर में महिलाओं के विरुद्ध अत्याचारों को लेकर मचे बवाल के बीच हाल ही में केरल फिल्म उद्योग में यौन शोषण के आरोपों को लेकर 'जस्टिस के. हेमा कमेटी' की रिपोर्ट से हडकंप मच गया है।एक रिपोर्ट के अनुसार 2017 में एक मलयाली फिल्म अभिनेत्री ने मलयाली सुपर स्टार 'दिलीप' पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था जिस पर 'दिलीप' को गिरफ्तार भी किया गया था। इसके बाद केरल सरकार ने यहां के फिल्म उद्योग में महिलाओं की स्थिति की जांच करने के लिए 'जस्टिस के. हेमा कमेटी' का गठन किया था। न्यायमूर्ति हेमा समिति की रिपोर्ट में किए गए खुलासों के बाद विभिन्न निर्देशकों और अभिनेताओं पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगे हैं. तब से मलयालम फिल्म जगत की किसी 'हाई प्रोफाइल' हस्ती के खिलाफ यह तीसरी प्राथमिकी है. इससे पहले, तिरुवनंतपुरम 'म्यूजियम पुलिस' ने आठ साल पहले एक होटल में एक अभिनेत्री से बलात्कार करने के आरोप में अभिनेता सिद्दीकी के खिलाफ बुधवार को मामला दर्ज किया था. पहला मामला भारतीय दंड संहिता की धारा 354 (महिला की गरिमा को ठेस पहुंचाने के इरादे से उस पर हमला करना या आपराधिक बल प्रयोग) के तहत निर्देशक रंजीत के खिलाफ पश्चिम बंगाल की एक अभिनेत्री की शिकायत पर दर्ज किया गया था. यह शिकायत 2009 की एक घटना के संबंध में की गई है.अभिनेत्री ने आरोप लगाया है कि निर्देशक ने 2009 में फिल्म 'पालेरी मणिक्यम' में अभिनय के लिए आमंत्रित करने के बाद उसे अनुचित तरीके से छुआ था. इन आरोपों को लेकर रंजीत ने केरल चलचित्र अकादमी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था. सिद्दीकी ने भी अपने खिलाफ लगे आरोपों के बाद 'मलयालम मूवी आर्टिस्ट एसोसिएशन' (एएमएमए) के महासचिव पद से इस्तीफा दे दिया था. वर्ष 2017 में एक अभिनेत्री पर हमले के बाद केरल सरकार द्वारा गठित न्यायमूर्ति हेमा समिति की रिपोर्ट में मलयालम फिल्म उद्योग में महिलाओं के उत्पीड़न एवं शोषण के मामलों का खुलासा किया गया है। 'जस्टिस के. हेमा' ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि 10-15 प्रभावशाली अधिकार सम्पन्न पुरुषों का समूह मलयालम फिल्म इंडस्ट्री को नियंत्रित कर रहा है। जब कोई महिला उसे परेशान करने की शिकायत लेकर सामने आती है तो यह समूह बिना कोई कारण बताए उसे जिंदगी भर के लिए बैन करने और बदला लेने के लिए दूसरे तरीके इस्तेमाल करता है।एक महत्वपूर्ण अभिनेता ने इस रिपोर्ट में बताए गए सर्वशक्तिमान लोगों को 'माफिया' करार दिया है जिनके विरुद्ध केरल फिल्म उद्योग से जुड़ा कोई भी व्यक्ति एक शब्द तक मुंह से नहीं निकाल सकता।रिपोर्ट के अनुसार निर्माता-निर्देशकों ने एक 'सैक्स कोड' बना रखा है- 'समझौता और एडजस्ट करो'। जो अभिनेत्री इसका विरोध करती है, सारी इंडस्ट्री उसके विरुद्ध हो जाती है और उसे 'सजा' दी जाती है। शूटिंग के दौरान होटल में ठहरी अभिनेत्रियों के दरवाजों पर आधी-आधी रात को दस्तक दी जाती है और जूनियर अभिनेत्रियों के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया जाता है।इस वर्ष 19 अगस्त को इस रिपोर्ट के सार्वजनिक होते ही अनेक मलयाली फिल्म निर्देशक, लेखक और अभिनेता आरोपों के घेरे में आ गए हैं। इसी कारण अब केरल सरकार ने एक और जांच कमेटी गठित कर दी है। इस बीच मलयाली अभिनेत्री 'रेवती' द्वारा प्रसिद्ध अभिनेता 'सिद्दीकी' पर बलात्कार के आरोप लगाने के बाद 'सिद्दीकी' ने 'एसोसिएशन ऑफ मलयालम मूवी आर्टिस्ट्स' के महासचिव पद से त्यागपत्र दे दिया है।'रेवती' के अनुसार, "उसने मुझसे फेसबुक पर सम्पर्क किया था। तब 'सिद्दीकी' ने मुझे 'मोल' (बेटी) कहा था और बाद में फेसबुक के जरिए ही संदेश भेज कर फिल्मों में अभिनय के विषय में बात करने के लिए मुझे तिरुवनंतपुरम के एक होटल में बुलाया।" 'रेवती' के अनुसार, "उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसके लिए कुछ एडजस्टमेंट कर सकती हूं। मुझे अंदाजा नहीं था कि 'सिद्दीकी' के कहने का क्या मतलब है? परन्तु उसके बाद उसने मेरे साथ गाली-गलौच करने के अलावा मेरा बलात्कार कर डाला और मेरे सामने हस्तमैथुन किया।" एक अन्य अभिनेत्री 'श्रीलेखा मित्रा' ने पुरस्कार विजेता फिल्म 'नंदनम'के निर्देशक 'रंजीत' पर उसके साथ दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाया, जिसके बाद 'रंजीत' ने केरल सरकार द्वारा संचालित 'केरल चित्रकला अकादमी' के प्रमुख पद से त्यागपत्र दे दिया है। एक अन्य अभिनेत्री ' मीनू मुनीर' ने कई कलाकारों पर उसका यौन शोषण करने के आरोप लगाए हैं। उसने अभिनेता से माकपा विधायक बने 'एम. मुकेश' के अलावा मलयालम फिल्म उद्योग में 3 अन्य प्रतिष्ठित अभिनेताओं 'जयसूर्या', 'मणियनपिला राजू', 'इदावेला बाबू' तथा 2 प्रोडक्शन कंट्रोलरों 'नोबल' और 'विचु' पर भी यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए हैं। 'मीनू' के अनुसार, "2013 में एक फिल्म में अभिनय करने के दौरान मैं इनके हाथों शारीरिक और मौखिक शोषण का शिकार हुई। मैंने इनके साथ सामंजस्य करने और काम करते रहने की कोशिश की लेकिन उनका दुर्व्यवहार तथा शोषण बढ़ता गया और असहनीय हो गया। इसी कारण मुझे मलयालम फिल्म इंडस्ट्री छोड़ कर मजबूरन चेन्नई शिफ्ट होना पड़ा।" एक अन्य जूनियर अभिनेत्री ने खलनायक 'बाबू राज' पर उसका यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया जबकि एक बंगला फिल्म अभिनेत्री 'ऋताभरी'ने भी बंगला फिल्म उद्योग में यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया है। इस बीच 'एसोसिएशन ऑफ मलयालम मूवी आर्टिस्ट्स' के अध्यक्ष और शीर्ष अभिनेता 'मोहन लाल' सहित इसके सभी पदाधिकारियों ने आरोपों की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए अपने पदों से त्यागपत्र दे दिया है, परन्तु इतना ही काफी नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि केरल की फिल्म इंडस्ट्री पर हावी माफिया का घिनौना चेहरा उजागर करने वाली इस रिपोर्ट में किए गए खुलासों का संज्ञान लेकर सुप्रीम कोर्ट को जल्द से जल्द दोषी पाए जाने वाले लोगों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करनी चाहिए ताकि इस बुराई पर रोक लगे और इसे फैलने से रोका जा सके। सवाल उठता है कि सिनेमा को समाज की सच्चाई परदे पर प्रदर्शित कर समाज में जागरूकता लाने के लिए भूमिका निर्वाह करने की जिम्मेदारी है लेकिन मलयालम फिल्म का जो अंदरूनी चेहरा सामने आया है वह इतना घिनौना है कि महिला कलाकारों के साथ होने वाली अमानवीयता दरिंदगी व दुराचार इस फिल्म इंडस्ट्री का वर्क कल्चर है। सरकार को इस मामले में हेमा कमेटी की रिपोर्ट पर सख्त कार्रवाई करनी चाहिए।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

मेष राशि : आज आपका दिन उत्तम रहने वाला है। आज आप किसी बात को लेकर थोड़े उलझन में रहेंगे, जिसे आप अपने किसी ख़ास मित्र से शेयर भी करेंगे आपको राहत मिलेगी। परिवार वालों के साथ बाहर मूवी का प्लान बन सकता है। दोस्तों की बर्थडे पार्टी मे जाएंगे, जहां बाकी दोस्तों के साथ इंज्वाय करने का मौका मिलेगा। आज कोई नई स्किल सीखने का विचार कर सकते है जिसका लाभ आपको भविष्य में जरूर मिलेगा।

वृष राशिः आज का दिन ठीक-ठाक रहने वाला है। आज ऑफिस में वर्कलोड बढ़ सकता है। जिसके लिए आपको ओवर टाइम करना पड़ेगा। रुपए-पैसों के मामले में लापरवाही न करें। टूर-ट्रेवल्स और मीडिया संबंधी बिजनेस में नया मोड़ आ सकता है। आज अपको किसी करीबी से कोई ऐसी सलाह मिलेगी, जिससे आपको काफी फायदा होगा। आप आर्थिक मामलो मे किसी एक्सपर्ट से सलाह लेंगे, यह सलाह मददगार साबित होगी।

मिथुन राशिः आज आपके हर परेशानी का हल चुटकियों में निकल जायेगा। सरकारी कार्यों में आपको बड़े लाभ की संभावना है। आज आप अपनी संतान के साथ पिकनिक के लिए जा सकते हैं। उनके साथ आप अच्छा समय बिताएंगे। आज का दिन महिलाओं के लिए बहुत ही अनुकूल है। पारिवारिक और व्यक्तिगत गतिविधियों में उचित सामंजस बनाकर रखने में कामयाब होंगे। क

कर्क राशिः आज का दिन आपके लिए अच्छे परिणाम लाने वाला होगा। विद्यार्थियों को सफलता मिलने के योग बने हुए है, लेकिन पढाई में और मेहनत करने की जरुरत है। आज घरवालों के साथ अच्छा समय बिताने को मिलेगा, जिससे परिवार का माहौल खुशनुमा रहेगा। ऑफिस मे सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा, जूनियर आपसे काम सीखना चाहेंगे। लवमेट के रिश्ते में सुधार आयेगा।

सिंह राशिः आज आपका दिन बेहतर रहेगा। आपकी पहले से चली आ रही समस्याओं का समाधान मिलेगा, जिससे आपके मन में ख़ुशी रहेगी। परिवार में धार्मिक काम की योजना बन सकती है। आज आप अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए कुछ अच्छे बदलाव करने की कोशिश करेंगे। आप लम्बे समय तक स्वस्थ रहें इसके लिए आपको अच्छी डाइट लेनी चाहिए। आज पिछले कुछ समय से चल रही किसी समस्या का समाधान मिलने वाला है।

कन्या राशिः आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। बड़े निर्णय लेने के लिए दिन अच्छा है। किसी नयी बिजनेस डील के लिए ऑफर मिलेगा। आप जीवनसाथी के साथ घर के कार्यों को पूरा करने में व्यस्त रहेंगे। मेडिकल की पढ़ाई कर रहे छात्रो के लिए दिन अच्छा है। बेटी के ससुराल पक्ष से कोई बड़ी खुशखबरी मिलेगी। बच्चे आज अपने पढ़ाई के प्रति सीरियस रहेंगे। आज आपके घर नन्हें मेहमान के आगमन का योग बन रहा है।

तुला राशिः आज आपका दिन अच्छे मूड से शुरू होने वाला है। कुछ दिनो से चल रही किसी के साथ अनबन आज ख़त्म होगी। राजनीति व सामाजिक क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए दिन फेवरेबल रहेगा। महिलाओं के लिए दिन शानदार रहेगा। बिजनेस मैन आज कोई जरुरी मीटिंग अटेंड कर सकते हैं। आज किसी से लिए उधार से छुटकारा मिलेगा, आपकी टेंशन कम होंगी। आज आप किसी अच्छी जगह घूमने जा सकते।

वृश्चिक राशिः आज आपका दिन मिला-जुला रहेगा। एकाग्र मन से किया गया काम लाभदायक साबित होगा। लवमेट के लिए आज का दिन बढ़िया है। साथ ही किसी अच्छे रेस्टोरेन्ट में भी जा सकते हैं। किसी जिम्मेदारी को अनदेखा करने से आपको बचना चाहिए। आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी। आप कम से कम समय में काम निपटाने की कोशिश करेंगे। आप अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभायेंगे।

धनु राशिः आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। घर खरीदने का विचार कर रहे लोगों के लिए आज का दिन शुभ है। आज आपका मन घरेलू काम काज में लगेगा। आज बॉस आपको किसी नए प्रोजेक्ट पर काम करने को कह सकते हैं। डिप्लोमा की तैयारी कर रहे छात्रों को आज ज्यादा पढ़ाई करने की जरूरत है। व्यापार कर रहे लोगों का कारोबार अच्छा चलेगा।

मकर राशिः आज आपका दिन खुशियों से भरा रहने वाला है। आपके दोस्त आपसे मदद की गुहार करेंगे, आप उन्हें निराश नहीं करेंगे। बिजनेस कर रहे लोगों को अच्छा मुनाफा होगा। आज आप शॉपिंग करने का मन बनाएंगे। आज आप अपनी बहन को कुछ गिफ्ट दे सकते हैं जिससे आपका रिश्ता मजबूत बनेगा। आज आप किसी जरुरी मीटिंग में शामिल होंगे। पिता की सलाह से आपको अपने बिजनेस में काफी मदद मिलेगी।

कुंभ राशिः आज का दिन शानदार रहने वाला है। आज आप अपने व्यापार को आगें बढाने के लिए कुछ ऐसी भी योजनाएं बनाएंगे जिससे आपको फायदा ही फायदा होगा। आज अधिकतम समय आप धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों में व्यस्त रहेंगे। आप अपने कार्यों को जितनी तन्मयता और मेहनत से करेंगे, उसी के अनुरूप उचित परिणाम भी हासिल होंगे।

मीन राशिःआज परिवार का पूरा साथ मिलेगा। जो लोग बैंक में कार्य करते है वो आज अपना काम बहुत जल्द निपटा लेंगें। लवमेट आज साथ में समय बितायेंगे। सामाजिक कामों में अपना योगदान देने से आपकी पहचान बढ़ेगी। आपकी लोकप्रियता के साथ-साथ जनसंपर्क का दायरा बढ़ेगा। कुछ राजनीतिक लोगों के साथ लाभदायक मुलाकात होगी।

शब्द सामर्थ्य -179

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. घुमाव-फिराव वाला, आड़ा-तिरछा, जो कठिन हो 3. कुशलता, दक्षता, विशेषज्ञता 6. लोग, प्रजा 7. सीता, जनकनंदनी 9. सुंदर, कामना करने योग्य 10. क्रोधपूर्वक बोलने को उद्यत होना, जोश में आना, क्रोधातिरेक में चेहरे का लाल होना 13. अधीनता, मातहती, वश 14. दबाव, भार, वजन 16. हद, मर्यादा 18. प्रमाण-पत्र, प्रमाणिक कथन या बात 19. पछताना (मुहा.) 21. अनुचित मिश्रण, मिलावट 22. विफल, बेहोश, बौखलाया हुआ।

ऊपर से नीचे

1. सहारा, आश्रय, प्रतिज्ञा, संकल्प 2. परिश्रम 4. रात, रात्रि, निशा 5. पुत्र, बेटा 8. मूल्य, दाम 9. कपड़े का मोटा परदा 11. संदेश भेजना, उच्चारण कराना, कहलवाना 12. मृतकों को जीवित और रोगियों को स्वस्थ कर देने वाला व्यक्ति, प्रेमपात्र की संज्ञा 14. देने की क्रिया, खैरात 5. कुमार्गी, दुराचारी 17. मस्तक, माथा, ललाट 18. प्रश्न, समस्या 20. सहायता, सहारा 21. पशुओं को खिलाने वाली हरी पत्तियां, तृण, तिनका।

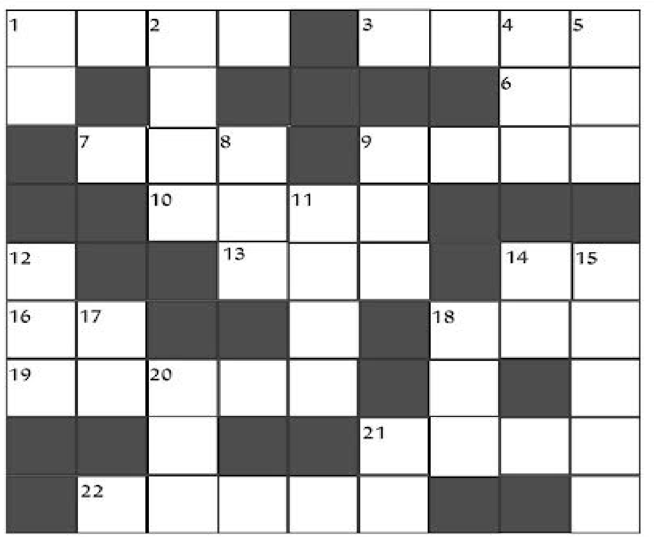

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 178 का हल

ज	द्दो	जे	ह	द		स	पू	त
ल		ब	ल	वा	न			द
म	ह	क		खा	म	खां		बी
ग्न		त	ल	ना		स	फ	र
	म	रा				ना	टा	
	हि		स				फ	न
	ला	ज	वा	ब		म	ट	र
मां		ग		सं	त	ति		भ
	मा	त	ह	त			प	क्षी

सूडोकु नवताल- 7190

★☆☆☆☆ सरल

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

Jagruiddaur.com, Bangalore

सूडोकु नवताल -7189 का हल

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

युवाओंके टूटते सपने

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंजीनियरिंग शिक्षाके क्षेत्रमें सर्वाधिक प्रतिष्ठित संस्थान है और देशके ऐसे सभी युवा छात्र-छात्राओंकी इसमें प्रवेश प्राप्त करनेकी उत्कट अभिलाषा होती है, जो इंजीनियरिंगमें अपना भविष्य देखते हैं। माता-पिता और अभिभावकोंका भी ऐसा ही स्वप्न होता है कि उनकी संतानको आईआईटीमें प्रवेश मिल जाय। इसके लिए वे हर सम्भव प्रयास करते हैं। तमाम आर्थिक संकटोंका सामना करते हुए वे बच्चेकी शिक्षाके लिए धनका प्रबन्ध करनेमें पीछे नहीं रहते हैं। बच्चोंको अच्छी कोचिंगमें प्रवेश कराते हैं जिससे कि उसकी अच्छी तैयारी हो सके। इसपर धन भी अधिक खर्च होता है आईआईटीमें प्रवेशके लिए अखिल भारतीय स्तरपर प्रवेश परीक्षा होती है, जिसमें सफलता प्राप्त करना आसान नहीं होता है। सौभाग्य से यदि बच्चे प्रवेश परीक्षामें सफलता प्राप्त कर लेते हैं तब मेरिटके आधारपर उन्हें आईआईटीके संस्थानोंमें प्रवेशके लिए स्थान मिल पाता है। आईआईटीमें जब उनको प्रवेश मिल जाता है तब ऐसा लगता है कि बच्चेका संघर्ष और तनाव अब कम होना शुरू हो जायगा। कोर्स पूरा होते ही कैम्पस प्लेसमेण्टसे बड़ी-बड़ी नौकरियोंमें मिलने वाले पैकेजके हसीन सपने देखना शुरूकर देते हैं। आईआईटीमें जैसे ही उनका प्रवेश होता है तो नये माहौलमें उनको उत्साह और उमंग अधिक होता है लेकिन इस उत्साह का जीवन भी कम समय तक ही रहता है। जितनी तैयारी बच्चे आईआईटीमें प्रवेशके लिए करते हैं उससे कहीं अधिक मेहनत और संघर्ष पढ़ाई पूरा करनेके लिए करना पड़ता है। बच्चे मानसिक दबावमें आ जाते हैं और उनके सपने कमजोर पड़ने लगते हैं। उनमें निराशा की स्थितियां भी उत्पन्न हो जाती है। कोर्स पूरा करनेका तनाव बढ़ने लगता है। उनके सपनोंपर तनाव हावी होने लगता है और ऐसे हालात उत्पन्न होने लगते हैं कि बच्चे बीचमें ही जिन्दगी की जंग हार जाते हैं और आत्महत्या कर बैठते हैं। बच्चोंके इस आत्मघाती निर्णयसे उनका परिवार टूटकर बिखर जाता है। विगत २० वर्षोंमें आईआईटीके ११५ छात्रोंने आत्महत्या की। इनमें ९८ छात्रोंने कैम्पसके अन्दर तो १७ छात्रोंने कैम्पसके बाहर अपनी जान दे दी। आईआईटी चेन्नईमें सर्वाधिक २७ छात्रोंने खुदकुशी की जबकि आईआईटी कानपुर दूसरे स्थानपर रहा, जहां १८ छात्रोंने आत्महत्या की। आत्महत्या की बढ़ती घटनाएं गम्भीर चिंताकी बात है। इस दुखद प्रवृत्तिपर कैसे अंकुश लगाया जाय, यह शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों और सरकारके समक्ष बड़ा प्रश्न है जिसका उत्तर ढूढ़ना होगा।

संदीप घोष गिरफ्तार

महिला डाक्टरसे दरिन्दगी मामलेमें आरजी कर मेडिकल कालेज और अस्पतालके पूर्व प्रिंसिपल डाक्टर संदीप घोषकी गिरफ्तारी अप्रत्याशित नहीं है। यह अंदेशा घटनाके दूसरे दिन उस समय से ही था जब डाक्टर संदीपने घटनाको दूसरा मोड़ देनेके लिए मृतक जूनियर डाक्टरके माता-पिताको हत्याको आत्महत्या बताया था। शककी सूई उसी दिनसे इनके ईद-गिर्द घूम रही थी और इस बातकी प्रबल सम्भावना थी इनकी गिरफ्तारी इस जघन्य हत्याकाण्डमें आज नहीं तो कल होनी ही है। सीबीआईने शनिवारको आरजी कर अस्पतालमें महिलासे दुष्कर्म और हत्या मामलेमें डाक्टर संदीप घोष और वारदातके समय टाला थानेके थानेदार रहे अभिजीत मंडलको गिरफ्तार कर लिया। दोनोंपर सुबूतसे छेड़छाड़का आरोप है। हालांकि ईडी ने इससे पहले संदीप को आरजी कर अस्पतालमें व्याप्त भ्रष्टाचारके आरोपमें गिरफ्तार किया था। फिलहाल वह इस समय न्यायिक हिरासतमें हैं। अब सीबीआईने घोष को दुष्कर्म और हत्याके मामलेमें गिरफ्तार किया है। इस मामलेमें अबतक तीन लोगोंकी गिरफ्तारी हो चुकी है। इस घटनामें पहली गिरफ्तारी कोलकाता पुलिस ने मुख्य आरोपी सिविक बालंटियर, संजय रायकी की थी। इसके ३५ दिनों बाद सीबीआईने संदीप और तत्कालीन थानेदारको साक्ष्य मिटाने, सुबूतोंमें हेरफेर और जांच अधिकारियोंको गुमराह करने समेत अन्य आरोपोंमें गिरफ्तार किया है। इस जघन्य हत्याकाण्डमें कुछ और सफेदपोशोंकी संलिप्ततासे इनकार नहीं किया जा सकता है। क्योंकि सीबीआईकी जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ रही उसमें जो तथ्य सामने आ रहे हैं वह हैरान करने वाले हैं। सीबीआईकी यह जानकारी कि घटनाकी रात मुख्य आरोपित संजय रायको किसी ने फोनकर अस्पताल बुलाया था, चौंकाने वाला है क्योंकि आमतौरपर संजयको रात आठ से नौ बजे तक ही अस्पतालमें देखा जाता था। पूछताछमें भी संजयने इस बातका स्पष्ट जवाब नहीं दिया कि उसे किसने बुलाया था जिससे रहस्य और गहरा गया है। कुछ न कुछ तो ऐसा जरूर है जिसपर पूरी तरह पर्दा डालनेका प्रयास किया जा रहा है। आरजी कर अस्पताल जैसी घटना अन्य राज्योंके सरकारी अस्पतालोंमें भी हो सकती है, इसलिए सचका सामने आना बेहद जरूरी है।

लोक संवाद

सर्वोत्तम उपहार

महोदय,-पश्चिमी सभ्यताका अनुकरण करते-करते किसी भी समारोहमें फूलोंका गुलदस्ता देना अब बहुत अधिक प्रचलनमें आ गया है। किसीके प्रति अपनी सद्भावना एवं आदर भावको व्यक्त करनेके लिए यह एक सर्वमान्यए सुन्दर, सुरुचिपूर्ण एवं स्वस्थ परम्परा है। अंग्रेजीमें एक मुहावरा भी है, 'से इट विद फ्लावर्स' लेकिन इस बातसे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि इन फूलोंका जीवन बहुत अल्पावधिका होता है और दो-तीन दिन बाद ही ये सारे सुन्दर फूल कूड़ेके ढेरपर फेंक दिये जाते हैं, साथ ही हजारों रुपये भी कूड़ेके ढेरको समर्पित हो जाते हैं। फूलोंके स्थानपर सब्जियां देनेका प्रस्ताव भी मुझे कुछ विशेष अच्छा नहीं लगा। आजकल समाजमें प्रायः परिवार बहुत छोटे-छोटे हो गये हैं। किसी समारोहमें यदि दस-पंद्रह लोगोंने भी सब्जीकी बास्केट उपहारमें दे दी तो उपहार पानेवालेके सामने कितनी बड़ी समस्या खड़ी हो जायेगी उन्हें इस्तेमाल करने की। कोई बड़ा कलाकार हुआ तो उसे तो सब्जीकी दुकान लगानेकी आवश्यकता पड़ जायेगी। छोटेसे परिवारमें फल-फ्रूट या सब्जीकी खपत ही कितनी होती है। एक तो समारोह स्थलसे घर ले जानेकी समस्या फिर खरा सोचिये उनके घरमें २५-३० किलो सब्जी और फल आ जायेंगे तो वे क्या करेंगे। फूल तो मुरझानेके बाद फेंक भी दिये जाते हैं लेकिन फल और सब्जियोंको तो फेंकना भी गवारा नहीं होगा न ही इतनी खायी जा सकेंगी। मोहल्ले पड़ोसमें बांटनेकी मुसीबत और मढ़ दी जाय उस सम्मानित व्यक्तिपर। मेरे विचारसे सबसे अच्छा उपहार पौधोंका ही होता है। हरेभरे छायादार वृक्षोंके या खूबसूरत फूलोंके पौधे उपहार स्वरूप दिये जाने चाहिए, ताकि पर्यावरणका भी संरक्षण हो, प्रदूषण भी घटे और हरियाली भी भरपूर हो जाय। सोचिये जरा शहरमें कितने सम्मान समारोह रोज होते हैं। सम्मानित व्यक्तियोंको नीम, पीपल, बरगद, आम, अमरूद, जामुन इत्यादिके पौधे उपहार स्वरूप दिये जायं तो शहरकी तस्वीर ही बदल जायेगी। **-साधना, वाया ईमेल।**

अमेरिकाकी बिगड़ती आर्थिक स्थिति

विश्वमें कई गतिविधियां चक्रके रूपमें चलती रहती है। एक कालखंडके पश्चात चक्र कभी नीचेकी ओर तो दूसरे कालखंडमें ऊपरकी ओर जाता है। विदेशी व्यापारके मामलेमें वर्ष १७५० तक पूरे विश्वमें भारतकी तूती बोलती थी, इसके पश्चात यूरोपीय देशोंने अपने आर्थिक हित साधते हुए विभिन्न देशोंपर अपना कब्जा जमा लिया।

❐ **प्रह्लाद सबनानी**

वर्ष १७५० के बाद ब्रिटेन, फ्रांस, डच जैसे देशोंने एशियाई देशों एवं कुछ अफ्रीकी भू-भागपर अपना कब्जा जमाया तो स्पेन आदि देशोंने अमेरिकी महाद्वीपपर अपना कब्जा जमाया। समयके साथ चक्र कुछ इस प्रकार चला कि वर्ष १९५० आते-आते अमेरिका पूरे विश्वमें सबसे अमीर देशोंकी श्रेणीमें शामिल हो गया और ब्रिटेन, जिसके बारेमें कभी कहा जाता था कि ब्रिटेनकी महारानीके राज्योंमें सूरज कभी डूबता नहीं है, का आर्थिक दृष्टिसे ढलान शुरू हो गया और आज ब्रिटेनके आर्थिक एवं सामाजिक ढांचेकी स्थिति हम सभीके सामने है। ब्रिटेनकी अर्थव्यवस्था हालमें पूरे विश्वमें छठे स्थानपर पहुंच गयी है तथा अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनीके पश्चात भारत आज विश्वकी पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। जबकि वर्ष १७५० के पश्चात जब ब्रिटेनने भारतपर अपना कब्जा स्थापित कर लिया था उसके बाद भारतकी स्थिति यहांतक बिगड़ी थी कि पूरी विश्वकी अर्थव्यवस्थामें भारतके विदेश व्यापारकी हिस्सेदारी वर्ष १७५० के ३२ प्रतिशतसे घटकर वर्ष १९४७ में तीन प्रतिशतके नीचे आ गयी थी। परन्तु एक बार फिर कालचक्र अपना रंग दिखाता हुआ नजर आ रहा है और अमेरिकी अर्थव्यवस्थाके साथ ही वहांका सामाजिक ताना बाना भी छिन्न-भिन्न होता हुआ दिखाई दे रहा है।

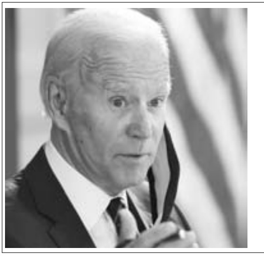

अमेरिकामें आयकी असमानता लगातार बढ़ती जा रही है। फेडरल बजट घाटा अब अरक्षणीय स्तरपर पहुंच गया है। विदेशी व्यापार घाटाके लगातार बढ़नेसे अमेरिका सौ करोड़ अमेरिकी डॉलरसे अधिककी राशि का ऋण प्रतिदिन ले रहा है। लगातार बढ़ रही गरीबी अब दूसरी पीढ़ीकी ओर स्थानांतरित हो रही है। कुल मिलाकर उक्त वर्णित अमेरिकी अर्थव्यवस्थाकी वर्तमान हालतको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी आर्थिक दर्शनपर टिका पूंजीवादी मॉडल पूर्णतः असफल हो रहा है। अमेरिकी अर्थशास्त्रियों द्वारा अब यह कहा जाने लगा है कि पूंजीवादी मॉडल समाप्ति की ओर है।

दरअसल अमेरिकाने पूंजीवादी नीतियोंको अपनाकर अपने नागरिकोंमें केवल आर्थिक उन्नतिको ही विकासके एकमात्र मार्गके रूपमें चुना था, इससे वहांके नागरिकोंमें किसी भी प्रकारसे धन अर्जन करनेकी प्रवृत्ति विकसित हुई एवं सामाजिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ताना बाना छिन्न-भिन्न हो गया। परिवार व्यवस्था समाप्त हो गयी जिसका परिणाम आज हमारे सामने हैं कि आज अमेरिकामें नागरिकोंके लिए सामाजिक सुरक्षा योजना, मेडीकेयर योजना, मेडीकैड योजना, प्रौढ़ नागरिकोंको सुविधाएं एवं केन्द्र (फेडरल) सरकारके कर्मचारियोंको अदा की जा रही पेंशन, आदि योजनाएं सरकार द्वारा नागरिकोंके हितार्थ अमेरिकामें चलानी पड़ रही हैं। इन योजनाओंपर खर्च किये जा रहे दो लाख करोड़ अमेरिकी डालरकी भारी भरकम राशिका लाभ करोड़ों अमेरिकी नागरिक प्रतिवर्ष उठा रहे हैं। यह राशि अमेरिकी सकल घरेलू उत्पादका १४ प्रतिशत है। सुरक्षाकी मदपर भी अमेरिका द्वारा ७०,००० करोड़ अमेरिकी डालरका खर्च प्रतिवर्ष किया जाता है। बेरोजगारी बीमा लाभ योजनापर भी भारी-भरकम राशि अमेरिकी सरकार द्वारा प्रतिवर्ष खर्च की जाती है। अमेरिकामें सेवानिवृत्त हो रहे कर्मचारियोंकी संख्या लगातार बढ़ रही है जिसके कारण इस मदपर व्यय की जानेवाली राशिमें भी बेतहाशा वृद्धि हो रही है, साथ ही लगातार बढ़ रहा सुरक्षा खर्च, स्वास्थ्य सेवाओंपर व्ययकी लगातार बढ़ रही राशिके बीच वर्तमानमें करकी दरोंमें वृद्धि नहीं करनेके कारण बजटीय घाटेपर दबाव बढ़ता जा रहा है। इकोनोमिक रिपोर्ट आफ द प्रेजीडेंटके अनुसार अमेरिकामें वर्ष २००० में २३,६०० करोड़ अमेरिकी डालरका बजट आधिक्य था जो वर्ष २००१ में घटकर १२,६०० करोड़ अमेरिकी डालरका हो गया। परन्तु वर्ष २००२ में एक बार जो १५,८०० करोड़ अमेरिकी डालरका बजट घाटा प्रारम्भ हुआ तो इसके बादसे वह बढ़ता ही गया है। वर्ष २००९ में तो बजट घाटा बढ़कर १४१,३०० करोड़ अमेरिकी डालरका हो गया, वर्ष २०१० में १२९,४०० करोड़ अमेरिकी डालर, वर्ष २०११ में १३०,००० करोड़ अमेरिकी डालर, वर्ष २०१२ में १०८,७०० करोड़ अमेरिकी डालर एवं वर्ष २०२० में ३१३,००० करोड़ अमेरिकी डालर, वर्ष २०२१ में २७७,००० करोड़ अमेरिको डालर एवं वर्ष २०२२ में १८८,००० करोड़ अमेरिकी डालरका रहा है। अमेरिकामें प्रति परिवार वास्तविक औसत आय वर्ष १९७३ में (वर्ष २०१५ में डालरकी कीमतपर) ५०,००० अमेरिकी डालर थी। अमेरिकाके लगभग आधे परिवारोंकी वास्तविक औसत आय ५०,००० अमेरिकी डालरसे अधिक थी एवं शेष आधे परिवारोंकी ५०,००० अमेरिकी डालरसे कम थी, जिससे आयकी असमानता आजकी तुलनामें कम दिखाई देती थी। वर्ष १९७३ से वर्ष २०१५ तक अमेरिकामें उत्पादकतामें ११५ प्रतिशतकी वृद्धि दर्ज हुई है, जबकि परिवारोंकी औसत आय (मुद्रास्फीतिके समायोजनके बाद) केवल ११ प्रतिशत ही बढ़ी है। यह भी इस बीच अमेरिकी महिलाओंको भारी मात्रामें प्रदान किये गये रोजगारके अवसरोंके चलते सम्भव हो पाया है।

इस प्रकार मुद्रास्फीतिके समायोजनके पश्चात् अमेरिकामें वर्ष १९७३ के पश्चात औसत आयमें वृद्धि नगण्य ही रही है। वर्ष १९७३ से वर्ष २००७ के बीच अमेरिकी मध्यवर्गीय परिवारोंने उपभोगपर औसत खर्चको दुगनेसे भी अधिक कर दिया है। जिसके कारण इन परिवारोंकी बचत दर दस प्रतिशतसे घटकर दो प्रतिशत हो गयी है, बल्कि कई परिवारोंको तो अपने मकानोंपर ऋण लेकर एवं क्रेडिट कार्डके माध्यमसे ऋण लेकर भी काम चलाना पड़ रहा हैं। जोसेफ शूम्पटरके अनुसार अमेरिकामें कारने घोड़ा गाड़ीको खत्म कर दिया एवं कम्प्यूटरने टाइपराइटरको खत्म कर दिया। इसे रचनात्मक विनाश (क्रिएटिव डेस्ट्रक्शन) का नाम दिया गया, क्योंकि इससे उत्पादकताका स्तर बढ़ा था, परन्तु रोजगारके लाखों अवसर समाप्त हो गये थे। अमेरिकामें आज पांचमेंसे चार रोजगारके अवसर सेवा क्षेत्रमें उत्पन्न होते हैं, जहां तुलनात्मक रूपसे आय कम है। कृषि एवं उद्योग (विनिर्माण सहित) क्षेत्रोंमें रोजगारके अवसर बहुत कम मात्रामें उपलब्ध हो पा रहे हैं। ६० वर्ष पूर्वतक अमेरिका विदेशी व्यापारके मामलेमें आत्मनिर्भर था। अमेरिकामें विभिन्न उत्पादोंका जितना उपभोग होता था उन लगभग समस्त उत्पादोंका उत्पादन भी अमेरिकामें ही होता था, बल्कि विदेशी व्यापारके मामलेमें तो उस समय अमेरिकाके पास विदेश व्यापार आधिक्य शेष रहता था। आज अमेरिकामें विभिन्न उत्पादोंका जितना उत्पादन होता है उससे कहीं अधिक उपभोग होता है। अमेरिकी नागरिक आज अपनी आयसे अधिक व्यय करता हुआ दिखाई देता है। अमेरिकामें कई नये शहरोंकी बसावटके पहिले, समस्त बड़े नगरोंमें ७५ प्रतिशत श्रमिक रेलवे एवं बसोंसे यात्रा करते थे।

आज केवल पांच प्रतिशत नागरिक ही पब्लिक वाहनोंका उपयोग, एक स्थानसे दूसरे स्थानपर आने-जानेके लिए करते हैं। समस्त नागरिकोंके पास अपनी अपनी कार है एवं केवल स्वयं ही उस कारमें वे यात्रा करते हुए पाये जाते हैं। इससे पेट्रोल, डीजल एवं गैसकी खपतमें बेतहाशा वृद्धि दर्ज हुई है। द्वितीय विश्वयुद्धतक अमेरिका कच्चे तेलका एक निर्यातक देश हुआ करता था परन्तु आज अमेरिका अपनी कच्चे तेलकी कुल आवश्यकताका एक-तिहाई भाग आयात करता है। अमेरिकामें वर्ष २००० में विदेशी व्यापार घाटा ३८,००० करोड़ अमेरिकी डालरका था जो २०२१ में बढ़कर ८६,१०० करोड़ अमेरिकी डालरका हो गया है। १९७० के दशकतक, लगभग प्रत्येक वर्ष, अमेरिकाके पास विदेशी व्यापार आधिक्य हुआ करता था। परन्तु इसके पश्चात अमेरिकाकी स्थिति विदेशी व्यापारके मामलेमें लगातार बिगड़ती चली गयी है। अमेरिकामें उच्च आयवाले क्षेत्रोंमें रोजगारके अवसर लगातार कम हो रहे हैं। अमेरिकामें प्रति घंटा औसत मजदूरीकी दर वर्ष १९७३ से (मुद्रास्फीतिकी दरके समायोजनके पश्चात्) लगभग नहीं के बराबर बढ़ी है। अमेरिकामें आयकी असमानता लगातार बढ़ती जा रही है। फेडरल बजट घाटा अब अरक्षणीय (अनसस्टेनेबल) स्तरपर पहुंच गया है। विदेशी व्यापार घाटाके लगातार बढ़ते जानेसे आज अमेरिका सौ करोड़ अमेरिकी डालरसे अधिककी राशिका ऋण प्रतिदिन ले रहा है। देशमें लगातार बढ़ रही गरीबी अब एक पीढ़ीसे दूसरी पीढ़ीकी ओर स्थानांतरित हो रही है। कुल मिलाकर उक्त वर्णित अमेरिकी अर्थव्यवस्थाकी वर्तमान हालतको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी आर्थिक दर्शनपर टिका पूंजीवादी मॉडल पूर्णत: असफल हो रहा है। इसी कारणसे अमेरिकी अर्थशास्त्रियों द्वारा भी अब यह कहा जाने लगा है कि पूंजीवादी माडल समाप्तिकी ओर अग्रसर हो रहा है अत: साम्यवाद एवं पूंजीवादके बाद एक तीसरे आर्थिक रास्तेकी अब सख्त आवश्यकता है, जो संभवत: केवल भारत ही उपलब्ध कर सकता है।

सख्तीके प्रावधान भी हो रहे विफल

सन् २०१२ के निर्भया कांडके बाद लाख सख्तीके बावजूद बंद होना तो दूर, महिलाओंके खिलाफ अपराध कम होनेके नाम ही नहीं ले रहे हैं। लगता है जैसे कठोर सजाका प्रावधान भी बेअसर साबित हो रहा है।

❐ **डा. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा**

पश्चिमी बंगालका आरजी कर प्रकरण उबाल ले रहा हैं। प्राप्त जानकारीके अनुसार महिलाओंके खिलाफ अपराधवाले प्रकरणोंका न्यायालयोंमें निस्तारण भी तेजीसे हो रहा है। करीब ९० प्रतिशततक प्रकरणोंका न्यायालयों द्वारा निस्तारण किया जा रहा है। परन्तु देशके किसी भी कोनेकी बात कर लों महिलाओंके खिलाफ रेप, रेपके प्रयास या इसी तरहके अपराध लगातार हो रहे हैं। इसके साथ ही कुछ समय गुजरता है कि देशमें कहीं न कहीं गाहे बेगाहे निर्भया जैसे नृशंस कांड हो ही जाते हैं। आरजी कर घटना तो सभ्य समाजके लिए इसलिए अधिक कलंकित होनेवाली हो जाती है कि अस्पताल जैसे प्रतिष्ठित स्थानपर कहनेको तो तथाकथित सभ्य लोगोंने इस घटनाको अंजाम दिया। आखिर इस तरहकी घटनाएं हिलाकर रख देती है। आखिरकार कोलकता आरजी कर अस्पताल रेप एवं रेपके बाद हत्या घटनाके बाद जिस तरहसे देशव्यापी माहौल बनाये उसके परिणामके रूपमें पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा अपराजिता महिला एवं बाल विधेयक (पश्चिमी बंगाल आपराधिक कानून एवं संशोधन) विधानसभासे पारित हो गया। सवाल यह नहीं है कि कानून कितना सख्त बनाया गया है। सवाल यह भी नहीं हैं कि कानूनमें किस तरहसे जांचसे लेकर सजातककी समय-सीमा तय की गयी है। सवाल यह भी नहीं हैं कि कानून बननेके क्या परिणाम सामने आयंगे। देखा जाय तो सौ टकेका सवाल यह है कि २०१२ में निर्भया कांडके बाद जिस तरहसे कानूनमें बदलाव कर सख्तीके प्रावधान किये गये, जिस तरहसे पाक्सो एक्टके तहत कारररवाईकी बात हुई और जिस तरहसे देशमें त्वरित न्यायके लिए फास्ट ट्रेक स्पेशल अदालतें और पाक्सों अदालते बनायी गयी उसके बाद भी हालातमें कोई बदलाव नहीं दिखाई दे रहे हैं, बल्कि यह कहा जायं तो ज्यादा ठीक होगा कि ज्यों-ज्यों दवा की गयी, मर्ज बढ़ता ही गया। निर्भया कांडके चार दरिंदोंको फांसीकी सजाके बावजूद महिलाओंके खिलाफ रेप एवं हत्याके मामलोंमें कोई कमी नहीं आयी है अपितु देखा जायं तो पिछले १२ सालोंमें रेप-हत्याओंके मामलोंमें वृद्धि ही देखनेको मिल रही है। दिसंबर २०१२ में जब निर्भया कांड हुआ और उसके सामने आते ही जिस तरहसे देशव्यापी आक्रोश देखनेको मिला उसके बाद जिस तरहसे २०१३ में नया आपराधिक कानून लाकर सरकारने सख्तीकी मंशा दिखाई उसके बावजूद कोई सकारात्मक परिणाम देखनेको नहीं मिला। २०१५ में किशोर न्याय अधिनियमके माध्यमसे १६-१८ सालके दोषियोंको भी कोई रियायत नहीं देनेके प्रावधान किये गये और २०१९-२० में १०२३ फास्ट ट्रेक स्पेशल कोर्टका गठन और ३८९ पॉक्सों कोर्टोंके गठनके बावजूद अपराधियोंमें किसी तरहसे भयका वातावरण नहीं बना है। दिसंबर, १२ में जिस तरहसे निर्भया रेप एवं हत्या कांड सामने आया और खास तौरसे युवाओंमें जिस तरहका आक्रोश देखा गया तब समझा जाने लगा था कि हालातोंमें सुधार होगा परन्तु आंकड़े कुछ और ही कहानी कहते हैं। उज्जैन, अयोध्या और इसके बाद आरजी कर प्रकरणसे साफ हो गया है कि भले ही अब ममता सरकारने नया अधिनियम पारित करा लिया हो परन्तु तस्वीरका एक पहलू यह भी है कि ऐसे मामलोंमें भी सभी लोग एक न होकरके राजनीतिक फायदे नुकसानके तराजूपर तौलकर प्रतिक्रिया देते हैं। मानवताके लिए इससे अधिक कलंककी दूसरी बात क्या होगी। जिस तरहसे घटना होनेके बाद एक पक्ष बचावमें तर्क गढ़ने लगता है तो दूसरा पक्ष आन्दोलन, प्रदर्शन आदिके माध्यमसे जितना लाभ उठानेका प्रयास करते हैं यह दोनों ही स्थितियां मानवताके लिए शर्मनाक है। ऐसा नहीं है कि रेप एवं उसके बाद हत्या जैसी घटनाएं हमारे देशमें ही होती हो, बल्कि कहा जायें तो यह वैश्विक समस्या है। निर्भयाके टाइमपर ही किस तरहसे मी टू अभियानने गति पकड़ी थी, किस तरहसे महिलाएं मुखर हो रही थी वह अपने आपमें एक सशक्त आन्दोलन या कहें कि महिला सशक्तीकरणकी दिशामें बढ़ता कदम था परन्तु इससे देश दुनियामें महिला अपराध खास तौरसे रेप, गेंगरेप या इसी तरहकी घटनाओंमें तनिक मात्र भी कमी नहीं आयी है। हालिया दिनोंमें ही सीने संसारमें किस तरहसे महिला अभिनेत्रियोंके शोषणकी मुखरतासे चर्चा हुई है वह भी रुपहले पर्देके पीछेकी काली कहानी बयां कर देती हैं। यदि आंकड़ोंकी भाषामें ही बात करें तो निर्भया एपिसोडके समय २४९१५ मामले सामने आये थे तो २०१६ में सर्वाधिक ३८९४७ अपराध सामने आये। २०२० जो कि कोरोना काल था उसमें अवश्य २८०४६ मामलें सामने आये अन्यथा आंकड़े ३० हजारसे अधिक ही रहे। २०२२ के आंकड़ोंकी बात करें तो महिलाओंके खिलाफ अपराधके इस तरहके ३१५१६ मामले आये। यानी कि २०१२ के निर्भया एपिसोड और उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप देश ही नहीं, विश्वव्यापी आक्रोश एवं जनचेतनाके बावजूद अपराधमें कमी नहीं आनेसे साफ हो जाता है कि कहीं न कहीं इस तरहके समाज विरोधी लोगोंमें भय ही नहीं रहा। सख्त कानूनी प्रावधानोंके बावजूद अपराधी प्रवृत्तिके लोग बेखौफ इस तरहकी घटनाओंको अंजाम देते आ रहे हैं। मजेकी बात यह है कि अपराधियोंमें कानून एवं सजाका कोई भय ही नहीं दिखाई दे रहा अन्यथा इस तरहके अपराध कम ही नहीं, बल्कि रुक जाते परन्तु ऐसा हुआ नहीं और ऐसा होगा, इस तरहसे लगता भी नहीं हैं। इससे एक बात साफ हो जाती है कि कानून बनाने या सख्त सजा एवं त्वरित न्यायकी व्यवस्था एक बात है और समाजको अपराधविहीन बनाना दूसरी बात। इसके लिए हमें और सबके साथ हमारे मूल्यों और संस्कारोंको आजकी पीढ़ीतक पहुंचाना ही होगा। खाओं पीओ और मौज करोंकी सोच किसी भी हालतमें सभ्य समाजके लिए उचित नहीं हो सकती। हमें महिलाओंकी इज्जत करना, उनके सम्मानकी रक्षा करना सीखना और सीखाना होगा नहीं तो कानूनके डरसे अपराध कम हो जायंगे यह सोचना एक हदसे अधिक सही नहीं हो सकता। यह धरातलीय अनुभव है जो हमारे सामने लगातार आ रहा है।

आत्मबोध

योगकी शिक्षा

❐ **श्रीश्री रविशंकर**

योगके विषयमें सामान्यत: एक गलत धारणा है कि यह एक प्रकारका शारीरिक व्यायाम है। संसारभरमें अनायास ही लोग मुझसे अकसर यही प्रश्न पूछ बैठते हैं। आसन या शारीरिक मुद्राएं लोगोंको योगमें प्रवेश करनेके लिए सहायक होते हैं। योगका विज्ञान बहुत विस्तृत और गहन है। योगकी मुख्य शिक्षा मनको समभाव बनाये रखना है। अपनी सम्पूर्ण चेतनाके साथ कार्य करना, अपने कार्योंके प्रति पूर्ण जागरूकता रखना आपको योगी बनाता है। अस्तित्वगत पदार्थोंको व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीकेसे समझना ही विज्ञान है। इसी प्रकारसे योग भी एक विज्ञान है, जो विषयके लिए एक व्यवस्थित समझ प्रदान करता है। यह क्या है। जानना विज्ञान है। मैं कौन हूं। यह जानना आध्यात्मिकता है। योगका अर्थ जीवनमें लयात्मकता लाना है। यह अंतर्दृष्टिके अध्ययन और सामंजस्य बनानेकी विधा है। यह स्वस्थ जीवन कौशल किसीके जीवन और परिवेशकी गुणवत्ताको बढ़ा सकता है। यह आन्तरिक शक्ति और बाह्य सामंजस्यमें सुधार लाता है। योग किसीके व्यक्तित्वमें पूर्ण सन्तुलन ला सकता है। योग लोगोंके व्यक्तित्वमें पूर्ण सन्तुलन लाता है, यह जीवनकी जटिलसे जटिल समस्याओंका समाधान करता है। यह उन बहुत-सी समस्याओंका समाधान है जिसकी तलाश आजके व्यवहार विज्ञानमें की जा रही है। परम सत्यकी खोज करनेवालोंके लिए योग एक ऐसा मार्ग है, जो साधकको मानव क्षमताकी सम्पूर्णता प्राप्त करनेकी अनुभूति प्रदान करता है, यह एक ऐसा रास्ता है जो मनुष्यको अनंतके साथ एकाकार होनेका उच्चतम ध्येय प्राप्त करनेमें सहयोग करता है। योग सूत्र विस्तार रूपमें नहीं लिखे गये हैं, इन सूत्रोंमें योगका सम्पूर्ण दर्शन बहुत ही संक्षिप्त रूपमें समाहित किया गया है, इन सूत्रोंको किसी विशेषज्ञ गुरुके निर्देशनसे ही समझा जा सकता है। जब कोई व्यक्ति अभ्यासके द्वारा आत्माकी चेतनताकी गहराइयोंमें उतरता है तो ये सूत्र उसके लिए दिशा-निर्देशक और मीलके पत्थरके समान कार्य करते हैं। अपने स्थूल रूपमें भी योग मानव जीवनको अकल्पनीय रूपसे परिवर्तित करनेकी क्षमता रखता है।

रिफण्डकी बाट जोहते पीएसीएल निवेशक

❐ **अनुज आचार्य**

पिछले दिनों चिटफंड कम्पनी पीएसीएल यानी पर्ल्स ग्रुपके चैयरमेन निर्मल सिंह भंगूकी मौतकी खबर आयी थी। जानकारीके मुताबिक दिल्ली जेलमें तबीयत बिगड़नेके बाद भंगूको दीनदयाल उपाध्याय अस्पतालमें भर्ती कराया गया था जहां उनकी मौत हो गयी। पर्ल्स ग्रुपके मालिक निर्मल सिंह भंगूको पीजीएफ/पीएसीएल लिमिटेड द्वारा संचालित चिटफंड घोटालेमें ८ जनवरी २०१६ को सीबीआईने गिरफ्तार किया था और वह तभीसे जेलमें था। हिमाचल, राष्ट्रीय अखबारों और राष्ट्रीय मीडियामें भंगूकी मौतकी खबरको ज्यादा तवज्जो नहीं मिली। राष्ट्रीय मीडिया वैसे भी अपनी गैर-जरूरी बहसोंके लिए बदनाम है। क्या ही अच्छा होता जो वह पीएसीएल और सहारा समूहसे पीड़ित निवेशकोंकी व्यथाको उजागर करता। हिमाचलके निवेशकोंने भी पर्ल्स ग्रुपमें करोड़ों रुपया लगाया हुआ था और अब भी हजारों लोगोंका रुपया अटका पड़ा है। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने ४५००० करोड़ रुपयेके सामूहिक निवेश घोटालेमें पीएसीएल (पूर्वमें पर्ल्स एग्रोटेक कॉर्प) के चार अधिकारियोंको गिरफ्तार किया था जिनमें अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक (एमडी) निर्मल सिंह भंगू, एमडी और प्रमोटर-निदेशक सुखदेव सिंह और दो कार्यकारी निदेशक गुरमीत सिंह और सुब्रत भट्टाचार्य शामिल हैं। सुप्रीम कोर्टने निवेशकोंका पैसा रिफंड करवानेके लिए पूर्व मुख्य न्यायाधीश आरएम लोढ़ाके नेतृत्वमें एक समिति बनायी हुई है। समितिने समूहकी सारी संपत्ति जब्त कर ली और मार्च २०१६ में संपत्तिकी नीलामी शुरू की।

सेबीने अभीतक १९००० रुपयेतकके दावेवाले २.०८ मिलियनसे ज्यादा निवेशकोंको १०२१.८१ करोड़ रुपयेका भुगतानका दावा किया है। भारतमें चिटफंड, पोंजी स्कीमों, एकत्रित निवेश योजनाओं, एमएलएम यानी बहुस्तरीय विपणन, मनी सरकुलेशन और पिरामिड आकारवाली गैर-बैंकिंग फाइनेंस कम्पनियों द्वारा निवेशकोंसे रुपयोंकी उगाही और ठगे जानेका एक लंबा इतिहास रहा है। इसी वजहसे पीएसीएल लिमिटेड (पर्ल ग्रुप), पश्चिम बंगालकी शारदा ग्रुप और सहारा ग्रुप जैसी कम्पनियोंके निवेशकों और एजेंटोंमें व्यापक असंतोष है। १३ फरवरी १९९६ से पर्ल एग्रोटेक कम्पनी लिमिटेड द्वारा पंजाबसे अपना कारोबार बढ़ाना शुरू किया गया और २०१०-११ की अवधितक पूरे भारतवर्षमें पीएसीएल ग्रुपके कुल २८३ कार्यालयों द्वारा व्यापक स्तरपर भूखंड आबंटित करनेके नामपर एकत्रित निवेश योजनाओं द्वारा करोड़ों रुपयोंको इकट्ठा किया गया। सीबीआईको २२ अगस्त २०१४ को पता चला कि पीएसीएल लिमिटेडकी सभी व्यावसायिक गतिविधियां एकत्रित निवेश योजनाएं हैं और कम्पनीके प्रोमोटरोंपर मुकद्दमा दर्ज किया गया। भारतके माननीय सर्वोच्च न्यायालयने सुब्रत भट्टाचार्य बनाम भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) सिविल अपील संख्या-१३३०१/२०१५ के मामलेमें तथा अन्य संबंधित मामलोंमें २ फरवरी २०१६ को एक आदेश पारित किया था। उक्त आदेशके माध्यमसे भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) को अन्य बातोंके साथ-साथ यह निर्देश दिया गया था कि वे माननीय न्यायमूर्ति श्री आरएम लोढ़ा (भारतके पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति) की अध्यक्षतामें एक समितिका गठन करे, ताकि पीएसीएल लिमिटेड द्वारा खरीदी गयी जमीनकी बिक्रीको डिस्पोज आफ किया जा सके और बिक्रीसे मिलनेवाले पैसोंसे निवेशकोंको भुगतान किया जा सके, जिन्होंने पीएसीएल लिमिटेडमें पैसा लगाया था। पाठकोंको ज्ञात होना चाहिए कि बैंक और एनबीएफसीके बीचमें अंतर होता है। गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनीका संचालन कम्पनी एक्ट १९५६ के तहत होता है और आरबीआईके साथ-साथ इनका पंजीकरण कम्पनी अधिनियमकी धारा ६०९ के तहत नियुक्त कम्पनी रजिस्ट्रार, जिसके अंतर्गत विभिन्न राज्य और संघ राज्य क्षेत्र आते हैं, के पास करवाया जाता है। वहीं बैंकोंका संचालन बैंकिंग अधिनियम-१९४९ के तहत होता है।

बैंकोंमें आम जनताके साथ मौद्रिक लेन-देनका दायरा व्यापक होता है जबकि एनबीएफसी छोटे बचतकर्ताओंसे डिमांड डिपाजिट स्वीकार नहीं कर सकते हैं। इसी तरह एनबीएफसी न तो अचल संपत्तियोंके निर्माणमें निवेश कर सकती हैं और न ही यह प्राथमिक रूपसे कृषि या औद्योगिक गतिविधियोंमें शामिल हो सकती हैं। बैंक कृषि एवं उद्योग दोनों क्षेत्रोंकी वित्त संबंधी जरूरतोंकी पूर्ति करनेके लिए अधिकृत हैं। गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियोंको सामूहिक निवेश योजनाओं, एमएलएमएपोंजी स्कीमों, लकड़ी, भेड़ बकरियों, पशुपालन, कृषि कार्यों इत्यादिसे धन स्वीकार करनेकी अनुमति नहीं है और यह प्राइस चिट एंड मनी सरकुलेशन एक्ट १९७८ के अंतर्गत एक संज्ञेय अपराध है। इस अधिनियमके प्रावधानोंके उल्लंघनपर निगरानी और आवश्यक कानूनी काररवाई राज्य सरकारों द्वारा की जा सकती है। मनी सरकुलेशन, मल्टी लेवल मार्केटिंग, पोंजी स्कीम ऐसी योजनाएं हैं जो सदस्योंको नामांकित होनेपर आसान या त्वरित धन वापसीका वादा करती हैं। अमूमन इन स्कीमोंसे उत्पादोंकी ज्यादा बिक्री नहीं होती है, लिहाजा पिरामिड श्रृंखला टूट जाती है और पिरामिडसे जुड़ा सबसे निचला सदस्य अधिकतम प्रभावित होता है।

चूंकि रिटर्न एवं एकत्रित धनराशिका दुरुपयोग एवं अन्यत्र निवेश भी प्रवर्तकों, प्रमोटरों द्वारा दिया जाता है, लिहाजा निवेशकको मूल राशि लौटा पाना असंभव हो जाता है और अंतत: अपराधकर्ता धन लेकर भाग जाते हैं। ऐसे मामलोंमें निवेशकोंका जागरूक होना जरूरी है, वहीं राज्य एवं केंद्र सरकारकी विभिन्न एजेंसियोंकी सक्रियताके अलावा सेबी जैसी नियामक संस्थाओंसे समय रहते ऐसी कम्पनियोंके विरुद्ध सख्त कानूनी काररवाईसे भी आम नागरिकोंकी गाढ़ी कमाईको लूटनेसे रोका जा सकता है। जिस अनुपातमें निवेशकों ने पीएसीएल लिमिटेड (पर्ल) की योजनाओंमें निवेश किया था, उस अनुपातमें समय रहते उन्हें रिफंडकी वापसी न होनेसे उनमें व्यापक असंतोष तथा घबराहट है। विशेषकर एजेंटोंकी सुप्रीम कोर्टसे शीघ्र रिफंड वापसीकी मांग है ताकि वे अपने निवेशकोंके बीच सम्मानपूर्वक सिर उठाकर चल सकें।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 181

उपयोगी जीएसटी डेटा

सात वर्ष पहले वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की शुरुआत के बाद से अब तक जीएसटी नेटवर्क यानी जीएसटीएन ने बहुत बड़ी तादाद में लेनदेन दर्ज किए हैं। सवाल यह है कि क्या इन आंकड़ों को अन्य स्थानों पर इस्तेमाल किया जा सकता है। जीएसटीएन इन आंकड़ों को अन्य स्थानों पर इस्तेमाल करने का अनिच्छुक रहा है और इस बात को समझा जा सकता है क्योंकि इसे लेकर निजता और सुरक्षा संबंधी जोखिम हैं। परंतु समुचित गोपनीयता के साथ इस आंकड़े का इस्तेमाल न केवल नीति निर्माताओं के काम आ सकता है बल्कि व्यापक जनता और बाजार भी इससे उपयोगी काम कर सकते हैं। जीएसटी परिषद को जीएसटीएन को यह निर्देश देना चाहिए ताकि वह जनता और नीति निर्माताओं को समुचित ढंग से सूचित कर सके।

जीएसटी के आंकड़ों का एक संभावित इस्तेमाल केंद्र सरकार के सांख्यिकीविदों (जो केंद्रीय सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय को रिपोर्ट करते हैं) ने सुझाया है। खबरों के मुताबिक देश का आधिकारिक उत्पादन अनुमान जल्दी ही जीएसटी आंकड़ों पर आधारित हो सकता है। सकल घरेलू उत्पाद यानी जीएसटी के आकलन के आधार वर्ष में बदलाव की समुचित व्यवस्था बन जाने के बाद ऐसा किया जा सकता है। आर्थिक गतिविधियों के आकलन के मौजूदा तरीकों को लेकर कई किस्म की आलोचनाएं देखने को मिल चुकी हैं। एक प्रमुख चिंता रही है केंद्रीय कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत कंपनियों की बैलेंस शीट का इस्तेमाल किया जाना। कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय के आंकड़ों में निजी क्षेत्र के मूल्यवर्धन को कारोबारी आय में शामिल करने से यह जोखिम रहता है कि अनुमान बड़े और संगठित उपक्रमों की ओर झुक जाएंगे। खासतौर पर यह देखते हुए कि फिलहाल बड़े और छोटे उपक्रमों के बीच नीतियों के अलग और असमान प्रभाव को लेकर कई तरह की चर्चाएं सामने आ रही हैं। आधिकारिक आंकड़ों में ऐसा पूर्वग्रह एक गंभीर समस्या है।

जीएसटी परिभाषा के अनुरूप ही संगठित क्षेत्र द्वारा किए जाने वाले भुगतान पर आधारित है। इसके बावजूद इसकी पहुंच कहीं अधिक विस्तृत है और इसमें इतने विविध लेनदेन शामिल हैं कि इससे बेहतर अनुमान निकाले जा सकते हैं। इसके अलावा जीएसटी के आंकड़े कंपनियों की रिपोर्ट की तुलना में अधिक नियमित और ठोस भी होते हैं। कंपनियों की रिपोर्ट तिमाही आती हैं जबकि जीएसटी के आंकड़े मासिक स्तर पर दर्ज किए जाते हैं।

निश्चित रूप से अलग-अलग और समेकित जीएसटी डेटा का इस्तेमाल करने के और भी कई तरीके हैं। उदाहरण के लिए व्यक्तिगत कर दाता स्तर पर यह देखा जाना चाहिए कि क्या इसका इस्तेमाल उस यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफेस के लिए किया जा सकता है जो रिजर्व बैंक के इनोवेशन हब द्वारा तैयार किया जा रहा है। समुचित सुरक्षा और निजता के बचाव के उपायों के साथ यह कर्जदाताओं को संभावित कर्जदारों के बारे में उपलब्ध सूचनाओं की गुणवत्ता में काफी सुधार कर सकता है।

समेकित आंकड़ों को समुचित ढंग से गोपनीय बनाया जाना चाहिए और उसके बाद सार्वजनिक रूप से उन्हें जारी किया जाना चाहिए। किन वस्तुओं और स्लैब के आंकड़े कितने राजस्व वाले हैं, यह बात इस चर्चा में अहम भूमिका निभा सकती है कि जीएसटी में कैसे सुधार किए जाएं कि अधिक राजस्व आ सके और इस दौरान प्रक्रिया भी सहज हो सके। ऐसे आंकड़े देश की अर्थव्यवस्था के कामकाज के बारे में काफी कुछ बताएंगे और कारोबारी मॉडल में उपयुक्त बदलावों की राह आसान करेंगे। ऐसे में जीएसटी में स्लैब कम करने की ओर बढ़ना होगा। कई कारोबारी और छोटे उद्यमी लंबे समय से इसकी मांग कर रहे हैं। परंतु इस दलील को सरकार के लिए प्रभावी बनाने के लिए प्रति स्लैब उचित इजाफा राशि की जानकारी होनी चाहिए ताकि आकलन करके राजस्व बढ़ाने वाली या राजस्व निरपेक्ष दर तय की जा सके। जीएसटीएन की निजता और सुरक्षा की चिंता महत्त्वपूर्ण है और उसका सम्मान करना चाहिए लेकिन इन चिंताओं को दूर किया जा सकता है।

पूर्वोत्तर के लिए भाजपा की नीति

मणिपुर भारत के पूर्वोत्तर हिस्से पर शासन करने के भाजपा के विशिष्ट वैचारिक रुख को दर्शाता है, जहां वह पहचान की राजनीति का खेल खेल रही है।

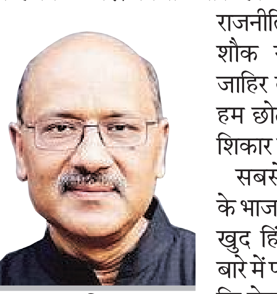

राष्ट्र की बात
शेखर गुप्ता

बीते एक दशक में जब-जब नरेंद्र मोदी सरकार की नीतियों का जिक्र आया है तो 'ताकतवर' शब्द बार-बार देखने को मिला है। प्रश्न यह है कि वर्तमान सरकार वाकई में ताकतवर है या कमजोर? मणिपुर इसकी शुरुआत करने के लिए एक बढ़िया जगह है।

अगर आप मोदी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के समर्थक हैं तो आप कहेंगे मणिपुर प्रकरण से इस तरह निपटना मजबूती का काम है। आलोचकों के लिए यह सबसे बड़ी नाकामी होगा। अगर हम कहें कि दोनों ही जवाब गलत हैं तो? और हां, मैं यह बिल्कुल नहीं कह रहा कि दोनों थोड़े-थोड़े सही हैं।

जवाब यह है कि मणिपुर पूर्वोत्तर पर शासन करने का भाजपा का अनोखा वैचारिक तरीका दिख रहा है, जहां वह पहचान की राजनीति के जिउ जित्सु (जापानी मार्शल आर्ट) जरिये शासन करना चाहती है। अगर पूर्वोत्तर के राज्यों में शासन के लिए छोटी पहचान की राजनीति चुनौती बन रही है तो भाजपा उसका मुकाबला बड़ी पहचान के माध्यम से करना चाहती है। यही वजह है कि हमने जिउ जित्सु का इस्तेमाल किया क्योंकि उस मार्शल आर्ट में आप प्रतिद्वंद्वी की ताकत और वजन का ही इस्तेमाल कर उसे हराते हैं। भाजपा के लिए यह प्रयोग या प्रक्रिया चल रही है। हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं लेकिन पार्टी इस प्रक्रिया को जारी रखना चाहती है।

उनकी नजर में कांग्रेस ने बीते तमाम दशकों के दौरान पूर्वोत्तर में और खासकर जनजातीय राज्यों में पहचान की राजनीति में भयंकर भूल की है। मैं पूर्वोत्तर में काम कर चुके राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कई नेताओं से यह बात सुन चुका हूं। भाजपा के कुछ लोग भी इनमें शामिल हैं और उनमें से कुछ दूर से ही सही लेकिन इससे अब भी जुड़ना चाहते हैं।

संक्षेप में उनके कहने का अर्थ है कि कांग्रेस कभी वहां की समस्या से दो-दो हाथ नहीं किए। उसने जनजातीय समूहों और ईसाई प्रभाव को पकड़ बनाने दी। उसने उग्रवाद को शांत करने के लिए केंद्र की ताकत का इस्तेमाल किया लेकिन राजनीतिक रूप से स्थानीय तत्वों के साथ नरमी बरतती रही। ऐसा भारतीय राष्ट्रवाद के बारे में कांग्रेस की कमजोर समझ के कारण हुआ। वह हिंदुस्तान और व्यापक हिंदू बहुमत को राष्ट्रीय इच्छा की अभिव्यक्ति से बाहर रखने पर इस कदर आमादा थी कि उसने कई घावों को बढ़ने दिया। इस प्रकार उसने पूर्वोत्तर के मोर्चे को मुश्किल बनने दिया।

हम बात को और सरल शब्दों में कह सकते हैं कि कांग्रेस ने अपने फायदे के लिए छोटी स्थानीय पहचान की राजनीति का इस्तेमाल तो किया लेकिन केवल वोट बैंक के रूप में। इससे वहां की समस्याएं जस की तस बनी रहीं। संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्र में विविधता बहुत खूबसूरत बात है लेकिन हिंदू हृदय प्रदेश के नजरिये से देखें तो यह राष्ट्रीय हित को प्रभावित करती है। ऐसी जटिल समस्या को हल करने में समय लगेगा और इस दौरान कुछ झटकों के लिए तैयार रहना होगा। मणिपुर को वैसा ही झटका मानें, लेकिन यह भी देखें कि 'हम वहां क्या कर रहे हैं- छोटी पहचान (कुकी-ईसाई-म्यांमारवासी) से लड़ने के लिए बड़ी पहचान (मेइती-हिंदू-भारतीय) का सहारा ले रहे हैं।' हर व्यक्ति जानता है कि हम यानी केंद्र किस ओर है। आप पहचान की राजनीति करना चाहते थे? शौक से कीजिए। मगर जाहिर तौर पर इसके बाद हम छोटी जटिलताओं के शिकार हो जाते हैं।

सबसे नई समस्या वहां के भाजपाई मुख्यमंत्री हैं जो खुद हिंदू हैं और जिनके बारे में पार्टी में कहा जाता है कि मेइती लोगों के तो वह भगवान हैं, उन्होंने राज्यपाल को एक ज्ञापन सौंपा और केंद्रीय बलों पर नियंत्रण की मांग की। ठीक पहले उनके दामाद ने इन बलों को हटाने की मांग की थी। मुझे ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं नजर आता जहां केंद्र पर शासन कर रहे दल का मुख्यमंत्री, केंद्र द्वारा पदस्थ राज्यपाल के पास जाए और केंद्रीय बलों पर नियंत्रण की मांग करे यानी परोक्ष रूप से उन्हें हटाए जाने की। मानो वह कह रहे हों- अगर आप चाहते हैं कि हम मेइती हिंदू बनाम कुकी की लड़ाई लड़ें तो इसे हम पर छोड़ दीजिए। हमारे पास हथियार हैं, संख्या बल है और ताकत है बशर्ते कि आपके केंद्रीय बल रास्ते में न आएं। हम पुराने सवाल पर लौटते हैं: यह मजबूत सरकार है या कमजोर?

पार्टी तब जरूर खुद को मजबूत महसूस करती होगी जब उसके भीतर यह मांग उठती है कि मौजूदा विरोध प्रदर्शनों को देखते हुए संविधान के अनुच्छेद 356 का इस्तेमाल करके पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की सरकार को बर्खास्त कर दिया जाए। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल कैमरे पर टेलीप्रॉम्पटर पढ़ते हुए धमकी दे रहे हैं कि वह संविधान का इकबाल बरकरार रखने के लिए शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने के लिए तैयार हैं। तब पार्टी अपने ही मुख्यमंत्री का क्या करेगी, जिसके राज्य की आबादी पश्चिम बंगाल की आबादी के बमुश्किल पांच फीसदी है और जो मांग कर रहा है कि केंद्रीय बलों का नियंत्रण उसे सौंपा जाए या उन्हें वापस बुलाया जाए?

मणिपुर में भाजपा का नजरिया है कि राज्य में विदेशी घुसपैठिये और सशस्त्र ईसाई कुकी आदिवासी हमला कर रहे हैं और सरकार बहुत शानदार काम करते हुए हिंदू मेइती समुदाय का बचाव कर रही है। भले ही उनकी आबादी कुकी की तुलना में तीन गुना हो। आप इस मजबूत लड़ाई को रोकने के लिए अनुच्छेद 356 का इस्तेमाल नहीं करते। अगर आप आलोचक हैं तो आप इसे विशुद्ध नाकामी मानेंगे। राज्य सशस्त्र अराजकता का शिकार हो चुका है। ठीक है तकनीकी लिहाज से वह अलग दौर था मगर कश्मीर, पंजाब या नागालैंड और मिजोरम में चरम उग्रवाद के दौर में या पूर्वी-मध्य भारत के माओवादी इलाकों में कभी 10 किलोमीटर तक मार करने वाले रॉकेट और ड्रोन के जरिये बम नहीं दागे गए।

यह पूछने पर आपको जवाब मिलेगा: सीमापार देखिए। खतरा वहां से आ रहा है। देखिए म्यांमार की हालत क्या है। परंतु म्यांमार की स्थिति तो हमेशा ऐसी ही खस्ता थी और भारत की सीमा से लगे उसके उत्तरी इलाके में तो खास तौर पर हमेशा बिखराव रहा। आज म्यांमार की सेना नाटकीय गति से नियंत्रण खो रही है। इसका यह मतलब तो नहीं कि भारत अपनी सेना भेजकर वहां व्यवस्था बनवाए। भारत का काम अपने यहां की व्यवस्था बनाना है।

चूंकि पूर्वोत्तर पर भाजपा का रुख हिंदू पहचान और उसके वैचारिक राष्ट्रवाद से चल रहा है तो पार्टी यह नहीं कह सकती है यह कारगर नहीं है। मगर इस रुख ने मणिपुर में कुछ पुराने जख्म कुरेद दिए हैं और दूसरे घाव भी सामने आ गए हैं। मोदी सरकार ने पहले कार्यकाल में नागा विद्रोहियों (एनएससीएन) के साथ अंतिम फ्रेमवर्क समझौता करके पूर्वोत्तर में एक शानदार शुरुआत की थी। मोदी ने अपने आवास पर एक टेलीविजन कार्यक्रम में इसे ऐतिहासिक माना था और वहां नगा नेता भी मौजूद थे। उसके 10वें साल में कोई हलचल नहीं है। केंद्र के पहले वार्ताकार खुफिया ब्यूरो के पूर्व विशेष निदेशक आर.एन. रवि इस समय तमिलनाडु के राज्यपाल हैं जबकि एनएससीएन ने 2020 में ही उन पर फ्रेमवर्क समझौते के साथ छेड़खानी का इल्जाम लगाया था। उनके उत्तराधिकारी एके मिश्रा (वह भी खुफिया ब्यूरो के विशेष निदेशक रह चुके हैं) सक्रिय नहीं हैं और गुरुवार को नागालैंड सरकार द्वारा बुलाई गई एक बड़ी बैठक जिसमें नागरिक समाज, जनजातीय और चर्च के नेता शामिल थे, में यह मांग रखी गई कि संवाद को मंत्री स्तर या राजनैतिक स्तर तक बढ़ाया जाए। एनएससीएन ने यह भी कहा कि देर करने से नुकसान बढ़ेगा।

अगर नौ साल में नगालैंड में कोई प्रगति नहीं हुई और वह कुछ हद तक पीछे ही चला गया तो इस बीच नई अप्रत्याशित जगहों से चिंगारियां निकल रही हैं, खास तौर पर एनआरसी/सीएए की प्रतिक्रिया में। खासी छात्र संगठन ने बाहरी लोगों के विरुद्ध अपना आंदोलन तेज कर दिया है। गत माह मेघालय विधानसभा ने मेघालय आइडेंटिफिकेशन, रजिस्ट्रेशन (सेफ्टी ऐंड सिक्योरिटी) ऑफ माइग्रेंट वर्कर्स अमेंडमेंट बिल, 2024 पारित कर दिया। अब निरीक्षकों के पास 'बाहरी' कर्मचारियों की पहचान, पंजीयन और उन्हें चिह्नित करने के अधिक अधिकार होंगे।

मिजोरम में भी 1986 के शांति समझौते के बाद से शांति थी और वह भारत के सबसे शांत तथा कानून सम्मत क्षेत्रों में था। अब वहां भी पहचान का मुद्दा फिर से उठ रहा है और यह सीमापार तक फैल रही समस्या है। मुख्यमंत्री लाल्डुहोमा भी सबसे बड़ी मिजो जनजाति के पक्ष में आवाज उठाकर ग्रेटर मिजोरम की मांग नए सिरे से उठा रहे हैं। असम में हाल ही में खूनी संघर्ष हुए हैं जहां भाजपा एक पहचान (बंगाली मुसलमान) को दूसरी पहचान (हिंदू) से भिड़ाने में जुटी है।

2014 से ही भाजपा ने इस क्षेत्र पर केंद्र के रुख में वैचारिक और दार्शनिक किस्म का बदलाव किया है। परंतु पूर्वोत्तर के राज्यों के लिए इसके परिणाम अब तक बुरे ही साबित हुए हैं। मणिपुर इसका ज्वलंत उदाहरण है। लेकिन भाजपा के लिए काम अभी चल रहा है। उसके लिए यह वैचारिक, दार्शनिक और बिना शक राजनीतिक काम है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विवादों के मायने

देवांशु दत्ता

सोशल मीडिया कंपनी एक्स पर ब्राजील में प्रतिबंध लगा दिया गया है। भारत में दिल्ली उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश ने मानहानि से जुड़े एक मामले में विकिपीडिया को बंद करने की धमकी दी है। अमेरिका में इंटरनेट आर्काइव (आर्काइव डॉट ओआरजी) को कॉपीराइट मामले में सामग्री हटाने का निर्देश मिला है। फ्रांस ने टेलीग्राम ऐप के संस्थापक पावेल दुरोव को इस आरोप में गिरफ्तार कर लिया है कि इस ऐप का इस्तेमाल बच्चों के अश्लील वीडियो प्रसारित करने के लिए हो रहा है। इन सभी मामलों से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को चोट पहुंची है। ये सभी मामले उन देशों में हुए हैं, जहां लोकतांत्रिक व्यवस्था है, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को मौलिक अधिकार माना गया है और इसे कई प्रावधानों के जरिये सुरक्षा दी गई है।

अप्रैल में ब्राजील में एक न्यायाधीश अलेक्जांड्र डी मोरैस ने एक्स पर चल रहे कुछ अकाउंट बंद करने का आदेश दिया था। आरोप था कि इन अकाउंट के जरिये ब्राजील के बारे में गलत जानकारी फैलाई जा रही है। मगर एक्स ने यह आदेश मानने से इनकार कर दिया और इसके मालिक ईलॉन मस्क ने न्यायाधीश मोरैस को 'ब्राजील का तानाशाह' बता दिया। दोनों पक्षों के बीच जबानी जंग तेज हो गई, जिसके बाद ब्राजील के उच्चतम न्यायालय के पांच न्यायाधीशों के पीठ ने न्यायाधीश मोरैस के आदेश को सही ठहराते हुए बहाल रखा। भारत में समाचार एजेंसी एएनआई ने विकिपीडिया के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दर्ज कराया है। एएनआई का आरोप है कि विकिपीडिया ने उसके खिलाफ अनर्गल आरोप लगाए हैं और उसे 'भारत सरकार के प्रचार का माध्यम' बताया है। न्यायाधीश नवीन चावला ने उन तीन अकाउंट का ब्योरा मांगा, जिन्होंने एएनआई से जुड़ी जानकारी को बदला था। मगर विकिपीडिया को अकाउंट की जानकारी देना सही नहीं लगा। इसके बाद न्यायाधीश चावला ने विकिपीडिया को धमकी दी है कि वह सरकार को उस पर प्रतिबंध लगाने के लिए कहेंगे। इंटरनेट आर्काइव निःशुल्क डिजिटल लाइब्रेरी है, जिसमें बंद हो चुकी वेबसाइट, पुरानी फिल्मों, संगीत और पुस्तकों से जुड़ी सामग्री मौजूद होती हैं।

यह निःशुल्क पुस्तकालय की ही तरह उपयोगकर्ताओं को एक बार में स्कैन की हुई एक डिजिटल पुस्तक पढ़ने देता था। कोविड महामारी के दौरान और बाद में कई सार्वजनिक पुस्तकालय बंद होने के कारण इंटरनेट आर्काइव ने 'एक पुस्तक एक व्यक्ति' की शर्त हटा दी ताकि लोगों को कोई दिक्कत नहीं हो। मगर प्रकाशकों ने यह कहते हुए इंटरनेट आर्काइव पर मुकदमा दायर कर दिया कि इन डिजिटल पुस्तकों का पढ़ने के अलावा दूसरे तरीकों से भी इस्तेमाल किया गया, जो कॉपीराइट नियमों के खिलाफ थे। प्रकाशक हशेट सर्किट ने अमेरिका के एक न्यायालय में आर्काइव के खिलाफ मुकदमा जीत लिया है। अब आर्काइव के लिए लगभग 50,000 पुस्तकें लोगों को उपलब्ध कराना मुश्किल हो जाएगा। रूस, ईरान और चीन जैसे कई देशों ने एक्स पर स्थायी रूप से पाबंदी लगा रखी है। मगर ब्राजील में एक्स का इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या लगभग 2 करोड़ है। एक्स अक्सर सरकार के निर्देश पर अकाउंट बंद कर दिया करती है। उदाहरण के लिए कश्मीर, मणिपुर, किसानों के आंदोलन सहित अन्य विषयों पर केंद्रित अकाउंट आम तौर पर भारत में नहीं देखे जा सकते। एक्स उन अकाउंट को भी बंद कर देती है, जो इसकी आंतरिक नीतियों का उल्लंघन कर सामग्री प्रकाशित या प्रसारित करते हैं। ब्राजील में अकाउंट बंद करने से एक्स का इनकार करना थोड़ा असामान्य है और इससे कंपनी को राजस्व का नुकसान उठाना पड़ सकता है।

आर्काइव मामले के बाद कई शोधकर्ता कई पुस्तकें नहीं पढ़ पाएंगे। अमेरिकी न्यायालय ने स्वीकार किया कि सामग्री देकर आर्काइव ने मुनाफा नहीं कमाया था। निःशुल्क सार्वजनिक पुस्तकालय भी कॉपीराइट वाली किताबें एवं उनकी डिजिटल प्रतियां लोगों को पढ़ने के लिए देते रहते हैं। इस आदेश के बाद उन जगहों पर रहने वाले लोगों को मुश्किल हो सकती है, जहां पुस्तकालय (फिजिकल लाइब्रेरी) नहीं हैं। विकिपीडिया 300 भाषाओं में उपलब्ध है और कोई भी इस पर किसी भी तरह की सामग्री जोड़ या हटा सकता है या फिर नई प्रविष्टि दाखिल कर सकता है। मगर जो तथ्य जोड़े या दिए जा रहे हैं उनकी पुष्टि करने वाली सूचना अथवा स्रोत सार्वजनिक पटल पर अवश्य उपलब्ध होने चाहिए। विकिपीडिया पर उपलब्ध जानकारी में कभी-कभी त्रुटियां एवं पूर्वग्रह भी होते हैं मगर स्वयं सुधार या सेल्फ करेक्शन की व्यवस्था होने से उपयोगकर्ता सामग्री पर सवाल उठा सकते हैं, उसे संशोधित कर सकते हैं या उस पर चर्चा कर सकते हैं। इंटरनेट आर्काइव की तरह यह भी शोधकर्ताओं के लिए एक बड़ा मंच है। टेलीग्राम भी चैनल है, जहां व्हाट्सऐप की तरह ही उपयोगकर्ता पोस्ट डालते है। टेलीग्राम यूक्रेन युद्ध और गाजा से संबंधित सामग्री पोस्ट करने के लिए बड़ा प्लेटफॉर्म है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थन करने वाले लोग इनमें कम से कम तीन प्रतिबंधों के खिलाफ आवाज उठाएंगे। एक्स का रवैया ब्राजील में थोड़ा अटपटा जरूर रहा है क्योंकि यह सरकार के विशेष अनुरोध पर कोई खास राजनीतिक सामग्री किसी विशेष इलाके में उपलब्ध नहीं होने देती। फिर भी एक्स पर पूर्ण प्रतिबंध अतिवाती प्रतिक्रिया लगती है।

विकिपीडिया के लिए अज्ञात संपादकों के बारे में जानकारी मुहैया कराना थोड़ा कठिन है। एएनआई के बारे में विवादास्पद सामग्री की पुष्टि करने वाले सार्वजनिक लिंक दिए गए हैं। यहां भी जानकारी या सूचना देने वाले किसी गैर-लाभकारी प्लेटफॉर्म पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की बात अत्यधिक कठोर जान पड़ती है और इससे भारत में लाखों लोगों को नुकसान होगा।

आर्काइव का मामला कॉपीराइट सामग्री के निःशुल्क इस्तेमाल (लार्ज लैंग्वेज मॉडल में इस सामग्री के इस्तेमाल सहित) पर कई सवाल खड़े करता है। सार्वजनिक पुस्तकालयों को भी किताबें उपलब्ध कराने के अधिकार से वंचित करने के लिए भी ऐसे ही तर्क दिए जा सकते हैं। सभी की नजरों में बच्चों के अश्लील वीडियो या चाइल्ड पोर्नोग्राफी प्रसारित करना गलत और अक्षम्य अपराध है मगर टेलीग्राम अपने बचाव में कह सकता है कि सामग्री पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है और अधिक से अधिक वह यही कर सकता है कि कुछ खास मामलों में जानकारी देने के लिए अधिकारियों का सहयोग करे। ये मामले 21वीं शताब्दी में डिजिटल माहौल के बीच अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नियमों को नए तरीके से परिभाषित करने पर विवश करते हैं। चूंकि ये मामले बड़े लोकतांत्रिक देशों में चल रहे हैं, इसलिए वहां इन्हें स्वेच्छाचारी देशों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर लगे प्रतिबंधों की तुलना में गंभीरता से लिया जाएगा।

आपका पक्ष

रेल दुर्घटनाओं का षड्यंत्र

रेल दुर्घटनाओं और रेल पटरियों पर आतंकी षड्यंत्र की खबर बहुत चिंताजनक है। देश भर में बड़े स्तर पर हिंसा, हत्याएं, रेल संपत्ति के नष्ट करने और अराजकता की आहट देते हैं है। देश में एक ऐसा आपराधिक इकोसिस्टम स्थापित हो गया है जो देश को अराजकता, अशांति, सांप्रदायिक दंगों, आगजनी, रेल हादसों में झोंकने के षड्यंत्र करता है। सरकार और प्रशासन भी दंगे भड़कने के भय से ठोस कदम उठाने में सतर्कता बरतते हैं। रेल पटरियों से सटी हुई अवैध झोपड़ियां और निर्माण सभी शहरों में दिखाई देते हैं और कब कोई रेल दुर्घटना को अंजाम दे, सुरक्षा एजेंसियों और पुलिस को पता भी नहीं चलेगा। रेल सुरक्षा बिना टिकट यात्रियों को पकड़ने, रेल में छोटे मोटे चोरी या मारपीट के अपराधों से बढ़कर अब रेल पटरियों पर आ गई है। आरपीएफ और जीआरपी का संगठन बहुत छोटा है और आधुनिक हथियारों और आधुनिक टेक्नोलॉजी के अभाव में निष्प्रभावी है। आतंकवादी हमलों, रेल पटरियों पर विस्फोटक जैसे भयंकर षड्यंत्रों को रोकने में नाकाम हैं। रेलवे ने यात्री सुविधा, रेल परिचालन और जीरो एमीशन ऊर्जा में बहुत आधुनिकीकरण किया है। अब रेल सुरक्षा की तकनीकी आधुनिकीकरण एवं रेल सुरक्षा फोर्स पर पूरा ध्यान देने की आवश्यकता है। दुर्गम क्षेत्रों, पहाड़ी सुरंगों, जंगल और ऊंचे पर्वतीय पुलों पर पटरियों और रेलमार्ग पर सुरक्षा सुनिश्चित करना साहसिक और कठिन कार्य है परंतु रेलयात्रियों की सुरक्षा सर्वोपरि है।

विनोद जौहरी, दिल्ली

अजमेर में विगत सोमवार को रेलवे पटरी पर कंक्रीट डाल कर ट्रेनों के परिचालन में व्यवधान की कोशिश की गई थी

ओजोन सुरक्षित तो हम सुरक्षित

ओजोन के संरक्षण के लिए 19 दिसंबर, 1964 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 16 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय ओजोन दिवस मनाने की घोषणा की थी। संयुक्त राष्ट्र और दुनिया के लगभग 45 अन्य देशों ने ओजोन परत को खत्म करने वाले पदार्थों पर मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल पर 16 सितंबर, 1987 को हस्ताक्षर किए थे। इसके बाद पहली बार 1995 को विश्व ओजोन दिवस मनाया गया और इसके बाद से हर साल यह दिन मनाया जाता है। ओजोन परत का संरक्षण उसी तरह जरूरी है, जिस तरह हमें बीमारियों से बचने के लिए अपने स्वस्थ की रक्षा करते हैं। ओजोन परत सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों से हमारी रक्षा करती है। इसकी खोज फ्रांस के भौतिकविदों फैबरी चार्ल्स और हेनरी बुसोन ने की थी। ओजोन परत को सुरक्षित रखने के लिए हमारे देश को ही नहीं, बल्कि दुनिया के हर देश के नागरिक को गंभीर रहने की जरूरत है। इसके लिए पर्यावरण संरक्षण भी बहुत जरूरी है।

धरती पर जिस तरह प्रदूषण बढ़ रहा है और जहरीला धुआं मुसीबत बन रहा है। उससे ओजोन परत को पतला होने का खतरा बढ़ गया है। ओजोन परत को एसी, रेफ्रिजरेटर से निकलने वाली गैसें नुकसान पहुंचाती है। दुनिया के सभी देशों को मिलकर ओजोन परत को बचाने के लिए युद्ध स्तर पर अभियान चलाने चाहिए।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो – पीटीआई

भारत ने 'यागी' तूफान से मची तबाही को मद्देनजर रखते हुए रविवार को म्यांमार, वियतनाम और लाओस के लिए राहत सामग्री भेजी।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

“ स्वास्थ्य ही असली धन है, न कि सोना-चांदी।
- महात्मा गांधी

कथित शराब घोटाले में करीब छह महीनों तक जेल में रहने के बाद शीर्ष अदालत द्वारा जमानत पर रिहा हुए मुख्यमंत्री केजरीवाल अगर अब इस्तीफा दे रहे हैं, तो इसके पीछे उनकी लंबी राजनीतिक तैयारी दिखती है, ताकि वे विपक्षियों पर नैतिक बढ़त लेकर आसन्न चुनावों में अपनी दावेदारी मजबूत कर सकें।

अब इस्तीफा

कथित शराब घोटाले में 177 दिनों तक जेल में रहने के बाद शीर्ष अदालत से जमानत पर रिहा हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का अपने पद से इस्तीफा देने का एलान एकबारगी चौंकाने वाला बेशक हो, लेकिन इसके निहितार्थ स्पष्ट ही हैं। हालांकि, ऐसा नहीं है कि उनके इस्तीफे की बात पहले न उठी हो। विपक्षी दल लगातार नैतिक आधार पर उनसे इस्तीफे की मांग करते रहे हैं। यह दीगर बात है कि अपने करीब छह महीने के जेल-प्रवास के दौरान उनके मन में इस्तीफे का ख्याल कभी आया नहीं। उल्टा उन्होंने तो यह तर्क भी दिया कि उनके इस्तीफे से गलत परंपरा कायम होगी और केंद्र सरकार को मनमानी करने का मौका मिल जाएगा। दरअसल, भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन से जन्मी और सबको ईमानदारी का पाठ पढ़ाने वाली पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल लंबे समय से कथित शराब घोटाले के आरोपों के घेरे में हैं। लेकिन, चुनाव से महज चंद महीनों पहले सियासी शतरंज पर इस्तीफे का दांव चल कर उन्होंने एक साथ कई लक्ष्यों को साधने की कोशिश की है। उन्होंने अंतिम फैसले की जिम्मेदारी दिल्ली की जनता पर छोड़ते हुए आसन्न विधानसभा चुनाव के लिए माहौल बनाया है। वैसे भी शीर्ष अदालत के फैसले के मुताबिक, वह न तो मुख्यमंत्री कार्यालय या सचिवालय जा सकते हैं और न ही किसी फाइल पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। जाहिर है इस्तीफे के बाद उनके द्वारा मनोनीत व्यक्ति ही मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारियां निभाएगा, जो कहने की जरूरत नहीं कि उनका ही प्रतिनिधि होगा। इसके अतिरिक्त, सर्वोच्च न्यायालय में जमानत पर सुनवाई के दौरान केजरीवाल पर लगाए गए आरोपों पर दोनों न्यायाधीशों के मत बेशक अलग हों, लेकिन केजरीवाल उनके द्वारा अपने पक्ष में कही गई हर बात को आगामी विधानसभा चुनावों में जरूर भुनाएंगे। उल्लेखनीय है कि उन्नीस दिन बाद हरियाणा विधानसभा चुनाव होने हैं, जहां की सभी 90 सीटों पर आप ने उम्मीदवार खड़े किए हैं, वहीं इस वर्ष के अंत तक

होने वाले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भी वह सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान कर चुकी है। दिल्ली में चुनाव अगले वर्ष फरवरी में होने हैं। केजरीवाल महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के साथ ही दिल्ली में भी चुनाव कराने की मांग कर रहे हैं। लेकिन इसके लिए उन्हें विधानसभा को समय-पूर्व भंग करने का एलान करना होगा। केजरीवाल का दांव मतदाताओं को कितना प्रभावित कर पाता है, वह तो देखने वाली बात होगी, लेकिन इस्तीफे के एलान के पीछे उनकी लंबी राजनीतिक तैयारी जरूर दिखती है, ताकि वे विपक्षियों पर नैतिक बढ़त लेकर आसन्न चुनावों में अपनी दावेदारी मजबूत कर सकें।

बढ़ती उम्र और 'आयुष्मान' का सहारा

उम्र बढ़ने पर लोगों की चिंता का प्रमुख कारण स्वास्थ्य देखभाल पर होने वाला खर्च होता है। केंद्र सरकार ने 70 वर्ष से अधिक उम्र के सभी आय वर्गों के बुजुर्गों को आयुष्मान भारत योजना में शामिल कर बड़ी राहत दी है।

जैसे-जैसे बुजुर्ग लोगों की उम्र बढ़ती जाती है, खासकर वैसे बुजुर्गों की, जिनके पास न कोई पैतृक संपत्ति होती है, न पेंशन और न घर के किराये से होने वाली आमदनी, भविष्य में चिकित्सा खर्च की बढ़ती लागत उनकी सबसे बड़ी चिंताओं में से एक होती है। मेरे जैसे मध्यमवर्गीय परिवार के एक व्यक्ति को, जिसके पास थोड़ी बचत होती है और सिर पर एक छत होती है, थोड़ी सुविधा रहती है। लेकिन जहां तक स्वास्थ्य देखभाल की बात है, तो सभी जानते हैं कि बीमा कंपनियां भी इलाज के सारे खर्चों को वहन नहीं करती हैं।

ऐसे में, यह अच्छी बात है कि केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 70 वर्ष या उससे ज्यादा उम्र के बुजुर्गों के लिए आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबीपीएम-जेएवाई) के तहत स्वास्थ्य देखभाल बीमा को मंजूरी दी है, चाहे वे किसी भी आय वर्ग के हों। ऐसे कई परिवार हैं, जो पहले से ही आयुष्मान योजना में शामिल हैं और उनमें वरिष्ठ नागरिक भी हैं। अब वैसे परिवारों को पांच लाख रुपये का अतिरिक्त बीमा कवरेज मिलेगा। हालांकि इसका अंतिम प्रारूप अभी आना बाकी है, तभी पता चलेगा कि इसे विभिन्न राज्यों द्वारा जमीनी स्तर पर कैसे लागू किया जाता है। लेकिन यह भी देखना होगा कि स्वास्थ्य देखभाल पर जेब से किए जाने वाले खर्च के मामले में हम कहां खड़े हैं। आर्थिक सर्वेक्षण, 2023-24 में बताया गया है कि स्वास्थ्य देखभाल पर भारत में जेब से किया जाने वाला खर्च अब भी कुल स्वास्थ्य व्यय का लगभग 50 प्रतिशत है। हालांकि पिछले दस वर्षों में स्थिति में सुधार हुआ है। वर्ष 2019-20 में स्वास्थ्य देखभाल पर जेब से खर्च 47 प्रतिशत से अधिक था, जो निश्चित रूप से 2013-14 के 64 प्रतिशत के उच्च स्तर से कम है, लेकिन यह अब भी तीन साल पहले आर्थिक सर्वेक्षण में सुझाए गए 35 फीसदी की सीमा से बहुत ज्यादा है।

पत्रलेखा चटर्जी
वरिष्ठ पत्रकार

ध्यान रहे कि ज्यादातर भारतीय असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं,

जिसका मतलब है कि उनके पास कोई निश्चित वेतन वाली कमाई नहीं है, जिसमें अन्य लाभ भी होते हैं और सेवानिवृत्ति के बाद उनके लिए सामाजिक सुरक्षा का भी कोई प्रावधान नहीं होता है। भारत की पारंपरिक सामाजिक सुरक्षा प्रणाली-संयुक्त परिवार तेजी से बिखर रहे हैं। बच्चे अक्सर दूसरे शहरों या देशों में रहते हैं। ऐसे में, उनसे यह उम्मीद करना कि वे स्वास्थ्य देखभाल का पूरा खर्च उठाएंगे, नासमझी होगी।

तो फिर उपाय क्या है? इस मामले में हम एशिया के कुछ अन्य देशों से सीख सकते हैं। जैसे, पड़ोसी देश थाईलैंड उच्च मध्यम आय वाला देश है। राजनीतिक अस्थिरता के बावजूद स्वास्थ्य देखभाल के मामले में इसका रिकॉर्ड बेहतर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक, थाईलैंड में वर्ष 2021 में स्वास्थ्य पर नौ फीसदी खर्च जेब से हुआ था, जबकि भारत में यह आंकड़ा 49.82 प्रतिशत था। यह देखते हुए कि वर्ष 2007 में भारत में स्वास्थ्य देखभाल पर जेब से किया जाने वाला खर्च कुल स्वास्थ्य व्यय का 70 प्रतिशत से अधिक था, हम कह सकते हैं कि भारत की स्थिति में पहले से सुधार हुआ है, लेकिन हमें अब भी एक लंबा रास्ता तय करना है।

थाईलैंड में बूढ़ी होती आबादी के साथ अन्य चुनौतियां भी हैं, लेकिन वहां सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल (यूएचसी) महज एक वादा नहीं, बल्कि हकीकत है। यूएचसी का लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति को बिना वित्तीय समस्या के गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करना है। वर्ष 2002 में ही वहां यूएचसी लागू किया गया और थाईलैंड स्वास्थ्य देखभाल पर अपनी जीडीपी का पांच फीसदी खर्च करता है, जिसका 70 फीसदी हिस्सा सरकार देती है। कई अन्य उच्च मध्य आय वाले देशों की तुलना में स्वास्थ्य पर कम खर्च करने के बावजूद थाईलैंड काफी कुछ करने में सफल रहा है। वर्ष 2000 से 2021 के बीच वहां जीवन प्रत्याशा 72.3 वर्ष से बढ़कर 78.7 वर्ष हो गई। नवजात मृत्युदर 1.67 फीसदी से घटकर मात्र 0.62 फीसदी रह गई है और स्वास्थ्य देखभाल पर जेब से खर्च 34.2 फीसदी से घटकर नौ फीसदी रह गया है।

थाईलैंड में तीन मुख्य सार्वजनिक स्वास्थ्य बीमा योजनाएं हैं, जो लगभग वहां की पूरी आबादी के लिए हैं। इनमें शामिल हैं, लोक सेवक स्वास्थ्य लाभ योजना (सीएसएमबीएस), जिसमें सरकारी कर्मचारी और उनके रिश्तेदार आते हैं और इसका प्रबंधन वित्त मंत्रालय करता है। सामाजिक सुरक्षा योजना (एसएसएस), जिसमें संगठित क्षेत्रों के निजी कर्मचारियों को कवर किया जाता है, जिसका खर्च कर्मचारी, नियोक्ता और सरकार, तीनों उठाते हैं और इसका प्रबंधन श्रम मंत्रालय करता है और यूनिवर्सल कवरेज योजना (यूसीएस) के तहत शेष बची ज्यादातर आबादी को कवर किया गया है, जिसका खर्च सामान्य कराधान से पूरा किया जाता है और राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यालय (एनएचएसओ) इसका प्रबंधन करता है। लोक स्वास्थ्य मंत्रालय इसकी देखभाल करता है, जबकि एनएचएसओ यूसीएस के लिए देखभाल क्रेता के रूप में कार्य करता है, तथा देखभाल प्रदान करने में क्रय शक्ति और दक्षता सुनिश्चित करता है।

यूसीएस को गोल्ड कार्ड भी कहा जाता है, जो थाईलैंड की तीनों योजनाओं में सबसे बड़ी है और सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करती है। यूसीएस ज्यादातर आबादी को कवर करती है और इसकी फंडिंग सीधे राष्ट्रीय बजट से होती है तथा एनएचएसओ द्वारा प्रति व्यक्ति आधार पर बजट आवंटित किया जाता है। यह कार्यक्रम वर्ष 2002 में शुरू हुआ था। अब वर्ष 2024 में थाईलैंड की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली महत्वपूर्ण बदलाव के दौर से गुजर रही है, जिसमें यूनिवर्सल कवरेज योजना के तहत 'सभी बीमारियों का इलाज किसी भी जगह' कराने जैसे प्रयास शामिल हैं।

थाईलैंड की स्वास्थ्य देखभाल सहित कोई भी स्वास्थ्य व्यवस्था पूर्ण नहीं है और न ही किसी स्वास्थ्य व्यवस्था की हूबहू नकल किसी दूसरे देश में की जा सकती है, खासकर भारत जैसे विशाल और विविधता पूर्ण देश में, लेकिन हम अपने एशियाई पड़ोसियों से काफी कुछ सीख सकते हैं। विशेषकर उन देशों से, जिनका अपना स्वास्थ्य तंत्र काफी मजबूत है।

जीवन धारा

राल्फ वाल्डो इमर्सन

आप अपने कार्यों की सफलता को लेकर बहुत ज्यादा डरपोक और संकोची न बनें, क्योंकि जीवन एक प्रयोग है। आप जब कोई काम करें, तो उसे अपनी पूरी ताकत से करें। उसमें अपनी पूरी आत्मा लगा दें।

जीवन इंद्रधनुष के रंगों की तरह है

पृथ्वी पर जीवन इंद्रधनुष के रंगों की तरह है। हमें इस मनमोहक प्रकृति को समझना चाहिए, जो इस भीड़-भाड़ वाले संसार के बीच भी एकांत की स्वतंत्रता को मधुरता के साथ बनाए रखता है। जीवन में जब कभी समस्याओं का अंधेरा छाए, तो आप सितारों को देख सकते हैं। प्रकृति को ध्यान से देखें, आप समझ पाएंगे कि यह कितनी अनमोल है। बहुत-सी आंखें घास के मैदान से गुजरती हैं, लेकिन बहुत कम लोग इसमें फूल देख पाते हैं। सर्द रात दुनिया के लोगों को नदी की तरह नहलाती है, और उनकी आंखों को फिर से लाल भोर के लिए तैयार करती है। प्रकृति का रहस्य अनोखा है। प्रकृति सभी प्राणियों को स्वतंत्र रूप से अनाज वितरित करती है। सच कहूं तो, बहुत कम लोग प्रकृति को देख पाते हैं। प्रकृति का प्रेमी वह है, जिसकी आंतरिक और बाहरी इंद्रियां एक-दूसरे के साथ पूरी तरह से समायोजित हैं। मनुष्य ने अपने लाभ के लिए हमेशा प्रकृति को नष्ट किया है। हमें प्रकृति की रक्षा के लिए एक रास्ता ढूंढना होगा। जीवन के हर क्षेत्र में हमें साहस की आवश्यकता होती है। आप कोई भी रास्ता चुनें, अक्सर कोई न कोई आपको यह बताने के लिए मौजूद होता है कि आप गलत हैं। हमेशा ऐसी कठिनाइयां आती रहती हैं, जो आपको यह विश्वास दिलाती हैं कि आपके आलोचक सही हैं। इन सब से निपटने के लिए उसी साहस की आवश्यकता होती है, जो एक सैनिक को चाहिए। शांति की अपनी जीत होती है, लेकिन उन्हें पाने के लिए बहादुर पुरुषों और महिलाओं की आवश्यकता होती है। हमें प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए। हमें उस नदी की धारा की तरह उत्साहित होना होगा, जो अंत में अपने लक्ष्य को पा लेती है। उत्साह सफलता के लिए सबसे शक्तिशाली इंजनों में से एक है। जब आप कोई काम करें, तो उसे पूरी ताकत से करें। उसमें अपनी पूरी आत्मा लगा दें। सक्रिय रहें, ऊर्जावान और वफादार रहें, फिर आप अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे। उत्साह के बिना कोई महान उपलब्धि हासिल नहीं की जा सकती। अपने कार्यों की सफलता को लेकर बहुत ज्यादा डरपोक और संकोची न बनें, क्योंकि जीवन एक प्रयोग है। आप जितना अधिक प्रयोग करेंगे, उतना ही बेहतर होगा। प्रकृति की गति को अपनाएं : उसका रहस्य धैर्य है। प्रकृति और पुस्तकें उन आंखों के लिए हैं, जो उन्हें देखती हैं। अपने सपनों के नेतृत्व में आगे बढ़िए। अपने खुद के विचार पर विश्वास करना कि आपके हृदय में जो आपके लिए सत्य है, वह सभी मनुष्यों के लिए सत्य है, यही प्रतिभा है। एक बात हमेशा याद रखें, सबसे सुखी मनुष्य वह है, जो प्रकृति से पूजा का पाठ सीखता है। ध्यान देने वाली आंखों के लिए प्रत्येक क्षण की अपनी सुंदरता होती है, और उसी क्षेत्र में वह हर घंटे एक ऐसी तस्वीर देखती है, जो पहले कभी नहीं देखी गई थी, और जो फिर कभी नहीं देखी जाएगी। प्रकृति उस आदमी के लिए रास्ता बनाती है, जो जानता है कि वह कहां जा रहा है। खुशी बांटिए, क्योंकि जीवन एक यात्रा है, कोई मंजिल नहीं।

प्रकृति से सीखें

सूत्र

एकांत में जाने के लिए एक व्यक्ति को अपने कमरे से उतना ही दूर रहना पड़ता है, जितना समाज से। जब मैं पढ़ता-लिखता हूं, तो मैं अकेला नहीं रहता, हालांकि उस समय मेरे साथ कोई व्यक्ति नहीं होता। लेकिन अगर कोई व्यक्ति अकेला रहना चाहता है, तो उसे प्रकृति को देखना चाहिए और प्रकृति से सीखना चाहिए।

दूसरा पहलू

राजगीर की पहाड़ियों में स्थित कथित खजाने वाली गुफाओं का सदियों पुराना रहस्य आज भी अनसुलझा है।

राजगीर की गुफाओं के खजाने का रहस्य

बिहार के नालंदा जिले में कदम-कदम पर पुरावशेष बिखरे हैं। इन्हीं में से एक है सोन भंडार यानी स्वर्ण भंडार। जैसा नाम है, वैसा ही इसका मिथक है। हरे-भरे जंगल के बीच स्थित इन गुफाओं का रास्ता बेहद सुरम्य है। इस आख्यान की शुरुआत छठी शताब्दी ईसा पूर्व हर्यक वंश के प्रतापी शासक महाराज बिंबिसार से होती है, जिन्होंने राजगृह (राजगीर) का निर्माण कराया था। बिंबिसार 543 ईसा पूर्व में मगध पर राज करते थे। बताया जाता है कि उन्हीं के काल में सोन भंडार गुफाओं का निर्माण खजाने को रखने के लिए किया गया। इस आयताकार गुफा में दो हिस्से हैं। एक हिस्सा सैनिकों के लिए था, जो खजाने की रक्षा करते थे और दूसरा हिस्सा चट्टान से बंद है। इसके पीछे ही खजाना बताया जाता है। अंग्रेजों ने खजाने की खोज के लिए तोपों का सहारा लिया, लेकिन दीवार को तोड़ नहीं पाए। दरअसल खजाने का तिलिस्म एक ऐसी प्राचीन शंख लिपि से जुड़ा है, जिसे कभी पढ़ा नहीं जा सका। किंवदंती है कि गुफा की दीवार पर शंख लिपि में खजाने के दरवाजे को खोलने का तरीका लिखा है। ये गुफाएं विभागिरी पहाड़ियों की तलहटी में हैं। सम्राट बिंबिसार के पुत्र अजातशत्रु ने जब उन्हें बंदी बनाकर कारागार में डाला, तो उनकी रानी ने खजाना इन गुफाओं में छिपा दिया। बाद में बिंबिसार की मौत हो गई थी। इसके बाद खजाने के बारे में कहीं कोई लिखित वृतांत नहीं मिलता। *वायु पुराण* में लिखा है कि हर्यक वंश से 2500 साल पहले मगध पर सम्राट वृहद्रथ का शासन था। उनका पुत्र जरासंध महाप्रतापी शासक था, जिसने 80 राजाओं को हराकर जो संपत्ति अर्जित की, उसे इसी गुफा में छिपा दिया था। *महाभारत* से जुड़े प्रसंग के अनुसार, जरासंध को भीम ने मार डाला था और इसी के साथ खजाने का राज भी दफन हो गया। हालांकि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संस्थापक सर अलेक्जेंडर कनिंघम और कुछ अन्य इतिहासकार इन गुफाओं को बौद्ध धर्म से जोड़ते हैं। वहीं दर्ज इतिहास में इन गुफाओं को जैन मुनियों द्वारा ईसा पूर्व चौथी सदी में निर्मित माना जाता है। यहां जैन धर्म से जुड़ी छह मूर्तियां मिली हैं। भगवान विष्णु की प्रतिमाएं भी मिली हैं। चौथी शताब्दी के एक शिलालेख पर लिखा है कि मुनि वैरादेव ने दो शुभ गुफाओं का निर्माण कराया, जो तपस्वियों के योग्य हैं और जिनमें अर्हतों (तीर्थंकरों) की मूर्तियां स्थापित हैं। हालांकि विशेषज्ञ कहते हैं, यह गुफाओं का पुनर्निर्माण भी हो सकता है। बहरहाल, इन गुफाओं के अंदर की चमक बेमिसाल है, जो किसी खजाने से कम नहीं है।

भूपेंद्र कुमार

हर्यक वंश से 2500 साल पहले मगध पर सम्राट वृहद्रथ का शासन था। उनके पुत्र जरासंध ने 80 राजाओं को हराकर जो संपत्ति पाई, उसे इस गुफा में छिपाया।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संस्थापक सर अलेक्जेंडर कनिंघम और कुछ अन्य इतिहासकार इन गुफाओं को बौद्ध धर्म से जोड़ते हैं। वहीं दर्ज इतिहास में इन गुफाओं को जैन मुनियों द्वारा ईसा पूर्व चौथी सदी में निर्मित माना जाता है।

आंकड़े

कृषि का योगदान

अर्थव्यवस्था के कुल सकल मूल्यवर्धन (जीवीए) में कृषि का योगदान 1990-91 के 35 से घटकर 2022-23 में 15 फीसदी रह गया है।

1990-91	35%
2000-01	26%
2010-11	18%
2020-21	16%
2022-23	15 %

आंकड़े प्रतिशत में हैं। | स्रोत : DA & FW

द्रौपदी को सूर्य भगवान ने एक बटलोई दी थी। उसमें यह गुण था कि जब तक द्रौपदी जी स्वयं भोजन न करें, तब तक उसमें कभी भोजन घटता ही नहीं था।

महारानी द्रौपदी की भक्ति

एक बार दुर्योधन के कहने से दुर्वासा ऋषि दस शिष्यों के साथ वन में महाराज युधिष्ठिर के अतिथि हुए। दुर्योधन ने सोचा कि इतने अतिथियों का जंगल में पांडव आतिथ्य-सत्कार न कर सकेंगे। फिर ऋषि दुर्वासा पांडवों को शाप से भस्म कर देंगे।

लेकिन द्रौपदी को सूर्य भगवान ने एक बटलोई दी थी। उसमें यह गुण था कि जब तक द्रौपदी जी स्वयं भोजन न कर लें, तब तक उसमें कभी भोजन घटता ही नहीं था। दुर्वासा जी ठीक उसी समय पहुंचे, जब द्रौपदी भोजन कर चुकी थीं। युधिष्ठिर ने दुर्वासा ऋषि और उनके शिष्यों का स्वागत किया और प्रार्थना की कि आप नदी में स्नान कर आएं, तब तक भोजन तैयार होता है। ऋषि भोजन के लिए शीघ्रता करने को कहकर स्नान के लिए चले गए। इधर धर्मराज ने अपना धर्मसंकट द्रौपदी को बताया। द्रौपदी ने संकट में श्रीकृष्ण को पुकारा। भगवान कृष्ण उसी क्षण द्रौपदी जी के सम्मुख उपस्थित हुए और बोले, मुझे बड़ी भूख लगी है, कुछ खाने को दो। द्रौपदी ने स्नेह भरे स्वर में कहा, तुम्हें सदा हंसी ही सूझती है। कुछ खाने को होता, तो तुम्हें क्यों बुलाती? भगवान कृष्ण ने बटलोई में लगे हुए शाक के एक पत्ते को खाकर बहुत जोर से डकार ली। और उन विश्वात्मा की तृप्ति होने पर तीनों लोक तृप्त हो गए। महर्षि दुर्वासा और उनकी शिष्य मंडली तो इतने तृप्त हो गए कि उन्हें भी डकार आने लगीं। इस प्रकार द्रौपदी की लाज भगवान कृष्ण ने बचाई।

अंतर्यात्रा
संकलित

आज का इतिहास

भारत रत्न एम एस सुब्बुलक्ष्मी का जन्म

भारत रत्न से सम्मानित एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी को संगीत जगत की अप्रतिम प्रतिभा और अविवादित सुर साम्राज्ञी के तौर पर जाना जाता है। इतिहास में 16 सितंबर की तारीख संगीत की इस महान साधिका के जन्मदिन के तौर पर दर्ज है। तमिलनाडु के मदुरै शहर में 16 सितंबर, 1916 को जन्मी सुब्बुलक्ष्मी ने पांच साल की उम्र में संगीत की शिक्षा ग्रहण करनी शुरु की थी। उन्होंने देश की बहुत सी भाषाओं में गीत गाए। यह उनकी कला साधना का ही प्रभाव था कि लता मंगेशकर ने उन्हें 'तपस्विनी' कहा, उस्ताद बडे गुलाम अली खां ने उन्हें 'सुस्वरलक्ष्मी' का नाम दिया, किशोरी अमोनकर उन्हें 'आठवां सुर' कहती थीं, जो संगीत के सात सुरों से ऊंचा है। उन्हें कला क्षेत्र में योगदान के लिए 1954 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। 1998 में भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न से अलंकृत करके उनकी कला को शीर्ष नागरिक सम्मान से नवाजा। 2009 में दुनियाभर में भारत को एक उत्कृष्ट पर्यटन स्थल के रूप में पेश करने वाले 'अतुल्य भारत अभियान' को ब्रिटिश सरकार ने पुरस्कृत किया।

समावेशी विकास की दिशा में

जिला खनिज फाउंडेशन (डीएमएफ) का लक्ष्य रणनीतिक रूप से खनन प्रभावित क्षेत्रों के स्थानीय समुदायों का कल्याण सुनिश्चित करना है।

जी. किशन रेड्डी | पहल

सर्वोच्च न्यायालय ने 25 अगस्त, 2014 को अपने एक निर्णय में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा किए गए कोयला ब्लॉकों के आवंटन को मनमाना और अवैध करार दिया था। उसके बाद वर्ष 2015 में नरेंद्र मोदी सरकार ने खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम में संशोधन करके नीलामी को अनिवार्य बना दिया और जिला खनिज फाउंडेशन (डीएमएफ) के नाम से एक नई संस्था बनाई, जिसे लाइसेंसधारी और पट्टाधारक रॉयल्टी की एक निश्चित राशि का भुगतान करते हैं।

डीएमएफ की स्थापना के पीछे सोच यह थी कि स्थानीय समुदाय देश के प्राकृतिक संसाधन आधारित विकास में प्रमुख हितधारक हैं, इसलिए प्राकृतिक संसाधनों से होने वाले लाभ से उनका विकास होना

चाहिए। उनकी यह सोच गरीब कल्याण और भ्रष्टाचार से लड़ाई के उनके दृढ़ विश्वास को दर्शाती है। आज 10 वर्ष बाद डीएमएफ को लगभग एक लाख करोड़ का कोष प्राप्त हुआ है, जिससे खनन प्रभावित जिलों में विकास कार्य हुए हैं। डीएमएफ प्रधानमंत्री खनिज कल्याण योजना के तहत तीन लाख से अधिक परियोजनाओं के साथ अब 23 राज्यों के 645 जिलों में पहुंच गया है। यह सबका साथ-सबका विकास की मूल भावना को चरितार्थ करता है। जिला कलेक्टर के नेतृत्व में खनन प्रभावित जिलों के उत्थान के लिए ज्यादा जरूरत वाले स्थानों पर धन का आवंटन होता है। हाल ही में लॉन्च 'राष्ट्रीय डीएमएफ पोर्टल' पूरे देश में इसके प्रशासन और निगरानी को डिजिटल बना रहा है, जिससे इसमें अधिक पारदर्शिता और दक्षता आएगी। डीएमएफ न केवल राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का नेतृत्व कर रहा है, बल्कि क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक और मानव विकास सूचक को बेहतर बना रहा है।

हाल ही में नई दिल्ली में डीएमएफ गैलरी के शुभारंभ के अवसर पर मुझे ओडिशा के जिला खनिज फाउंडेशन द्वारा स्थापित स्वयं सहायता समूहों की कई प्रतिभाशाली महिलाओं से मिलने का सौभाग्य मिला। ये महिलाएं केवल शिल्पकार नहीं थीं, बल्कि उद्यमी बनने की राह पर थीं। अपने शिल्प को प्रदर्शित करने और पहचान हासिल करने की महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर, वे अपने परिवारों का वित्तीय स्तंभ बनने के लिए प्रतिबद्ध थीं।

मध्य प्रदेश के कटनी में डीएमएफ हमारे 'यंग माइंड्स' को ड्रोन तकनीक में महारत हासिल करने, वायु-गति-विज्ञान और उड़ान संचालन की बारीकियों को सिखाने में मदद कर रहे हैं। कई लोगों को नौकरी मिल गई है और अनेक लोग नए अवसरों के लिए तैयार हो रहे हैं। इस पहल ने खनन प्रभावित क्षेत्रों में हजारों परिवारों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाया।

डीएमएफ यह सुनिश्चित करता है कि यह लक्ष्य रणनीतिक रूप से खनन प्रभावित क्षेत्रों के स्थानीय समुदायों के कल्याण से जुड़ा हो। उदाहरण के लिए, ओडिशा के क्योंझर में धरणीधर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, लगभग 480 करोड़ रुपये की डीएमएफ-वित्तपोषित सुविधा से बना, जो अपने 25 लाख निवासियों के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करता है। झारखंड के रामगढ़ जिले में एक विशेष नवजात शिशु देखभाल यूनिट है, जो महत्वपूर्ण नवजात देखभाल प्रदान करती है और शिशु मृत्युदर को कम कर रही है। मध्य प्रदेश के सिंगरौली में, 'ब्रेकिंग बैरियर्स' परियोजना दिव्यांगों के लिए सुलभता बढ़ा रही है। तेलंगाना के मंचेरियल में जिला विज्ञान केंद्र दूरदराज के छात्रों के लिए विज्ञान को आकर्षक बना रहा है और युवा प्रतिभाओं को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में योगदान दे रहा है।

केंद्र सरकार का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्थानीय संदर्भ और जिले में मौजूद व्यवस्था को हटाए बिना सर्वोत्तम प्रशासनिक प्रथाओं को सभी डीएमएफ में मानकीकृत किया जाए। इससे डीएमएफ की भूमिका और अधिक प्रभावशाली बनेगी।

Special arrangements by Amar Ujala

स्वत्वाधिकारी रामगोपाल इन्वेस्टमेन्ट्स प्रा.लि. के लिए मुद्रक, प्रकाशक समीर माहेश्वरी द्वारा नवभारत प्रेस, नवभारत भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जी.ई.रोड, रायपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित. प्रधान संपादक : समीर माहेश्वरी, संपादक : राजेश आर. जोशी* (पी.आर.बी. कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिये जिम्मेदार)
■ रायपुर फोन : 0771-4343434, 2535555-66-77, ■ भुवनेश्वर : 0674-2380511/2380518 ■ बिलासपुर : 07752-230591, 407748, 224563 ■ वर्ष 65 ■ अंक 214 (रजि.नं. 13045/59 आरएनआई), पो. रजिस्टर्ड नं. छ.ग./रायपुर संभाग/61/2022-24 ■ भिलाई फोन : (0788) 2294181, 4030655

सकारात्मक संभावना

भारतीय रिजर्व बैंक का आकलन है कि वर्तमान वित्त वर्ष 2024-25 में अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 7.2 प्रतिशत रह सकती है, लेकिन बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास का मानना है कि भारत की वृद्धि क्षमता लगभग 7.5 प्रतिशत या उससे अधिक की है. वृद्धि क्षमता दर उस दर को इंगित करती है, जिस दर से अर्थव्यवस्था में बिना मुद्रास्फीति को बढ़ाये लंबे समय तक बढ़ोतरी हो सकती है. इस वित्त वर्ष की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में वृद्धि दर कुछ कम रही क्योंकि चुनाव के कारण सरकारी खर्च में कमी आयी थी. चुनाव के बाद सरकार ने फिर से बड़ी परियोजनाओं को मंजूर करने का सिलसिला शुरू कर दिया है. अपने तीसरे कार्यकाल के पहले सौ दिनों की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने रेखांकित किया है कि इस अवधि में तीन लाख करोड़ रुपये की इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं को हरी झंडी दी गयी है. तीसरे कार्यकाल यानी पांच वर्षों में सरकार इंफ्रास्ट्रक्चर पर 15 लाख करोड़ रुपये खर्च करेगी. साथ ही, विभिन्न विकास और कल्याण योजनाओं का प्रारंभ एवं विस्तार किया जा रहा है. इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ मैन्युफैक्चरिंग और स्वच्छ ऊर्जा पर भी ध्यान दिया जा रहा है. इन प्रयासों से अर्थव्यवस्था को गति मिल रही है. जहां कई अर्थव्यवस्थाएं, जिनमें विकसित देश भी शामिल हैं, बढ़ोतरी के लिए संघर्षरत हैं तथा अनेक देशों के विकास दर के ऋणात्मक होने की आशंकाएं बढ़ती जा रही हैं, वहीं भारतीय अर्थव्यवस्था सबसे अधिक दर से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बनी हुई है. वैश्विक संस्थानों ने भी भारत की संभावनाओं पर भरोसा जताया है. वर्तमान में भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है तथा ऐसी संभावना है कि आगामी तीन वर्षों में यह जापान और जर्मनी को पीछे छोड़ते हुए तीसरे स्थान पर पहुंच जायेगी. नीति आयोग के पूर्व सीईओ अमिताभ कांत ने रेखांकित किया है कि अगले दशक में वैश्विक वृद्धि में भारत का 20 प्रतिशत योगदान होगा. सतत आर्थिक सुधारों, नीतिगत स्थिरता और कारोबारी सुगमता में बेहतरी जैसे कारकों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक ठोस आधार प्रदान किया है. इस वजह से वैश्विक उद्योगों और निवेशकों का आकर्षण निरंतर बढ़ता गया है. कांत ने उचित ही रेखांकित किया है कि आर्थिक विकास के वर्तमान दौर जैसा अवसर कभी कभी आता है. कुछ साल पहले तक भारत की गिनती उन पांच अर्थव्यवस्थाओं में होती थी, जो कभी भी खतरे में पड़ सकती हैं, पर आज देश पांच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में है. कुछ वर्षों में वृद्धि दर वर्तमान स्तर से उल्लेखनीय रूप से अधिक हो सकती है.

सतत आर्थिक सुधारों, नीतिगत स्थिरता और कारोबारी सुगमता में बेहतरी जैसे कारकों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक ठोस आधार प्रदान किया है.

ट्रंप-हैरिस बहस में छींटाकशी हावी रही

जे सुशील
अमेरिका में शोधार्थी
jey.sushil@gmail.com

इस बहस को नीतिगत मामलों में एक स्वस्थ बहस के बजाय ऐसी बहस के रूप में याद किया जा रहा है, जिसमें दोनों उम्मीदवारों ने एक-दूसरे को शर्मिंदा करने की कोशिश की और एक-दूसरे पर छींटाकशी की. हैरिस ने एक समय में यहां तक कहा कि ट्रंप की लड़ाई बाइडेन से नहीं है, बल्कि कमला हैरिस से है. यह कहते हुए वे भूल गयीं कि वे बाइडेन प्रशासन में उपराष्ट्रपति हैं और बाइडेन की आलोचना उनकी आलोचना भी है.

ऐसा बहुत कम होता है कि राष्ट्रपति पद के लिए हो रही बहस में अमेरिकी नागरिक कुत्ते-बिल्ली और पालतू जानवरों को मार कर खाने की बात करें, लेकिन अब दुनिया ऐसी ही हो चुकी है. एक झूठी खबर, जिसका कई बार खंडन किया जा चुका है, डोनाल्ड ट्रंप के लिए अहम हो जाती है और वे कहते हैं कि दूसरे देशों से आये लोग अमेरिकी नागरिकों के पाले हुए कुत्ते-बिल्लियों को मार कर खा रहे हैं. अमेरिका में डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवारों- कमला हैरिस और डोनाल्ड ट्रंप की पहली बहस संभवतः आखिरी बहस थी, क्योंकि ट्रंप अब हैरिस के साथ कोई बहस नहीं चाहते हैं. हैरिस की टीम ने कहा है कि वे बहस के लिए तैयार हैं. चूंकि अब चुनाव में डेढ़ महीने का समय रह गया है, तो संभावना है कि कोई और बहस न हो. इस बहस से पहले दोनों उम्मीदवारों का वोट शेयर 48 प्रतिशत था, पर बहस के तुरंत बाद हुए सर्वे में हैरिस तीन अंकों से आगे बतायी जा रही हैं. हालांकि यह अंतर बहुत अधिक नहीं है, पर यहां यह ध्यान देने वाली बात है कि बहस के बाद जिस तरह की फैक्ट चेकिंग हुई है, उससे ट्रंप के प्रति भरोसा थोड़ा कम हुआ है.

इस बहस में सबसे भयावह यह देखना था कि किस तरह ट्रंप ने प्रवासन का मुद्दा उठाया. कुत्ता-बिल्ली खाने की झूठी घटना का संदर्भ भी प्रवासन से है. ट्रंप ने दावा किया कि अवैध रूप से अमेरिका आ रहे लोग इतने बर्बर हैं कि कुत्ते-बिल्लियों को मार कर खा रहे हैं. ऐसी झूठी खबरों से उन लोगों के लिए स्थिति खराब होती है, जो दूसरे देशों के नागरिक हैं और अमेरिका में रह रहे हैं. अवैध रूप से अमेरिका आकर रहने की समस्या गंभीर है, लेकिन इस पर कैसे रोक लगे या इसे कैसे नियंत्रित किया जाए, फिलहाल दोनों नेताओं के पास इसकी कोई ठोस योजना नहीं है. उपराष्ट्रपति रहते हुए कमला हैरिस को यह जिम्मेदारी दी गयी थी कि वे आप्रवासन पर कोई ठोस योजना बनाएं, पर वे ऐसा न कर सकीं. नतीजा यह है कि दक्षिण अमेरिका के रास्ते बड़ी संख्या में अवैध रूप से लोग अमेरिका आ रहे हैं. अमेरिका को खेतों, दुकानों और फैक्ट्रियों के लिए सस्ते मजदूरों की जरूरत है. ये लोग उन्हीं क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, जिनमें कम पैसा दिया जा रहा है. अवैध आप्रवासन बंद किया जायेगा, तो कारोबार को नुकसान पहुंचेगा तथा अगर इसे वैध कर दिया जाए, तो इन लोगों को नियम के तहत पैसे देने होंगे. उससे मुनाफा घट जायेगा. यह एक दोधारी तलवार है, जिसमें उन लोगों को नुकसान हो रहा है, जो वैध तरीकों से अमेरिका में रह रहे हैं. उनकी छवि भी खराब हो रही है, क्योंकि बड़ी संख्या में लोग अवैध तरीकों से भी रह रहे हैं. आने वाले समय में चाहे जो जीते, उसके समक्ष प्रवासन को लेकर नयी नीतियां बनाना एक बड़ी चुनौती होगी.

गाजा में जारी युद्ध को लेकर दोनों नेताओं की नीतियां लगभग समान रहीं और बहस में भले ही बड़ी-बड़ी बातें कही गयी हों, इस्राइल-फिलिस्तीन पर अमेरिकी नीति में शायद ही कोई बदलाव आयेगा. चाहे ट्रंप हों या हैरिस, अमेरिकी नीति फिलिस्तीन विरोधी और इस्राइल समर्थक रहेगी, इसमें कोई शक नहीं होना चाहिए. यही कारण है कि इस बहस को नीतिगत मामलों में एक स्वस्थ बहस के बजाय ऐसी बहस के रूप में याद किया जा रहा है, जिसमें दोनों उम्मीदवारों ने एक-दूसरे को शर्मिंदा करने की कोशिश की और एक-दूसरे पर छींटाकशी की. हैरिस ने एक समय में यहां तक कहा कि ट्रंप की लड़ाई बाइडेन से नहीं है, बल्कि कमला हैरिस से है. यह कहते हुए वे भूल गयीं कि वे बाइडेन प्रशासन में उपराष्ट्रपति हैं और बाइडेन की आलोचना उनकी आलोचना भी है. हैरिस ने ट्रंप की रैलियों पर निशाना साधते हुए कहा कि उनकी रैलियों में लोग नहीं आते हैं, जबकि इसका नीतियों से कोई लेना देना नहीं था. गर्भपात की नीतियों पर कमला हैरिस ने अपनी बात मजबूती से रखी, जबकि ट्रंप इस मामले में बैकफुट पर रहे. फिलहाल दुनिया के सबसे अमीर लोगों में शुमार एक्स (ट्विटर) के मालिक एलन मस्क के समर्थन के बावजूद ट्रंप पिछड़ रहे हैं. बहस के बाद मस्क थोड़े निराश दिखे, लेकिन वे ट्रंप का खुल कर समर्थन कर रहे हैं, जो एक तरह से अमेरिकी पूंजीपतियों का समर्थन भी है, लेकिन क्या सिर्फ मस्क के समर्थन के कारण अमेरिका की पूरी बिजनेस लॉबी ट्रंप के समर्थन में आयेगी? यह एक बेहद कठिन सवाल है.

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनावों को समझने के लिए एक तरीका यह देखना भी है कि किस उम्मीदवार के पक्ष में ज्यादा फंडिंग आती है. इस मामले में हैरिस आगे निकल चुकी हैं. फंडिंग का मसला सिर्फ पैसों का नहीं होता, बल्कि व्यवस्था से भी जुड़ा होता है. अमेरिका में कंपनियों द्वारा लॉबिंग मान्य है और राजनीतिक चंदा इसी के तहत दिया जाता है. कहने का अर्थ यह है कि अगर कोई चंदा देता है, तो यह मान कर कि समर्थित उम्मीदवार जीतेगा, तो उसे किसी काम या नीति में फायदा मिलेगा. यह व्यवस्था लंबे समय से चली आ रही है और कारोबार की एक व्यवस्था बन चुकी है. ट्रंप इसे उलट कर नयी व्यवस्था लाना चाहते हैं. अपने चार साल के पिछले शासन में उन्होंने ऐसा किया भी. बाइडेन जब मैदान में आये थे, तो उनके कैंपेन की पृष्ठभूमि थी- हीलिंग. यह हीलिंग अमेरिकी मानस की कम और अमेरिकी बिजनेस हितों की अधिक थी. जाहिर है कि बिजनेस समुदाय उनके पक्ष में आया. कारोबारी वर्ग चाहेगा कि यह व्यवस्था बनी रहे, न कि कोई ऐसा राष्ट्रपति आये, जो फिर से चीजों को पुनर्भाषित करे.

यह बहस 6.70 करोड़ लोगों ने देखी, जिनमें 40 प्रतिशत लोग 40 से 55 साल की उम्र के थे यानी वह वर्ग, जो नौकरी या पेशे में व्यवस्थित है और चुनाव में गहरी रुचि रखता है. यह वर्ग चाहता है कि चीजें वैसे ही चलती रहें, जैसे चलती रही हैं. जब ओबामा जीते थे, तब बहस देखने वालों में अधिक युवा थे. इस हिसाब से भी हैरिस के लिए सकारात्मक संकेत हैं. इस चुनाव से किसी बड़े बदलाव की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि लोग मान चुके हैं कि उनके सामने दो खराब उम्मीदवार हैं, जिनमें से उन्हें एक को चुनना है. वे ट्रंप को एक बार देख चुके हैं और किसी महिला को चुन कर कम-से-कम वे अपना यह पाप धो लेना चाहेंगे कि आज तक अमेरिका में कोई महिला राष्ट्रपति नहीं बनी है. बहरहाल, राजनीतिक पर्यवेक्षकों की नजर उन आधा दर्जन राज्यों पर टिकी हुई है, जहां कभी रिपब्लिकन और कभी डेमोक्रेटिक उम्मीदवार जीते थे. इन राज्यों के नतीजे ही यह तय करेंगे कि अगला अमेरिकी राष्ट्रपति कौन होगा. **(ये लेखक के निजी विचार हैं.)**

अमेरिका में राहुल गांधी के बयानों के मायने

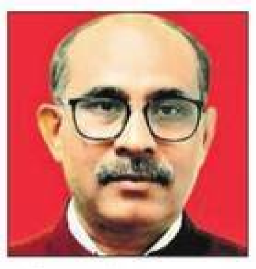

प्रो सतीश कुमार
प्राध्यापक, इग्नू
singhsatis@gmail.com

क्या भारत की बेहतर छवि बनाने का काम केवल सत्ता पक्ष का है या अन्य दलों की भी भूमिका होनी चाहिए? क्या लोकतंत्र की तराजू पर अमेरिकी सिक्का इतना खरा है कि उसका अनुसरण भारत में एक कार्बन कॉपी के रूप में किया जाना चाहिए? प्रश्न है कि क्या भारत की अंदरूनी समस्या का हल बाहरी व्याख्या से हो सकता है या देश के भीतर के विमर्श से.

लोकतंत्र में प्रतिपक्ष के नेता की अहम भूमिका होती है. अगर वह विदेश के दौरे पर हो, तो उस देश के साथ स्थापित संवाद की अहमियत को नाकारा नहीं जा सकता. इसलिए राहुल गांधी की अमेरिकी यात्रा को विदेश नीति के आईने से समझना जरूरी है. यात्रा के लिए अमेरिका को पहले चुनना शायद उनकी व्यक्तिगत राजनीतिक पसंद हो सकती है. अन्य कारण भी हो सकते हैं. यहां महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने किससे मुलाकात की और क्या कहा. वे कई सांसदों से मिले, जिनमें इल्हान ओमर भी थीं. इल्हान की पहचान इसलिए भी है कि वे घोर भारत विरोधी है और पाकिस्तान की तरफदारी करती हैं. कश्मीर पर उनके बयान देखे जा सकते हैं. विवाद का कारण मुलाकात तक सीमित होता, तो बात कुछ और होती. राहुल गांधी ने दो अलग-अलग विश्वविद्यालयों में अपने संबोधन में सिख समुदाय का उदाहरण देते हुए कहा कि भारत में उनकी धार्मिक आजादी छीनी जा रही है और राज्यों के बीच मतभेद पैदा किया जा रहा है यानी संघवाद की बुनियाद तोड़ी जा रही है. धार्मिक उन्माद को हवा देने की कोशिश की जा रही है, भाषा के साथ खिलवाड़ हो रहा है. जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर में तानाशाही चल रही है. ये सब बातें राहुल गांधी और अन्य नेता भारत में भी कहते रहे हैं. ऐसी बातों के लिए मीडिया में राहुल गांधी की खूब प्रशंसा भी हुई थी, लेकिन यहां विदेशी धरती का मामला था. सवाल किसी दल नहीं, बल्कि देश का था.

इसलिए इस यात्रा के असर की चर्चा जरूरी है. क्या यह अनायास ही हुआ है या इसके पीछे कोई राजनीतिक हित या शक्ति है? क्या भारत की बेहतर छवि बनाने का काम केवल सत्ता पक्ष का है या अन्य दलों की भी भूमिका होनी चाहिए? क्या लोकतंत्र की तराजू पर अमेरिकी सिक्का इतना खरा है कि उसका अनुसरण भारत में एक कार्बन कॉपी के रूप में किया जाना चाहिए? राहुल गांधी ने बांग्लादेश और पाकिस्तान के संदर्भ में बहुत बातें नहीं कीं और यह भी कहा कि वे इस मुद्दे पर सरकार के साथ हैं. उन्होंने बांग्लादेश में हुए तख्तापलट में अमेरिका की भूमिका की चर्चा नहीं की. चीन के संदर्भ में उन्होंने भारत की भूमि पर कब्जा करने और आक्रामक रुख की बात कही. यह भी माना कि चीन को ठिकाने लगाने में भारत और अमेरिका का सहयोग मददगार होगा. अगर अमेरिकी विदेश नीति और शक्ति की चर्चा करें, तो उसमें सॉफ्ट पॉवर की बहुत अहम भूमिका है. भारत के संदर्भ में केवल थिंक टैंक की चर्चा जरूरी है. हार्वर्ड कैनेडी स्कूल जाना-माना नाम है. दुनियाभर से लोग वहां से डिग्री लेने के लिए लालायित रहते हैं. वहां भारत से संबंधित विषयों की पढ़ाई भी होती है. सैकड़ों की संख्या में हर वर्ष फेलोशिप दिये जाते हैं, जिनसे ऐसे शोधों की शुरुआत होती है, जिनमें यह स्थापित करने की कोशिश होती है कि भारत खंडहर में तब्दील हो रहा है.

पचास के दशक में भारत मदारियों और भिखारियों का देश था, पर 1990 के बाद भारत की तस्वीर एक कंप्यूटरयुक्त गुणवान देश में बदल गयी. विदेशी, विशेषकर अमेरिकी, थिंक टैंकों को यह बात चुभने लगी. उन्होंने पैंतरा बदला और भारत की जाति व्यवस्था को अमेरिका के रंगभेद से जोड़ दिया. सांप्रदायिकता की नयी परिभाषा दे दी. कई भारतीय विद्वान भी हैं, जो फेलोशिप के जरिये अमेरिका में रच-बस गये. उनके लेखों और किताबों से भारत में नैरेटिव बनाया जाता है और फिर उसे राजनीति में इस्तेमाल किया जाता है. ऐसे विद्वानों की लंबी सूची है, जिसकी महीन व्याख्या राजीव मल्होत्रा ने अपनी नयी पुस्तक 'स्नैक्स इन गांगेस' में की है. क्या अमेरिका लोकतंत्र का मसीहा है? साल 2021 और 2023 में अमेरिका ने लोकतंत्र पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें पाकिस्तान को बुलाया गया, लेकिन बांग्लादेश को नहीं. जब दो साल पहले कर्नाटक में हिजाब विवाद उठा, तो अमेरिकी थिंक टैंकों में खूब चर्चा हुई, पर वही जब फ्रांस, डेनमार्क, ऑस्ट्रिया और अन्य यूरोपीय देशों में हुआ, तो अमेरिका चुप रहा. ऐसे कई उदाहरण हैं. भारत के अंदरूनी मसलों पर अमेरिकी व्यवस्था आग उगलती है, उसकी जलन भारत में महसूस होती है, क्योंकि पूरा इको तंत्र स्थापित है. पाठ्य पुस्तक तक उसकी भरपूर हिमायत करते हैं. तकनीक के जमाने में बात सीमेंट की तरह जम जाती है.

तीसरा सबसे अहम प्रश्न है कि क्या भारत की अंदरूनी समस्या का हल बाहरी व्याख्या से हो सकती है या देश के भीतर के विमर्श से. भारतीय लोकतंत्र में कई बीमारियां है, इससे किसी को इंकार नहीं है. समाज जाति में बंटा हुआ है और सांप्रदायिकता का खतरा भी है. गरीबी और अमीरी की खाई भी बढ़ती जा रही है, लेकिन ये तमाम खामियां अमेरिकी समाज में भी है. भारत के साथ एक बौद्धिक लड़ाई दशकों से चल रही है, जिसका केंद्र अमेरिका और यूरोप के देश हैं. चूंकि भारतीय मानस में आज भी घुन लगा हुआ और एक ग्रंथि पल रही है कि अंग्रेजी भाषा में, वह भी अमेरिकी तंत्र से, लिखी गयी बात सच ही होती है. इस ग्रंथि को तोड़ना जरूरी है. इस दिशा में पिछले कुछ वर्षों में कोशिश हुई है, पर औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति के लिए बहुत कुछ होना बाकी है.

(ये लेखक के निजी विचार हैं.)

https://t.me/AllNewsPaperPaid

देश दुनिया

संबंधों में बेहतरी के लिए जापान-दक्षिण कोरिया लगातार प्रयास करें

दक्षिण कोरिया के साथ जापान के संबंधों में काफी सुधार हुआ है. इसका कारण है जापानी प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा और दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति यून सुक-योल द्वारा उठाये गये सकारात्मक कदम. यह प्रगति दोनों नेताओं के बीच तालमेल तक सीमित नहीं रहनी चाहिए. दोनों देशों को अपने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत और गहरा करने के लिए लगातार प्रयास करने की जरूरत है. कुछ दिनों पूर्व किशिदा ने सियोल का दौरा किया और उनकी यून के साथ बातचीत हुई. दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय सहयोग और आदान-प्रदान के निरंतर विस्तार और वृद्धि के लिए प्रतिबद्धता जतायी. उन्होंने तीसरे देशों में रहने वाले अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए आपसी सहयोग के एक ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किया. इससे पहले, ऐतिहासिक और अन्य संवेदनशील मुद्दों के कारण टोक्यो और सियोल के बीच संबंध युद्ध के बाद के सबसे खराब स्तर पर पहुंच गये थे. हालांकि यून द्वारा दो वर्ष पहले कार्यभार संभालने के बाद जापान के साथ तनावपूर्ण संबंधों को सुधारने पर केंद्रित विदेश नीति को आगे बढ़ाने से उनमें सुधार हुआ. किशिदा ने यून की पहल का जवाब दिया. एशिया में सुरक्षा को गंभीर चुनौती है. उत्तर कोरिया का परमाणु व मिसाइल विकास और चीन के सैन्य विस्तार तथा रूस के यूक्रेन पर आक्रमण के कारण अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में अस्थिरता उत्पन्न हो गयी है. ऐसे में लोकतांत्रिक मूल्यों को साझा करने वाले दो पड़ोसी देश, जापान और दक्षिण कोरिया के बीच एकजुटता का महत्व विवाद से परे है. मुक्त व्यापार से दोनों देशों को बहुत लाभ हुआ है. वे कई आम चुनौतियां भी साझा करते हैं. सो द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देना दोनों पक्षों के हित में है. यह सच है कि पड़ोसी देशों के बीच संबंधों में मनमुटाव आते रहते हैं. इसे देखते हुए जापानी और दक्षिण कोरियाई नेताओं के लिए बार-बार मिलना और मुद्दों को हल करने के लिए स्पष्ट चर्चा करना आवश्यक है.

The Asahi Shimbun
Asia & Japan Watch

बोधि वृक्ष

दोषारोपण से मुक्ति

कहते हैं कि मनुष्य अपने जीवन का वास्तुकार स्वयं है. अतः यह कहना उचित होगा कि हम सभी ने अपनी जीवन को अपने पसंद अनुसार बनाया है. परंतु जब हमारे साथ कुछ गलत या अवांछित हो जाता है, तब हम आत्म अवलोकन किये बिना ही तुरंत उसका दोष दूसरे के माथे मढ़ देते हैं. परंतु अक्सर लोग इस सार्वभौमिक नियम को भूल जाते हैं कि हर क्रिया की एक विपरीत और समान प्रतिक्रिया होती है. अतः स्वयं को देखने के बजाय हर समय हम सामने वाले को ठीक करने की जद्दोजहद में ही अपनी सारी ऊर्जा जाया करते रहते हैं. इसी प्रकार, जब हमें दोष देने के लिए कोई व्यक्ति दिखाई नहीं पड़ता, तब हम परिस्थिति को दोष देने लगते हैं. परंतु ऐसा करते हुए हम भूल जाते हैं कि वर्तमान में हमारे जीवन की जो भी परिस्थितियां हैं, वह सभी हमारी अपनी ही पैदाइश है. अतः कर्म के दर्शन के अनुसार जो कुछ भी हम आज अनुभव कर रहे हैं, वह हमारे ही भूतकाल में किये हुए किसी कर्म या गलत सोच का नतीजा है. इसलिए जब हमारे सामने अपने उस पूर्व कर्म के हिसाब को चुकता करने का अवसर आता है, तो हमें सहर्ष उसका लाभ उठा स्वयं को बोझ मुक्त करना चाहिए. किंतु हम ऐसा नहीं करते. विस्मय तो तब होता है जब व्यक्ति या परिस्थिति के ऊपर दोष देने में असफलता हाथ लगने पर निराश मनुष्य सर्वशक्तिमान परमात्मा को दोष देने की हद तक चला जाता है. ऐसा करते हुए तर्क यह होता है कि दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, वह ईश्वर की इच्छा से हो रहा है, इसलिए मेरी यह निजी दुर्दशा भी भगवान की इच्छा का ही नतीजा है. याद रहे! हम सभी मनुष्य आत्मा कर्म के कानून के अंतर्गत अपने-अपने कर्म करते हैं और चाहा या अनचाहा फल प्राप्त करते हैं. इस प्रक्रिया में ईश्वर का कोई भी हस्तक्षेप नहीं होता. हालांकि एक शिक्षक एवं मार्गदर्शक के रूप में वे हमें अच्छे कर्म करने की सीख व ज्ञान दे सकते हैं, किंतु हमारी जगह आकर वे परीक्षा नहीं दे सकते. इसलिए हमें बिना किसी को दोष दिये पूर्ण विश्वास के साथ स्वयं ही जीवन की हर परीक्षा में उतीर्ण हो आगे बढ़ना है.

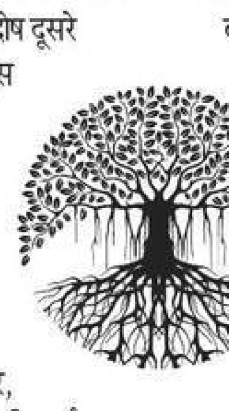

-ब्रह्माकुमार निकुंज जी

प्रबंध सूत्र

घातक है ज्यादा झूठ बोलना

आलोक पुराणिक
स्तंभकार
puranika@gmail.com

ऐसे कई लोग मिलते हैं और ऐसी बातें करते हैं, जैसे आप उनकी जिंदगी के सबसे खास बंदे हैं. ऐसी बातें करने का कुछ लोगों को इस कदर शौक होता है कि वे कतई झूठे लगने लगते हैं. लोग समझ जाते हैं कि ये बातें फर्जी हैं. फर्जी बातों से बचना चाहिए. फर्जी तारीफ लोग सुन लेते हैं, शर्म से जवाब भी नहीं देते, पर वे यकीन नहीं करते. ऐसे लोग मिलेंगे, जो किसी की कविता को ब्रह्मांड की सबसे शानदार कविता घोषित कर देते हैं. कहने वाला भी जानता है कि झूठ कह रहा है और सुनने वाला भी जानता है कि यह झूठ है. फिर यह झूठ चलता जाता है. जो हर व्यक्ति को ही अपनी जिंदगी का सबसे खास बंदा घोषित कर दे, उस पर कौन भरोसा करेगा! जो हर कवि को बेहतरीन कवि घोषित कर दे, उस पर कौन यकीन करेगा! हरेक को सर्वश्रेष्ठ घोषित करना बेईमानी है. औपचारिकता में भी अपनी बात की मर्यादा रखनी चाहिए. तारीफ हो, पर इस कदर नहीं कि लोग झूठा मानने लगें.

झूठी तारीफ करने वालों को लग सकता है कि उनकी बातें सब बहुत कायदे से सुन रहे हैं और प्रभावित भी हो रहे हैं, पर सच में ऐसा नहीं होता. लोग समझदारी से समझ रहे होते हैं कि कौन क्या कह रहा है. मेरे एक परिचित को बहुत मददगार दिखने का शौक था. किसी को भी कह देते थे कि वह उनके लिए हाजिर हैं. ऐसा कहना बहुत आसान है, पर इसे निभाना बहुत मुश्किल है. जब कोई किसी को कहता है कि वह हमेशा उसके लिए हाजिर हैं, तो कोई उन्हें रात के बारह बजे भी कॉल कर सकता है कि आइए, हम अस्पताल में हैं एक केस के मामले में, आकर हमें मदद कीजिए. ऐसे वक्त में देखा जाता है कि बड़ा से बड़ा मददगार भी भागने लगता है. तो भाई, कहा क्यों था? कोई आपसे जबरदस्ती तो नहीं कहता कि आप खुद को सबका मददगार घोषित करो. आप कुछ तारीफ हासिल करने के लिए खुद को मददगार घोषित कर देते हैं, फिर मुंह चुराते हुए घूमते हैं.

कुछ लोग खुद को अमीर साबित करते हुए घूमते हैं कि हमने तो शेयर बाजार में पचास करोड़ कमा लिये और क्रिप्टो ट्रेडिंग में सौ करोड़ कमा लिये. ऐसी ऊंची बातें सुन कर कोई कह सकता है कि भाई साहब, दस हजार रुपये उधार दे दीजिए. फिर करोड़पति मुंह छुपाता घूमता है. असर डालने के लिए झूठ बोलना जरूरी नहीं है. झूठ एक दिन खुल जाता है. उसे खुलना ही है. किसी को भी अपना परम खास घोषित करना बेकार है, क्योंकि अगर वह परम खास है, तो उसे कहने की जरूरत ही नहीं है, उसे तो पता ही होगा. तो, कुल मिला कर बहुत ज्यादा झूठ बोलना सामाजिक सेहत के लिए घातक है.

आपके पत्र

केंद्र सरकार का फैसला सराहनीय

70 साल से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिकों के लिए केंद्र सरकार ने पांच लाख तक कैशलेस इलाज की मंजूरी दी है. सरकार का यह कदम सराहनीय है. स्वास्थ्य बीमा का लाभ सभी श्रेणी के बुजुर्गों को मिलेगा. इससे लोगों में काफी खुशी है. इसी तरह ट्रेनों के टिकट में सीनियर सिटीजन को मिलनेवाली रियायत को फिर से शुरू करना चाहिए. पिछले दिनों रेल मंत्री ने इसे शुरू करने का आश्वासन दिया था. इस संबंध में एक कमेटी ने रेलवे को रिपोर्ट दी थी कि वरिष्ठ नागरिकों को सभी श्रेणी में छूट नहीं देकर केवल स्लीपर श्रेणी में दी जा सकती है.

युगल किशोर राही, छपरा

रेल यात्रियों को मिले बेहतर सुविधा

आज भारत विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था होने का दंभ भर रहा है, लेकिन देश की बड़ी आबादी को मूलभूत सुविधा नहीं मिल रही है. जापान व चीन जैसे देश में 400 से 500 किमी/घंटे की रफ्तार से बुलेट ट्रेन चल रही है और हम 160 किमी/घंटे की रफ्तार से वंदेभारत चला कर ही इठला रहे हैं. हमारे यहां कन्फर्म टिकट के लिए जद्दोजहद करनी पड़ती है. लोगों को बाथरूम के गेट पर बैठ कर यात्रा करनी पड़ती है. अधिकतर ट्रेनें समय पर नहीं चलती हैं. इसलिए रेलवे को सुविधाओं पर ध्यान देना चाहिए.

कृष्ण गोपालन कुमार, गया

पोस्ट करें : प्रभात खबर, प्लॉट संख्या डी-9-10, पाटलिपुत्र इंडस्ट्रियल एरिया, पटना (बिहार) - 800013, ■ मेल करें : patna @prabhatkhabar.in पर ■ ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है.

6 | संपादकीय
जनसत्ता | 16 सितंबर, 2024

कल्पमेधा

अपूर्ण, अनिश्चित अथवा भ्रष्ट परंपराओं का इसलिए अनुसरण करना कि हम गलत फैसले की गलतियों से बच जाएं, केवल एक खतरे को दूसरे खतरे से परिवर्तित करना है।

– ह्वेटले

घाटी में आतंक

जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को लेकर परस्पर विरोधी बातें सुनने को मिलती रही हैं। सरकार का दावा है कि अब वहां आतंकवाद खत्म होने को है। कुछ दिनों पहले गृह मंत्रालय ने दावा किया था कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद काफी कम हो गया है, अब केवल कुछ इलाकों तक सिमट कर रह गया है। जल्दी ही उसे समाप्त कर दिया जाएगा। प्रधानमंत्री ने भी वही बात दोहराई है। उन्होंने डोडा से विधानसभा चुनाव प्रचार की शुरुआत करते हुए कहा कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद अब अपनी आखिरी सांसें गिन रहा है। हालांकि प्रधानमंत्री के दौरे से पहले ही वहां आतंकी हमला हुआ, जिसमें एक अधिकारी समेत दो सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए। सेना के जवाबी हमले में तीन आतंकवादियों को मार गिराया गया। घाटी में सक्रिय विपक्षी राजनीतिक दलों का आरोप है कि पिछले दस वर्षों में वहां आतंकी गतिविधियां बढ़ी हैं। बहुत सारे निरपराध लोग मारे गए हैं, अनेक सुरक्षाकर्मी शहीद हुए हैं। इससे पहले आतंकवादी घटनाएं इतनी नहीं होती थीं, केंद्र सरकार ने तब स्थानीय लोगों से बातचीत का सिलसिला शुरू किया था और आतंकी गतिविधियां काफी कम हो गई थीं। मगर सरकार इन बातों को सिरे से खारिज करती है। हालांकि दो वर्ष पहले गृह मंत्रालय ने भी माना था कि विशेष दर्जा खत्म होने और राज्य में कर्फ्यू के दौरान स्थानीय युवाओं की आतंकी समूहों में भर्ती बढ़ी है।

पहले नोटबंदी के समय दावा किया गया था कि इससे आतंकी समूहों की कमर टूट जाएगी। उन्हें वित्तीय मदद मिलनी बंद हो जाएगी। फिर अनुच्छेद तीन सौ सत्तर हटने के बाद कहा गया कि इससे दहशतगर्दी पर लगाम लग जाएगी। मगर हकीकत यह है कि करीब दो वर्ष तक सघन तलाशी और कड़ी पहरेदारी के बावजूद आतंकी घटनाओं पर कोई उल्लेखनीय अंकुश लगा नजर नहीं आया। फिर जैसे-जैसे वहां जनजीवन सामान्य बनाने के लिए कुछ ढिलाई दी जाने लगी, दहशतगर्दी एकदम से बढ़नी शुरू हो गई। आतंकवादियों ने अपने हमले के तरीके बदल लिए। कभी वे बाहरी लोगों और कश्मीरी पंडितों पर लक्षित हिंसा करने लगे, तो कभी सेना के काफिले पर घात लगा कर हमला। पिछले पांच वर्षों में थोड़े-थोड़े समय बाद सुरक्षाबलों पर घात लगा कर हमले बढ़े हैं। उन हमलों की समीक्षा से यह भी तथ्य सामने आया कि उनके पास बाहर से अत्याधुनिक हथियार पहुंचने लगे हैं, वे सुरक्षाबलों के सूचना तंत्र में सेंध लगाने के नए तरीके तलाश चुके हैं। ऐसे में यह सवाल बार-बार पूछा जाता रहा है कि आतंकी समूहों को वित्तीय मदद पहुंचाने वालों और बाहर से हथियार वगैरह मुहैया कराने वालों पर शिकंजा कसे जाने के बावजूद उन तक ये चीजें कैसे पहुंच जा रही हैं।

केंद्र सरकार का शुरू से दावा रहा है कि वह घाटी में आतंकवाद समाप्त करके ही दम लेगी। इसके लिए निस्संदेह उसने सख्त कदम भी उठाए, सीमा पार से होने वाली घुसपैठ कम हो गई। मगर आतंकी घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रहीं, तो इसके पीछे बड़ा कारण है कि दहशतगर्दों को स्थानीय लोगों का समर्थन मिल रहा है और वहां के युवाओं को हथियार उठाने से रोका नहीं जा पा रहा। घाटी में आतंकवाद नासूर बन चुका है, हर नागरिक वहां अमन चाहता है, आतंकवाद को किसी भी रूप में खत्म देखना चाहता है। मगर केवल सरकारी दावों में इसके खत्म होने की बात कहने से हकीकत नहीं छिपती, इसे जमीन पर भी दिखना चाहिए।

चीते का कुनबा

चीता परियोजना केंद्र सरकार की एक महत्त्वाकांक्षी योजना है। दो वर्ष पहले नामीबिया से आठ चीते लाकर मध्यप्रदेश के कूनो उद्यान में छोड़े गए थे। इस तरह करीब अस्सी वर्ष बाद फिर से चीतों को बसाने की पहल शुरू हुई थी। हालांकि तब काफी आशंकाएं जताई गईं थी कि भारत की जलवायु चीतों के अनुकूल नहीं है और शायद वे ज्यादा दिन जीवित नहीं रह पाएंगे। मगर अब वे आशंकाएं काफी हद तक निर्मूल हो चुकी हैं। उसके एक वर्ष बाद दक्षिण अफ्रीका से बारह चीते मंगाए गए थे। हालांकि इस बीच आठ चीतों ने दम तोड़ दिया, पर बचे हुए चीतों ने सत्रह शावकों को जन्म दिया, जिनमें से बारह जीवित हैं। स्वाभाविक ही इससे उत्साहित होकर सरकार ने अब केन्या से चीते लाने का समझौता किया है। भारत ने इसे अंतिम रूप दे दिया है और केन्या प्रशासन से इस पर मंजूरी का इंतजार है। केन्या से लाए जाने वाले चीतों को गुजरात के बन्नी घास के मैदानों में बन रहे प्रजनन केंद्र में बसाने की योजना है।

ऐसा नहीं कि चीतों को बसाने की कोशिश इससे पहले नहीं हुई। अंग्रेजों के शासन में भी इसके प्रयास हुए, मगर यहां की जलवायु और शिकारियों पर अंकुश न लग पाने की वजह से चीतों का कुनबा बढ़ नहीं पाया। अच्छी बात है कि अब कूनो उद्यान में चीतों का परिवार बढ़ रहा है। उनकी संख्या पच्चीस हो गई है। हालांकि योजना थी, चीतों को कूनो में स्वतंत्र विचरण के लिए छोड़ा जाना था, मगर उनमें बीमारियों और शिकारियों आदि के भय से उन्हें अभी तक पिंजरों में ही कैद रखा गया है। उनमें से केवल एक चीता बाहर है। दरअसल, कूनो उद्यान के चीतों में कई बार बीमारियों का प्रकोप देखा गया है, इसलिए उन्हें सुरक्षित वातावरण में रखा जाता है। पर इस तरह अभयारण्य और चिड़ियाघर में अंतर नहीं रह जाता। गुजरात के नए बन रहे प्रजनन केंद्र में भी अगर उन्हें पिंजरे में रखना पड़ा, तो उनके स्वाभाविक जीवन को लेकर दावा करना मुश्किल होगा। यह अपेक्षा अभी पूरी नहीं हुई है कि चीते खुले में कुलांचें भरेंगे और लोग उन्हें अपनी स्वाभाविक जीवन-शैली में देख सकेंगे।

दूसरे ग्रहों के जीवन पर नजर

अभी 'इसरो' प्रमुख ने सोशल मीडिया (यूट्यूब) पर यह धारणा व्यक्त की है कि इसकी बहुत संभावना है कि परग्रही सभ्यताएं हमारे मुकाबले में ज्यादा उन्नत हों और वे हमें देख रही हों या हम पर नजर रख रही हों।

अभिषेक कुमार सिंह

आम इंसान ही नहीं, खुद वैज्ञानिक परग्रही सभ्यता (एलियंस) के बारे में जानने को इच्छुक रहे हैं। मगर इस मामले में शीर्ष वैज्ञानिक संस्थाएं अभी कुछ भी ठोस रूप से कह नहीं पाती हैं। अनजान वस्तुओं (यूएफओ) और उड़न तश्तरियों के देखे जाने के हजारों दावे हैं। मगर कोई शीर्ष वैज्ञानिक इस पर कुछ कहने की कोशिश करता है, तो इस पर सनसनी ज्यादा पैदा होती है, ठोस कम हासिल होता है। इसकी वजह है कि इन वैज्ञानिकों के पास भी अपनी बात साबित करने के लिए ठोस साक्ष्यों का अभाव होता है। मगर अभी 'इसरो' प्रमुख ने सोशल मीडिया (यूट्यूब) पर यह धारणा व्यक्त की है कि इसकी बहुत संभावना है कि परग्रही सभ्यताएं हमारे मुकाबले में ज्यादा उन्नत हों और वे हमें देख रही हों या हम पर नजर रख रही हों। इसकी भी बहुत संभावना है कि पृथ्वी पर दूसरी दुनिया के प्राणी आते रहते हों। यह इस बात का सबूत है कि पृथ्वी के पार जीवन है। उन्होंने यह आशंका भी जताई कि पृथ्वी से अलग रासायनिक संरचना वाले जीवन से पृथ्वीवासियों को खतरा हो सकता है। यानी एलियंस हम पर हमला कर सकते हैं।

हालांकि 'इसरो' प्रमुख ने भी अपने दावों के पक्ष में कोई साक्ष्य नहीं दिया है। मगर जब वे यह कहते हैं कि परग्रही सभ्यताएं हमसे एक से दस हजार साल आगे हैं, तो उनके दावों को गंभीरता से लेने की जरूरत है। उनके इस दावे का आधार यह है कि हम पृथ्वीवासी अभी अपने प्राकृतिक उपग्रह चंद्रमा से बाहर अपने कदमों की छाप नहीं छोड़ सके हैं। लेकिन 'एलियन' हमसे कई गुना ज्यादा उन्नत होने के कारण ब्रह्मांड में दूर तक आने-जाने की क्षमता रखते हैं। इन एलियंस से अगर हम इंसान कोई संपर्क या संवाद नहीं कर पा रहे हैं, तो यह कमी हमारी समझ, ज्ञान और नवाचार की है। क्योंकि इसकी अत्यधिक संभावना है कि एलियंस अपने तरीके से हमसे लगातार संपर्क और संवाद की कोशिश कर रहे होंगे, लेकिन हम अपनी सीमाओं के कारण उनसे संवाद न कर पा रहे हों।

माना जाता है कि धरती पर रहने वाले मानव समुदाय का जब कभी परग्रही प्राणियों से पहली बार आमना-सामना होगा, तो इसकी संभावना सबसे ज्यादा है कि हमें जीवन के उन रूपों का पता चलेगा, जो पृथ्वी की जैविक संरचनाओं से बिल्कुल अलग होंगे। यह भी हो सकता है कि तब हमें एलियंस कहलाने वाली परग्रही सभ्यताओं का कुल रवैया दोस्ती भरा लगे और जिस अनजान खतरे का अंदाजा सदियों से हम इंसान लगाते रहे हैं, वे सारे अनुमान एक झटके में उलट जाएं। पर ऐसा होने तक मानव सभ्यता एलियंस और अनजान आकाशीय वस्तुओं (यूएफओ) को अपने लिए खतरा मानती रह सकती है। इस कड़ी में एक चिंता कुछ महीने पहले जापान ने व्यक्त की थी। वहां सांसदों के एक बड़े समूह ने जून 2024 में उड़न तश्तरियों (अनआइडेंटिफाइड फ्लाइंग आब्जेक्ट यानी यूएफओ) को देश की सुरक्षा के लिए खतरा बताया था। जापान के राजनीतिक नेतृत्व की चिंता है कि जिस तरह से दुनिया में ड्रोन तकनीक का इजाफा हुआ है, मुमकिन है कि ड्रोन की शक्ल में यूएफओ या यूएफओ की शक्ल में ड्रोन राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नया खतरा पैदा कर दें। इसलिए जरूरी है कि यूएफओ कहलाने वाली वस्तुओं की

परग्रही सभ्यता के अस्तित्व में भरोसा रखने वालों के नजरिए से देखें तो कहा जा सकता है कि इस ब्रह्मांड में असंख्य आकाशगंगाएं हैं। इसलिए यह सोचना सांख्यिकीय तर्क के हिसाब से सही हो सकता है कि उनमें कहीं न कहीं जीवन हो। हालांकि पिछले कई दशक से दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने इससे जुड़े रहस्यों का जो जवाब खोजा था, वह यही है कि ब्रह्मांड में इंसान अकेला है। मगर इस उत्तर को मुकम्मल न मानने की एक वजह यह है कि दूसरी दुनिया की खोज के काम में ब्रह्मांडीय दूरियों के अलावा तकनीकी सीमाएं रही हैं।

गहन जांच की जाए और इनकी सत्यता का पता लगाया जाए।

कुछ समय पहले अमेरिका में भी यूएफओ और एलियंस को लेकर नए सिरे से काफी कुछ कहा-सुना गया। जैसे, बीते वर्ष 2023 में अमेरिकी अंतरिक्ष एजंसी 'नासा' ने कहा था कि वह यूएफओ और एलियंस संबंधी घटनाओं से जुड़ी चर्चाओं को सनसनी से अलग करके देखने और उन्हें विज्ञान के तराजू पर तौलने की हिमायती है। अमेरिकी सरकार ने इन्हीं पहलकदमियों के बीच उड़न तश्तरियों की जांच के लिए एक विशेष समिति का गठन भी किया था। समिति के सामने यूएफओ देखे जाने की 510 घटनाओं का ब्योरा जांच के लिए रखा गया है, जिनमें से ज्यादातर को आकाश में उड़ने वाले बड़े गुब्बारों से जोड़ा जाता है। इन गुब्बारों को पड़ोसी मुल्कों के जासूसी उपकरण माना जाता है। इन गुब्बारों में जासूसी वाला कोण हो सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि यूएफओ से जुड़ने वाली हर घटना के पीछे कोई जासूसी संबंधी मामला हो।

परग्रही सभ्यता के अस्तित्व में भरोसा रखने वालों के नजरिए से देखें तो कहा जा सकता है कि इस ब्रह्मांड में असंख्य आकाशगंगाएं हैं। इसलिए यह सोचना सांख्यिकीय तर्क के हिसाब से सही हो सकता है कि उनमें कहीं न कहीं जीवन हो। हालांकि पिछले कई दशक से दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने इससे जुड़े रहस्यों का जो जवाब खोजा था, वह यही है कि ब्रह्मांड में इंसान अकेला है। मगर इस उत्तर को मुकम्मल न मानने की एक वजह यह है कि दूसरी दुनिया की खोज के काम में ब्रह्मांडीय दूरियों के अलावा तकनीकी सीमाएं रही हैं। दुनिया के पास न तो बेहद ताकतवर टेलीस्कोप थे और न ही वैसे सिग्नल पकड़ने वाले यंत्र, जो अंतरिक्ष से आने वाली हर सूक्ष्म आहट को एक अलग प्रकार के जीवन की तरफ से संवाद की कोशिश के रूप में दर्ज कर सकें। दूसरी बड़ी खामी इस मान्यता में जकड़े रहने की रही है कि दूसरी दुनिया भी हमारी पृथ्वी जैसी होगी और उस पर इंसान जैसे जीव ही बसते होंगे। 'नासा' ने कहा है कि अब वह आधुनिक तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से यूएपी यानी 'अनआइडेंटिफाइड एनोमेलस फेनोमेना' की जांच करेगी। नासा के मुताबिक इससे यह साफ हो सकेगा कि जो चीजें हमारे सौरमंडल से गुजर कर पृथ्वी तक आई हैं, उनके पीछे असल में कौन है।

ऐसा क्यों है कि परग्रही सभ्यता और यूएफओ के बारे में कोई ठोस नतीजा नहीं निकल पा रहा है। इसका एक समझदार जवाब वर्ष 2016 में शोध जर्नल 'एस्ट्रोबायोलाजी' में प्रकाशित हुआ था। इसमें अंतरिक्ष विज्ञानी आदित्य चोपड़ा और चार्ली लाइनवीवर ने यह निष्कर्ष दिया था कि पृथ्वी से परे अन्य ग्रहों पर जीवन के लायक हालात ही नहीं हैं। लिहाजा, उन पर एलियंस (समझदार परग्रही प्राणी) तो क्या, कैसा भी जीवन संभव नहीं है। यहां तक कि सौरमंडल के ही ग्रह- मंगल और शुक्र- पर 400 करोड़ वर्ष पहले जीवन लायक स्थितियां बनी थीं, पर वहां भी पर्यावरण इतना अनुकूल नहीं रहा कि एलियंस पैदा हो पाएं। मगर हमारा इंटरनेट सौरमंडल को पार कर पृथ्वी तक आने वाली उड़न-तश्तरियों या अजीबोगरीब किस्म के यानों की जिन वीडियो फुटेज से भरा पड़ा है। उसके बारे में दावा किया जाता है कि तकनीकी खामियों के कारण यह समस्या हमारी है कि हम अरबों-खरबों प्रकाशवर्ष दूर से आने वाले इन संकेतों को पकड़ और समझ नहीं पा रहे हैं।

आंसुओं का सौंदर्य

सुरेशचंद्र रोहरा

हंसने वाले को कोई अधिक समय तक हंसने से न रोके, रोने वाले को कोई अधिक समय तक रोने से न रोके। और कोई अधिक समय तक सोने वाले को न जगाए या जगाने वाले को कोई सोने को न बोले, तब की दुनिया कुछ और होगी। दरअसल, यह हंसना और रोना हमारी जिंदगी का फलसफा है। प्रकृति की ऐसी नियामत है, जिसके कारण ही मनुष्य मनुष्य होता है। यह रोना ही है, जो एक तरह से हमारे जीवन की बोहनी है यानी आगाज है।

जब हम दुनिया में कदम रखते हैं तो रोते हुए आते हैं। फिर अगर हम रोते हैं तो परिजन खुश होते हैं और अगर नवजात शिशु का रुदन न सुनाई पड़े तो परिजन चिंतित हो जाते हैं और उसे किसी भी तरह रुलाया जाता है। समझने की बात यह है कि अगर हमारी आमद ही रोने से हुई है, तो जीवन में इसका स्थान कैसे बेशकीमती नहीं होगा! हम चाहें या न चाहें, रोना और आंसू हमारी नियति है, हमारी प्रकृति का अनिवार्य हिस्सा है। इससे हम चाहें जितना भी बचना चाहें, बच नहीं सकते और इसीलिए जो स्थितप्रज्ञ मनीषी होते हैं, वे इससे ऊपर उठ जाते हैं और जिंदगी का असल आनंद लेते हैं। इसी को दूसरे शब्दों में माया भी कहा गया है जो जीवन का परम सत्य है। इससे भला कौन बच सकता है! जहां तक बात है रोने की, तो इसमें मनुष्यता का सौंदर्य छिपा हुआ है।

दुनिया मेरे आगे

रोना या आंसू बहाना भी कोई हंसी खेल नहीं है। ईमानदार आंसू वही बहा सकता है, जो सच्चे अर्थों में मनुष्य है, क्योंकि इसके पीछे है पाक-साफ हृदय का प्रति-स्थापित होना। आंखों में आंसू सहज रूप से उन्हीं के आते हैं जो संवेदनशील होते हैं, जो पूर्ण रूप से मनुष्य होते हैं।

जब मनुष्य नैसर्गिक रूप से आंसू बहाता है तो उसे सुकून मिलता है। यह रोना ही है, जो मनुष्य को मनुष्य बना देता है और अन्य प्राणियों से थोड़ा अलग कर देता है। यह हमारे आंसू ही हैं जो हमारी संवेदना की पहचान हैं। हम जब कोई दर्द भरी कहानी पढ़ते हैं, मिसाल के तौर पर मोपासां का उपन्यास 'एक महिला की जिंदगी' में कुछ ऐसा अंकन देखते हैं, तो हमारे आंसू बहने लगते हैं। सच्चाई यह है कि जिंदगी में हमारे परिवार में आसपास दुख ही दुख है, अगर यह कहा जाए तो गलत नहीं होगा। और उसमें हमें खुशियां ढूंढ़नी पड़ती हैं। जब हम खुश होते हैं तो चेहरे पर मुस्कान आ जाती है और जब ज्यादा मुस्कराते हैं, ज्यादा खुश होते हैं तो हम हंसने लगते हैं। इसका भी जिंदगी में अत्यंत महत्त्व है। शायद इसी वजह से कहा गया है कि दुख भरी जिंदगी की नदी में हंसना या हंसी कुछ ऐसे है, जैसे अंधेरे में सितारों का टिमटिमाना।

इस तरह हमारी जिंदगी होने और हंसने के बीच एक ऐसा पेंडुलम है, जहां रास्ता सकारात्मकता ढूंढ़ता है। साफ-साफ कहा जाए, तो यह आंसू ही है जो हमारी जिंदगी का आगाज है और अंत भी। जब प्राणी देह त्याग करता है तो खुद भी पीड़ा में दुखी होता है और उसकी मृत्यु के बाद सारा परिवार और चाहने वाले आंसू बहाते हैं। बहुत कम ऐसे पहुंचे हुए सिद्ध पुरुष होते हैं, जो अपनी मौत को दुनिया के लिए एक पैगाम बना देते हैं, जिससे समाज और दुनिया एक संदेश ग्रहण करती है। सोचने की बात यह है कि यह प्रकृति का कैसा खेल है कि जब कोई नवजात शिशु जन्म लेता है तो वह रोते हुए दुनिया में आता है। जितना सहज आंसू बहाना, रोना है, उससे बहुत बहुत ज्यादा कठिन है हंसना। यही कारण है कि खुशी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, उसकी कोई तुलना नहीं है। मगर यह रोना या आंसू बहाना भी कोई हंसी खेल नहीं है। ईमानदार आंसू वही बहा सकता है जो सच्चे अर्थों में मनुष्य है, क्योंकि इसके पीछे है पाक-साफ हृदय का प्रति-स्थापित होना। आंखों में आंसू सहज रूप से उन्हीं के आते हैं, जो संवेदनशील होते हैं, जो पूर्ण रूप से मनुष्य होते हैं। इसलिए आंसुओं का जिंदगी में बहुत महत्त्व है और इसे सहेज कर रखने को कहा जाता है।

अगर हम गीत, कविता की बात करें, कहानी की बात करें, तो विभिन्न कलाओं में आंसू और खुशियां समाहित हैं और इन्हें महसूस करके मनुष्य और ज्यादा मनुष्य बनता है। अगर हम यह कल्पना करें कि जिंदगी में आंसू न हो, रोना न हो या फिर हंसना न हो तो फिर जिंदगी कैसी होगी, इसकी कल्पना करने से ही समझ सकते हैं कि वह जिंदगी सिर्फ एक रोबोट सदृश बनकर रह जाएगी। बल्कि अब तो रोबोट को भी कृत्रिम संवेदनात्मक अभिव्यक्तियों से लैस बनाने की कोशिश की जा रही है। इसलिए हमें अपने आंसू छिपाने की आवश्यकता नहीं है। जिस तरह हम अपनी खुशी, अपनी हंसी प्रदर्शित करते हैं, हमें अपने आंसू नहीं छिपाना चाहिए और छिपाने के लिए प्रयास नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह अगर हमारे पास है, तो यह हमारी धरोहर है।

जाने कितने किस्से और कितनी कहानियां हैं या कहा जाए कि शायद बहुत कम ऐसा सृजन होगा, जिनमें ऐसे दृश्य अनिवार्य रूप से हैं, जिन्हें पढ़ कर आदमी की आंखें नम नहीं हो जाती हैं या फिर होठों पर हंसी न आ जाती हो। एक कवि के सृजन का यह मान ही है कि कोई उसकी रचना को पढ़कर आह उच्चारित करे और दुखी हो जाए। यह स्थिति उस साहित्य के उच्चतर होने का प्रतीक है। इसी तरह, अगर हमें कोई हंसाता है, तो उसका मान-समाज में बढ़ जाता है, क्योंकि हंसना कोई बच्चों का खेल नहीं है। दरअसल, हमें जगाने वाले और सुलाने वाले, हंसाने वाले और आंसू पोंछने वाले जो लोग होते हैं, वही हमारे असल शुभचिंतक होते हैं, चाहे वह कोई अपना हो या फिर पराया।

अधिकार की सीमा

'मनमानी के विरुद्ध' (संपादकीय 6 सितंबर) में वर्णित तथ्य प्रशासनिक अराजकता के दृष्टांत हैं। यह तो अच्छा हुआ कि सुप्रीम कोर्ट ने इस गंभीर मुद्दे पर समय रहते संज्ञान लेकर मुख्यमंत्री को खरी-खोटी सुनाई। आश्चर्य है कि इस मामले में विभागीय मंत्री, मुख्य सचिव एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी ने जब असहमति दी, तो उसे दरकिनार कर दिया गया। जबकि इस तरह के संवेदनशील मुद्दे पर मुख्यमंत्री को राज्य के महाधिवक्ता की राय हासिल करनी चाहिए थी। ऐसे मामले सभी राज्यों में व्याप्त हैं। शीर्ष अदालत की टिप्पणी सामंती युग के क्रम में बेहद गंभीर चेतावनी है। ऐसे मामलों का दूसरा चिंताजनक पक्ष है कि अखिल भारतीय सेवाओं से लेकर प्रांत के अन्य सभी सेवाओं के एसोसिएशन अपने संवर्ग के पदाधिकारियों के हित में उनका पक्ष सरकार के समक्ष बहुत तेजी से रखते हैं, लेकिन किसी अधिकारी के गलत कर्तव्य पालन या भ्रष्टाचार के प्रमाणित मामले की उनका सेवा संघ निंदा तक नहीं करता। देश में दागी अफसरों और नेताओं का एक सबल समूह पूरे लोकतंत्र और प्रशासनिक तंत्र में दीमक लगा रहा है।

– अशोक कुमार, पटना, बिहार

सद्भाव की भाषा

हम इतने बरसों से हिंदी दिवस मना रहे हैं, मगर हिंदी को लेकर जैसी स्वीकार्यता अहिंदी भाषियों में थी और मौजूदा समय में भी है, शायद खुद हिंदी भाषी अपनी भाषा को लेकर उतने सजग, सतर्क नहीं हैं। खासकर हिंदी सीखने वालों की संख्या भारतीय अहिंदी भाषी में ही नहीं बढ़ी, बल्कि बहुत सारे विदेशी और अप्रवासी भारतीय इसे अपनाएं, तो इसके पीछे यह भावना है कि हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्दों की ग्राह्यता है। राजनीतिक कारणों से हिंदी को विवादों में घसीटा जाता रहा है। सही मायने में हिंदी भाषी लोग अपनी भाषा को राजभाषा से राष्ट्रभाषा की ओर ले जाना चाहते हैं तो उन्हें अन्य भारतीय भाषाएं सीखने पर जोर देना चाहिए। इसी को ध्यान में रखकर जब नवोदय विद्यालय स्थापित हुए, तब तीसरी भाषा के तौर पर अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने पर जोर दिया गया।

– मुकेश कुमार मनन, पटना

तितलियों का जीवन

शहरीकरण की वजह से विलुप्त होने वाली पहली तितली एक्सेरसिस ब्लू थी। उम्मीद है कि इस बार इंसान इन्हें संरक्षित कर लेगा। तितलियों के तितली उद्यान कई स्थानों पर निर्मित किए गए हैं। कई स्थानों पर बनाए जाने की पहल भी की गई है। नर तितलियों के लिए गर्मी के मौसम में फूलों के बगीचों मे छोटे गड्ढे बनाकर उसमें पानी भर कर रखने से 'मड पडलिंग' के लिए स्थान बनता है जो मादा तितली के लिए सोडियम एवं अमिनो एसिड इन्हीं स्थान से प्राप्त कर नर लाकर मादा तितली के जरिए अंडों को पूर्ण विकसित कर तितलियों की संख्या बढ़ाने में मददगार होता है। किसान भी अपने खेतों के कुछ हिस्से में फूलों के पौधे लगाएं, ताकि तितलियों को पराग के लिए आहार की प्राप्ति हो सके। तितलियों की संख्या में वृद्धि होने से रंग-बिरंगी तितलियों को बच्चे महज किताबों के अलावा वास्तविक रूप से अपने आसपास देख सकें। किसानों के सहयोग और तितली उद्यान के होने से तितलियां विलुप्त होने से बच सकेंगी।

– संजय वर्मा 'दृष्टि', धार, मप्र

इच्छाशक्ति की जरूरत

मणिपुर में एक तरफ जातीय संघर्ष की आग धधक रही है, तो यह मामला सिर्फ कानून और व्यवस्था का ही नहीं, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति का है। सवाल है कि सरकार आखिर किस इंतजार में है? ऐसा लगता है कि मणिपुर की जनता ने शायद कोई 'पवित्र धैर्य' प्रतियोगिता में हिस्सा लिया है, जिसमें उन्हें राजनीतिक अस्थिरता और हिंसा को बिना कुछ कहे, सहना है। हर बार एक ही तरह के बयानों से समाधान की उम्मीद जताई जाती है, लेकिन धरातल पर कुछ भी ठोस नहीं दिखता। क्या हम मान लें कि राज्य और केंद्र सरकारें किसी 'जादुई समाधान' की प्रतीक्षा में हैं? या फिर यह मुद्दा किसी फाइल में धूल चाटने के लिए छोड़ दिया गया है? किसी भी समस्या का समाधान संवाद और समझ से होता है, लेकिन यहां तो बातचीत के बजाय 'बांटो और राज करो' की नीति नजर आ रही है।

– अवनीश कुमार गुप्ता, आजमगढ़, उप्र

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

नवभारत टाइम्स
नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। सोमवार, 16 सितंबर 2024

इस्तीफ़े का असर

दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के अरविंद केजरीवाल के फैसले ने एक स्तर पर लोगों को चौंकाया जरूर, लेकिन इसने प्रांतीय और राष्ट्रीय राजनीति के कई तात्कालिक और कुछ दूरगामी पहलुओं की ओर भी ध्यान खींचा है।

फैसले की टाइमिंग | केजरीवाल के जेल में रहते हुए उन पर इस्तीफे का दबाव बनाने में विरोधियों ने कोई कसर उठा नहीं रखी। उस पूरी अवधि में सभी दबावों की अनदेखी करते हुए वह अड़े रहे। अब जब केंद्रीय एजेंसी CBI पर सख्त टिप्पणी करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें जमानत दे दी और पूरी पार्टी इसे केजरीवाल की जीत बता रही है, तब उन्होंने इस्तीफे का ऐलान कर दिया। इसी बिंदु पर चुनावी राजनीति की रणनीतिक बारीकियां अपनी ओर ध्यान खींचती हैं।

केजरीवाल : एक तीर से कई शिकार

आक्रामक मुद्रा | दिलचस्प है कि इस मामले में चाहे BJP हो या AAP दोनों में हमलावर तेवर बनाए रखने की जैसे होड़ लगी हुई है। दोनों ही दल इस बात को लेकर काफी सतर्क नजर आते हैं कि वे बचाव की मुद्रा में न दिखने लग जाएं। AAP नेता चाहे या न चाहें केजरीवाल की छवि दिल्ली में बड़ा चुनावी मुद्दा बनने ही वाली है। ऐसे में इस्तीफे के जरिए इस सवाल को केंद्र में लाकर AAP ने यह साबित करने का प्रयास किया है कि वह इस सवाल से किसी भी रूप में कतरा नहीं रही।

राष्ट्रीय राजनीति | महत्वपूर्ण यह भी है कि केजरीवाल ने पहले इस्तीफा न देने से जुड़े एक सवाल का जवाब देते हुए पूरे I.N.D.I.A. ब्लॉक को इस दायरे में शामिल कर लिया। उन्होंने कहा कि चाहे कर्नाटक में सिद्धारमैया हों या केरल में पी विजयन या पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी- BJP ने इन सबके खिलाफ मामला दर्ज कर इनकी सरकार गिराने की साजिश तैयार रखी थी। इस बड़ी साजिश को नाकाम करने के लिए ही वह अब तक इस्तीफा न देने की बात पर अड़े रहे। साफ है कि खुद को I.N.D.I.A. ब्लॉक में मजबूती से बनाए रखना अभी उनकी प्राथमिकता में है। हालांकि हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस से आखिरी पलों में तालमेल के कोई संकेत अभी तक नहीं हैं।

ईमानदारी की राजनीति | अन्ना आंदोलन से जो राजनीतिक पार्टी के रूप में उभार, AAP लीडरशिप ईमानदारी को कानून-व्यवस्था की नजरों से ही देखती थी। इसीलिए शुरू में उसका स्टैंड यह था कि जिस नेता पर भी कोई मामला दर्ज हो या उसे गिरफ्तार किया जाए, उसे इस्तीफा दे देना चाहिए। इस बार पार्टी के नेता पद छोड़ने का फैसला करते हुए भी जनता की अदालत में खुद को बेकसूर साबित करने पर जोर दे रहे हैं। यह पार्टी के नजरिए में आए बदलाव का सबूत है। यह भारत में राजनीति की जीवंतता की एक निशानी तो है ही।

चक्र-व्यू
कविता का मुक़दमा

राहुल पाण्डेय

पिछले दिनों एक कविता में एक पत्नी अपने पति को उसकी प्रेमिका के हवाले करने पहुंच गई। न सिर्फ पति की प्रेमिका के पास पहुंच गई, बल्कि यह भी बताने लगी कि रात में ऐसे खर्राटे भरता है, वायु-विसर्जन असीमित करता है और चबर-चबर करके खाता है। बोल दो तो ऐसे ठुनकता है, जैसे थाने का दारोगा। अब मदमाती, मुस्काती विरहिणी बनी कविता में ऐसे सीन बंधने लगेंगे तो जाहिर है कि कुछ इसे बर्दाश्त करेंगे और कुछ इसे बर्दाश्त से बाहर की चीज मानेंगे। जीवन में किसी ने ऐसा किया हो या न किया हो, अलबत्ता कविता में एक पत्नी के ऐसा करने को कविगण कविता नहीं मान रहे हैं। पूरब के एक कवि को कविता आयोग की बात याद आने लगी। कल बताने लगे कि शहर में एक बड़े अधिकारी आए थे, जो बड़े कवि भी थे। ये तो अधिकारी होना, फिर कवि होना- यह दोनों चीजें मिलाकर इंसान को अधिकृत कवि तो बना ही देती हैं। तो उन अधिकृत कवि का मानना था कि महिला आयोग, सूचना आयोग से लेकर समझने और समझाने तक के आयोग बनते हैं तो कविता आयोग भी बनना चाहिए। कविता को चाहिए कि पाठकों या श्रोताओं तक पहुंचने से पहले वह कविता आयोग पहुंचे। वहां कविता के मानदंडों पर अपनी पूरी जांच कराए, कथ्य की एमआरआई वगैरह भी करा ले और बाकायदा वहां से सर्टिफिकेट ले कि वह और कुछ नहीं, कविता ही है। कविता आयोग के सर्टिफिकेट के बगैर कविता को कविता न माना जाए, सरकार को भी इसके लिए एक विधेयक बनाना चाहिए। वह चाहे तो इसके लिए संसद में बहस करा सकती है और यकीन मानिए कि उस बहस में ऐसे-ऐसे छुपे कवि सामने आएंगे कि किसी को अंदाजा भी नहीं होगा। पक्ष-विपक्ष आपस में कितनी भी रार कर ले, कविता तो सबके दिल की बात है।

कविता पर रार बढ़ती देख मैंने मीर का आह्वान किया, लेकिन उन्होंने आने से मना कर दिया। कहने लगे कि मियां-बीवी के बीच तो खुदा भी नहीं आ सकता, मेरी क्या औकात। गालिब को बुलाया तो कहने लगे कि उनकी खुद ही नहीं बनती थी। उनकी वाली चाहती तो बिना किसी कविता के उनको किसी और के हवाले कर आती। कविता का यह हाल देख मैंने कवियों का आह्वान करना बंद कर दिया। मगर कवि को बुलाएं या न बुलाएं, वे आ ही जाते हैं। और बात जब कविता पर रार करने की हो तो वे मियां-बीवी के बीच भी कूदने को तत्पर रहते हैं। एक कवि ने कहा कि अगर इसी कविता में पति की जगह पत्नी होती, और आधी रात में वायु-विसर्जन करती तो कवि पर दर्जनों एफआईआर हो चुके होते, सुप्रीम कोर्ट सारे मामले एक ही जगह बंद करके कवि को राहत देने पर विचार करना होता। कवि महोदय का कहना था कि भले कितना ही आक्रोश हो, कविता एक किस्म की सजलता मांगती है। मैं तभी से सोच रहा हूं कि सजलता शब्दों में होनी चाहिए या बिंबों में?

एकदा
शास्त्रों में नहीं पाबंदी

सन 1891 की बात है। अपने संन्यासी जीवन में स्वामी विवेकानंद घूमते-घूमते माउंट आबू पहुंचे हुए थे। उन्होंने एक निर्जन गुफा में आश्रय लिया था। वहां उनके कुछ शिष्य भी आते, धर्म प्रसंग पर चर्चा होती। इसी तरह समय बीतते-बीतते बारिश का मौसम आ गया। तेज पानी बरसता तो गुफा के भीतर घुस जाता। कीड़े-मकोड़े भी आने लगे। ऐसे में स्वामी विवेकानंद ने एक दिन अपने शिष्यों से कहा, 'इस गुफा में पानी से बचने के लिए क्या एक दरवाजे का इंतजाम हो सकता है?'

Subrata Dhar

एक शिष्य ने विनम्रता से कहा, 'स्वामीजी, मैं मुसलमान हूं। क्या आप मेरे घर चलेंगे? आपके रहने और भोजन की अलग व्यवस्था कर दूंगा।' स्वामी विवेकानंद उसके साथ चले गए। जब खेतड़ी के महाराजा को स्वामी विवेकानंद के बारे में पता चला, तो उन्होंने आमंत्रण भिजवाया। विवेकानंद खेतड़ी पहुंच गए। जब वहां धार्मिक चर्चा चल रही थी, तभी महाराजा के प्राइवेट सेक्रेटरी मुंशी जगमोहन ने प्रश्न किया, 'हिंदू साधु होकर आप किस तरह मुसलमान के घर में रह रहे हैं?' स्वामीजी ने जवाब दिया, 'इसमें मुझे कोई बुराई नजर नहीं आती। शास्त्र की तरफ से भी मुझे कोई डर या संकोच नहीं, क्योंकि शास्त्र में इस तरह की कोई पाबंदी नहीं है।' विवेकानंद के जवाब से मुंशी जगमोहन संतुष्ट हुए और उनके मन की दुविधा मिट गई। बाद में खेतड़ी के महाराजा ने ही स्वामीजी को विदेश भेजने की व्यवस्था करवाई। जब स्वामी विवेकानंद विदेश दौरे पर जा रहे थे, तब मुंशी जगमोहन ही उनको लेकर बॉम्बे डॉक तक गए थे।

संकलन : दिलीप लाल

आर्टिकल 370 हटने के बाद घाटी में पहली बार हो रहे इलेक्शन से बहुत उम्मीद बेमानी
कश्मीर को चाहिए आईना दिखाने वाला

राहुल पंडिता

एक बार खुद को जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी की जगह रखकर सोचिए, जिसने नंगरहार के ट्रेनिंग कैंप में महीनों बिताए हैं। अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर पार करते हुए वह बेहद मुश्किलों भरा सफर तय करके कश्मीर पहुंचता है। इस दौरान उसने नदी पार की, एक ट्रक में घंटों छिपा रहा, इस उम्मीद में कि भारतीय सुरक्षा बलों द्वारा पकड़े जाने से पहले वह किसी सुरक्षित ठिकाने तक पहुंच जाएगा। उसने इतना खतरा उन कश्मीरियों की मदद के लिए उठाया, जिन्हें उसके ट्रेनर मजलूम कहते हैं। कश्मीर पहुंचने के कुछ दिनों बाद वह बाहर निकलता है, बिल्कुल साफ-सुथरा, दाढ़ी बनी हुई और पैरों में एडिडास के जूते। शोपियां के बाजार में वह देखता है कि उसकी उम्र के लोग पीएम नरेंद्र मोदी का मास्क लगाए एक कार की छत पर सवार हैं। यह वही शहर है, जहां 2016 में बुरहान वानी के मारे जाने के बाद पुलिस भी बाहर निकलने से कतराती थी।

साजिश का साया | आर्टिकल 370 हटने के बाद कश्मीर अपने पहले विधानसभा चुनाव के लिए तैयार है। 18 सितंबर को पहले चरण का मतदान होगा। करीब एक दशक बाद यह मौका आया है। लेकिन इस दौरान जो एक चीज नहीं बदली, वह है साजिश की कहानियों पर यकीन करने की आदत। 1950 के दशक से ही ऐसा चला आ रहा है। कश्मीर की मुस्लिम बहुल आबादी को जिस भी अपराध को स्वीकार नहीं करना होता, उसके लिए वह बहुत चालाकी से एक जुमला बोल देती है- मरकज की चाल या केंद्र की साजिश। यह साजिश किसी सीएम को हटाना या पॉश इलाके राजबाग में युवतियों का अपने डॉगी का जन्मदिन मनाना। यहां तक कि 2014 में आई विनाशकारी बाढ़ के लिए भी केंद्र को जिम्मेदार ठहरा दिया गया था। अब मौजूदा कॉन्सपिरेसी थिअरी चुनाव में खड़े निर्दलीय उम्मीदवारों को लेकर है।

दोहरे किरदार | सच कहा जाए तो केंद्र भी पूरी तरह से निर्दोष होने का दावा नहीं कर सकता। लेकिन, ऐसा एक भी बार नहीं होता, जब कोई कश्मीरी अपने गिरेबां में झांक कर देखे कि वह एक ही वक्त में कितने किरदार निभा रहा है। एक समय वह दिल्ली में अपने सेबों के लिए कोल्ड स्टोरेज की मांग करता है और उसी समय दूसरी तरफ वह पाकिस्तान का

असल समस्या
- जिम्मेदारी उठाने से बचते लोग
- केंद्र को दोष देने की आदत
- मुद्दों पर बात नहीं करते नेता

झंडा लहरा रहा होता है। एक रोल में वह मारे गए आतंकवादी का शोक मनाता है, जबकि पिछली शाम शायद उसी ने सेना को उस आतंकी के बारे में जानकारी दी हो।

कद्रदान की कमी | इकबाल की बेहद मशहूर पंक्तियां हैं, 'हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है/ बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा'। इनका अर्थ है कि घाटी में उगने वाला नरगिस फूल हजारों बरस खुद को कोसता रहता है कि वह अंधा है, फिर बड़ी मुश्किल से बाग में कोई सच्ची नजर वाला पैदा होता है। चुनावी रैली में खड़े होकर जब कश्मीरी इन पंक्तियों को लाखों-लाख बार दोहरा रहे होते हैं तो वे नरगिस को मजबूर कर देते हैं कि वह घाटी के अनगिनत कब्रिस्तानों से होकर गुजरते हुए आए और कहे, 'भगवान के लिए मुझे अंधा ही रहने दो। मुझे तुम लोगों में कोई दीदावर नहीं चाहिए।'

स्टैंड न होना | कश्मीरी जिस तरह का बड़बोलापन दिखाते हैं, उस पर वहां सिस्टम का हिस्सा रहे 'बाहर' के लोग हंसते हैं। एक पुलिस अधिकारी को याद है कि कैसे बुरहान वानी के मारे जाने के कुछ दिनों बाद उनके ऑफिस में एक शख्स आया था। उसने अपनी सदरी के ऊपर गमछा पहना हुआ था BJP का। उस समय स्थिति बहुत तनावपूर्ण थी। वह आदमी पुलिस सुरक्षा मांगने आया था। उस अफसर ने पूछा, 'BJP के नाम का गमछा गले में लपेट कर तुम मेरे ऑफिस से कैसे बाहर जाओगे?' जवाब में उसने गमछा उतारकर सदरी के भीतर रखा और चला गया। बहुत संभव है कि उस व्यक्ति ने बुरहान वानी के लिए 'फातिहा' भी पढ़ा हो।

नेताओं की मौकापरस्ती | यह वही जादू-टोना है जो इस समय कश्मीर के तमाम दलों में देखने को मिल रहा। सोचिए, एक नेता यह सपना बेच रहा है कि सरकार में आते ही आर्टिकल 370 को वापस लाएगा। एक और नेता जो अगस्त 2019 में गिरफ्तार होते समय खुफिया एजेंसियों के सामने गिड़गिड़ा रहा था कि उसे नई दिल्ली के साथ जुड़ने का मौका दिया जाए, वह अचानक से लोगों की आकांक्षाओं की बात कर रहा है। और एक नेता, जो श्रीनगर में एक छोटे-से राजनीतिक पद के लिए भारतीयता दिखा रहा था, अचानक जमात उम्मीदवार से भी ज्यादा उत्साही धार्मिक भाषा बोलने लगा है।

कश्मीर की जरूरत | इस विधानसभा चुनाव से कश्मीर में एक सरकार बन जाएगी, पर इससे बहुसंख्यक कश्मीरी समाज की आंखों पर बंधी पट्टी नहीं हटेगी। वह इस समय नशे की लत से बिखरा पड़ा है। घरेलू हिंसा बढ़ रही है। कश्मीर को आज एक आधुनिक नेता की जरूरत है, जो समाज को आईना दिखा सके, लेकिन उससे पहले खुद भी आईने में झांके। वरना तो एक व्यवस्था की जगह दूसरी आ जाएगी और उन लोगों के लिए कुछ नहीं बदलेगा जो बिना डर के एक सम्मानजनक जीवन जीना चाहते हैं।

समय की ख़ुशबू से भरी एक पुरानी किताब

पुरानी किताबों की दुकानों में बसने वाली उदासी के लिए जॉन कोएनिग ने पिछले दशक में एक शब्द ईजाद किया, वेल्लिचोर। देखते ही देखते यह शब्द सोशल मीडिया का हिस्सा बन गया। हालांकि पुरानी किताबों की दुकानों में बस उदासी ही नहीं होती, वहां होती है एक महक भी। पुराने पन्नों से उठती एक अजीब-सी गंध, जो दिमाग पर पूरी तरह हावी हो जाती है।

इस खुशबू का आनंद कुछ खास होता है। इसे सिर्फ पढ़कर हासिल नहीं किया जा सकता। पढ़ने पर तो केवल शब्द अपने होते हैं। इन शब्दों की गंध को अपनाने के लिए इसमें डूबना पड़ता है। इसके लिए चाहिए संपूर्ण समर्पण। यह गंध जुड़ी होती है समय से। एक नई किताब से महक आती है नए पन्नों की, स्याही की। लेकिन, जब समय स्याही में घुलता जाता है, तो वही किताब अपने ही शब्दों की खुशबुओं से भर उठती है। खुशवंत सिंह के उपन्यास 'ट्रेन टू पाकिस्तान' से गुजरते हुए क्या मनो माजरा गांव के खेत-खलिहान की खुशबू नहीं आती, या आरके नारायण की कहानियों का कस्बा मालगुड़ी अपनी नदी की लहरों और जंगल की शांति के साथ सामने नहीं पसर जाता! हाथ में 'गुनाहों का देवता' हो, तो लगता है कि धर्मवीर भारती के इलाहाबाद में आज भी चंदर और सुधा इंतजार कर रहे हैं एक-दूसरे से मिलने का। और, जिम कॉर्बेट की 'मैनइटर्स ऑफ कुमाऊं' में आज भी बंद है रीढ़ की हड्डियों में सिहरन पैदा कर देने वाले शिकार की दास्तान।

पुराने पन्नों की गंध ले जाती है अतीत में, जहां अलग-अलग समय, संस्कृति और लोगों की सोच मौजूद होती है।

AI Image

जीवन आनंद

किसी किताबघर की मद्धिम रोशनी में, किताबों के ढेर के बीच खड़े होकर आंखें बंद कर देखिए, लगता है कि वहां मौजूद हजारों समयकाल एक साथ मुलाकात करने चले आए हैं। यह अनुभव दिल में उतर जाता है और कुछ भूला-बिसरा याद आने लगता है। फ्रेंच दार्शनिक एमिल बोइराक ने शायद इसी दिन के लिए कहा था, डेजा वू। पुरानी किताबों की यह अनोखी खुशबू हमें लेखन की गहराई से जोड़ देती है। महसूस होता है कि जैसे हम एक विशेष धरोहर का हिस्सा हैं। और तब उंगलियों में फंसकर रह जाने वाली वही किताब किसी भी खंडहर, किले-दुर्ग, परंपरा से ज्यादा भारी और विशाल लगने लग जाती है। किताब अपने पढ़ने वालों को कभी भूलती नहीं। हर किताब उन हाथों की छाप भी अपने साथ लिए चलती है, जिन्होंने उसे पलटा और उन दिमागों के विचारों को संजोए रखती है, जिन्होंने उसे पढ़ा। हजार हाथों से गुजरते हुए, हजार हथेलियों की गर्मी और नमी को जज्ब किए हुए एक किताब कारवां बन जाती है वक्त के साथ। जितनी पुरानी होती जाती है किताब, उतनी ही घनी होती जाती है उसकी खुशबू। अनुभव के खजाने की तरह जब पन्नों की सफेदी पीली पड़ने लगती है, तब उसकी छपाई और अनमोल हो जाती है।

अमेरिकी एनिमेशन इंडस्ट्री की नींव रखने वाले वॉल्ट डिज्नी का कहना था कि ट्रेजर आईलैंड पर समुद्री डाकुओं की लूट से कहीं अधिक खजाना है किताबों में। इसी खजाने का हिस्सा है उसकी खुशबू भी। टेक्नॉलजी ने इतनी सहूलियत दे दी है कि अब एक पूरी लाइब्रेरी जेब में समा सकती है। स्मार्टफोन की छोटी-सी स्क्रीन आज हजारों किताबों का घर है, जिस पर वक्त और जगह की कोई पाबंदी नहीं। लेकिन, यह टेक्नॉलजी भी हमें वह खुशबू नहीं दे सकती, जो एक किताब में जान भरती है। किताब प्रेमी जानते हैं कि बस पढ़ना ही काफी नहीं है, काफी नहीं है लिखावट से गुजर जाना, जब तक कि उसकी खुशबू से भी न गुजरें।

शेयर करें अपने अनुभव
जीवन की दिनचर्या के अनुभवों में आप कैसे आनंद महसूस करते हैं, हमें बताएं nbtreader@timesofindia.com पर, और सब्जेक्ट में लिखें- 'जीवन आनंद'

AI के ज़माने में गुमराह होने का ख़तरा

मृत्युंजय राय

17वीं सदी के मध्य में जॉन मिल्टन ने कहा था कि सच्ची और झूठी सूचनाओं के आपसी संघर्ष में आखिरकार सच की ही जीत होती है। अमेरिकी लेखक टिम वू (Tim Wu) ने The Attention Merchants नाम की किताब में बताया है कि किस तरह से अमेरिका में शुरू में कुछ अखबारों तक में खबरों को नमक-मिर्च लगाकर परोसा जाता था, जिससे उसे पढ़ने वालों का मनोरंजन हो। उसमें खबरों की सचाई पर बहुत जोर नहीं होता था। आज दुनिया में एक तरह से इंफॉर्मेशन वॉर चल रही है, जिससे लोकतांत्रिक देशों में चुनावों तक को प्रभावित करने की बातें सामने आई हैं। दो देशों के बीच चल रही जंग में सूचना का कहीं अधिक इस्तेमाल अपने पक्ष को आगे बढ़ाने और दूसरे को गलत साबित करने के लिए हो रहा है। आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (AI) टूल्स की वजह से गलत सूचनाओं को विश्वसनीय ढंग से फैलाना आसान हो गया है।

AI Image

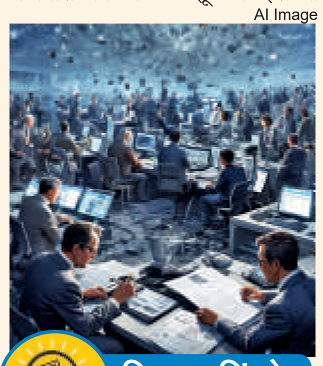

विचार विंडो

इस्राइली इतिहासकार Yuval Noah Harari अपनी नई किताब **Nexus: A Brief History of Information, Networks from the Stone age to AI** में सूचना से जुड़ी आज की चुनौतियों का भी जिक्र करते हैं। हरारी कहते हैं कि अधिक सूचनाएं आपको सच तक ले जाएंगी, मिल्टन की यह सोच सही नहीं थी। वह यह भी ध्यान दिलाते हैं कि इंटरनेट को लेकर सूचना के लोकतांत्रिकरण के जो दावे किए गए थे, वे गलत साबित हुए। इसमें कोई शक नहीं है कि उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व में 'Arab Spring' जैसे आंदोलन में इंटरनेट ने अहम भूमिका निभाई, लेकिन ऐसा कुछ समय तक ही दिखा और ये देश लोकतंत्र की राह पर भी नहीं लौटे।

हाल में कई ऐसी घटनाएं हुई हैं, जो बताती हैं कि सूचनाओं को लेकर समाज किस तरह की चुनौतियों का सामना कर रहा है। बांग्लादेश में शेख हसीना के खिलाफ आंदोलन के बाद सोशल मीडिया पर ऐसे विडियो और मेसेज की बाढ़ आ गई, जो भारत विरोधी भावनाओं को भड़का रहे थे। मामला अल्पसंख्यकों के खिलाफ नफरत तक जा पहुंचा। बाद में यह बात खुली कि ऐसे कई पोस्ट पाकिस्तान से किए जा रहे थे।

झूठ के इस बाजार की हकीकत यह है कि यह काम बहुत कम खर्च में हो सकता है। डीपफेक टेक्नॉलजी बहुत सस्ती है। कुछ हजार रुपयों में कोई भी डीपफेक ऐप्स का एक्सेस हासिल कर सकता है। 'Nexus' में हरारी सूचना के इतिहास की जानकारी देने के साथ यह भी बताते हैं कि इस बारे में बेहतर समझ कैसे पैदा की जा सकती है और किस तरह से इसकी मदद से ह्यूमन नेटवर्क तैयार किया जा सकता है। हरारी यह भी लिखते हैं कि सच और पावर से इसका क्या संबंध है और यह भी कि किस तरह से इतिहास से सबक लेकर सूचना संबंधी आज की चुनौतियों का हल निकाला जा सकता है।

वह लिखते हैं कि सूचना वास्तविकता को दर्ज करने का तरीका भर नहीं है। यह विचारों को व्यवस्थित रूप देने और उन्हें लोगों से जोड़ने का जरिया है। वह लिखते हैं कि किस्से-कहानियां, क्ले टैबलेट्स या धार्मिक लेखन जैसी शुरुआती सूचना तकनीक और बाद में अखबार और रेडियो ने सामाजिक व्यवस्था को एक रूप देने में अहम भूमिका निभाई। हरारी बताते हैं कि 19वीं सदी में मास मीडिया ने राष्ट्रीय स्तर पर लोकतंत्र को संभव बनाया, लेकिन साथ ही इसने बड़े स्तर पर तानाशाही के दरवाजे भी खोल दिए। आज डिजिटल मीडिया से राजनीति प्रभावित हो रही है। AI के बारे में उनका कहना है कि यह तकनीक 'नए किस्म के भगवान' का रूप ले सकती है।

बनाए नए रास्ते

प्रणव प्रियदर्शी

देश की जानी मानी जियॉलजिस्ट और माउंटेनियर हैं सुदीप्ता सेनगुप्ता, अंटार्कटिक अभियान में भी शामिल रही हैं। लेकिन उनकी अपनी करियर यात्रा भी अंटार्कटिक अभियान से कम मुश्किल और दुस्साहस भरी नहीं कही जाएगी। जियॉलजी में सुदीप्ता की शुरू से दिलचस्पी रही है। लेकिन 1962 में जब सुदीप्ता ने जाधवपुर यूनिवर्सिटी में इसकी पढ़ाई शुरू की तो उनके पूरे बैच में मात्र दो लड़कियां थीं। उनमें भी एक ने अगले साल छोड़ दिया। जब 1969 में उन्होंने जियॉलजिकल सर्वे ऑफ इंडिया जॉइन किया तो कुल करीब 2000 जियॉलजिस्ट में मात्र 5 ही लड़कियां थीं। 77 साल की सुदीप्ता सेनगुप्ता के संस्मरणों पर आधारित किताब 'ब्रेकिंग रॉक्स एंड बैरियर्स' पिछले दिनों आई है। उस समय की स्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब 1968 में उन्होंने लड़कियों के लिए पर्वारोहण का एक कैंप आयोजित करना चाहा तो अव्वल तो लड़कियों ने नाम ही कम लिखवाया। लेकिन जिन्होंने लिखवाया था, उनमें भी कई यह कहते हुए पीछे हट गईं कि घर वाले मना कर रहे हैं। उन्हें लगता है लड़की काली पड़ जाएगी। खुद सुदीप्ता भी जब उन अभियानों से लौटतीं तो यह कहने वाले कम नहीं होते थे कि तुम तो चारकोल हो गई हो। सबसे बड़ी बात, जब अंटार्कटिक अभियान पर जाने की बात आई तो पहले कह दिया गया कि बड़ा कठिन अभियान है इसलिए महिला वैज्ञानिकों के नामों पर विचार ही नहीं होगा। लेकिन वह पीछे नहीं हटीं, तो इंटरव्यू हुआ जिसमें वह चुन ली गईं। इसके बावजूद अभियान में शामिल कई लोग सोचते थे कि यह तो नाम के लिए शामिल की गई हैं। यह अलग बात है कि सुदीप्ता ने उस अभियान में वह सारा काम किया, जिसकी टीम के किसी भी अन्य पुरुष सदस्य से अपेक्षा की जा रही थी। पर्वतारोहण फील्ड वर्क के अपने अनुभव और अभ्यास की बदौलत वह कई पुरुष सदस्यों से भी ज्यादा फिट और स्ट्रॉन्ग थीं। आखिर ग्लास सीलिंग तोड़ना कोई हंसी खेल नहीं होता।

सुदीप्ता सेनगुप्ता

आधी दुनिया

रीडर्स मेल
www.edit.nbt.in

असली क्रिकेट का मजा
9 सितंबर को 'जीवन आनंद' कॉलम में प्रकाशित लेख 'धीमी आंच पर पकता पकवान है टेस्ट क्रिकेट' पढ़ा। लेख में टेस्ट क्रिकेट की खासियत को बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। वनडे और टी-20 में खिलाड़ियों से अपेक्षा की जाती है कि वे तेजी से रन बनाएं। कहा जाता है कि रन महत्वपूर्ण हैं, वे कैसे आ रहे हैं, यह नहीं। लेकिन, जब बात हो टेस्ट क्रिकेट की, तो रन बनाने का तरीका भी मायने रखता है। आड़े-तिरछे शॉट थोड़ी देर के लिए रोमांच पैदा कर सकते हैं, लेकिन असली खुशी मिलती है किसी खिलाड़ी की स्किल देखकर।

विवेक रावत, ईमेल से

अपना-अपना महत्व
यह पत्र 9 सितंबर के लेख 'धीमी आंच पर पकता पकवान है टेस्ट क्रिकेट' से संबंधित है। क्रिकेट के हर फॉर्मेट का अपना महत्व है। टेस्ट क्रिकेट खेल की परंपरा और गहराई को बनाए रखता है। वहीं वनडे और टी-20 फॉर्मेट खेल को तेजी और मनोरंजन के साथ पेश करता है। किसे कौन-सा रूप पसंद है खेल का, यह सवाल व्यक्तिगत है और क्रिकेट के प्रति दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। हां, यह बात सच है कि पांच दिनों का फॉर्मेट वाकई खिलाड़ियों का असली टेस्ट लेता है, जहां कमजोर पड़ने की गुंजाइश नहीं।

श्वेता यादव, ईमेल से

सड़कें ही बेईमान
बारिश तन-मन को ठंडक और राहत देती है। इससे प्राकृतिक सौंदर्य में इजाफा हो जाता है। इसकी सुखद अनुभूति जीवन के पलों को सुहाना और सुखद बना देती है। इन दिनों की बारिश अहसास कराती है कि सावन अभी गया नहीं है। घर से बाहर निकलो तो बारिश की फुहारें मन को तरोताजा कर देती हैं। लेकिन, कभी-कभी मजा किरकिरा भी हो जाता है। शहर की बिगड़ैल सड़कों ने परेशान कर रखा है, वरना बरसात को कौन उलाहना देता है।

दीपक शर्मा, नोएडा

nbtedit@timesofindia.com
पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र
CM के स्वागत में चलाए पटाखे, दर्ज हुई FIR - एक खबर
- दिल्ली में तो खुशियां मनाना भी मुश्किल लगने लगा है!

विशाल सैनी

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
hindi.speakingtree.in

मन को न समझा तो इससे बड़ा दुश्मन कोई नहीं

आनंदमूर्ति गुरुमां

हमारे शास्त्रों में ऐसा वर्णन आता है कि मन ही बंधन और मोक्ष का कारण भी है। यही मन हमारा सबसे बड़ा दुश्मन हो सकता है, पर अगर हम चाहें तो यही मन हमारा सबसे प्रिय सखा भी हो सकता है। मन हमारा मित्र बन सके, उसके लिए जरूरत है इसे समझने की। अगर अपने मन को समझ लिया तो इससे नजदीकी कोई मित्र नहीं और न समझा तो फिर खैर नहीं।

मन का स्वभाव है बहुत सोचना, बहुत विचारना। हम पूरे दिन इंद्रियों के माध्यम से जो भी ग्रहण करते हैं, वह हर चीज हमारे मन पर बहुत गहरा प्रभाव डालती है। फिर चाहे वह त्वचा के माध्यम से किसी वस्तु का स्पर्श हो या आंखों देखी कोई चीज। जब भी हम इंद्रियों के जरिये कुछ अनुभव करते हैं तो हमारे मन में एक दृश्य बन जाता है। वह उस विषय से संबंधित कोई पूर्व स्मृति हो सकती है या भविष्य की कोई कल्पना।

मनुष्य का मन शांत करना बहुत कठिन है क्योंकि एक के बाद एक मन में विषय का चिंतन चलता ही रहता है और विचारों की बाढ़ अक्सर ही आती रहती है। इन विषय रूपी लहरों के उठते ही इंसान क्या करने की सोचता है? उसे लगता है कि शायद थोड़ा घूम आएंगे तो अच्छा लगेगा, बहुत समय हो गया एक ही जगह पर बैठे हुए, कहीं चले जाते हैं। ऐसा सोच कर वह इंसान एक जगह से दूसरी जगह जाता है, फिर जब लौटता है तब भी मन असंतुष्ट और परेशान ही रहता है। ऐसा क्यों? क्योंकि मन अगर अपने आप में, अपने आप से खुश नहीं है तो आप भले ही कहीं भी चले जाओ, वह खुश नहीं हो पाएगा। हमें लगता है सुख कहीं बाहर है, हम यह वस्तु प्राप्त कर लेंगे तो बहुत आनंद मिलेगा। हम इस जगह चले जाएंगे तो मन खुश होगा। पर क्या असल में ऐसा होता है? मन दो पल के लिए खुश होता है, पर फिर यह वापस उन विचारों में खो जाता है, जिनसे दूर भाग रहा था।

अगर आपका मन शांत है तो आप जहां हैं, वही संतुष्टि है। आपको जगह नहीं बदलनी पड़ती। लेकिन, अगर मन किसी भी कारणवश असंतुष्ट है या दुखी है, तो इसे ठीक करने की जिम्मेदारी हमारी है। इसे ठीक कैसे करें? जब हमारे जीवन में अनुशासन होता है तो हमारा मन संयमित हो जाता है। साधना के लिए एक नियम होना चाहिए। सुबह इतने बजे उठना है, फिर उठते ही कुछ समय अपनी साधना को देना है, फिर अपना जो भी काम है, उसे खूब मेहनत से करना है। दिनभर की जिम्मेदारी के बाद रात को मंत्र जप जरूर करना है। यह रोज का नियम होना चाहिए। एक संकल्प लेना चाहिए कि भले ही कोई परिवर्तन आए, हम अपना नियम नहीं तोड़ेंगे।

जब हम किसी भी चीज को पूर्ण समर्पण के साथ करते हैं, तो मन शांत होता है और शांति ही हमें संतुष्ट करती है। भक्ति और प्रेम भी जब समर्पण के साथ होता है, तो मन शांत और संतुष्ट हो जाता है। फिर इधर-उधर की चीजें सोचने का न समय बचता है, न इच्छा होती है। इसीलिए गुरु प्रेम, ईश्वर प्रेम और भक्ति से दिल में सुकून के पल लाते रहने चाहिए, मन को शांति सहज ही प्राप्त हो जाती है। शांत और संयमित मन ही आपका मित्र हो सकता है।

आर.एन.आई. नं. 510/57© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्सः 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु.
संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • सोमवार • 16 सितम्बर • 2024
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा, तब जीवन रक्षा के लिए उसे नाखून की जरूरत थी, लेकिन नख-धर मनुष्य अब भी बढ़ रहे हैं।
-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

आतंकवाद अब भी मुद्दा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को डोडा की एक चुनावी रैली में कहा कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद अंतिम सांस ले रहा है, और उनकी सरकार ने इस 'सुंदर क्षेत्र को नष्ट करने वाली' वंशवादी राजनीति का मुकाबला करने के लिए नया नेतृत्व पेश किया है। जम्मू क्षेत्र के डोडा, किश्तवाड़ और रामबन तथा दक्षिण कश्मीर के जिलों अनंतनाग, पुलवामा, शोपियां और कुलगाम की 24 विधानसभा सीटों पर पहले चरण में 25 सितम्बर को मतदान होगा। दूसरे चरण में 26 सीटों तथा आखिरी चरण में 40 सीटों के लिए मतदान होगा। भाजपा के उम्मीदवारों के समर्थन में डोडा रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने के अपनी सरकार के वादे को दोहराया

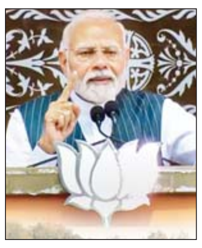

और लोगों को नेशनल कॉन्फ्रेंस, कांग्रेस और पीडीपी को फिर से सत्ता में लाने के प्रति आगाह किया। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा के चुनाव इसलिए महत्त्वपूर्ण हो गए हैं कि राज्य का विशेष दर्जा समाप्त करने, अनुच्छेद 370 निरस्त करने और राज्य को दो केंद्रशासित प्रदेशों-जम्मू-कश्मीर और लद्दाख-में विभाजित करने के उपरांत पहली बार जम्मू-कश्मीर की असेंबली के लिए चुनाव हो रहे हैं। जम्मू-कश्मीर को विधानसभा दी गई है, जबकि लद्दाख को प्रशासक के माध्यम से प्रशासित किया जा रहा है। चुनाव को विपक्ष अनुच्छेद 370 और जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य की बहाली के लिए रायशुमारी करार दे रहे हैं, जबकि भाजपा ने स्पष्ट कर दिया है कि जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल किया जाएगा, लेकिन अनुच्छेद 370 की वापसी संभव नहीं रह गई है। दिलचस्प यह है कि प्रमुख विपक्ष पार्टी नेशनल कॉन्फ्रेंस अभी भी अनुच्छेद 370 की वापसी को चुनावी मुद्दा बनाए हुए हैं। इसके अलावा वह जम्मू-कश्मीर की सवायत्तता का अपना पुराना राग भी अलापे हुए है, और इस मुद्दे को चुनाव का प्रमुख मुद्दा बनाकर मैदान में है। अन्य विपक्षी पार्टी पीडीपी का भी यह प्रिय मुद्दा है। बहरहाल, भाजपा राज्य में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बाद राज्य में उभरे बनिस्बत शांतिपूर्ण परिदृश्य को अपनी उपलब्धि के रूप में प्रचारित कर रही है, और उसे लगता है कि उसका यह मुद्दा कारगर होगा। बेशक, 370 को निरस्त करने के बाद राज्य में शांति का माहौल बना और पत्थरबाजी की घटनाओं पर भी रोक लगी, लेकिन चुनाव की घोषणा के समय से अब तक छिटपुट आतंकी घटनाओं ने राज्य की जनता को विचलित किया है। देखा जाना है कि वह किस पार्टी के पक्ष में जनादेश देती है।

दांपत्य में दरार

हिन्दू विवाह को अनुबंध के तहत भंग नहीं किया जा सकता, इलाहाबाद उच्च न्यायालय की एक पीठ ने एक महिला की अपील स्वीकार करते हुए यह कहा। शास्त्र-सम्मत विधि आधारित हिन्दू विवाह को सीमित परिस्थितियों में ही भंग किया जा सकता है। वह भी संबंधित पक्षों पेश साक्ष्यों के आधार पर। पीठ ने कहा कि पारस्परिक सहमति के बल पर तलाक मंजूर करते समय भी निचली अदालत अपीलकर्ता को मूल सहमति पर कायम रहने के लिए बाध्य नहीं कर सकती। अदालत ने कहा, ऐसा करना न्याय का उपहास होगा। पति ने

आरोप लगाया कि 2007 में उसकी बीवी उसे छोड़ गई तथा 2008 में विवाह भंग करने की अदालत में अर्जी लगाई। मध्यस्थता प्रक्रिया के दौरान पति-पत्नी ने अलग रहने पर सहमति जताई। वाद के लंबित रहने के कारण पत्नी ने विचार बदल लिए पर पति ने उसे साथ रखने से इंकार कर दिया। हालांकि सेना के अधिकारियों की मध्यस्थता के बाद दोनों साथ रहने को राजी हो गए। इस दौरान इनके दो बच्चे भी हुए। 2011 में बुलंदशहर के अपर जिला जज द्वारा जारी निर्णय के खिलाफ उच्च न्यायालय में महिला ने अपील दायर की जिसमें पति की तरफ से दाखिल तलाक की अर्जी मंजूर कर ली गई थी। मामला उतना पेंचीदा नहीं लगता जितना दंपति ने इसे खुद उलझा लिया। अपने यहां घरेलू हिंसा के बावजूद अभी भी दो फीसद से ज्यादा तलाक नहीं होते हैं। पूरी जिंदगी दंपति आपसी झगड़ों में काट लिया करते हैं। यह दंपति अदालत की शरण में जाने के बावजूद मध्यस्थों के दबाव में या नये सिरे से सामंजस्य बिठाने की उम्मीद में पुनः साथ रहने को राजी हो गया। कई दफा विपरीत स्वभाव या आदतों वाले दंपतियों को साथ रहने में दिक्कतें आती हैं परंतु वे विवाहविच्छेद का कड़ा निर्णय लेने में घबरा जाते हैं, या पारिवारिक दबाव के आगे उन्हें साथ रहने को बाध्य होना पड़ता है। ऐसे में उनकी काउंसलिंग कराई जानी चाहिए। उन्हें सामाजिक-पारिवारिक रूप से समझाया जाना चाहिए। खासकर इस मामले में दो बच्चों के लालन-पालन की जिम्मेदारी भी दंपति को मिल कर उठानी होगी। विवाह भंग होने से इन बच्चों का भविष्य भी प्रभावित होगा। तलाक की अर्जी लगाने के बावजूद यदि दंपति साथ रह रहा है, तो पारिवारिक या निचली अदालत को उसे आखिरी मौका देने का प्रयास करना चाहिए।

ओजोन दिवस/ योगेश कुमार गोयल

जलवायु बदलाव और ओजोन

सितम्बर 16, 1987 को मॉन्ट्रियल में ओजोन परत के क्षय को रोकने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय समझौता हुआ था, जिसमें उन रसायनों के प्रयोग को रोकने से संबंधित बेहद महत्त्वपूर्ण समझौता किया गया था, जो ओजोन परत में छिद्र के लिए उत्तरदायी माने जाते हैं। ओजोन परत कैसे बनती है, कितनी तेजी से कम हो रही है और इस कमी को रोकने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं, इसी संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए 1994 से प्रति वर्ष 'विश्व ओजोन दिवस' मनाया जा रहा है किन्तु चिन्ता की बात यह है कि पिछले कई वर्षों से ओजोन दिवस मनाए जाते रहने के बावजूद ओजोन परत की मोटाई कम हो रही है।

प्रति वर्ष विशेष थीम के साथ यह महत्त्वपूर्ण दिवस मनाया जाता है। विश्व ओजोन दिवस 2024 का विषय है 'मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉलः जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाना'। यह दिवस हमें स्मरण कराता है कि पृथ्वी पर जीवन के लिए ओजोन परत आवश्यक है, और यह विषय भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसे बचाने हेतु निरंतर जलवायु कार्रवाई की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। भारत ने 2030 तक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन की तीव्रता में 35 फीसद तक कमी लाने का लक्ष्य रखा है किन्तु जी-20 देशों पर जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपायों की समीक्षा पर आधारित एक रिपोर्ट में कुछ समय पहले कहा गया था कि भारत सहित जी-20 देशों ने ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती के जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं, वे तापमान वृद्धि को डेढ़ डिग्री तक सीमित करने के दृष्टिगत पर्याप्त नहीं हैं। रिपोर्ट के मुताबिक अपेक्षित परिणाम हासिल करने के लिए इन देशों को अपने उत्सर्जन को आधा करना होगा। विश्व के अधिकांश क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के चलते विनाश का जो दौर देखा जा रहा है, उसके लिए काफी हद तक ओजोन परत की कमी जिम्मेदार है। हमें यह भी भली-भांति समझ लेना चाहिए कि हमारी लापरवाही और पर्यावरण से खिलवाड़ ही पर्यावरण विनाश की जड़ है। कुछ समय पूर्व एक रिपोर्ट में कहा गया था कि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के चलते दुनिया भर में करीब 12 करोड़ लोग विस्थापित होंगे। ओजोन परत के सुरक्षित न होने से मनुष्यों, पशुओं और यहां तक कि वनस्पतियों के जीवन पर भी बेहद प्रतिकूल प्रभाव पड़ना तय है। अधिकांश वैज्ञानिकों का मानना है कि ओजोन परत के बिना पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

ये हमारी खुद से लड़ाई है

कोलकाता कांड
कुमार प्रशांत

पूरा कोलकाता पहले गुस्से से लाल हुआ, फिर जल-भुन कर राख हुआ! अस्पताल में ही नहीं, वह राख कोलकाता शहर में भी सब दूर फैली। जुलूस-धरना-प्रदर्शन चला तो लगातार चलता ही रहा। उसे भाजपा समेत विपक्षी दलों ने उकसाया-भड़काया जरूर लेकिन वह जल्दी ही कोलकाता के भद्रजनों के आक्रोश में बदल गया। ऐसा जब भी होता है, बंगाल से ज्यादा खतरनाक भद्रजन आपको खोजे नहीं मिलेंगे। ममता बनर्जी अच्छी तरह जानती हैं क्योंकि इसी भद्रजन के आक्रोश ने उन्हें मार्क्सवादी साम्यवादियों का पुराना गढ़ तोड़ने में ऐसी मदद की थी कि वे तब से अब तक सत्ता में बनी हुई हैं। लेकिन सत्ता ऐसा नशा है जो आपको सच्चाई से अनजान बना देता है।

किसी भी अन्य मुख्यमंत्री की तरह सत्ता के तेवर तथा सत्ता की हनक से उन्होंने रेप और घिनौनी क्रूरता के साथ लड़की रेजिडेंट डॉक्टर की हत्या के मामले को निबटाना चाहा लेकिन उस मृत डॉक्टर की अतृप्त आत्मा जैसे उत्प्रेरक बन कर काम करने लगी। जैसे हर प्रदर्शन-जुलूस-नारे-पोस्टर के आगे-आगे वह डॉक्टर खुद चल रही थी। ऐसी अमानवीय वारदात को दबाने-छिपाने-खारिज करने की हर कोशिश को विफल होना ही था। वह हुई और कोलकाता का आरजी कर अस्पताल, ममता की राजनीतिक साख और संवेदनशील छवि के लिए वाटर-लू साबित हुआ। अब ममता भी हैं, उनकी सत्ता भी है लेकिन सब कुछ कंकाल मात्र है। यह आग कोलकाता से निकल कर देश भर में फैल गई।

मामला डॉक्टरों का था जो वैसे भी कई कारणों से सारे देश में हैरान-परेशान हैं। सो, देश भर की सूखी लकड़ियों में आग पकड़ गई। आंच सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गई। नागरिक अधिकारों, संवैधानिक व्यवस्था, प्रेस की आजादी, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से ले कर सत्ता के मर्यादाविहीन आचरण तक के सभी मामलों में देश में जैसी आग लगी हुई है, उसकी कोई लपट जिस तक नहीं पहुंचती है, उस अदालत को यह लपट अपने-आप कैसे दिखाई दे गई, कहना कठिन है। मणिपुर की लड़कियों को जो नसीब नहीं हुआ, कोलकाता की उस डॉक्टरनी को वह नसीब हुआ-भले आन व जान देने के बाद! सुप्रीम कोर्ट ने आनन-फानन में अपनी अदालत बिठा दी और कड़े शब्दों में अपनी व्यवस्था भी दे दी, एक निगरानी समिति भी बना दी जिसकी निगरानी वह स्वयं करेगी। मैं हैरान हूं कि हमारी न्यायपालिका, जो इसकी निगरानी भी नहीं कर पाती है कि उसके फैसलों का सरकारें कहां-कब और कितना पालन करती हैं, वह डॉक्टरों पर हिंसा की जांच भी करेगी और उसकी निगरानी भी रखेगी, यह कैसे होगा! लेकिन अदालत कब सवाल सुनती है! अगर सुनती तो उसे सुनाई दिया

होता कि सत्ता की शह से जब समाज में व्यापक कानूनहीनता का माहौल बनाया जाता है, तब राजनीतिक ही नहीं, सामाजिक-नैतिक-आर्थिक एनार्की का बोलबाला बनता है। कानूनविहीनता का आलम देश में बने तो यह सीधा न्यायपालिका का मामला है, क्योंकि संविधान के जरिए देश ने यही जिम्मेवारी तो उसे सौंपी है।

न्यायपालिका के होने का यही, और एकमात्र यही औचित्य है। 2014 से अब तक अदालतों को यह दिखाई नहीं दिया तो अंधेरा और किसे कहते हैं? बताते हैं कि कोलकाता के अस्पताल में जब वह अनाचार हुआ तो वहां भी अंधेरा था। कोलकाता की घटना के बाद यौनाचार और यौनिक हिंसा की कितनी ही वारदात की खबरें देश भर से आने लगीं। लगा जैसे कोई बांध टूटा है! पता नहीं, ऐसा कहना भी कितना सही है। आरजी कर अस्पताल में जो अनाचार और अत्याचार हुआ, वह डॉक्टर पर नहीं हुआ, लड़की पर हुआ। वह लड़की डॉक्टर थी और वह जगह अस्पताल थी, यह संयोग है। महाराष्ट्र में जो हुआ वह स्कूल था, और जिनके साथ हुआ वे छोटी बच्चियां थीं। तो जो यौन हिंसा हो रही है, उसके केंद्र में लड़की है जिसका स्थान, जिसकी उम्र, जिसका पेशा आदि अर्थहीन है। तो सवाल वहीं खड़ा है कि लड़की किसे चाहिए? जवाब यह है कि हर किसी को लड़की चाहिएः व्यक्तित्वविहीन लड़की! शरीर चाहिए। वह स्त्री-पुरुष के बीच जो नैसर्गिक आकर्षण है, उस रास्ते मिले कि प्यार नाम की जो सबसे अनजानी-अदृश्य भावना है, उस रास्ते मिले या डरा-धमका कर, छीन-झपट कर, मार-पीट कर मिले। वह मिल जाए, यह हवस है; मिल जाने के बाद हमारे मन में उसकी प्रतिष्ठा नहीं मिलती है। इसलिए घर, जो लड़की के बिना न बनता है, न चलता है, लड़की के लिए सबसे भयानक जगह बन जाता है जहां उसकी हस्ती की मजार मिलती है। हर घर में लड़की होती है लेकिन मिलती किसी घर में नहीं है. इसकी अपवाद लड़कियां भी होंगी लेकिन वे नियम को साबित ही करती हैं। इसलिए समस्या को इस छोर से देखने और समझने की जरूरत है।

अंधी-कुसंस्कृति की नई-नई पराकाष्ठा छूती राजनीति और जाति-धर्म-पौरुष जैसे शक्ति-संतुलन का मामला यदि न हो, तो भी स्त्री के साथ अमानवीय व्यवहार होता है। ऐसी हर अमानवीय घटना हमें बेहद उद्वेलित कर जाती है। दिल्ली के निर्भया-कांड के बाद से हम देख रहे हैं कि ऐसा उद्वेलन बढ़ता जा रहा है। यह शुभ है। लेकिन यह भीड़ का नहीं, मन का उद्वेलन भी बने तो बात बने। स्त्री-पुरुष के बीच का नैसर्गिक आकर्षण और उसमें से पैदा होने वाला प्यार का गहरा और मजबूत भाव हमारे अस्तित्व का आधार है। वह बहुत पवित्र है, बहुत कोमल है, बहुत सर्जक है। लेकिन इसके उन्माद में बदल जाने का खतरा हमेशा बना रहता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज को तब तक ही ठेंगे पर रखता है जब तक उसे विश्वास होता है कि वह समाज को हांक ले जाएगा।

यह हमारी खुद से लड़ाई है। लड़का डराएगा नहीं, लड़की लुभाएगी नहीं, तभी दोनों एक-दूसरे के प्रति सहज-स्वस्थ-सुंदर रिश्ता बना और निभा पाएंगे। फिर बच जाएंगी दुर्घटनाएं जिन्हें संभालने-सुधारने-स्वस्थ बनाने का काम घर-समाज-कानून मिल कर करेंगे। ऐसा कुछ बोध समाज को हुआ तो कोलकाता के उस अस्पताल की वह डॉक्टर सच में हम सबकी डॉक्टर बन जाएगी।

(लेख में व्यक्त विचार निजी हैं)

अंधी-कुसंस्कृति की नई-नई पराकाष्ठा छूती राजनीति और जाति-धर्म-पौरुष जैसे शक्ति-संतुलन का मामला यदि न हो, तो भी स्त्री के साथ अमानवीय व्यवहार होता है। ऐसी हर अमानवीय घटना बेहद उद्वेलित कर जाती है। निर्भया-कांड के बाद से देख रहे हैं कि ऐसा उद्वेलन बढ़ता जा रहा है लेकिन यह भीड़ का नहीं, मन का उद्वेलन भी बने तो बात बने। महिला-पुरुष प्यार पवित्र है लेकिन इसके उन्माद में बदल जाने का खतरा हमेशा बना रहता है

खुद को कमजोर समझने की बीमारी

- **बॉडी डिस्मॉर्फिया (बीडीडी) एक ऐसी मानसिक विकृति है, जिसमें स्वस्थ व्यक्ति को भी लगता है कि वह फिट नहीं है**
- **बीडीडी पीड़ित व्यक्ति उन शारीरिक कमियों को लेकर चिंतित रहता है, जो उसमें होती ही नहीं। जरूरत से ज्यादा सप्लीमेंट्स लेता है, और हैवी वेट एक्सरसाइज करता है**
- **कई लोग तो इतने तनाव में रहते हैं कि कॉस्मेटिक सर्जरी के ऑप्शन तक पहुंच जाते हैं। इंटरनेशनल ओसीडी फाउंडेशन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया भर में तकरीबन 12 फीसद पुरुष मसल्स डिस्मॉर्फिया के शिकार हैं**

(स्रोत : मीडिया इनपुट्स)

सीताराम येचुरी चले गए। राज्य सभा में दाखिल अपने आखिरी हलफनामे के मुताबिक उनके खाते में दस हजार रुपये थे। कर्पूरी ठाकुर ने जब दुनिया को अलविदा कहा तो 52 से लगातार विधायक रहने के बाद भी उनका न कोई घर था न कोई जमीन। लालबहादुर शास्त्री की मौत के बाद पता लगा कि उनके खाते में 365 रुपये थे। कुछ नेता ऐसे भी होते हैं!

सुकेश रंजन, पत्रकार
@RanjanSukesh

जल संकट | विनीत नारायण

एक बार फिर वही रोना

देश के ज्यादातर हिस्से में भारी वर्षा ने हालात बेकाबू कर दिए हैं। कई बांधों में जल का स्तर खतरे के निशान से भी ऊपर चला गया है। यह पानी अगर छूट कर निकल पड़ा तो दूर-दूर तक तबाही मचा देगा। नदियों के बहाव में पुल बहे जा रहे हैं जिनमें आए दिन जान-माल की हानि हो रही है। अनेक प्रदेशों के बड़े शहरों की पॉश बस्तियों में कमर तक पानी भर रहा है। गरीब बस्तियों की तो क्या कही जाए?

देश की राजधानी दिल्ली का ही इतना बुरा हाल है कि यहां जल से भरे नालों और बिना ढक्कन के मैनहोलों में कितनी ही जान जा चुकी हैं। बेकाबू जल का भराव, बिजली के खंबों को अपनी लपेट में ले रहा है, जिनमें फैला करंट जानलेवा सिद्ध हो रहा है। नगर पालिका-महापालिकाएं सब अतिवृष्टि के सामने बेबस हैं। इसके अपने अलग कई कारण हैं। पहले तो इंजीनियरिंग डिजाइन में ही गड़बड़ी होती है। दूसरा, जल के प्रवाह को और धरती के ढलान का निर्माण करते समय गंभीरता से नहीं लिया जाता। तीसरा, जल बहने के मार्ग कचड़े से पटे होने के कारण वाटर-लॉगिंग पैदा करते हैं। ये सब 'विकास' अगर सोच-विचार कर किया जाता तो ऐसे हालात पर काबू पाया जा सकता था पर जब उद्देश्य समस्या का हल न निकालना हो कर बल्कि अपनी हित साधना हो तो विकास के नाम पर ऐसा ही विनाश होगा। अपने इसी कॉलम में शहरों में जल भराव की समस्या के एक महत्त्वपूर्ण कारण को पिछले दो दशकों में मैं कई बार रेखांकित कर चुका हूं। समस्या यह है कि हर शहर में सड़कों की मरम्मत या पुनर्निर्माण का कार्य केवल विभाग और ठेकेदार के मुनाफा बढ़ाने के उद्देश्य से किए जाते हैं, जनता की समस्या का हल निकालने के लिए नहीं। हर बार पुरानी सड़क पर नया रोड़ा-पत्थर डाल कर उसे उसके पिछले स्तर से 8-10 इंच ऊंचा कर दिया जाता है, और यह क्रम पिछले कई दशकों से चल रहा है जिसका परिणाम यह हुआ है कि आज अच्छी-अच्छी कॉलोनियों की सड़कें, उन सड़कों के दोनों ओर बने भवनों से करीब एक-एक मीटर ऊंची हो गई हैं। नतीजतन, हल्की सी बारिश में ही

इन घरों की स्थित नारकीय हो जाती है क्योंकि वर्षा का जल घरों में जमा हो जाता है।

भगवान श्री कृष्ण की नगरी मथुरा हो या महाकाल की नगरी उज्जैन, आप इस समस्या का साक्षात प्रमाण देख सकते हैं। मैंने दुनिया के कई दर्जन देशों की यात्रा की है। पर ऐसा भयावह दृश्य कहीं नहीं देखा जहां हर कुछ सालों में लोगों के घर के सामने की सड़क ऊंची होती जाती है। आजादी मिलने से आज तक हम वर्षा के जल का संचय तक नहीं कर पाए। हमारे देश में वर्ष भर में बरसने वाले जल का कुल 8 फीसद का ही संचयन हो पाता है। बाकी 92 फीसद वर्षा का शुद्ध जल बह कर समुद्र में मिल जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि गर्मी की शुरुआत होते ही देश में जल संकट शुरू हो जाता है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है, वैसे-वैसे यह संकट और भी गहरा हो जाता है। राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र जैसे अनेक प्रांतों में तमाम शहर हैं, जो अपनी आबादी की जल की मांग की आपूर्ति नहीं कर पा रहे। आज देश में जल संकट इतना भयावह हो चुका है कि एक ओर तो देश के अनेक शहरों में सूखा पड़ता है तो दूसरी ओर कई शहर हर साल बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं। वहीं चेन्नई जैसा शहर भी है, जहां भूजल पूरी तरह से समाप्त हो चुका है। जहां कभी चेन्नई में 200 फुट नीचे पानी मिल जाता था आज वहां भूजल 2000 फुट पर भी पानी नहीं है।

यह चेतावनी है भारत के बाकी शहरों के लिए कि अगर समय से नहीं जागे तो आने वाले समय में ऐसी दुर्दशा और शहरों की भी हो सकती है। एक समय वो भी था जब चेन्नई में खूब पानी हुआ करता था। मगर जिस तरह वहां शहरीकरण हुआ उसने जल प्रबंधन को अस्त-व्यस्त कर दिया। अब चेन्नई में हर जगह सीमेंट की सड़क बन गई है। कही भी खाली जगह नहीं बची, जिसके माध्यम से पानी धरती में जा सके। बारिश का पानी भी सड़क और नाली से बह कर चला जाता है कहीं भी खाली जगह नहीं है, जिससे धरती में पानी जा सके। इसलिए प्रशासन ने आम लोगों से आग्रह किया है कि वे अपने घरों के नीचे तलघर में बारिश का जल जमा करने का प्रयास करें। ताकि कुछ महीनों तक उस पानी का उपयोग हो सके। चेन्नई जैसे 22 महानगरों में भूजल पूरी तरह समाप्त हो गया है। जहां अब टैंकरों, रेलगाड़ियों और पाइपों से दूर-दूर से पानी लाना पड़ता है। अगर देश और प्रांतों के नीति निर्धारक और हम सब नागरिक केवल वर्षा के जल का सही प्रबंधन करना शुरू कर दें तो भारत सुजलाम-सुफलाम देश बन जाएगा, जो ये कभी था। 'पानी बीच मीन प्यासी, मोहे सुन-सुन आवे हांसी।'

(लेखक के निजी विचार हैं)

पात्रता | श्रीराम शर्मा आचार्य

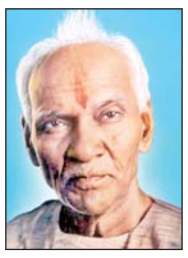

पात्रता के अभाव में सांसारिक जीवन में किसी को शायद ही कुछ विशेष उपलब्ध हो पाता है। अपना सगा होते हुए भी एक पिता मूर्ख गैर-जिम्मेदार पुत्र को अपनी विपुल संपत्ति नहीं सौंपता। कोई भी व्यक्ति निर्धारित कसौटियों पर खरा उतर कर ही विशिष्ट स्तर की सफलता अर्जित कर सकता है। मात्र मांगते रहने से कुछ नहीं मिलता, हर उपलब्धि के लिए उसका मूल्य चुकाना पड़ता है। अध्यात्म क्षेत्र में भी यही सिद्धांत लागू होता है। भौतिक क्षेत्र की तुलना में अध्यात्म के प्रतिफल कई गुना अधिक महत्त्वपूर्ण, सामर्थ्यवान और चमत्कारी हैं। किन्हीं-किन्हीं महापुरुषों को देख एवं सुन कर हर व्यक्ति के मुंह में पानी भर आता है तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए मन ललचाता है, पर अभीष्ट स्तर का आध्यात्मिक पुरुषार्थ न कर पाने के कारण उस ललक की आपूर्ति नहीं हो पाती। पात्रता के अभाव में अधिकांश को दिव्य आध्यात्मिक विभूतियों से वंचित रह जाना पड़ता है। पात्रता विकसित हो जाने पर बिना मांगे ही वे साधक पर बरसती हैं। दैवी शक्तियां परीक्षा तो लेती हैं, पर पात्रता की कसौटी पर खरा सिद्ध होने वालों को मुक्तहस्त से अनुदान भी देती हैं। सच है कि अध्यात्म का, साधना का चरम लक्ष्य सिद्धियां-चमत्कारों की प्राप्ति नहीं है, पर जिस प्रकार अध्यवसाय में लगे छात्र को डिग्री की उपलब्धि के साथ-साथ बुद्धि की प्रखरता का अतिरिक्त अनुदान सहज ही मिलता रहता है, उसी तरह आत्मोत्कर्ष की प्रचंड साधना में लगे साधकों को उन विभूतियों का भी अतिरिक्त अनुदान मिलता रहता है, जिसे लोक-व्यवहार की भाषा में सिद्धि एवं चमत्कार के रूप में जाना जाता है। पर चमत्कारी होते हुए भी ये प्रकाश की छाया जैसी ही हैं। प्रकाश की ओर चलने पर छाया पीछे-पीछे अनुगमन करती है। अंधकार की दिशा में बढ़ने पर छाया आगे आ जाती है, उसे पकड़ने का प्रयत्न करने पर भी वे पकड़ में नहीं आतीं। इसी प्रकार अर्थात् दिव्यता की ओर-श्रेष्ठता की ओर परमात्म पथ की ओर बढ़ने पर छाया अर्थात् ऋद्धि-सिद्धियां साधक के पीछे-पीछे चलने लगती हैं। इसके विपरीत उन्हीं की प्राप्ति को लक्ष्य बना कर चलने पर तो आत्म-विकास की साधना से वंचित बने रहने से वे पकड़ में नहीं आतीं। दिव्यता की ओर बढ़ने का अर्थ है- अपने गुण, कर्म, स्वभाव को इतना परिष्कृत, परिमार्जित कर लेना कि आचरण में देवत्व प्रकट होने लगे।

रीडर्स मेल

मतांतरण का कुचक्र

देश में ईसाई मिशनरियों और इस्लाम को मानने वालों ने मतांतरण का भारी कुचक्र चला रखा है। आदिवासी भोले और गरीब हिन्दू परिवारों का मतांतरण करके उन्हें ईसाई बनाया जा रहा है, या मुसलमान। कांग्रेस नेता राहुल गांधी अक्सर जातिगत जनगणना का मुद्दा उठाते रहते हैं। होना तो यह चाहिए कि यदि हिन्दुओं की जातिगत जनगणना हो, तो फिर मुसलमानों की भी जातिगत जनगणना की जाए। ईसाइयों की संख्या के बारे में भी स्पष्ट आंकड़ा जुटाया जाए कि इनकी संख्या स्वतंत्रता के समय कितनी थी और मतांतरण के कुचक्र के बाद इनकी आबादी कितनी बढ़ गई है। जातिगत जनगणना होनी ही है तो सब कुछ साफ-साफ हो जाए। जनगणना कर हिन्दुओं को ही क्यों बांटा जाए।

अंकित सोनी 'आदित्य', धार, मप्र

सनातन को कोसना ठीक नहीं

देश में जो नेता सनातन या हिन्दू को जितनी अधिक गालियां देगा वो उतना ही सेक्युलर कहलाएगा। सनातन को कोरोना से लेकर पाखंड और माफिया तक कह कर स्वयं की पीठ थपथपाने वालों में प्रतिस्पर्धा लगी है। हाल में स्वयं को भगवान कृष्ण का वंशज बताने वाले सपा मुखिया अखिलेश यादव कह रहे हैं कि मठाधीश और माफिया एक समान हैं। वोट के लिए कोई अपने को इतना गिरा देगा कि अपने ही धर्म, संस्कृति, परंपराओं और आदर्श पुरुषों को गाली देने लगेगा, ऐसी कल्पना नहीं थी। अखिलेश बताने का कष्ट करेंगे क्या कि जिन मदरसों में देश-विरोधी गतिविधियों के साथ नकली नोट छापने और देश तथा हिन्दू-विरोधी साहित्य पकड़ा गया हो, एक भी शब्द उनके विरुद्ध मुंह से क्यों नहीं निकला। और जिन मठों से स्वतंत्रता संग्राम में बलिदानियों की टोलियां निकली थीं, अखिलेश उन्हें माफिया के अड्डे बता कर अपना मानसिक दिवालियापन उजागर कर रहे हैं। सच तो यह है कि ये कथित सेक्युलर नेता वोटों के लिए एक दिन अपने घर की इज्जत भी दांव पर लगा देंगे, इसमें कोई संदेह नहीं।

डॉ. नरेन्द्र टोंक, मेरठ

जातिगत भेदभाव ही है समस्या

प्रारंभ से ही बाबा साहेब को मैंने अपना आदर्श माना है। परंतु इसके साथ ही एक प्रश्न हमेशा मेरे मन में बना रहा कि दलितों की सामाजिक स्थिति को सुधारने की आजीवन पुरजोर कोशिश करने के बावजूद बाबा साहेब ने अंततः बौद्ध धर्म क्यों अपना लिया? क्या बाबा साहेब हार चुके थे? और यदि यह सत्य है तो उन्होंने आजीवन संघर्षरत होने के बाद पराजय क्यों स्वीकार की? यह प्रश्न हमेशा मेरे मन में बना रहा परंतु आज इतने वर्ष पश्चात जब दुनिया इतनी आधुनिक हो चुकी है, तब भी जब मैं कुलीन और दलित वर्गों को सामाजिक बहिष्कार का सामना करते हुए देखती हूं, तब समझ में आता है कि बाबा साहेब ने किस मनोस्थिति में इतने संघर्ष के पश्चात अपना धर्म क्यों बदल लिया। हम सब ने कभी न कभी कहीं न कहीं एक बात अवश्य सुनी है कि भगवान ने हमें पशु न बना कर मनुष्य बनाया जिससे हममें सोचने-समझने की क्षमता है परंतु हम मनुष्य होकर भी आज पशुओं से भी पराजित हैं, क्योंकि कम से कम उनमें जाति, धर्म, उच्च, नीच, अमीर, गरीब, भाषा आदि का भेद तो नहीं है। यदि इंसानों ने पशुओं से इतनी भी सीख ली होती तो न केवल भारत की अपितु पूरी दुनिया की 90% समस्या कभी उत्पन्न ही न हुई होतीं।

गरिमा, ई मेल से

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा • राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **जिया कादरी** द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। । **समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र*** ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, **फैक्स** - 23352370, **दूरभाष - नोएडा प्रेस** 0120-2444755, 2444756 **फैक्स** - 2550750
वर्ष-34, अंक 33
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

सिस्टम से हारती जिंदगी

देशभर में हो रही बारिश से जनित हादसों में लोगों की मौतों की खबरें लगातार आ रही हैं। वर्षा के चलते शहर तालाब में तब्दील हो रहे हैं। राजधानी दिल्ली हो या उसके आसपास के शहर। औद्योगिक शहर फरीदाबाद हो, गुरुग्राम हो या फिर गाजियाबाद हो या नोएडा जलभराव की समस्या से लोगों को जूझना पड़ता है। शहरों में अंडरपास स्वीमिंग पूल बन जाते हैं। हल्की सी बारिश से ही दो-तीन फीट पानी तो आम है। बिना प्लानिंग के विकास लोगों के लिए अभिशाप बन चुका है। विडम्बना यह है कि लोगों को न तो चलने के लिए दुरुस्त सड़कें मिल रही हैं और न ही जल निकासी की बेहतर व्यवस्था है। ड्रेनेज सिस्टम विफल हो जाने से शहर जलमग्न हो रहे हैं। स्थानीय निकाय वर्षा पूर्व तैयारी को लेकर मैन पावर, मशीनरी पावर और मनी पावर का इस्तेमाल करता है। करोड़ों रुपए हर साल खर्च किए जाते हैं लेकिन कोई जवाबदेही नहीं है। हम स्मार्ट सिटी की बात करते हैं, तेज रफ्तार बुलेट ट्रेनों की परियोजनाएं तैयार करते हैं। बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल महानगरों की संस्कृति का एहसास कराते नजर आते हैं।

साल दर साल जब बारिश से सड़कें जलमग्न होती हैं और लोगों के घरों में पानी और मलबा घुस जाता है या जब किसी की जिंदगी डूबती है तब प्लान पर चर्चा जरूर होती है। राजनीतिक दलों की जुबां पर समाधान कम और राजनीति के शब्दबाण अधिक होते हैं। हरियाणा में ओल्ड फरीदाबाद के अंडरपास में एसयूवी कार डूबने से दो बैंक कर्मियों की दुखद मौत बहुत सारे सवाल खड़े करती है। मौत के अंडरपास में 10 से 12 फीट पानी भरा हुआ था। गुरुग्राम के एक बैंक में मैनेजर पुण्य श्रेय शर्मा और कैशियर विराज द्विवेदी दोनों एक ही गाड़ी में आ रहे थे। अंडरपास में कार डूबने पर उन्होंने बाहर निकलने के लिए बहुत हाथ-पांव मारे लेकिन पानी ज्यादा होने की वजह से वह निकल ही नहीं पाए और कार के दरवाजे भी लॉक हो गए। इस अनहोनी के लिए आखिर किसे दोषी माना जाए। लोगों का कहना है कि अगर पुलिस ने अंडरपास पर बैरिकेट लगाई होती तो शायद वो लोग कार को रेलवे के अंडरब्रिज से ले जाने की कोशिश नहीं करते जबकि पुलिस का कहना है कि ब्रिज के पास पुलिस की बैरिकेटिंग और सावधानी से आगे जाने से मना किया था लेकिन उन्होंने कार नहीं रोकी। पिछले तीन दिनों में फरीदाबाद में भारी बारिश हुई जिससे कई इलाके आभासी नदियों में बदल चुके हैं। यह दुखद घटना अंधेरे और गंभीर जलभराव के कारण घटी जिन पर मृतकों का ध्यान नहीं गया। महानगरों में ऐसे हादसे पहले भी हो चुके हैं।

> **साल दर साल जब बारिश से सड़कें जलमग्न होती हैं और लोगों के घरों में पानी और मलबा घुस जाता है या जब किसी की जिंदगी डूबती है तब प्लान पर चर्चा जरूर होती है। राजनीतिक दलों की जुबां पर समाधान कम और राजनीति के शब्दबाण अधिक होते हैं। हरियाणा में ओल्ड फरीदाबाद के अंडरपास में एसयूवी कार डूबने से दो बैंक कर्मियों की दुखद मौत बहुत सारे सवाल खड़े करती है। मौत के अंडरपास में 10 से 12 फीट पानी भरा हुआ था। गुरुग्राम के एक बैंक में मैनेजर पुण्य श्रेय शर्मा और कैशियर विराज द्विवेदी दोनों एक ही गाड़ी में आ रहे थे। अंडरपास में कार डूबने पर उन्होंने बाहर निकलने के लिए बहुत हाथ-पांव मारे लेकिन पानी ज्यादा होने की वजह से वह निकल ही नहीं पाए और कार के दरवाजे भी लॉक हो गए।**

बारिश पूरे जिम्मेदार सिस्टम को आइना दिखा रही है। हैरानी की बात तो यह है कि दो लोगों की मौत के बाद भी अंडरब्रिज से अभी तक पूरी तरह से पानी नहीं निकाला जा सका। यह हादसा मृतकों की लापरवाही का परिणाम माना जा सकता है लेकिन दूसरा पहलू यह भी है कि लोगों की जिंदगियां सिस्टम से हार रही हैं। शहरों में जल निकासी के रास्तों पर अवैध कब्जे मुसीबत बन चुके हैं। शहरों के नाले-नाली से लेकर पुल-पुलिया के आसपास जल निकलने के रास्तों पर कब्जा हो चुका है। शहरों की आबादी लगातार बढ़ रही है और बुनियादी ढांचा दम तोड़ने लगा है। हाल ही में दिल्ली के ओल्ड राजेन्द्र नगर में एक कोचिंग सेंटर की बेसमेंट में बनी लाइब्रेरी में पानी भरने से तीन छात्रों की मौत के बाद काफी बवाल मचा था। जिन घरों के चिराग बुझ गए उनका गुनहगार कौन है। अभी तक जांच ही चल रही है।

देश के अधिकतर महानगर दिल्ली, कोलकाता, चैन्नई, मुंबई, पटना, लखनऊ, प्रयागराज, बनारस, बेंगलुरु, इंदौर, भोपाल, हैदराबाद, रायपुर, जयुपर, अमृतसर, लुधियाना आदि महानगरों व शहरों में जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं है। मुंबई में मीठी नदी के उथले होने और 50 साल पुरानी सीवर व्यवस्था के जर्जर होने के कारण बाढ़ के हालात अब आम बात बन चुकी है। बेंगलुरु में पुराने तालाबों के मूल स्वरूप में अवांछित छेड़छाड़ को बाढ़ का कारण माना जाता है। शहरों में बाढ़ रोकने के लिए सबसे पहला काम तो वहां के पारंपरिक जल स्रोतों में पानी की आवक और निकासी के पुराने रास्तों में बन गए स्थाई निर्माण को हटाने का करना होगा। महानगरों में भूमिगत सीवर जलभराव का सबसे बड़ा कारण हैं। यूपी के अधिकतर शहरों में तालाबों पर अवैध कब्जे हो चुके हैं। शासन-प्रशासन के प्रयास के बावजूद अवैध निर्माण और कब्जे रुक नहीं रहे हैं। इसी के चलते यूपी के अधिकतर शहरों में बरसात के दिनों में घुटनों तक पानी भर जाना आम बात है।

शहरों में अनियंत्रित और अनियोजित विकास ने जलभराव की समस्या को जन्म दिया है। वहीं हमने अतिक्रमण करके नदियों का प्रवाह संकरा कर दिया है। रही-सही कसर गाद के जमा होने से उसकी कम होती गहराई पूरा कर दे रही है। पहले नदियों के कैचमेंट में बारिश के पानी को रोकने के स्रोत हुआ करते थे- तालाब, पोखर, झील। अनियोजित विकास ने तालाब और पोखरों को गायब कर दिया है। लिहाजा बारिश का पानी अब रास्ता बनाता हुआ बरसात के तुरन्त बाद नदियों में जा मिलता है। जो उन्हें उफनने पर विवश करता है। पहले भी यह पानी नदियों तक पहुंचता था लेकिन वह नियंत्रित होता था। उसे सालभर हम सिंचाई से लेकर तमाम जरूरतों में इस्तेमाल करते थे, भू जल रिचार्ज होता रहता था जो बचता था वह नदियों में जाता था। लिहाजा सामान्य बारिश होने पर नदियां असामान्य रूप नहीं दिखा पाती थीं। सिस्टम तो लगातार विफल होता जा रहा है। शहरों को डूबने के लिए भले ही हम उसे दोष दें या प्रकृति को परन्तु इसके लिए हम सब गुनहगार हैं। विकास के लिए बेहतरीन डिजाइन भी होने चाहिए। अगर नियोजित विकास नहीं हुआ तो शहर रहने लायक नहीं रहेंगे।

आदित्य नारायण चोपड़ा
Adityachopra@punjabkesari.com

कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ का...

गीता पाढा

16 सितंबर का दिन हमें यह बात याद दिलाता है,
कि ''विश्व ओजोन दिवस'' बढ़ते जलवायु परिवर्तन-
पर अंतर्राष्ट्रीय प्रकाश चाहता है,
पर्यावरण से किया खिलवाड़ समस्त मानवता पर खतरा बन मंडराता है,
कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ का भयावह मंजर ले आता है !

चुनाव-प्रबंधन : कितना महंगा हो चला है लोकतंत्र

डा. चन्द्र त्रिखा
chandertrikha@gmail.com

वैसे यह भी अविश्वसनीय लगता है। पार्टी टिकट के लिए करोड़ों का खर्च प्रति उम्मीदवार। शक्ति प्रदर्शन की पहली रैली व जुलूस पर खर्च 50 से 60 लाख (इसमें वाहनों का खर्च, प्रचार सामग्री, बैनर, झंडे, माइक व एक सीमा तक मीडिया-प्रबंधन शामिल)। नामांकन-पत्र दाखिल करने के बाद पांच से सात तक बड़ी रैलियां- कुल खर्च प्रति रैली 50 लाख से एक करोड़ रुपए। उसके बाद घर-घर संपर्क और कुछ बस्तियों में दारू-सेवा एवं दक्षिणा, इसकी कोई सीमा नहीं। कुल मिलाकर हर गंभीर उम्मीदवार 8 से 10 करोड़ रुपए का बजट लेकर चलता है।

सिलसिला यहीं थम नहीं जाता। जो भी जीतेगा, उसे विजयोत्सव के लिए भी धन खर्च करना होगा। इस सारे तामझाम भी वेब-दुनिया एवं 'कम्प्यूटर वार-रूम' का खर्च अलग से करना होता है। 'वार-रूम' में सिर्फ प्रत्याशी की उपलब्धियों, योग्यताओं के विवरण नहीं होते। विरोधी पक्ष के खिलाफ अंधाधुंध आरोपों की बारिश के लिए 'कंटेंट-राइटर' भी रखे जाते हैं। हर प्रत्याशी के पास इतना नगद धन नहीं होता। इस 'यज्ञ' में कुछ सम्पन्न समर्थक, यार दोस्त और संबंधी भी आहुति डालते हैं। 'सोशल मीडिया' पर प्रदूषण फैलाने के लिए अलग प्रकोष्ठ बनता है।

अब ऐसा तो नहीं होता कि विजयी प्रत्याशी ऐसे चुनाव के बाद सारे माहौल से विरक्ति या वितृष्णा का शिकार हो जाता है। ज़ाहिर है घाटा पूर्ति पर पहली नजर होती है और फिर नौकरियों, टेंडरों पर नज़रें गढ़ाए समर्थकों व 'प्रियजनों', परिजनों की बारी आती है।

पुरानी बातों, आदर्श परम्पराओं और आदर्शवादी नेताओं के किस्से दोहराने से कोई लाभ नहीं। बेहतर यही है कि शास्त्री जी, कामराज, देसाई, कृपालानी, राजनारायण, लोहिया आदि के किस्सों के उदाहरण टेप-बद्ध या लिपिबद्ध या फिर 'सिने-वीडियो' के रूप में एक संग्रहालय में रख दिए जाएं और बाहर एक शिलालेख लग जाए 'अविश्वसनीय, अकल्पनीय मगर सत्य। कभी कभार स्कूली बच्चों व विदेशी पर्यटकों को इधर लाया जाए और उन्हें ये किस्से कहानियां नि:शुल्क उपहारों सहित बांटी जाएं।

देश का पहला चुनाव 1951-52 में हुआ था। यह प्रक्रिया 25 अक्तूबर, 1951 से 21 फरवरी, 1952 तक चली थी। उस समय लोकसभा की 489 सीटें होती थीं। उस पहले चुनाव में कांग्रेस को 364, सीपीआई (तब इसमें माकपा भी शामिल थी) को 16 व जेपी-लोहिया के समाजवादी दल को 12 स्थान मिले। तब भी कुछ विलक्षण घटनाएं घटीं थीं।

- भारतीय संविधान के निर्माता युगपुरुष एवं दलित नेता बाबा साहब अम्बेडकर भी चुनाव हार गए थे। तब उनके विरुद्ध कांग्रेस पार्टी ने अपना प्रत्याशी खड़ा किया था।

अम्बेडकर के विरुद्ध कांग्रेस ने फहराया था जीत का परचम। इससे पहले आम चुनाव के लिए मतदान का काम फरवरी 1952 के आखिरी सप्ताह में खत्म हो गया। जब मतगणना हुई तो कांग्रेस आसानी से जीत गई। कांग्रेस पार्टी को संसद में 489 में से 364 सीटों पर और पूरे देश में 3280 विधानसभा सीटों में से 2247 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। पूरे संसदीय चुनाव में कांग्रेस को कुल मतदाताओं का 45 फीसदी वोट हासिल हुआ था और इसने 74.4 फीसदी सीटों पर जीत दर्ज की थी। जबकि राज्य विधानसभाओं के लिए हुए चुनाव में इसे कुल मतों का 42.4 फीसदी हासिल हुआ था। इसने 68.6 फीसदी सीटों पर कब्जा जमाया था। लेकिन इस माहौल में भी कांग्रेस के 28 मंत्री चुनाव में हार गए थे।

लेकिन इस चुनाव में सबसे हैरानी वाला परिणाम डॉ. भीमराव अंबेडकर की हार रही थी। उनकी पहचान देश भर में अनुसूचित जातियों के कद्दावर नेता के तौर पर थी। लेकिन बंबई में उनके निर्वाचन क्षेत्र में कांग्रेस ने तब अंबेडकर के सामने उनके पीए नारायण एस काजरोलकर को खड़ा किया था। वह भी बैकवर्ड क्लास से थे। इसके अलावा कम्युनिस्ट पार्टी और हिंदू महासभा से भी एक-एक प्रत्याशी था। नारायण काजरोलकर दूध का कारोबार करने वाले एक नौसिखिए नेता थे। लेकिन नेहरू की लहर इतनी तेज़ थी कि नारायण काजरोलकर 15 हजार वोटों से जीते थे। अंबेडकर चौथे स्थान पर रहे थे।

आखिर में कांग्रेस की पकड़ काजरोलकर के पक्ष में काम कर गई। इसके अलावा नेहरू ने बंबई में जो भाषण दिए थे वो भी काजरोलकर के पक्ष में रहे। अंबेडकर आज़ादी के आंदोलन में सबसे प्रमुख शख्सियतों में से थे। देश में उनके जैसा पढ़ा-लिखा उस समय शायद ही कोई था। अर्थशास्त्र से दो डॉक्टरेट की डिग्रियां। एक अमेरिका की कोलंबिया यूनिवर्सिटी से, दूसरी लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से। अंबेडकर की योग्यता को देखते हुए उन्हें संविधान की 'ड्राफ्टिंग कमेटी का अध्यक्ष भी बनाया गया था। हिंदू महासभा (अब बीजेपी) का दावा था कि नेहरू ने अंबेडकर को राजनीति की मुख्य धारा में नहीं आने दिया। उनकी हार सुनिश्चित करने के लिए खुद नेहरू ने चुनाव प्रचार भी किया। सन् 1954 में भी नेहरू ने ही दूसरी बार पक्का किया कि वह भंडारा से उपचुनाव में न जीतने पाएं। डॉ. अंबेडकर का 1956 में निधन हो गया था।

सबसे बड़ी जीत रही कम्युनिस्ट नेता की

लेकिन उस चुनाव में एक और चौंकाने वाली बात यह थी कि कम्युनिस्ट नेता रवि नारायण रेड्डी, जिन्होंने चुनावों में व्हिस्की का पहला जाम पिया था और फिर भी सबसे बड़ी जीत हासिल की थी। उनकी जीत का अंतर जवाहर लाल नेहरू की जीत के अंतर से भी ज्यादा था।

नेहरू का प्रथम चुनाव भी कम नहीं था। तब हर क्षेत्र से दो-दो प्रत्याशी चुने जाते थे। एक सामान्य वर्ग से और दूसरा अनुसूचित वर्ग से। नेहरू के साथ ही कांग्रेस के मसूरियादीन भी निर्वाचित हुए थे। तब संघ-परिवार के समर्थन से प्रभुदत्त ब्रह्मचारी उनके विरुद्ध लड़े थे। मगर वह तीसरे स्थान पर रहे थे। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने गोरक्षा और हिन्दू कोड बिल के मुद्दे उठाए थे। आचार्य कृपालानी के प्रत्याशी के रूप में श्री बंसीलाल थे। (हरियाणा वाले नहीं) वह दूसरे स्थान पर रहे थे। इस तरह अनेक विसंगतियों के मध्य पहला चुनाव सम्पन्न हुआ था।

जल संकट : एक बार फिर वही रोना

विनीत नारायण
www.vineetnarain.net

देश के ज़्यादातर हिस्से में भारी वर्षा ने हालात बेक़ाबू कर दिये हैं और समाधान दिखाई नहीं देता। कई बांधों में जल का स्तर खतरे के निशान से भी ऊपर चला गया है। ये पानी अगर छूट कर निकल पड़ा तो दूर-दूर तक तबाही मचा देगा। नदियों के बहाव में पुल बहे जा रहे हैं। जिनमें आए दिन जान-माल की हानि हो रही है। अनेक प्रदेशों के बड़े शहरों की पॉश बस्तियों में कमर तक पानी भर रहा है। गरीब बस्तियों की तो क्या कही जाए? वे तो हर आपदा की मार सहने को अभिशप्त हैं। देश की राजधानी दिल्ली का ही इतना बुरा हाल है कि यहां जल से भरे नालों और बिना ढक्कन के मैनहोलों में कितनी ही जानें जा चुकी हैं। अनियंत्रित जल का भराव, बिजली के खम्बों को अपनी लपेट में ले रहा है, जिनमें फैला करंट जानलेवा सिद्ध हो रहा है। नगरपालिका हो या महापालिकाएं हों इस अतिवृष्टि के सामने बेबस खड़ी हैं। इसके अपने अलग कई कारण हैं।

पहले तो इंजीनियरिंग डिजाइन में ही गड़बड़ी होती है। दूसरा, जल के प्रवाह को और धरती के ढलान को निर्माण करते समय गंभीरता से नहीं लिया जाता। तीसरा, जल बहने के मार्ग कचड़े से पटे होने के कारण वाटर-लॉगिंग को पैदा करते हैं। ये सब 'विकास' अगर सोच-विचार कर किया जाता तो ऐसे हालात पर क़ाबू पाया जा सकता था। पर जब उद्देश्य समस्या का हल न निकालना हो कर बल्कि अपना हित साधना हो तो विकास के नाम पर ऐसा ही विनाश होगा।

इस संदर्भ में, अपने इसी कॉलम में, शहरों में जल भराव की समस्या के एक महत्वपूर्ण कारण को पिछले दो दशकों में मैं कई बार रेखांकित कर चुका हूं। पर केंद्र और प्रांतों के शहरी विकास मंत्रालय, इस पर कोई ध्यान नहीं देते। समस्या यह है कि हर शहर में सड़कों की मरम्मत या पुनर्निर्माण का कार्य केवल विभाग और ठेकेदार के मुनाफ़ा बढ़ाने के उद्देश्य से किए जाते हैं, जनता की समस्या का हल निकालने के लिए नहीं। हर बार पुरानी सड़क पर नया रोड़ा-पत्थर डाल कर उसे उसके पिछले स्तर से 8-10 इंच ऊंचा कर दिया जाता है और यह क्रम पिछले कई दशकों से चल रहा है। जिसका परिणाम यह हुआ है कि आज अच्छी-अच्छी कॉलोनियों की सड़कें, उन सड़कों के दोनों ओर बने भवनों से क़रीब एक-एक मीटर ऊंची हो गई हैं। नतीजतन, हल्की सी बारिश में ही इन घरों की स्थित नारकीय हो जाती है। क्योंकि सड़क पर गिरने वाला वर्षा का जल, इन घरों में जमा हो जाता है। भगवान श्री कृष्ण की नगरी मथुरा हो या महाकाल की नगरी उज्जैन, आप इस समस्या का साक्षात प्रमाण देख सकते हैं। जबकि होना यह चाहिए कि हर बार सड़क की मरम्मत या पुनर्निर्माण से पहले उसे खोद कर उसके मूल स्तर पर ही बनाया जाए। मैंने दुनिया के कई दर्जन देशों की यात्रा की है। पर ऐसा भयावह दृश्य कहीं नहीं देखा जहां हर कुछ सालों में लोगों के घर के सामने की सड़क ऊंची होती जाती है।

आज़ादी मिलने से आज तक खरबों रुपया जल प्रबंधन के नाम पर ख़र्च हो गया पर वर्षा के जल का संचय हम आज तक नहीं कर पाए। हमारे देश में वर्ष भर में बरसने वाले जल का कुल 8 फीसद का ही संचयन हो पाता है। बाक़ी 92 फीसद वर्षा का शुद्ध जल बह कर समुद्र में मिल जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि गर्मी की शुरुआत होते ही देश में जल संकट शुरू हो जाता है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है, वैसे-वैसे यह संकट और भी गहरा हो जाता है।

राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र जैसे अनेक प्रांतों में तमाम शहर हैं जो अपनी आबादी की जल की मांग की आपूर्ति नहीं कर पा रहे। आज देश में जल संकट इतना भयावह हो चुका है कि एक ओर तो देश के अनेक शहरों में सूखा पड़ता है तो दूसरी ओर कई शहर हर साल बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं। इससे आम जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। चेन्नई देश का पहला ऐसा शहर हो गया है जहां भूजल पूरी तरह से समाप्त हो चुका है। जहां कभी चेन्नई में 200 फुट नीचे पानी मिल जाता था आज वहां भूजल 2000 फुट पर भी पानी नहीं है। यह एक गम्भीर व भयावह स्थिति है। ये चेतावनी है भारत के बाकी शहरों के लिए कि अगर समय से नहीं जागे तो आने वाले समय में ऐसी दुर्दशा और शहरों की भी हो सकती है। चेन्नई में प्रशासन देर से जागा और अब वहां बोरिंग को पूरी तरह प्रतिबंध कर दिया गया है।

एक समय वो भी था जब चेन्नई में खूब पानी हुआ करता था। मगर जिस तरह वहां शहरीकरण हुआ उसने जल प्रबंधन को अस्त व्यस्त कर दिया। अब चेन्नई में हर जगह सीमेंट की सड़क बन गई है। कही भी खाली जगह नहीं बची, जिसके माध्यम से पानी धरती में जा सके। बारिश का पानी भी सड़क और नाली से बह कर चला जाता है कही भी खाली जगह नहीं है जिससे धरती में पानी जा सके। इसलिए प्रशासन ने आम लोगों से आग्रह किया है कि वे अपने घरों के नीचे तलघर में बारिश का जल जमा करने का प्रयास करें। ताकि कुछ महीनों तक उस पानी का उपयोग हो सके। चेन्नई जैसे 22 महानगरों में भूजल पूरी तरह समाप्त हो गया है। जहां अब टैंकरों, रेल गाड़ियों और पाइपों से दूर-दूर से पानी लाना पड़ता है। अगर देश और प्रांतों के नीति निर्धारक और हम सब नागरिक केवल वर्षा के जल का सही प्रबंधन करना शुरू कर दें तो भारत सुजलाम-सुफलाम देश बन जाएगा, जो ये कभी था। 'पानी बीच मीन प्यासी, मोहे सुन-सुन आवे हांसी।'

डिजिटल युग के अपराधों पर कैसे लगे लगाम ?

डा. सत्यवान सौरभ

हाल ही में भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं, औपनिवेशिक युग के कानूनों से भारतीय न्याय संहिता और भारतीय न्याय सुरक्षा संहिता में बदलाव किया गया है। हालांकि, नई संहिता में साइबरस्टॉकिंग और ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी जैसे डिजिटल युग के अपराधों से निपटने के लिए व्यापक प्रावधानों का अभाव है, जिनकी आज के तकनीकी रूप से संचालित समाज में प्रासंगिकता तीव्रता से बढ़ रही है। नई संहिता वर्तमान के डिजिटल युग बढ़ रहे साइबर अपराधों जैसे कि साइबरस्टॉकिंग, फिशिंग और डेटा उल्लंघन के दायरे को पर्याप्त रूप से परिभाषित नहीं करती हैं। भारत में फिशिंग और ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी की बढ़ती घटनाओं के बावजूद, नए कानून ऐसे अपराधों पर मुकदमा चलाने में शामिल जटिलताओं को कवर नहीं करते हैं।

डेटा उल्लंघनों पर बढ़ती चिंता के साथ, डेटा संरक्षण और गोपनीयता उल्लंघन के लिए विशिष्ट प्रावधान प्रदान करने में नई आपराधिक संहिता विफल रही है। वर्तमान आपराधिक संहिताओं में डिजिटल साक्ष्यों को एकत्रित करने, उन्हें संरक्षित करने तथा न्यायलय में प्रस्तुत करने के लिए स्पष्ट दिशानिर्देशों का अभाव है, जो डिजिटल अपराधों पर मुकदमा चलाने के लिए आवश्यक है। डिजिटल उत्पीड़न, विशेष रूप से महिलाओं और नाबालिगों को लक्षित करना, नए कानूनी ढांचे में इस संदर्भ में किए गए प्रावधान अपर्याप्त हैं।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार, साइबर उत्पीड़न के मामलों में वृद्धि हुई है, विशेष तौर पर महिलाओं के खिलाफ, परंतु नई संहिता ऐसे अपराधों के लिए कड़े दंड निर्दिष्ट नहीं करती हैं। उभरती प्रौद्योगिकियों से निपटने में कमियां हैं, नए कानून उभरती हुई प्रौद्योगिकियों से संबंधित अपराधों, जैसे कि क्रिप्टोकरेंसी घोटाले और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दुरुपयोग को ध्यान में नहीं रखते हैं। क्रिप्टोकरेंसी धोखाधड़ी ने डिजिटल और आभासी वातावरण में अपराधों को संबोधित करने के लिए वर्तमान में एक कानूनी ढांचे की आवश्यकता को दर्शाया है।

हैकिंग, आइडेंटिटी थेफ्ट और साइबरस्टॉकिंग सहित साइबर अपराध के विभिन्न रूपों को लक्षित करते हुए विशिष्ट कानून बनाने की आवश्यकता है, ताकि पीड़ितों को प्रभावी विधिक सहायता मिल सके। सूचना और संचार नेटवर्क उपयोग को बढ़ावा देने के लिए दक्षिण कोरिया के अधिनियम में साइबर अपराधों के खिलाफ व्यापक प्रावधान शामिल हैं, जिसका भारत अनुकरण कर सकता है। डेटा सुरक्षा कानूनों को बेहतर बनाना डेटा संग्रह, भंडारण और साझाकरण पर स्पष्ट दिशा-निर्देशों के साथ डेटा गोपनीयता विनियमों को मजबूत करना। इन कमियों को प्रभावी ढंग से दूर करने के लिए व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक, 2019 में संशोधित किया जा सकता है और आवश्यक परिवर्तन कर लागू किया जा सकता है। न्यायालयों में डिजिटल साक्ष्य एकत्र करने, प्रमाणित करने और प्रस्तुत करने के लिए मानक स्थापित करना, ताकि इसे आपराधिक कार्यवाही में यह स्वीकार्य और विश्वसनीय बनाया जा सके।

साइबरबुलिंग और डिजिटल उत्पीड़न के पीड़ितों के लिए सख्त दंड और सहायता प्रणाली प्रारंभ करना, जिसमें महिलाओं और नाबालिगों की सुरक्षा पर विशेष जोर दिया जाएगा। महिलाओं और बच्चों के खिलाफ साइबर अपराध रोकथाम योजना एक अज्ञात रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से समर्थन द्वारा डिजिटल उत्पीड़न उपायों को बढ़ाती है। ऐसे कानून बनाना जो ब्लॉकचेन, उभरती प्रौद्योगिकियों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करना, ताकि तकनीकी प्रगति के साथ सामंजस्य बनाए रखा जा सके।

यूरोपीय संघ का सामान्य डेटा संरक्षण विनियमन एक लचीला ढांचा प्रदान करता है जो डिजिटल प्रौद्योगिकियों के विकसित परिदृश्य को संबोधित करता है। डिजिटल युग की चुनौतियों का समाधान करने के लिए भारत के कानूनी ढांचे को विकसित किया जाना चाहिए। व्यापक साइबर अपराध कानूनों को शामिल करके, डेटा सुरक्षा उपायों को बढ़ाकर और उभरती प्रौद्योगिकियों के लिए प्रोटोकॉल को अपडेट करके, भारत एक मजबूत और उत्तरदायी कानूनी प्रणाली सुनिश्चित कर सकता है। यह विकास तेजी से डिजिटल हो रहे विश्व में नागरिकों की सुरक्षा और समाज में विश्वास, सुरक्षा और न्याय को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

निपाह वायरस संक्रमण के कारण एक व्यक्ति की मौत : केरल की स्वास्थ्य मंत्री

मलप्पुरम, (पंजाब केसरी) केरल के मलप्पुरम जिले के एक निजी अस्पताल में हाल में 24 वर्षीय व्यक्ति की निपाह वायरस संक्रमण से मौत हो गई। केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने रविवार को यह जानकारी दी। जॉर्ज ने कहा कि क्षेत्रीय चिकित्सा अधिकारी द्वारा मौत के कारणों की जांच करने पर निपाह संक्रमण का संदेह हुआ। मंत्री ने एक वीडियो संदेश में कहा, ''उपलब्ध नमूनों को तुरंत परीक्षण के लिए भेजा गया और परिणाम में संक्रमण की पुष्टि हुई।'' बेंगलुरु से राज्य पहुंचे मलप्पुरम निवासी की नौ सितंबर को मृत्यु हो गई, जिसके बाद उसके उपलब्ध नमूनों को कोझिकोड मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की प्रयोगशाला में परीक्षण के लिए भेजा गया था। मलप्पुरम के स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि कोझिकोड मेडिकल कॉलेज के नतीजों में संक्रमण पाया गया, जिसके बाद शनिवार रात को ही स्वास्थ्य मंत्री ने एक उच्च स्तरीय बैठक की और प्रोटोकॉल के अनुसार आवश्यक कदम उठाए।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

हिन्दुस्तान 1936 सत्य • सार्थक • सदैव

मौसम से सावधान

मानसून अब जाने को है और जाते-जाते बीमारियों का प्रकोप इस तरह बढ़ गया है कि चिकित्सकों की व्यस्तता बहुत बढ़ गई है। अस्पतालों में मरीजों की संख्या बढ़ गई है और अगर समय पर सही इलाज न हो, तो मौसमी बीमारियां भी जानलेवा साबित होती हैं। विशेष रूप से कमजोर रोग प्रतिरोधी क्षमता वाले लोगों को तो मौसमी बीमारियां कुछ ज्यादा ही सताती हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि मौसम के साथ तालमेल बिठाकर चलने की परिपाटी पहले से कुछ कमजोर पड़ी है, पर इलाज की सुविधा के बढ़ने से माहौल में बदलाव आया है। वैसे चिकित्सक पूरे मानसून या बरसात के मौसम में सतर्क रहने की सलाह देते हैं। फिर भी बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं, जो कोताही या लापरवाही बरतकर अपनी मुश्किलें बढ़ा लेते हैं। मौसमी बीमारियों से अलग एमपॉक्स भी चिंता की वजह बना हुआ है। एमपॉक्स का एक मरीज अभी भारत में है और उम्मीद करनी चाहिए कि यह बीमारी भारत में न फैले। अफ्रीका में अब तक 100 से ज्यादा लोग इसके कारण मारे गए हैं और खुशखबरी यह है कि एमपॉक्स से बचाव के लिए दुनिया के पहले टीके को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी मंजूरी दे दी है।

बरसात और उसमें भी जाती हुई बरसात डेंगू के खतरे को बढ़ा देती है। जगह-जगह जलभराव के कारण मच्छरों का प्रकोप बढ़ जाता है। इस मौसम में एडीज मच्छरों की संख्या बढ़ जाती है और जब ये मच्छर काटते हैं, तो डेंगू के लक्षण उभर आते हैं। तेज बुखार, गंभीर सिरदर्द, आंखों में पीछे दर्द, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द, शरीर पर दाने और रक्तस्राव का भी खतरा पैदा हो जाता है। पिछले वर्ष देश में डेंगू से 485 लोगों की मौत हुई थी और ढाई लाख से ज्यादा लोगों को इसने परेशान किया था। विशेष रूप से दक्षिण भारत में डेंगू का प्रकोप इस बार ज्यादा है, देश में 32 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है, अतः सावधान रहने की जरूरत है। अनावश्यक जलभराव से भी बचने की जरूरत है। मौसमी बीमारियों में चिकनगुनिया भी शामिल है। यह भी मच्छरों से फैलने वाला वायरल रोग है, इसमें भी तेज बुखार, मांसपेशियों व जोड़ों में गंभीर दर्द, सिरदर्द और थकान की शिकायत सामने आती है। चिकनगुनिया के साथ सबसे बुरी बात यह है कि इसका दुष्प्रभाव हफ्तों तक बना रह सकता है। ठीक इसी तरह, मलेरिया के भी मामले इस मौसम में बढ़ जाते हैं। यह भी परजीवी प्लाज्मोडियम और संक्रमित एनोफिलीज मच्छर के काटने से फैलता है। इन दिनों ज्वर और वायरल बुखार के भी मामले बहुत बढ़ गए हैं। वायरल के लिए अनेक प्रकार के वायरस जिम्मेदार होते हैं और ये वायरस अपना प्रभाव या दुष्प्रभाव बदलते रहते हैं। वायरल बुखार से कमजोरी तेजी से बढ़ती है। जुकाम और खांसी के मरीजों की तो कोई गिनती ही नहीं है। अभी शायद ही कोई अस्पताल होगा, जहां मौसमी बीमारियों से सताए गए लोग अपना इलाज न करा रहे हों।

चिकित्सक पूरे मानसून में सतर्क रहने की सलाह देते हैं। फिर भी बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं, जो कोताही या लापरवाही बरतकर अपनी मुश्किल बढ़ा लेते हैं।

भारत में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़नी चाहिए, ताकि बदलते मौसम में लोग अपने स्वास्थ्य का बचाव कर सकें। विशेष रूप से बच्चों को सेहतमंद रखने के लिए बड़ों को भी चौकस रहना चाहिए। बड़े अगर चौकस रहेंगे, तो बच्चों में भी सावधान रहने के गुण का विकास होगा। यह बात स्पष्ट है कि सामान्य सर्दी-जुकाम की वजह से भी लोगों का कामकाज प्रभावित होता है, उनकी उत्पादक क्षमता घटती है और कमाई भी। अतः बढ़ती सुविधाओं के साथ सामान्य लगने वाली बीमारियों को भी गंभीरता से लेने की आदत विकसित होनी चाहिए।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 16 सितंबर, 1949

विवाद का अंत

स्वतंत्र भारत की राजभाषा क्या हो, यह एक विवादग्रस्त विषय था। भारतीय विधान में विवादग्रस्त विषय यही हो ऐसा तो नहीं कह सकते, परन्तु जितनी गर्मी इसके बारे में सामने आई, उतनी और किसी विषय में नहीं आई। विविधता में एकता की विशेषता वाले हमारे देश में भाषा के बारे में कोई ऐसा निदान ही कारगर हो सकता था जो देश के विविध भागों में प्रचलित विभिन्न भाषाओं को हानि न पहुंचाते हुए उस सबका समन्वय साध सके। इस दृष्टि से नागरी लिपि वाली हिन्दी ही भारतीय संघ की राजभाषा हो सकती थी। इसमें कम-से-कम हमें कभी सन्देह नहीं रहा और हमारे देश के दूरदृष्टा बहुत पहले से यह कहते आये हैं। परंतु स्वतंत्रता-प्राप्ति के संघर्ष में हमें साथ देने वालों से भी अधिक विमुखता दिखाने वालों का खयाल करना पड़ा, जिससे जहां तक हो, उन्हें विपक्ष में जाने से हम रोक सकें। अतः उनके तौर-तरीकों को हमने अपने तौर-तरीकों से बढ़ावा दिया। फलतः एक प्रवृत्ति ऐसी हो गई कि वही तौर-तरीके स्थायी हों और यथार्थ की चिन्ता न की जाये।

हिन्दी के बजाय हिन्दुस्तानी पर जोर इसी प्रवृत्ति का परिणाम था। परन्तु अब जब स्वतंत्रता एक वास्तविकता हो गई है, तो यथार्थ की उपेक्षा नहीं की जा सकती। शायद इस वास्तविकता की भावना का ही बल है कि नागरी लिपि में हिन्दी भारतीय विधान परिषद द्वारा प्रायः सर्वसम्मति से भारत की राजभाषा स्वीकार कर ली गई है। इस सही निर्णय के लिए हम विधान परिषद को बधाई दिये बगैर नहीं रह सकते।

विधान परिषद में भाषा के प्रश्न पर जो गर्मी आई, यह ध्यान देने की बात है कि उसमें नागरी लिपि में हिन्दी को कोई गम्भीर चुनौती नहीं दी गई। विवाद का केन्द्रबिन्दु दो बातों पर था। एक अंग्रेजी को कैसे और कितने समय में हटाया जाये, दूसरी यह कि अंक कौन से रहें। स्पष्टतः दो विचारधाराएं काम कर रही थीं। एक ओर वे थे, जिन्हें अंग्रेजी का हटाना पीड़ा पहुंचा रहा था और जो उसे अधिक से अधिक समय तक बनाये रखना चाहते थे, दूसरी ओर वे, जिनकी इच्छा थी कि देशी भाषा जल्दी-से-जल्दी विदेशी भाषा का स्थान ले ले। इसमें शक नहीं कि राजभाषा या राष्ट्रभाषा के स्थान पर अपनी मातृभाषा से भिन्न भाषा को देखना हर एक के गले से उतरने वाली बात नहीं थी।

केजरीवाल की बड़ी सियासी कवायद

यहां स्कैन करें

राज कुमार सिंह | वरिष्ठ पत्रकार

आज सबसे बड़ा सवाल यही है कि अरविंद केजरीवाल के मुख्यमंत्री पद छोड़ने के फैसले से आम आदमी पार्टी, दिल्ली, विपक्ष और देश की राजनीति पर क्या असर पड़ेगा?

तेरह सितंबर को सर्वोच्च न्यायालय से जमानत पाने वाले अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने का इरादा जताकर सबको चौंका दिया है। इस्तीफा देने के लिए उन्होंने देश की सर्वोच्च अदालत से जमानत और उस पर जश्न के चार दिन बाद का समय चुना है। उन्होंने घोषणा की है कि वह मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे देंगे और जब तक दिल्ली के मतदाता चुनावी जनादेश के जरिये उन्हें ईमानदार नहीं मान लेते, तब तक दोबारा पद नहीं संभालेंगे। वह चाहते हैं कि महाराष्ट्र और झारखंड के साथ दिल्ली में भी नवंबर में चुनाव कराए जाएं। तब तक आप का कोई अन्य नेता मुख्यमंत्री पद संभालेगा। जाहिर है, अनेक सवाल सियासी गलियारों में गूंजने लगे हैं। सबसे बड़ा सवाल तो यही है कि इससे आम आदमी पार्टी, दिल्ली, विपक्ष और देश की राजनीति पर क्या असर होगा?

यह भी सवाल पूछा जा सकता है कि केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने का ख्याल कथित शराब नीति घोटाले में लगभग 177 दिन तिहाड़ जेल में गुजारने के बाद क्यों आया? उनके विरोधी तो इस्तीफे की मांग गिरफ्तारी के समय से करते रहे हैं। कुछ लोग तो इसके लिए अदालत तक गए, जहां उन्हें निराशा हाथ लगी। अब इस्तीफे का निर्णय केजरीवाल ने परिस्थितियों, चुनौतियों और संभावनाओं पर सोच-विचार करके ही लिया है। जमानत तो मिल गई, पर मुकदमा लंबा चलेगा। दूसरी बात, आप और कांग्रेस में गठबंधन के बावजूद दिल्ली में लोकसभा चुनाव में लगातार तीसरी बार भाजपा का सभी सात सीटें जीत जाना बताता है कि गिरफ्तारी से केजरीवाल को ज्यादा सहानुभूति नहीं मिली है। मतलब, उनकी पार्टी को और मेहनत करने की जरूरत है। अब केजरीवाल पदमुक्त होकर ज्यादा मेहनत करने की स्थिति में होंगे। जब न सिर्फ केजरीवाल के गृह राज्य हरियाणा में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं, दिल्ली में भी अगले साल फरवरी में ही चुनाव होंगे, तब पार्टी को आक्रामक रणनीति और नए मुद्दों-नारों की दरकार है। लोकसभा चुनाव के नतीजे आप की सीमाएं उजागर कर रहे हैं। फिर भी पंजाब में प्रचंड बहुमत तथा गुजरात, गोवा जैसे सुदूर राज्यों में भी पैर जमाने की कोशिश से उसे गठन के दस साल के अंदर ही राष्ट्रीय दल का दर्जा मिल चुका है।

बहरहाल, पिछले चुनावी नतीजों से आप और कांग्रेस, दोनों ने सबक सीखा है। कभी कांग्रेस समेत तमाम दलों को भ्रष्ट बताने वाली आप को समझ में आ गया है कि अन्य गैर-भाजपाई दलों को साथ लिए बिना राष्ट्रीय राजनीति संभव नहीं, तो विपक्ष भी समझ गया है कि दिल्ली और पंजाब में प्रचंड बहुमत वाले दल को नजरअंदाज करना समझदारी नहीं है। पिछले साल विपक्षी दलों के 'इंडिया' ब्लॉक के बैनर तले एकजुट होने का ही परिणाम रहा कि 2014 और 2019 में अकेले दम बहुमत हासिल करने वाली भाजपा आज बहुमत के लिए तेलुगु देशम पार्टी, जनता दल यूनाइटेड व लोक जनशक्ति पार्टी पर निर्भर हो गई है।

इस बीच विपक्षी नेताओं, खासकर मुख्यमंत्रियों के विरुद्ध ईडी और सीबीआई की कार्रवाई से विपक्ष की मुश्किलें भी बढ़ीं। कथित शराब नीति घोटाले में पहले उप-मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, तो फिर सांसद संजय सिंह और मुख्यमंत्री केजरीवाल भी गिरफ्तार हुए। बेशक तीनों अब जमानत पर बाहर आ चुके हैं, पर केजरीवाल की छवि पर भाजपा को सवालिया निशान लगाने का मौका मिल गया है। आप ने दिल्ली में पानी, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी चुनावी वायदों को पूरा किया है, पर उसकी सबसे बड़ी ताकत भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष है। ऐसे में, शराब घोटाले के आरोपों के दाग के साथ विधानसभा चुनाव में जाने का जोखिम केजरीवाल सरीखे चतुर राजनेता क्यों उठाएंगे?

यह सामान्य बात है कि लोकतंत्र के नाम पर अपनी सुविधानुसार राजनेता जनता की अदालत की आड़ लेते रहे हैं। आश्चर्य नहीं, केजरीवाल ने दिल्ली के मतदाताओं से 'ईमानदारी' का प्रमाणपत्र मांगने का दांव चलकर विरोधियों, खासकर भाजपा को सोचने पर मजबूर कर दिया है। जेल जाने के बावजूद दिल्ली में उनके सबसे लोकप्रिय राजनीतिक चेहरा होने से शायद ही कोई इनकार करेगा। अतः सीटें घटने की आशंका है, पर दिल्ली विधानसभा चुनाव में आप की जीत की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

ध्यान रहे, किसी भी पद-त्यागी के प्रति भारतीय जनमानस अति अनुरागी रहा है। हर राज्य में ऐसे नेता रहे हैं, जिन्होंने पद छोड़कर अपने राजनीतिक कद को बढ़ाया है। जेपी, बाल ठाकरे से लेकर सोनिया गांधी तक ऐसे कद्दावर नेताओं के अनेक उदाहरण हैं। केजरीवाल भी रोजमर्रा के सरकारी कामकाज से दूर रहकर अपने राजनीतिक कद को बढ़ाने पर जोर लगाएंगे। किसी भी राज्य में अपनी या विपक्ष की जीत को नैतिक विजय बताते हुए आक्रामक केजरीवाल ठहरी हुई आप को राष्ट्रीय राजनीति में गति देना चाहेंगे। हालांकि, उनकी राह आसान नहीं है।

बातचीत के बावजूद कांग्रेस ने हरियाणा में आप से गठबंधन नहीं किया है। केजरीवाल के नए तेवर के बाद क्या कांग्रेस पुनर्विचार करेगी, क्योंकि उसे वैसा ही 'रिटर्न गिफ्ट' दिल्ली विधानसभा चुनाव में मिलेगा? महाराष्ट्र और झारखंड में भी आप मोलभाव करेगी, क्योंकि केजरीवाल विपक्ष के लिए स्टार प्रचारक हो सकते हैं, पर उससे पहले केजरीवाल को कुछ असहज कसौटियों से गुजरना होगा। मसलन, नया मुख्यमंत्री कौन होगा? उनके विश्वस्त मनीष सिसोदिया भी कह रहे हैं कि वह भी नए जनादेश के बाद ही कोई पद लेंगे। ऐसे में, केजरीवाल के सामने दो उदाहरण हैं और उनके जोखिम भी। चारा घोटाले में जेल जाने पर बिहार में लालू यादव ने पत्नी राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री बनवाया था, पर उसके बाद उनकी पार्टी खुद जनादेश नहीं पा सकी है। मनी लांड्रिंग में जेल जाने पर हेमंत सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ आदिवासी नेता चंपाई सोरेन को मुख्यमंत्री बनवाया, पर जमानत मिलने पर पद वापस लिया, तो चंपाई बगावत कर भाजपाई हो गए। इधर, केजरीवाल के जेल जाने पर उनकी पत्नी सुनीता सक्रिय नजर आईं, पर राजनीतिक समझ कहती है कि चंद महीने के लिए पत्नी को मुख्यमंत्री बनाने का जोखिम केजरीवाल शायद ही उठाएंगे। वह रणनीति के तहत किसी महिला या दलित पर दांव लगा सकते हैं। यहां वह यह भी याद रखेंगे कि नए जनादेश के बावजूद उन पर सर्वोच्च न्यायालय की जमानत संबंधी शर्त लागू रहेगी। सशर्त पद संभालने के बजाय उन्होंने अगर खुली राजनीति का रास्ता चुन लिया है, तो तय मानिए, आगामी चुनावी लड़ाइयां रोचक हो गई हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

सामान्य से ज्यादा बारिश के बावजूद बरकरार मानसून

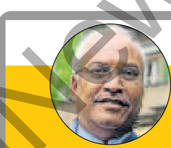

यहां स्कैन करें

के जे रमेश | पूर्व निदेशक, भारतीय मौसम विभाग

मानसून की विदाई के फिलहाल कोई संकेत नहीं हैं। बंगाल की खाड़ी में एक और कम दबाव का क्षेत्र बन चुका है, जो इस हफ्ते तक धीरे-धीरे पूरे उत्तर-पश्चिम भारत को भिगोएगा। मध्य प्रदेश और पूर्वी राजस्थान तक इसका असर दिख सकता है। वास्तव में, यह लगातार चौथा सप्ताह है, जब कहीं न कहीं बंगाल की खाड़ी में कम दबाव का क्षेत्र बना और बहुत इलाकों में तेज बारिश होती रही। अभी पिछले हफ्ते ही इंदौर और झांसी के बीच बारिश होने के बाद कम दबाव का क्षेत्र पश्चिमी विक्षोभ के संपर्क में आया और पहाड़ की तरफ आगे निकल गया। इसके कारण दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में बारिश होती रही। नेपाल का पश्चिमी हिस्सा भी इससे प्रभावित रहा। कहीं-कहीं तो तूफानी हवा के साथ भारी से अत्यधिक भारी बारिश हुई। इसका असर आम जनजीवन पर भी पड़ा।

यह सही है कि सितंबर महीने तक मानसून का चक्र पूरा हो जाता है, लेकिन यह गणना अनुमान पर आधारित होती है। तकनीकी तौर पर मानसून का चक्र जून से सितंबर तक ही होता है, लेकिन जब 1 जून को केरल के तट से मानसून टकराता है, तो उसके बाद पूरे देश में उसके फैलने का महज अनुमान लगाया जाता है। इसमें बीच-बीच में सुधार भी किया जाता है, क्योंकि मौसमी परिस्थितियों के कारण मानसून का असर कम-ज्यादा होता रहता है। वास्तव में, इस साल पिछले गुरुवार तक मानसूनी बारिश सामान्य से 8.25 प्रतिशत ज्यादा हुई है। बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों के कुछ जिलों में बेशक सामान्य से कम बारिश देखी गई, लेकिन समग्रता में बीते कुछ वर्षों में हमने सबसे बेहतर मानसून इसी साल देखा है।

कुछ जिलों में सामान्य से कम बारिश देखी गई, लेकिन समग्रता में बीते कुछ वर्षों में हमने सबसे बेहतर मानसून इसी साल देखा है।

इसका सबसे बड़ा संकेत हमारे जलाशय हैं। उनमें सामान्य से ज्यादा पानी भर गया है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक ऐसा कोई जलाशय नहीं, जिसमें पानी लबालब न हो। इसका फायदा यह है कि खरीफ फसलों के लिए जितना पानी हमें चाहिए, वह तो हमारे पास उपलब्ध हो ही गया, रबी की अगली फसलों के लिए भी पर्याप्त पानी हमने जमा कर लिया है। यह स्थिति तब है, जब बारिश लगातार होने से कई जगहों पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं महसूस की जा रही। ऐसा बहुत वर्षों बाद देखने को मिला है। जाहिर है, जलाशयों में पानी की यह अधिकता फसलों को काफी फायदा पहुंचाएगी।

अच्छी मानसूनी बारिश का लाभ सिर्फ जलाशयों और फसलों को ही नहीं मिलता है, पेयजल के मामले में भी हमें काफी राहत मिल जाती है। आकलन तो यही है कि अब तक जितनी बारिश हो चुकी है, उस हिसाब से अगले मानसून तक पीने के पानी की कहीं कोई कमी शायद ही दिखे। यह उन इलाकों के लिए सुखद स्थिति है, जहां गर्मी के मौसम में भूजल का स्तर नीचे चला जाता है और लोगों को पीने के पानी के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है। देखा जाए, तो मौसम विभाग ने हमेशा की तरह इस बार भी सटीक अनुमान किया है। कुछ जिलों में अगर बारिश आकलन के मुताबिक नहीं हुई है, तो उसका ज्यादा असर नहीं पड़ने वाला। पंजाब और हरियाणा के उन जिलों में, जहां सामान्य से कम बारिश हुई है, सिंचाई का पूरा जाल बिछा हुआ है और बारिश के पानी पर फसलों की निर्भरता नहीं है। कुछ यही हाल उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश का है, जहां औसत से कम बारिश फसलों को शायद ही बड़ा नुकसान पहुंचाएगी। यही कारण है कि इस साल फसलों की बंपर पैदावार की उम्मीद की जा रही है। इसलिए, सूखा संबंधी रिपोर्ट का कोई तुक नहीं है। हां, महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक के उत्तरी हिस्सों में कुछ जगहों पर खेती बारिश के ऊपर निर्भर करती है, जहां मानसूनी बादलों का कम बरसना कुछ हद तक असर डाल सकता है, पर समग्रता में देखें, तो इसका भी बहुत ज्यादा प्रभाव नहीं दिखेगा।

कुल मिलाकर, एक अच्छे मानसूनी साल का हम गवाह बने हैं। जलाशयों में भरपूर पानी है, भूजल की स्थिति सुधरी है और फसलों को भी पर्याप्त पानी मिल रहा है। इन सबका फायदा लोग, समाज, देश और अर्थव्यवस्था, सबको मिलेगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

बीमारियों को न्योता

कोई भी यह मानने के लिए राजी नहीं होगा कि हम बीमारियों को बुलाते हैं, लेकिन सच्चाई यही है। आदमी का मन बहुत जटिल है और उसके बहुत से तल हैं। भीतर गहराई में क्या चल रहा है, इसकी खबर बाहर के तल को नहीं होती।

ओशो एक कहानी कहते हैं- एक आदमी का दिवाला निकलने को था। वह बाजार जाने से डरता था; दुकान जाने से डरता था। एक सुबह वह अपने बाथरूम से निकल रहा था, तभी गिर पड़ा और लकवाग्रस्त हो गया। उसकी सब तरह की चिकित्सा शुरू हो गई। मगर हम यह सोच ही नहीं पा रहे हैं कि वह आदमी 'पैरालाइज्ड' होना चाहता था। उसने सजगता से ऐसा सोचा या नहीं, सवाल यह नहीं है। शायद ऐसी कभी धारणा नहीं बनाई हो, पर कहीं चित्त में वह चाहता था कि बाजार न जाना पड़े, दुकान न जाना पड़े, रास्ते पर न निकलना पड़े। उसे भय ने पकड़ लिया। वह भीतर ही भीतर कमजोर होने लगा, इसीलिए एक दिन उसके शरीर ने जवाब दे दिया।

दूसरी बात, वह यह भी चाहता था कि किसी तरह उसके ऊपर लोगों के इल्जाम बंद हो जाएं और उनका स्थान सहानुभूति ले ले। यह उसकी गहरी चाह थी। अब थोड़ा बारीकी से समझें। शरीर सदा हमारे मन के पीछे छाया की तरह चलता है। वह मन को अपना सहयोग देगा। अब डॉक्टर उस आदमी का इलाज करने में लगे हुए हैं, पर उसकी सब दवाइयां शरीर की ओर इंगित कर रही हैं और रोग है उसके मन में, सो उसका नुकसान होने की पूरी आशंका है, क्योंकि उसको लकवा है ही नहीं, यह तो निमंत्रित बीमारी है। अगर हम लकवा ठीक भी कर दें, तो वह दूसरी, तीसरी बीमारी पैदा करेगा। असल में, जब तक वह बाजार जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाता है, तब तक उसमें बीमारियां पैदा होती रहेंगी।

बीमार होते ही उसने पाया कि सारी स्थिति बदल गई है। उसे ढेर सारी सहानुभूति मिलने लगी है। अब वह कह सकता है किसी देनदार को कि भई, कैसे चुकाऊं, देख रहे हैं मेरी हालत! पत्नी उसकी ज्यादा सेवा करने लगी है, बेटे ज्यादा पैर दबाने लगे हैं, मित्र देखने आने लगे हैं, उसकी खाट के पास बैठने लगे हैं। उसका दिवालियापन लोग भूल ही गए।

आदमी को भीतर से बाहर की तरफ आने वाला इलाज चाहिए, यानी उसे मन को मजबूत करने की विधियां सिखाई जाएं। हो सकता है, बहुत छोटी सी बात उसके भीतर की जिंदगी को बदल दे।

असल में, जब तक कोई बीमार न पड़े, हम उसे प्रेम ही नहीं करते! तो जिसको भी प्रेम पाने की इच्छा हो, उसको बीमार पड़ना पड़ता है। उस आदमी को अन्य तरह का इलाज चाहिए। उसको भीतर से बाहर की तरफ आने वाला इलाज चाहिए, यानी उसे मन को मजबूत करने और आत्म-विश्वास बढ़ाने की विधियां सिखाई जाएं। हो सकता है, बहुत छोटी सी बात उसके भीतर की जिंदगी को बदल दे। अधिकांश बीमारियों की जड़ें मन में होती हैं, पर मन के बारे में हमारी जानकारी धूमिल है।

अमृत साधना

एंटोनियो गुटेरस | संयुक्त राष्ट्र महासचिव

गाजा में जो हो रहा है, वह अस्वीकार्य है। करीब 12 हजार लोगों की स्कूली पनाहगाह फिर इजरायली हमले का निशाना बन गई। मानवाधिकार संबंधी वैश्विक कानूनों के इस उल्लंघन को तत्काल रोकने की जरूरत है।

अनुलोम-विलोम

फेसबुक

इससे अलग हो जाना चाहिए या सीमित

या तो फेसबुक से अलग हो जाना चाहिए या एकदम सीमित। लोगों को सकारात्मक और रचनात्मक सृजन में सिर्फ मौखिक रुचि है या बिल्कुल नहीं है। आखिर तर्क और बहस की कुछ मर्यादाएं होती हैं, कोई आशय और उद्देश्य होता है। महज चार शब्द हैं आपके पास सवर्ण, गैर-सवर्ण, संघी और पाकिस्तान का टिकट। अगर यही पाथते रहना है, तो किसी दल में शामिल हो जाओ। जरा भी हिंदू से असहमति हुई, तो पाकिस्तान का टिकट, मुस्लिम से हुई, तो संघी, सवर्ण से हुई, तो वर्णवादी और गैर-सवर्ण की आलोचना की, तो सिर तन से जुदा। इन चार में से एक पत्थर तो माथे पर लगना ही लगना है और फिर हो जाइए लहूलुहान। हमारी बात एकदम शत-प्रतिशत मानो, नहीं तो हम ठहर..., थूक ही दूंगा बस। ऐसा अघोषित आपातकाल तो न कभी देखा, न सुना। इसमें क्या बहस और क्या विचार?

कोई 12 साल पुरानी घटना को लेकर खड़ा है, पढ़ते समय किसी लड़की को लेकर फिदा थे, पढ़ाते या आते-जाते किसी महिला को घूरे थे? अपना चरित्र प्रमाणपत्र आधार कार्ड की तरह बनाए हो, तो दिखाओ। गोया खुद वे मर्यादा पुरुषोत्तम राम ही पैदा हुए थे या माता जानकी। आप पता कीजिए, कितनी बार, किन-किन स्तरों पर जातिवाद का लाभ उठाए हो और उठा रहे हो, किस-किस की चरण-वंदना की है और कितनी रिश्वत कमाए हो, कितने अफसरों के दरवाजे पर सिर पटके हो, तो बिफर जाएगा। अगर कोई प्रेम किया है, आवारागर्दी की है, तो उसकी रचनाओं में ढूंढ़ो। उसके चरित्रों में, चरित्र की पहचान में, वर्णन और कल्पना में तलाश करो। पर इसके लिए विशिष्ट अक्ल, समझ, परख दृष्टि और गंभीर धैर्य चाहिए। वह तो है नहीं। रचनाकार कैसा भी है, आपको उसके साथ सुलूक करने का सलीका आना चाहिए। इस तरह तो विश्व के रचनाकारों को आप समझ ही नहीं सकते। आज जिसे देखिए, वही नैतिक दारोगा बना फिर रहा है। तुम खुद हो क्या? महिलाओं को लेकर जब बात करते हैं, तो बस टेप भर करना है। चले हैं राम बनने। न तो हिंदी लेखकों या दुनिया के लेखकों का कोई जीवन चरित्र पढ़ता है, न जानने और समझने की कोशिश करता है। बस एक हाथ में अलकतरा, तो दूसरे में तेजाब लिए फेसबुक पर 24 घंटे मौजूद हैं और बनते हैं बड़का 'इंटलेक्चुअल!'

अगर फेसबुक पर रहते हुए स्वस्थ रहना है, तो एक बार पांच हजार मित्रों को अमित्र कर नए सिरे से मित्र चयन करना ही होगा। वरना आदमी का पढ़ना-लिखना सब छूट जाएगा। दिकदिका जाता है आदमी। अच्छा है कि फिलहाल कुछ समय तक फेसबुक से अनुपस्थित ही रहा जाए।

कर्मेंदु शिशिर, टिप्पणीकार

फेसबुक पर लेखन के अपने मायने

फेसबुक पर बड़ी संख्या में युवा लिख रहे हैं। इसमें सुंदर साहित्य, अनुवाद, विमर्श आदि आ रहा है। आक्रामक और पैना लेखन भी आ रहा है। फेसबुक अब एक गंभीर मीडियम है, जिसका समाज की बेहतरी के लिए, ज्ञान के आदान-प्रदान और सांस्कृतिक-राजनीतिक चेतना के निर्माण के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। अभी हिंदी का एक हिस्सा फेसबुक पर अपने सांस्कृतिक पिछड़ेपन की अभिव्यक्ति में लगा है। वह निजी भावों की अभिव्यक्ति से ज्यादा इस मीडियम की भूमिका को नहीं देख पा रहा है, जबकि कोई भी मीडियम ताकतवर तब बनता है, जब उस पर आधुनिक विचारों का प्रचार-प्रसार हो। हिंदी में फेसबुक अभी हल्के-फुल्के विचारों और भावों की अभिव्यक्ति के साथ जुड़ा है। यह सामाजिक परिवर्तन का वाहक बन सकता है।

क्लारा शिन ने *द फेसबुक एरा : टेपिंग ऑनलाइन सोशल नेटवर्क्स टु बिल्ड बेटर प्रोडक्ट्स, रीच न्यू ऑडिएंशेज, ऐंड सेल मोर स्टफ* नामक किताब में लिखा है, ऑनलाइन सोशल नेटवर्क के तेजी से विस्तार ने हमारी जीवनशैली, काम और संपर्क की प्रकृति को बुनियादी तौर पर बदल दिया है। इसने व्यापार के विस्तार की अनंत संभावनाओं को जन्म दिया है। फेसबुक विस्तार के तीन प्रधान कारण हैं- पहला, विश्वसनीय पहचान। दूसरा, विशिष्टता और तीसरा है समाचार प्रवाह। फेसबुक द्वारा डाटा और सूचनाओं को सार्वजनिक कर देने के बाद से इंटरनेट की परदादारी का अंत हो गया है। सूचना की निजता की विदाई हुई है और वर्चुअल सामाजिकता और पारदर्शिता का उदय हुआ है। इसका यह अर्थ नहीं है कि सामाजिक जीवन से निजता का अंत हो गया है। इसका अर्थ सिर्फ इतना है कि इंटरनेट पहले की तुलना में और भी ज्यादा पारदर्शी बना है। साथ ही, सामान्य लोगों में निजी बातों को सार्वजनिक करने की आदत बढ़ी है। निजी और सार्वजनिक बातों के वर्गीकरण के सभी पुराने मानक दरक गए हैं। पहले निजता का अर्थ था छिपाना, पर आज निजता का अर्थ है, संचार के संदर्भ का सम्मान करना।

फेसबुक महज एक कंपनी नहीं है। यह नए युग की सभ्यता-संस्कृति की रचयिता भी है। यह वेब दुनिया की पहली कंपनी है, जिसके एक माह में एक ट्रिलियन पन्ने पढ़े जाते हैं। प्रतिदिन फेसबुक पर 2.7 अरब लाइक-कमेंट्स आते हैं। यही वजह है कि फेसबुक परवर्ती पूंजीवाद की संस्कृति निर्माता है। यह विचारधारात्मक संघर्ष की जगह नहीं है। इस क्रम में गुस्सा करने या सूची से निकालने की जरूरत नहीं है। हम कम्युनिकेशन को कम्युनिकेशन रहने दें। कु-कम्युनिकेशन न बनाएं।

जगदीश्वर चतुर्वेदी, टिप्पणीकार

दैनिक जागरण
उदारता से ही व्यक्तित्व विराट बनता है

चौंकाने वाला निर्णय

अप्रत्याशित फैसले लेने के लिए चर्चित दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने यह कहकर एक बार फिर चौंकाया कि वह दो दिन बाद मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दे देंगे। उन्होंने जिस तरह यह स्पष्ट नहीं किया कि दिल्ली का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा, उससे यह स्पष्ट है कि अगले दो दिन तक अटकलबाजी का दौर चलता रहेगा और इससे देश भर में केजरीवाल और दिल्ली की चर्चा होती रहेगी। यह स्पष्ट ही है कि केजरीवाल यह चाह रहे होंगे कि वह चर्चा के केंद्र में बने रहें। उन्होंने यह कहते हुए त्यागपत्र दिया कि वह आम जनता के समक्ष अग्निपरीक्षा देना चाहते हैं, लेकिन कोई भी समझ सकता है कि त्यागपत्र के मूल कारण कुछ और ही हैं। पहला कारण तो यही दिखता है कि आबकारी नीति घोटाले में सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें जमानत तो दे दी, लेकिन उन पर कई कठोर शर्तें लगा दीं। इन शर्तों के कारण मुख्यमंत्री के रूप में उनके लिए कार्य करना असंभव सा हो गया था और सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें न केवल मुख्यमंत्री कार्यालय जाने से रोका, बल्कि उपराज्यपाल की अनुमति के बिना किसी सरकारी फाइल पर हस्ताक्षर करने से भी रोक दिया। इतना ही नहीं, यह भी शर्त लगाई कि वह आबकारी नीति घोटाले पर कुछ नहीं कह सकते।

हैरानी नहीं कि केजरीवाल ने यह पाया हो कि उनके पास त्यागपत्र देने के अलावा और कुछ उपाय नहीं, लेकिन यदि उन्हें राजनीतिक शुचिता और नैतिकता की परवाह होती तो उन्हें तभी त्यागपत्र दे देना चाहिए था जब आबकारी नीति घोटाले में उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। आश्चर्यजनक रूप से उन्होंने जेल से ही सरकार चलाने की जिद पकड़ी। इस दौरान वह और उनके साथी भले ही यह कहते रहे हों कि नई आबकारी नीति लाकर कहीं कोई अनियमितता नहीं की गई, लेकिन इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं कि अगर इस नीति में कहीं कोई गड़बड़ी नहीं थी तो उसे वापस क्यों लिया गया। यह ठीक है कि इस घोटाले में अन्य अनेक लोगों के साथ अरविंद केजरीवाल को भी जमानत मिल गई है, लेकिन जमानत क्लीन चिट का पर्याय नहीं हो सकती। भले ही केजरीवाल कह रहे हों कि उन्हें गलत तरीके से फंसाया गया है और वह जनता से ईमानदारी का प्रमाण पत्र लेने के बाद मुख्यमंत्री पद संभालेंगे, लेकिन आबकारी घोटाले का सच-झूठ जनता को नहीं, देश की अदालतों को तय करना है। केजरीवाल के त्यागपत्र देने का एक कारण यह भी दिखता है कि वह हरियाणा और फिर आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव में जनता की सहानुभूति पाना चाहते हैं। उन्होंने दिल्ली के चुनाव करीब तीन माह पहले नवंबर में कराने की मांग भी की है। यह समय ही बताएगा कि उन्हें सहानुभूति का लाभ प्राप्त करने में सफलता मिलती है या नहीं, लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि उन्होंने अपने अब तक के राजनीतिक जीवन में जिस तरह कई बार अपने ही कहे को नकारकर फैसले लिए हैं, उससे उनकी वह छवि नहीं रह गई जो पहले थी।

डिजिटल मिशन से लाभ

आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत शुरू की गई डिजिटल स्वास्थ्य प्रोत्साहन योजना से राज्य के अधिसंख्य निजी अस्पताल अभी तक जुड़ नहीं पाए हैं। झारखंड इस मामले में अन्य कई राज्यों से पीछे है। हालांकि देर से ही सही, स्वास्थ्य विभाग ने केंद्र की इस योजना से निजी अस्पतालों के प्रतिनिधियों को न सिर्फ अवगत कराया है, बल्कि उन्हें इस योजना से जुड़ने तथा इसका लाभ उठाने की अपील भी की है। कई मामलों में देखा गया है कि जानकारी के अभाव में स्वास्थ्य प्रदाता के साथ-साथ मरीज भी योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाते हैं। योजना के तहत सभी निजी अस्पतालों में शत-प्रतिशत हेल्थ प्रोफेशनल्स तथा स्वास्थ्य सेवाओं का पंजीकरण कराने पर प्रोत्साहन राशि देने का प्रविधान किया गया है। सरकारी और निजी अस्पतालों के अलावा क्लिनिक, नर्सिंग होम, डायग्नोस्टिक लैब आदि को प्रति माह आनलाइन एक हजार रुपये के डिजिटल लेनदेन पर प्रति हजार 20 रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाती है। ऐसा नहीं है कि सरकार की इस योजना का लाभ सिर्फ अस्पतालों को ही मिलेगा, बल्कि मरीज भी इससे लाभान्वित होंगे। अस्पतालों में पंजीकरण से लेकर चिकित्सकों से परामर्श तक की प्रक्रिया डिजिटल होने से जहां मरीजों को लाभ होगा, वहीं अस्पतालों पर अनावश्यक बोझ भी घटेगा। ऐसे में तय है कि इस योजना के सही क्रियान्वयन से स्वास्थ्य सुविधाओं के विभिन्न स्तरों पर एक मजबूत डिजिटल स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण होगा। यह सुलभ साक्ष्य आधारित तथा उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में मदद करेगा। अस्पताल प्रबंधन और स्वास्थ्य विभाग के आपसी समन्वय से यह योजना मूर्त रूप लेगी।

सहमति की राह पर सरकार

ए. सूर्यप्रकाश

मोदी सरकार पर पलटी मारने का आरोप लगा रहे लोग भूल जाते हैं कि पूर्व में पूर्ण बहुमत के बावजूद पीएम मोदी ने कई नीतिगत मुद्दों पर अपने कदम पीछे खींचे

अवधेश राजपूत

कड़े फैसलों के लिए खास पहचान बनाने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कार्यशैली तीसरे कार्यकाल में कुछ बदली हुई लग रही है। प्रतीत होता है कि वह स्वयं को नई राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप ढालने की दिशा में बढ़ रहे हैं। अपने सुदीर्घ राजनीतिक जीवन में पहली बार गठबंधन सरकार चला रहे पीएम मोदी की सरकार पर मौजूदा कार्यकाल में कई मुद्दों को लेकर पलटी मारने का आरोप लगाया जा रहा है। ऐसे आरोप लगाने वाले लोग संभवतः इस तथ्य को अनदेखा कर रहे हैं कि दो बार पूर्ण बहुमत की केंद्र सरकार चलाने के दौरान भी मोदी कई फैसलों को वापस ले चुके हैं। विपक्षी नेताओं को शायद यह अपेक्षा नहीं थी कि मोदी गठबंधन के समीकरणों को समझते हुए अपनी शैली में बदलाव करेंगे, लेकिन इस मामले में भी मोदी उन्हें गलत साबित कर चुके हैं कि वह गठजोड़ की राजनीति में आमसहमति के साथ आगे बढ़ने में सक्षम हैं। हालिया घटनाक्रम यही संकेत करता है कि सरकार किसी जल्दबाजी में नहीं है। अगस्त की शुरुआत में सरकार ने प्रसारण सेवा (नियमन) विधेयक, 2024 वापस लिया। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने इस विधेयक के प्रारूप पर जनता से प्रतिक्रियाएं मंगाई हैं। उसके बाद सरकार ने सिविल सेवा में विशेषज्ञों की भर्ती से जुड़ा लेटरल एंट्री का कदम पीछे खींचा। लोजपा (रामविलास) प्रमुख और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने इसके विरोध में कहा कि आरक्षण के प्रविधान के बिना ऐसा कोई भी कदम स्वीकार्य नहीं होगा। जदयू नेताओं ने भी चिराग के सुर में सुर मिलाए। परिणामस्वरूप, संघ लोक सेवा आयोग ने लेटरल एंट्री से जुड़ी अधिसूचना रद कर दी। ऐसा करते हुए केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री चाहते हैं कि ऐसी नियुक्तियों के मामले में समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धांत का पालन किया जाए। स्पष्ट रूप से उनका संकेत आरक्षण के प्रविधान को लेकर था।

वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 पर भी सरकार को सहयोगियों के साथ ही यदाकदा समर्थन करने वाले मित्र दलों की आपत्तियों के चलते कदम पीछे खींचने पड़े। इस विधेयक के माध्यम से वक्फ बोर्ड के ढांचे को और व्यापक बनाते हुए उनमें महिलाओं, बोहरा और आगाखानी के अलावा मुस्लिम समुदाय के अन्य पिछड़ा वर्गों को प्रतिनिधित्व देने की पहल की गई है। साथ ही, बोहरा और आगाखानियों जैसे इस्लामिक वर्गों के लिए अलग से वक्फ बोर्ड स्थापित करने की भी बात है। हालांकि, सहयोगी दलों ने इस विधेयक का पूरी तरह विरोध नहीं किया, लेकिन उसे संसदीय समिति को भेजने का सुझाव जरूर दिया। इस मामले में तेलुगु देसम, जन सेना और लोजपा जैसी पार्टियों ने व्यापक चर्चा को प्राथमिकता दी। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने इसका विरोध किया। चूंकि संसद में विपक्षी दलों द्वारा इस विधेयक की राह में अवरोध खड़े करना तय था तो सरकार ने विधेयक के परीक्षण के लिए उसे संयुक्त संसदीय समिति को भेज दिया।

इन मामलों को देखते हुए मोदी सरकार पर पलटी मारने का आरोप लगा रहे लोग भूल जाते हैं कि संसद में दमदार बहुमत के बावजूद उन्होंने कई मुद्दों पर अपने कदम पीछे खींचे हैं। गठबंधन राजनीति के इस दौर में उन उदाहरणों को अनदेखा नहीं किया जा सकता जब पूर्ण बहुमत की मोदी सरकार कुछ विरोधी स्वरों के बीच भी झुक गई थी। अपने रुख से पीछे हटने की सबसे बड़ी मिसाल तीन कृषि सुधार कानूनों की वापसी थी, जिन कानूनों के विरोध में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में लंबे समय तक किसानों की घेराबंदी रही। समय-समय पर उस आंदोलन के हिंसक होने के बावजूद सरकार ने कोई कड़ी कार्रवाई नहीं की। जबकि भाजपानीत राजग के पास तब लोकसभा में 350 से अधिक सांसदों का समर्थन था। वर्ष 2015 में भूमि अधिग्रहण कानून को भी वापस ले लिया गया, जिसके लिए लगातार अध्यादेश का सहारा लिया जा रहा था। कारोबारी सुगमता के लिए जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया आसान बनाने की मंशा से उठाए गए इस कदम का विपक्षी दलों और किसान संगठनों की ओर से भारी विरोध हुआ। उक्त कानून लोकसभा में पारित हो गया, लेकिन राज्यसभा में अटक गया। अंत में, मोदी को घोषणा करनी पड़ी कि इस अध्यादेश को निष्प्रभावी कर दिया जाएगा।

कदम वापसी की इस सूची में एक नाम अगस्त 2022 में डाटा प्रोटेक्शन बिल से जुड़ा है, जो कई साल पहले प्रस्तावित किया गया था। सरकार ने एक उच्चस्तरीय समिति के सुझावों को समायोजित करते हुए पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल, 2019 लोकसभा में पेश किया। यह विधेयक संयुक्त संसदीय समिति को भेजा गया, जिसने उसमें बड़े पैमाने पर परिवर्तन किए। इसके बाद मोदी सरकार ने विधेयक को वापिस लेने का फैसला किया। करीब साल भर बाद सरकार ने संसद में नया विधेयक रखा। डाटा प्रोटेक्शन बिल पर उतार-चढ़ाव की यह स्थिति दर्शाती है कि पूर्ण बहुमत के बावजूद विधि निर्माण को लेकर मोदी सरकार का रवैया कितना उदार एवं लचीला रहा।

अब स्थिति अलग और खासी जटिल है। जब कोई सरकार अस्तित्व के लिए अन्य दलों पर निर्भर होती है तो उसे गठबंधन धर्म को समझते हुए सलाह-मशविरे के साथ काम करना पड़ता है। अटल बिहारी वाजपेयी ने इसी मंत्र को आत्मसात करते हुए सफलतापूर्वक गठबंधन सरकार चलाई। लोकसभा चुनाव परिणाम के कुछ महीने गुजरने के बाद मोदी की प्रतिक्रिया से भी यही संकेत मिलते हैं कि वह इन पहलुओं के प्रति सचेत हैं और अपेक्षित सामंजस्य में लगे हैं। जहां तक लचीलेपन का सवाल है तो वह व्यापक बहुमत के बावजूद अपनी नीतियां बदल चुके हैं। ऐसे में अब कई नीतियों को लेकर रुख-रवैये में परिवर्तन को लेकर उन्हें निशाना बनाने वाले नेता शायद प्रकृति के उस सबक को अनदेखा कर रहे हैं कि तूफान में वही पेड़ बचते हैं, जो हवा के रुख के अनुरूप खुद को ढाल लेते हैं। जो पेड़ हवा के रुख से तालमेल नहीं बिठा पाते वे उखड़ जाते हैं। ऐसे में, मोदी सरकार के अस्तित्व का प्रश्न भी इसी पहलू में निहित है कि वह बदली हुई परिस्थितियों से किस प्रकार तालमेल बिठाए रखने में सफल रहती है।

(लेखक लोकतांत्रिक मामलों के विशेषज्ञ एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)
response@jagran.com

मत प्रचार की स्वतंत्रता पर हो पुनर्विचार

आरके सिन्हा

लोगों को मत प्रचार-प्रसार से जुड़ी छूट की कोई जरूरत ही नहीं, क्योंकि यह कोई दुकान या व्यापार नहीं है

मत प्रचार की आड़ में मतांतरण का सिलसिला। फाइल

https://t.me/AllNewsPaperPaid

भारत के प्रत्येक नागरिक को किसी मत या पंथ को मानने या न मानने या फिर किसी भी मत से जुड़ने का अधिकार संविधान देता है, पर किसी प्रलोभन या गलतफहमी में योजनाबद्ध रूप से किसी तरह के मतांतरण को अपराध माना गया है। इस आलोक में उत्तर प्रदेश की एक विशेष अदालत द्वारा हाल में अवैध मत परिवर्तन के मामले में दोषी करार दिए गए 12 लोगों को उम्रकैद और चार अन्य दोषियों को 10-10 वर्ष कैद की सजा सुनाना महत्वपूर्ण है। कोर्ट के मुताबिक, उमर गौतम और अन्य अभियुक्त एक साजिश के तहत धार्मिक उन्माद, वैमनस्य और नफरत फैलाकर देशभर में अवैध मतांतरण का गिरोह चला रहे थे। उनके तार कई दूसरे देशों से भी जुड़े थे। वे हवाला के जरिये विदेश से धन भेजे जाने के मामले में भी लिप्त थे। वे देश में आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं और दिव्यांगों को लालच देकर और उन पर अनुचित दबाव बनाकर बड़े पैमाने पर उनका मत परिवर्तन करा रहे थे। उमर गौतम को मुफ्ती काजी जहांगीर आलम कासमी के साथ 2021 में दिल्ली से गिरफ्तार किया गया था। वह एक ऐसे अवैध संगठन का संचालन कर रहा था, जो उत्तर प्रदेश में मूक-बधिर छात्रों और गरीब लोगों को इस्लाम में मतांतरित कराने में शामिल था। उमर गौतम पहले हिंदू था, लेकिन उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया और मतांतरण कराने के अवैध धंधे में सक्रिय हो गया। उसने करीब एक हजार गैर-मुस्लिम लोगों को इस्लाम में मतांतरित कराया।

भारतीय संविधान धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है, जिसमें स्वेच्छा या स्वविवेक से मत बदलने का अधिकार भी शामिल है। संविधान के अनुच्छेद 25 और 26 में धार्मिक स्वतंत्रता और मत बदलने के अधिकार की बात तो कही गई है, पर उमर गौतम और उसके साथी गरीबों को लालच देकर और जोर-जबरदस्ती से मतांतरण करवा रहे थे। गौतम और उसका गिरोह भूल गया था कि मत परिवर्तन सामाजिक एकता को कमजोर कर सकता है और समाज में भयंकर नफरत पैदा कर सकता है। भारत में मत परिवर्तन एक संवेदनशील मुद्दा है, जिसमें कानूनी, धार्मिक और सामाजिक सभी पहलू शामिल हैं। कुछ साल पहले केरल के प्रतिष्ठित फिल्म निर्माता-निर्देशक अली अकबर और उनकी ईसाई पत्नी लूसी अम्मा ने आर्य समाज में हवन के जरिये हिंदू धर्म अंगीकार कर लिया था। आर्य समाज के स्वामी जी द्वारा उनका नया नामकरण भी कर दिया गया। अली अकबर को नया नाम मिला था राम सिम्हन। हिंदू धर्म ही क्यों? यह प्रश्न पूछे जाने पर अली अकबर ने कहा था, 'क्योंकि हिंदू धर्म कोई धर्म नहीं, बल्कि एक संस्कृति है। यहां नर्क में जाने का डर नहीं है। आप एक इंसान की तरह जी सकते हैं, क्योंकि भगवान आपके अंदर हैं। अपने भीतर ईश्वर को देखना एक महान विचार है।' कहते हैं कि राम सिम्हन केरल में हिंदू धर्म अपनाने वाले पहले मुसलमान थे, लेकिन यह राम सिम्हन के स्वविवेकपूर्ण निर्णय को दर्शाता है। इस पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

किसी को लालच देकर या जोर जबरदस्ती मतांतरण करवाना तो कतई सही नहीं माना जा सकता है। समझ नहीं आता कि कुछ मतों से जुड़े लोग क्यों इसी फिराक में रहते हैं कि उनके मत से अन्य मतों को मानने वाले जुड़ जाएं। कई इस्लामिक और ईसाई संगठन इसी कोशिश में रहते हैं कि दूसरे मत को मानने वाले उनके मजहब का हिस्सा बन जाएं? यह कोई बात हुई क्या? फिर यदि बाकी मतों को मानने वाले लोग भी यही करने लगें तो समाज में भाईचारा कहां और कैसे बचा रहेगा। अगर कोई अपने मन से उस मत को त्याग देता है, जिसमें उसका जन्म हुआ है तब तो कोई बात नहीं है। संगीत निर्देशक एआर रहमान का ही उदाहरण लें, जिन्होंने खुद ही हिंदू धर्म छोड़कर इस्लाम स्वीकार कर लिया। उनके परिवार के बाकी सदस्यों ने भी इस्लाम अपना लिया। यहां तक तो सब ठीक है, पर कुछ तत्व सुदूर इलाकों में रहने वालों को अपने पाले में लाने के जुगाड़ में रहते हैं। इस सबकी तो हमारा संविधान अनुमति नहीं देता। जब उमर गौतम जैसों पर कार्रवाई होती है तो कुछ कथित बुद्धिजीवी प्रलाप करने लगते हैं। पिछले कई वर्षों से पंजाब से खबरें आ रही हैं कि राज्य में दलित सिखों को लालच देकर ईसाई मत से जोड़ा जा रहा है।

यह सवाल अपने आप में बेहद महत्वपूर्ण है कि क्या भारत में मत प्रचार की अनुमति जारी रहनी चाहिए? कभी-कभी लगता है कि इस मसले पर देश में बहस हो ही जाए कि क्या भारत में मत प्रचार की स्वतंत्रता जारी रहे अथवा नहीं? देखा जाए तो केवल मत पालन की स्वतंत्रता होनी चाहिए। मत के प्रचार-प्रसार की छूट की कोई आवश्यकता ही नहीं। मत कोई दुकान या व्यापार तो है नहीं जिसका प्रचार-प्रसार करना जरूरी हो। अगर हम इतिहास के पन्नों को खंगालें तो देखते हैं कि भारत के संविधान निर्माताओं ने सभी धार्मिक समुदायों को अपने मत के प्रचार की छूट दी थी। क्या इसकी कोई आवश्यकता थी? बेशक भारत में ईसाई मत की तरफ से शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में ठोस और ईमानदारी से काम किया गया है, पर कहने वाले कहते हैं कि उस सेवा की आड़ में मतांतरण का ही उसका मुख्य लक्ष्य रहा है। उधर इस्लाम का प्रचार करने वाले बिना कुछ किए ही मतांतरण करवाने के मौके खोजते हैं। अब आप देखें कि आर्य समाज, सनातन धर्म और सिखों की तरफ से देश में सैकड़ों स्कूल, कालेज और अस्पताल वगैरह चल रहे हैं, लेकिन इन्होंने किसी ईसाई या मुसलमान के मतांतरण का कभी प्रयास नहीं किया। लोगों को अपने मत को मानने की तो अनुमति होनी चाहिए, पर अपने मत का प्रचार करने या मतांतरण करने की इजाजत तो नहीं दी जा सकती।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

मधुर वाणी

मधुर वाणी जीवन के सामाजिक और व्यावहारिक पक्ष का सर्वश्रेष्ठ सद्गुण है। इसका वैशिष्ट्य है, यदि कोई शोकाघात अथवा कुसंग के प्रभाव से पाषाणवत् हो गया हो, तो वह भी प्रसन्न और संवेदना से युक्त हो जाता है। यदि हम सर्वत्र सुख और प्रसन्नता का परिवेश चाहते हैं, तो समाज में विनम्रता के साथ परस्पर मधुर वार्तालाप करना चाहिए। लोक में सुख, शांति और समुल्लास की सुप्रतिष्ठा का मुख्य हेतु है-मधुर वचन का सप्रेम दान। कोई कितना भी कष्ट में हो, यदि उससे दो मीठे बोल लें तो संभवतः वह कुछ देर के लिए अपनी पीड़ा भूल जाएगा। वाणी से किसी के भी हृदय में स्थान बनाया जा सकता है।

एक सूक्ति है-वचने किं दारिद्रयम्' अर्थात बोलने में भी क्यों कंजूसी करना? आज समाज में जो परस्पर विद्वेष और उपेक्षित व्यवहार देखने-सुनने में आता है, उसका एकमात्र कारण है हमारी जीवनशैली मधुर-स्नेह वार्ता से कृपण हो गई है। हमारे कवियों ने तदर्थ उपदेशित किया है-वाणी ऐसी निकलनी चाहिए, जिसको सुनने वाले का मन प्रसन्नता से भर जाए। मीठा बोलने में न ही कोई कष्ट होता है और न ही कुछ धनादि की हानि होती है। मधुर वाणी ही विनम्रता का आधार है। कटुभाषण अत्यंत अनर्थकारी और विवाद का मूल है। आज कहीं परस्पर विद्वेष और द्वंद्व दिखाई-सुनाई पड़ता है, तो उसके पीछे उसका मूल कारण होता है कटु तीखे वचन। तीखे बाणों से मनुष्य के हृदय में उतनी पीड़ा नहीं होती है, जितनी कठोर वचनों से। शस्त्रादि के घात से कटा हुआ बड़े से बड़ा घाव भर जाता है, किंतु कटुवचन रूपी शस्त्र से हुआ घाव जीवन भर नहीं भरता है। वाणी का मधुर प्रयोग सदा करना चाहिए, इससे पराए भी अपने हो जाते हैं और रूठे लोग भी साथ देने वाले हो जाते हैं। अतः हम सदा-सर्वत्र मधुर-स्नेहयुक्त वचनों का आदान-प्रदान करें, जिससे समाज में बंधुत्व और प्रेम का सुंदर साम्राज्य स्थापित हो।

आचार्य नारायण दास

देश का नाम बदलने की जटिल प्रक्रिया

डा. महेश परिमल

आमतौर पर ऐसे देश भी अपना नाम बदलते हैं, जो पूर्व में किसी अन्य देश के गुलाम थे

हम सबने देखा कि कैसे मद्रास चेन्नई, बेंगलोर बेंगलुरु, उड़ीसा ओडिशा, कलकत्ता कोलकाता, इलाहाबाद प्रयागराज, हबीबगंज रानी कमलापति, होशंगाबाद नर्मदापुरम, उत्तरांचल उत्तराखंड, पांडिचेरी पुदुचेरी, बंबई मुंबई हो गए। हमारे कई पड़ोसी देशों के नाम भी बदले हैं। जिसे हम बर्मा कहते थे, वह अब म्यांमार हो गया है। तुर्की ने अपना नाम तुर्किये कर लिया है। चेक रिपब्लिक अब नए नाम चेकिया से पहचाना जाने लगा है।

2011 में आस्ट्रेलिया के एक शहर ''स्पीड'' के निवासियों ने एक महीने के लिए अपने शहर का नाम बदलकर ''स्पीडकिल्स'' रखा था। इसकी वजह यही थी कि उस शहर में लोग बहुत तेजी से अपने वाहन दौड़ाते थे। इससे दुर्घटनाएं बढ़ने लगी थीं। वाहन चालकों में जागृति लाने के लिए ऐसा किया गया था। ऐसे देश भी अपना नाम बदलते हैं, जो भूतकाल में किसी अन्य देश के गुलाम थे। गुलामी की कड़वी यादों को भुलाने के लिए वे ऐसा करते हैं। ब्रिटेन की गुलामी करने वाले ''सिलोन'' ने आजादी प्राप्त करने के बाद अपना नाम बदलकर ''श्रीलंका'' कर दिया। ''अपर वोल्टा'' ने अपना नाम बदलकर ''बुर्किन फासो'' कर लिया। 2019 में ''मेसेडोनिया'' ने अपना नाम बदलकर ''नार्थ मेसेडोनिया'' कर लिया था। ग्रीस में भी ''मेसेडोनिया'' नामक प्रदेश है। इससे ग्रीस काफी समय से उससे अपना नाम बदलने को कह रहा था।

नया नाम देने की आखिर प्रकिया क्या होती है? वास्तव में यह प्रक्रिया जटिल और काफी खर्चीली भी है। सबसे पहले तो नाम बदलने के लिए देश के भीतर ही मतदान होता है। इसके बाद नया नाम संयुक्त राष्ट्र यानी यूएन को भेजा जाता है। यूएन की छह अधिकृत भाषा (अरबी, मंदारिन, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश) में यह नाम किस तरह से लिखा जाएगा, यह बताना होता है। यह सब ठीक-ठाक रहा, तो प्रस्तावित नाम यूएन द्वारा मंजूर किया जाता है। इसके बाद ही वह देश नया नाम प्राप्त करता है। रही बात खर्च की, तो नया नाम मिलने के बाद उस देश की सेना की वर्दी, देश की मुद्रा, सरकारी दस्तावेज और कई चीजों का नाम भी बदलना होता है। इसमें पेपरवर्क, वेबसाइट, सरकारी कार्यालयों में साइनेज और सभी आफिसों के लेटरहेड बदलने होते हैं। इस सभी कार्यों को संपादित करने में काफी खर्च होता है। 2018 में अफ्रीकी देश ''स्वाजीलैंड'' का नाम बदलकर ''इस्वातिनी'' किया गया। इस पर करीब 50 करोड़ रुपये का खर्च आया। वह भारत के क्षेत्रफल से करीब 10 गुना छोटा है। भारत की 140 करोड़ से अधिक की आबादी के मुकाबले उस देश की आबादी केवल 12 लाख ही है। आप कल्पना कर सकते हैं कि अब यदि भारत जैसे विशाल देश का नाम बदलना हो, तो कितनी बेशुमार दौलत खर्च होगी?

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

खतरनाक राह पर राहुल गांधी

'कांग्रेस को अलग राह पर ले जाते राहुल' शीर्षक से लिखे आलेख में संजय गुप्त ने राहुल गांधी के पार्टी के सिद्धांतों से भटकाव का विवेचन किया है। राहुल गांधी के हालिया वक्तव्यों और भाषणों से ऐसा अहसास होता है कि उन्हें कांग्रेस की विचारधारा और उसकी पुरानी रीतियों-नीतियों से कोई सरोकार नहीं रह गया है। ऐसा लगता है कि राहुल गांधी ने सत्ता प्राप्ति को ही अपना अंतिम लक्ष्य बना लिया है, जिसके लिए वह कुछ भी करने को आमादा हैं। यहां तक कि उन्हें आतंकवादी गतिविधियों में शामिल लोगों से मेलजोल से भी परहेज नहीं रह गया है। जिस खालिस्तानी आतंक के कारण उनकी दादी इंदिरा गांधी और अन्य कई नेताओं को अपनी जान तक गंवानी पड़ी, उन खालिस्तानियों का वैचारिक समर्थन करना एक बड़ी त्रासद स्थिति को दर्शाता है। यही नहीं, बार-बार जातिगत जनगणना और आरक्षण का दायरा बढ़ाने का उनका एलान देश में जातिवाद की आग में घी डालने का कुत्सित प्रयास ही कहा जाएगा। प्रतीत होता है कि वह सत्ता पाने के लिए देश को अराजकता की भट्ठी में झोंक रहे हैं। चाहे भविष्य में इसके लिए देश को इसकी कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़ जाए।

वेदप्रकाश पांडेय, अंबेडकर नगर, उप्र

जमानत मिलने का उत्साह

सुप्रीम कोर्ट द्वारा अरविंद केजरीवाल को ईडी वाले केस में जमानत देने के तुरंत बाद ही सीबीआइ का प्रवेश संशय पैदा करता है। दूसरी ओर यह भी पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को आबकारी नीति घोटाले के आरोपों से कोर्ट ने क्लीन चिट कतई नहीं दी है, वरन जमानत देते समय सख्त शर्तें लगाई गई हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री सचिवालय नहीं जा सकते। उपराज्यपाल की अनुमति के बगैर कोई पेपर साइन नहीं कर सकते आदि शर्तें निश्चित ही कठोर शर्तों के दायरे में आती हैं। दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार ने प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए पटाखों पर बैन लगाया हुआ है। दिल्ली में किसी भी दुकानदार के पास पटाखों की खेप मिलने पर सख्त कानूनी कार्रवाई की जाती है। यहां तक कि दिल्ली में विवाह उत्सवों में भी पटाखों पर प्रतिबंध लगा है, लेकिन दिल्ली के मुख्यमंत्री जैसे ही जमानत पर बाहर आए देश की राजधानी दिल्ली पटाखों की गड़गड़ाहट से गूंज उठी। आखिरकार जनसाधारण के लिए बनाई गई दिल्ली सरकार की नीतियां स्वयं की पार्टी पर लागू नहीं होतीं? जमानत मिलना हर व्यक्ति का संवैधानिक अधिकार होता है। इसलिए छोटे-बड़े नेताओं को अति उत्साह से बचना चाहिए।

दीपक गौतम, सोनीपत

मेलबाक्स

विभाजनकारी राजनीति

संजय गुप्त का आलेख 'कांग्रेस को अलग राह पर ले जाते राहुल' एकदम सटीक है। राहुल गांधी के पूर्वजों ने अच्छे-बुरे जो भी कार्य किए हों, लेकिन देश के बाहर देश, देश के संस्थानों की बुराई कभी नहीं की। चीन में उन्हें सब हरा-हरा दिखता है और उसका महिमामंडन करते हैं। इस अमेरिका दौरे में तो राहुल गांधी ने सारी सीमाएं लांघ दीं। भारत विरोध के लिए कुख्यात अमेरिकी सांसद से ही मिले। सिखों के बारे तो ऐसा बयान दिया, जैसा भारत के किसी राजनीतिक विरोधी सिख ने भी नहीं दिया। उन्होंने 100 प्रतिशत झूठ बोला कि भारत में सिख पगड़ी, कड़ा पहनने से और पहन कर गुरुद्वारा जाने से डरते हैं। जाहिर है खालिस्थान समर्थक पन्नू को आग में डालने के लिए घी दे दिया। उनके पूर्वजों जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी ने तुष्टीकरण की राजनीति तो अवश्य की, लेकिन जातिवाद और क्षेत्रवाद को बढ़ावा नहीं दिया। आरक्षण को भी मुख्य एकमात्र मुद्दा नहीं बनाया। यह देश को विभाजित करने का काम राहुल गांधी जोर-शोर से कर रहे हैं। इसका प्रमाण है जातिगत जनगणना पर बेहद जोर। क्षेत्रवाद बढ़ाने के लिए कहा कि भारत में तमिल, तेलुगु भाषियों से कहा जा रहा है कि उनकी भाषा, संस्कृति और खानपान हिंदी भाषियों से कमतर है।

सीपी बंसल, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई. एन. एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

उदारता से ही व्यक्तित्व विराट बनता है

चौंकाने वाला निर्णय

अप्रत्याशित फैसले लेने के लिए चर्चित दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने यह कहकर एक बार फिर चौंकाया कि वह दो दिन बाद मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दे देंगे। उन्होंने जिस तरह यह स्पष्ट नहीं किया कि दिल्ली का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा, उससे यह स्पष्ट है कि अगले दो दिन तक अटकलबाजी का दौर चलता रहेगा और इससे देश भर में केजरीवाल और दिल्ली की चर्चा होती रहेगी। यह स्पष्ट ही है कि केजरीवाल यह चाह रहे होंगे कि वह चर्चा के केंद्र में बने रहें। उन्होंने यह कहते हुए त्यागपत्र दिया कि वह आम जनता के समक्ष अग्निपरीक्षा देना चाहते हैं, लेकिन कोई भी समझ सकता है कि त्यागपत्र के मूल कारण कुछ और ही हैं। पहला कारण तो यही दिखता है कि आबकारी नीति घोटाले में सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें जमानत तो दे दी, लेकिन उन पर कई कठोर शर्तें लगा दीं। इन शर्तों के कारण मुख्यमंत्री के रूप में उनके लिए कार्य करना असंभव सा हो गया था और सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें न केवल मुख्यमंत्री कार्यालय जाने से रोका, बल्कि उपराज्यपाल की अनुमति के बिना किसी सरकारी फाइल पर हस्ताक्षर करने से भी रोक दिया। इतना ही नहीं, यह भी शर्त लगाई कि वह आबकारी नीति घोटाले पर कुछ नहीं कह सकते। हैरानी नहीं कि केजरीवाल ने यह पाया हो कि उनके पास त्यागपत्र देने के अलावा और कुछ उपाय नहीं, लेकिन यदि उन्हें राजनीतिक शुचिता और नैतिकता की परवाह होती तो उन्हें तभी त्यागपत्र दे देना चाहिए था जब आबकारी नीति घोटाले में उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। आश्चर्यजनक रूप से उन्होंने जेल से ही सरकार चलाने की जिद पकड़ी। इस दौरान वह और उनके साथी भले ही यह कहते रहे हों कि नई आबकारी नीति लाकर कहीं कोई अनियमितता नहीं की गई, लेकिन इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं कि अगर इस नीति में कहीं कोई गड़बड़ी नहीं थी तो उसे वापस क्यों लिया गया। यह ठीक है कि इस घोटाले में अन्य अनेक लोगों के साथ अरविंद केजरीवाल को भी जमानत मिल गई है, लेकिन जमानत क्लीन चिट का पर्याय नहीं हो सकती। भले ही केजरीवाल कह रहे हों कि उन्हें गलत तरीके से फंसाया गया है और वह जनता से ईमानदारी का प्रमाण पत्र लेने के बाद मुख्यमंत्री पद संभालेंगे, लेकिन आबकारी घोटाले का सच-झूठ जनता को नहीं, देश की अदालतों को तय करना है। केजरीवाल के त्यागपत्र देने का एक कारण यह भी दिखता है कि वह हरियाणा और फिर आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव में जनता की सहानुभूति पाना चाहते हैं। उन्होंने दिल्ली के चुनाव करीब तीन माह पहले नवंबर में कराने की मांग भी की है। यह समय ही बताएगा कि उन्हें सहानुभूति का लाभ प्राप्त करने में सफलता मिलती है या नहीं, लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि उन्होंने अपने अब तक के राजनीतिक जीवन में जिस तरह कई बार अपने ही कहे को नकारकर फैसले लिए हैं, उससे उनकी वह छवि नहीं रह गई जो पहले थी।

खुलेंगे समृद्धि के द्वार

मखाना, लीची एवं आम जैसे प्रदेश के उत्पाद देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं। इनमें लीची और मखाना उत्पादन के क्षेत्र सीमित हैं। देश में उत्पादित होने वाली लीची का 65 प्रतिशत उत्पादन यहां के किसान करते हैं। शाही लीची और उच्च क्वालिटी का मखाना यहां से निर्यात किया जाता है। इनकी प्रोसेसिंग व पैकेजिंग की यूनिटें भी लगी हैं। उत्पादन से जुड़े किसान निर्यात कर आर्थिक रूप से मजबूत बन रहे हैं। लीची उत्पादन की संभावनाओं को देखते हुए राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र ने जिलों में सर्वे कराया है। सर्वे में तथ्य सामने आया है कि अब सिर्फ मुजफ्फरपुर ही नहीं, बल्कि अन्य जिलों के किसान भी लीची की खेती कर सकते हैं। संभावना जताई गई है कि यदि इन जिलों में लीची की खेती शुरू की जाए तो भारत, चीन से अधिक लीची का उत्पादन करने लगेगा। विशेषज्ञों के अनुसार किसान धान-गेहूं की जगह लीची की खेती करें तो कम लागत में उन्हें ज्यादा फायदा होगा। मेहनत भी कम करनी पड़ेगी। सर्वे में जिन जिलों में लीची उत्पादन की बात सामने आई है, उनमें लीची उत्पादन को लेकर किसानों और युवाओं को यदि सरकार की ओर से प्रोत्साहित करने की योजना पर काम हो तो रोजगार के साथ आर्थिक समृद्धि के द्वार खुल सकते हैं। सर्वे में जो भूमि लीची उत्पादन के लिए उपयुक्त मिली हैं, वहां के किसानों व युवाओं के बीच कार्यशाला आयोजित कर उन्हें प्रेरित किया जा सकता है। न्यूनतम दर पर पौधे उपलब्ध कराए जा सकते हैं।

> प्रदेश के 13 जिले लीची उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं। वहां के युवाओं और किसानों को सरकार की मदद मिले तो रोजगार तथा समृद्धि के द्वार खुल सकते हैं।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या बंगाल में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी जूनियर डाक्टरों का धरने पर डटे रहना सही है?

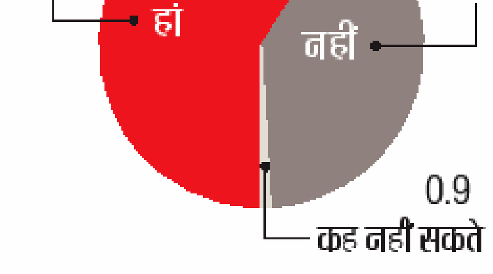

आज का सवाल
क्या अरविंद केजरीवाल के इस्तीफे से आम आदमी पार्टी को चुनावी लाभ मिलेगा?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।
सभी आंकड़े प्रतिशत में।

सहमति की राह पर सरकार

ए. सूर्यप्रकाश

मोदी सरकार पर पलटी मारने का आरोप लगा रहे लोग भूल जाते हैं कि पूर्व में पूर्ण बहुमत के बावजूद पीएम मोदी ने कई नीतिगत मुद्दों पर अपने कदम पीछे खींचे

कड़े फैसलों के लिए खास पहचान बनाने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कार्यशैली तीसरे कार्यकाल में कुछ बदली हुई लग रही है। प्रतीत होता है कि वह स्वयं को नई राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप ढालने की दिशा में बढ़ रहे हैं। अपने सुदीर्घ राजनीतिक जीवन में पहली बार गठबंधन सरकार चला रहे पीएम मोदी की सरकार पर मौजूदा कार्यकाल में कई मुद्दों को लेकर पलटी मारने का आरोप लगाया जा रहा है। ऐसे आरोप लगाने वाले लोग संभवतः इस तथ्य को अनदेखा कर रहे हैं कि दो बार पूर्ण बहुमत की केंद्र सरकार चलाने के दौरान भी मोदी कई फैसलों को वापस ले चुके हैं। विपक्षी नेताओं को शायद यह अपेक्षा नहीं थी कि मोदी गठबंधन के समीकरणों को समझते हुए अपनी शैली में बदलाव करेंगे, लेकिन इस मामले में भी मोदी उन्हें गलत साबित कर चुके हैं कि वह गठजोड़ की राजनीति में आमसहमति के साथ आगे बढ़ने में सक्षम हैं। पिछले कुछ समय का घटनाक्रम यही संकेत करता है कि सरकार किसी जल्दबाजी में नहीं है। अगस्त की शुरुआत में सरकार ने प्रसारण सेवा (नियमन) विधेयक, 2024 वापस लिया। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने इस विधेयक के प्रारूप पर जनता से प्रतिक्रियाएं मंगाई हैं। उसके बाद सरकार ने सिविल सेवा में विशेषज्ञों की भर्ती से जुड़ा लेटरल एंट्री का कदम पीछे खींचा। लोजपा (रामविलास) प्रमुख और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने इसके विरोध में कहा कि आरक्षण के प्रविधान के बिना ऐसा कोई भी कदम स्वीकार्य नहीं होगा। जदयू नेताओं ने भी चिराग के सुर में सुर मिलाए। परिणामस्वरूप, संघ लोक सेवा आयोग ने लेटरल एंट्री से जुड़ी अधिसूचना रद कर दी। ऐसा करते हुए केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री चाहते हैं कि ऐसी नियुक्तियों के मामले में समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धांत का पालन किया जाए। स्पष्ट रूप से उनका संकेत आरक्षण के प्रविधान को लेकर था।

वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 पर भी सरकार को सहयोगियों के साथ ही यदाकदा समर्थन करने वाले मित्र दलों की आपत्तियों के चलते कदम पीछे खींचने पड़े। इस विधेयक के माध्यम से वक्फ बोर्ड के ढांचे को और व्यापक बनाते हुए उनमें महिलाओं, बोहरा और आगाखानी के अलावा मुस्लिम समुदाय के अन्य पिछड़ा वर्गों को प्रतिनिधित्व देने की पहल की गई है। साथ ही, बोहरा और आगाखानियों जैसे इस्लामिक वर्गों के लिए अलग से वक्फ बोर्ड स्थापित करने की भी बात है। हालांकि, सहयोगी दलों ने इस विधेयक का पूरी तरह विरोध नहीं किया, लेकिन उसे संसदीय समिति को भेजने का सुझाव जरूर दिया। इस मामले में तेलुगु देसम, जन सेना और लोजपा जैसी पार्टियों ने व्यापक चर्चा को प्राथमिकता दी। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने इसका विरोध किया। चूंकि संसद में विपक्षी दलों द्वारा इस विधेयक की राह में अवरोध खड़े करना तय था तो सरकार ने विधेयक के परीक्षण के लिए उसे संयुक्त संसदीय समिति को भेज दिया।

इन मामलों को देखते हुए मोदी सरकार पर पलटी मारने का आरोप लगा रहे लोग भूल जाते हैं कि संसद में दमदार बहुमत के बावजूद उन्होंने कई मुद्दों पर अपने कदम पीछे खींचे हैं। गठबंधन राजनीति के इस दौर में उन उदाहरणों को अनदेखा नहीं किया जा सकता जब पूर्ण बहुमत की मोदी सरकार कुछ विरोधी स्वरों के बीच भी झुक गई थी। अपने रुख से पीछे हटने की सबसे बड़ी मिसाल तीन कृषि सुधार कानूनों की वापसी थी, जिन कानूनों के विरोध में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में लंबे समय तक किसानों की घेराबंदी रही। समय-समय पर उस आंदोलन के हिंसक होने के बावजूद सरकार ने कोई कड़ी कार्रवाई नहीं की। जबकि भाजपानीत राजग के पास तब लोकसभा में 350 से अधिक सांसदों का समर्थन था। वर्ष 2015 में भूमि अधिग्रहण कानून को भी वापस ले लिया गया, जिसके लिए लगातार अध्यादेश का सहारा लिया जा रहा था। कारोबारी सुगमता के लिए जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया आसान बनाने की मंशा से उठाए गए इस कदम का विपक्षी दलों और किसान संगठनों की ओर से भारी विरोध हुआ। उक्त कानून लोकसभा में पारित हो गया, लेकिन राज्यसभा में अटक गया। अंत में, मोदी को घोषणा करनी पड़ी कि इस अध्यादेश को निष्प्रभावी कर दिया जाएगा।

कदम वापसी की इस सूची में एक नाम अगस्त 2022 में डाटा प्रोटेक्शन बिल से जुड़ा है, जो कई साल पहले प्रस्तावित किया गया था। सरकार ने एक उच्चस्तरीय समिति के सुझावों को समायोजित करते हुए पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल, 2019 लोकसभा में पेश किया। यह विधेयक संयुक्त संसदीय समिति को भेजा गया, जिसने उसमें बड़े पैमाने पर परिवर्तन किए। इसके बाद मोदी सरकार ने विधेयक को वापिस लेने का फैसला किया। करीब साल भर बाद सरकार ने संसद में नया विधेयक रखा। डाटा प्रोटेक्शन बिल पर उतार-चढ़ाव की यह स्थिति दर्शाती है कि पूर्ण बहुमत के बावजूद विधि निर्माण को लेकर मोदी सरकार का रवैया कितना उदार एवं लचीला रहा।

अब स्थिति अलग और खासी जटिल है। जब कोई सरकार अस्तित्व के लिए अन्य दलों पर निर्भर होती है तो उसे गठबंधन धर्म को समझते हुए सलाह-मशविरे के साथ काम करना पड़ता है। अटल बिहारी वाजपेयी ने इसी मंत्र को आत्मसात करते हुए सफलतापूर्वक गठबंधन सरकार चलाई। लोकसभा चुनाव परिणाम के कुछ महीने गुजरने के बाद मोदी की प्रतिक्रिया से भी यही संकेत मिलते हैं कि वह इन पहलुओं के प्रति सचेत हैं और अपेक्षित सामंजस्य में लगे हैं। जहां तक लचीलेपन का सवाल है तो वह व्यापक बहुमत के बावजूद अपनी नीतियां बदल चुके हैं। ऐसे में अब कई नीतियों को लेकर रुख-रवैये में परिवर्तन को लेकर उन्हें निशाना बनाने वाले नेता शायद प्रकृति के उस सबक को अनदेखा कर रहे हैं कि तूफान में वही पेड़ बचते हैं, जो हवा के रुख के अनुरूप खुद को ढाल लेते हैं। जो पेड़ हवा के रुख से तालमेल नहीं बिठा पाते वे उखड़ जाते हैं। ऐसे में, मोदी सरकार के अस्तित्व का प्रश्न भी इसी पहलू में निहित है कि वह बदली हुई परिस्थितियों से किस प्रकार तालमेल बिठाए रखने में सफल रहती है।

(लेखक लोकतांत्रिक मामलों के विशेषज्ञ एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

अवधेश राजपूत

मत प्रचार की स्वतंत्रता पर हो पुनर्विचार

आरके सिन्हा

लोगों को मत प्रचार-प्रसार से जुड़ी छूट की कोई आवश्यकता ही नहीं, क्योंकि यह कोई दुकान या व्यापार नहीं है

https://t.me/AIINewsPaperPaid

भारत के प्रत्येक नागरिक को किसी मत या पंथ को मानने या न मानने या फिर किसी भी मत से जुड़ने का अधिकार संविधान देता है, पर किसी प्रलोभन या गलतफहमी में योजनाबद्ध रूप से किसी तरह के मतांतरण को अपराध माना गया है। इस आलोक में उत्तर प्रदेश की एक विशेष अदालत द्वारा हाल में अवैध मत परिवर्तन के मामले में दोषी करार दिए गए 12 लोगों को उम्रकैद और चार अन्य दोषियों को 10-10 वर्ष कैद की सजा सुनाना महत्वपूर्ण है। कोर्ट के मुताबिक, उमर गौतम और अन्य अभियुक्त एक साजिश के तहत धार्मिक उन्माद, वैमनस्य और नफरत फैलाकर देशभर में अवैध मतांतरण का गिरोह चला रहे थे। उनके तार कई दूसरे देशों से भी जुड़े थे। वे हवाला के जरिये विदेश से धन भेजे जाने के मामले में भी लिप्त थे। वे देश में आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं और दिव्यांगों को लालच देकर और उन पर अनुचित दबाव बनाकर बड़े पैमाने पर उनका मत परिवर्तन करा रहे थे। उमर गौतम को मुफ्ती काजी जहांगीर आलम कासमी के साथ 2021 में दिल्ली के जामिया नगर से गिरफ्तार किया गया था। वह एक ऐसे अवैध संगठन का संचालन कर रहा था, जो उत्तर प्रदेश में मूक-बधिर छात्रों और गरीब लोगों को इस्लाम में मतांतरित कराने में शामिल था। उमर गौतम पहले हिंदू था, लेकिन उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया और मतांतरण कराने के अवैध धंधे में सक्रिय हो गया। उसने करीब एक हजार गैर-मुस्लिम लोगों को इस्लाम में मतांतरित कराया।

भारतीय संविधान धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है, जिसमें स्वेच्छा या स्वविवेक से मत बदलने का अधिकार भी शामिल है। संविधान के अनुच्छेद 25 और 26 में धार्मिक स्वतंत्रता और मत बदलने के अधिकार की बात तो कही गई है, पर उमर गौतम और उसके साथी गरीबों को लालच देकर और जोर-जबरदस्ती से मतांतरण करवा रहे थे। गौतम और उसका गिरोह भूल गया था कि मत परिवर्तन सामाजिक एकता को कमजोर कर सकता है और समाज में भयंकर नफरत पैदा कर सकता है। भारत में मत परिवर्तन एक संवेदनशील मुद्दा है, जिसमें कानूनी, धार्मिक और सामाजिक सभी पहलू शामिल हैं। कुछ साल पहले केरल के प्रतिष्ठित फिल्म निर्माता-निर्देशक अली अकबर और उनकी ईसाई पत्नी लूसी अम्मा ने आर्य समाज में हवन के जरिये हिंदू धर्म अंगीकार कर लिया था। आर्य समाज के स्वामी जी द्वारा उनका नया नामकरण भी कर दिया गया। अली अकबर को नया नाम मिला था राम सिम्हन। हिंदू धर्म ही क्यों? यह प्रश्न पूछे जाने पर अली अकबर ने कहा था, 'क्योंकि हिंदू धर्म कोई धर्म नहीं, बल्कि एक संस्कृति है। यहां नर्क में जाने का डर नहीं है। आप एक इंसान की तरह जी सकते हैं, क्योंकि भगवान आपके अंदर हैं। अपने भीतर ईश्वर को देखना एक महान विचार है।' कहते हैं कि राम सिम्हन केरल में हिंदू धर्म अपनाने वाले पहले मुसलमान थे, लेकिन यह राम सिम्हन के स्वविवेकपूर्ण निर्णय को दर्शाता है। इस पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

किसी को लालच देकर या जोर जबरदस्ती मतांतरण करवाना तो कतई सही नहीं माना जा सकता है। समझ नहीं आता कि कुछ मतों से जुड़े लोग क्यों इसी फिराक में रहते हैं कि उनके मत से अन्य मतों को मानने वाले जुड़ जाएं। कई इस्लामिक और ईसाई संगठन इसी कोशिश में रहते हैं कि दूसरे मत को मानने वाले उनके मजहब का हिस्सा बन जाएं? यह कोई बात हुई क्या? फिर यदि बाकी मतों को मानने वाले लोग भी यही करने लगें तो समाज में भाईचारा कहां और कैसे बचा रहेगा। अगर कोई अपने मन से उस मत को त्याग देता है, जिसमें उसका जन्म हुआ है तब तो कोई बात नहीं है। संगीत निर्देशक एआर रहमान का ही उदाहरण लें, जिन्होंने खुद ही हिंदू धर्म छोड़कर इस्लाम स्वीकार कर लिया। उनके परिवार के बाकी सदस्यों ने भी इस्लाम अपना लिया। यहां तक तो सब ठीक है, पर कुछ तत्व सुदूर इलाकों में रहने वालों को अपने पाले में लाने के जुगाड़ में रहते हैं। इस सबकी तो हमारा संविधान अनुमति नहीं देता। जब उमर गौतम जैसों पर कार्रवाई होती है तो कुछ कथित बुद्धिजीवी प्रलाप करने लगते हैं। पिछले कई वर्षों से पंजाब से खबरें आ रही हैं कि राज्य में दलित सिखों को लालच देकर ईसाई मत से जोड़ा जा रहा है।

यह सवाल अपने आप में बेहद महत्वपूर्ण है कि क्या भारत में मत प्रचार की अनुमति जारी रहनी चाहिए? कभी-कभी लगता है कि इस मसले पर देश में बहस हो ही जाए कि क्या भारत में मत प्रचार की स्वतंत्रता जारी रहे अथवा नहीं? देखा जाए तो केवल मत पालन की स्वतंत्रता होनी चाहिए। मत के प्रचार-प्रसार की छूट की कोई आवश्यकता ही नहीं। मत कोई दुकान या व्यापार तो है नहीं जिसका प्रचार-प्रसार करना जरूरी हो। अगर हम इतिहास के पन्नों को खंगालें तो देखते हैं कि भारत के संविधान निर्माताओं ने सभी धार्मिक समुदायों को अपने मत के प्रचार की छूट दी थी। क्या इसकी कोई आवश्यकता थी? बेशक भारत में ईसाई मत की तरफ से शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में ठोस और ईमानदारी से काम किया गया है, पर कहने वाले कहते हैं कि उस सेवा की आड़ में मतांतरण का ही उसका मुख्य लक्ष्य रहा है। उधर इस्लाम का प्रचार करने वाले बिना कुछ किए ही मतांतरण करवाने के मौके खोजते हैं। हालांकि मुसलमानों की शिक्षण संस्था अंजुमन इस्लाम ने भी शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। अब आप देखें कि आर्य समाज, सनातन धर्म और सिखों की तरफ से देश में सैकड़ों स्कूल, कालेज और अस्पताल वगैरह चल रहे हैं, लेकिन इन्होंने किसी ईसाई या मुसलमान के मतांतरण का कभी प्रयास नहीं किया। लोगों को अपने मत को मानने की तो अनुमति होनी चाहिए, पर अपने मत का प्रचार करने या मतांतरण करने की इजाजत तो नहीं दी जा सकती।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

response@jagran.com

मत प्रचार की आड़ में मतांतरण का सिलसिला ● फाइल

ऊर्जा

मधुर वाणी

मधुर वाणी जीवन के सामाजिक और व्यावहारिक पक्ष का सर्वश्रेष्ठ सद्गुण है। इसका वैशिष्ट्य है, यदि कोई शोकाघात अथवा कुसंग के प्रभाव से पाषाणवत् हो गया हो, तो वह भी प्रसन्न और संवेदना से युक्त हो जाता है। यदि हम सर्वत्र सुख और प्रसन्नता का परिवेश चाहते हैं, तो समाज में विनम्रता के साथ परस्पर मधुर वार्तालाप करना चाहिए। लोक में सुख, शांति और समुल्लास की सुप्रतिष्ठा का मुख्य हेतु है-मधुर वचन का सप्रेम दान। कोई कितना भी कष्ट में हो, यदि उससे दो मीठे बोल लें तो संभवतः वह कुछ देर के लिए अपनी पीड़ा भूल जाएगा। वाणी से किसी के भी हृदय में स्थान बनाया जा सकता है।

एक सूक्ति है-वचने किं दारिद्र्यम्' अर्थात बोलने में भी क्यों कंजूसी करना? आज समाज में जो परस्पर विद्वेष और उपेक्षित व्यवहार देखने-सुनने में आता है, उसका एकमात्र कारण है हमारी जीवनशैली मधुर-स्नेह वार्ता से कृपण हो गई है। हमारे मनीषी कवियों ने तदर्थ उपदेशित किया है-वाणी ऐसी निकलनी चाहिए, जिसको सुनने वाले का मन प्रसन्नता से भर जाए। मीठा बोलने में न ही कोई कष्ट होता है और न ही कुछ धनादि की हानि होती है। मधुर वाणी ही विनम्रता का आधार है।

कटुभाषण अत्यंत अनर्थकारी और विवाद का मूल है। आज घर-घर, गांव-गांव, नगर आदि में कहीं परस्पर विद्वेष और द्वंद्व दिखाई-सुनाई पड़ता है, तो उसके पीछे उसका मूल कारण होता है कटु तीखे वचन। मर्मभेदी तीखे बाणों से मनुष्य के हृदय में उतनी पीड़ा नहीं होती है, जितनी कठोर वचनों से। शस्त्रादि के घात से कटा हुआ बड़े से बड़ा घाव भर जाता है, किंतु कटुवचन रूपी शस्त्र से हुआ घाव जीवन भर नहीं भरता है। वाणी का मधुर प्रयोग सदा करना चाहिए, इससे पराए भी अपने हो जाते हैं और रूठे लोग भी साथ देने वाले हो जाते हैं। अतः हम सदा-सर्वत्र मधुर-स्नेहयुक्त वचनों का आदान-प्रदान करें, जिससे समाज में बंधुत्व और प्रेम का सुंदर साम्राज्य स्थापित हो।

आचार्य नारायण दास

पाठकनामा

pathaknama@pat.jagran.com

खतरनाक राह पर राहुल गांधी

'कांग्रेस को अलग राह पर ले जाते राहुल' शीर्षक से लिखे आलेख में संजय गुप्त ने राहुल गांधी के पार्टी के सिद्धांतों से भटकाव का विवेचन किया है। राहुल गांधी के हालिया वक्तव्यों और भाषणों से ऐसा अहसास होता है कि उन्हें कांग्रेस की विचारधारा और उसकी पुरानी रीतियों-नीतियों से कोई सरोकार नहीं रह गया है। ऐसा लगता है कि राहुल गांधी ने सत्ता प्राप्ति को ही अपना अंतिम लक्ष्य बना लिया है, जिसके लिए वह कुछ भी करने को आमादा हैं। यहां तक कि उन्हें आतंकवादी गतिविधियों में शामिल लोगों से मेलजोल से भी परहेज नहीं रह गया है। जिस खालिस्तानी आतंक के कारण उनकी दादी इंदिरा गांधी और अन्य कई नेताओं को अपनी जान तक गंवानी पड़ी, उन खालिस्तानियों का वैचारिक समर्थन करना एक बड़ी त्रासद स्थिति को दर्शाता है। यही नहीं, बार-बार जातिगत जनगणना और आरक्षण का दायरा बढ़ाने का उनका एलान देश में जातिवाद की आग में घी डालने का कुत्सित प्रयास ही कहा जाएगा। प्रतीत होता है कि वह सत्ता पाने के लिए देश को अराजकता की भट्ठी में झोंक रहे हैं। चाहे भविष्य में इसके लिए देश को इसकी कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़ जाए।

वेदप्रकाश पांडेय, अंबेडकर नगर, उप्र

सीएए के अनुसार कार्रवाई हो

15 सितंबर के संपादकीय में अनेक राज्यों में डेमोग्राफी बदलने पर गंभीर चिंता प्रकट की गई है। आपकी चिंता शत प्रतिशत जायज है। हिमाचल में शिमला, मंडी एवं अन्य स्थानों पर जो हिंदूवादी संगठन प्रदर्शन कर रहे हैं, वह केवल मस्जिदों के अनधिकृत निर्माण के विरुद्ध ही नही हैं, वह वहां पर जनसांख्यिकी असंतुलन से भी आशंकित एवं त्रस्त हैं। उनका कहना है कि बांग्लादेशी एवं रोहिंग्या घुसपैठियों के कारण वहां पर सांख्यिकी संतुलन बिगड़ रहा है। दिसंबर 2019 में संसद से सीएए पास होने के पश्चात 10 जनवरी 2020 को राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षर करने से वह कानून बन गया। लगभग पांच वर्ष व्यतीत होने पश्चात भी इस कानून का उपयोग कर किसी भी घुसपैठिए को अभी तक भारत से बाहर निकाला नहीं गया हैं। जबकि इनके कारण कानून एवं व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। आर्थिक संसाधनों पर बोझ पड़ रहा है। अराजकता की स्थिति बन रही है। बेरोजगारी बढ़ रही है। देश की सुरक्षा में सेंध लगने का खतरा बढ़ गया है। चुनाव भी प्रभावित होता है। इन लोगों ने रेल पटरी के समानांतर अपनी झुग्गी झोपड़ी बना ली है। जहां से वे एक ओर रेलवे पर पत्थर फेंकते हैं तो दूसरी ओर पटरी पर सिलिंडर रख ट्रेन को पलटाने की साजिश रच रहे हैं। तीनों मुस्लिम देशों पाक, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के साथ म्यांमार से आए हुए घुसपैठियों को तुरंत भारत से खदेड़ना ही श्रेयस्कर है। अन्यथा जनसंख्या जिहाद, लव जिहाद एवं धर्मांतरण से वे गजवा-ए-हिंद करने के प्रयास में तेजी लाएंगे। इन लोगों के कारण सामाजिक सौहार्द भी प्रभावित हो रहा है। आए दिन विधि-व्यवस्था की समस्या उत्पन्न हो रही है। घुसपैठियों को प्रश्रय देने वाले तत्वों को समझना होगा कि भविष्य में ये लोग उनके लिए भी सिरदर्द बन जाएंगे। इनकी संख्या बढ़ेगी तो अपने बीच से ही व्यक्ति को चुनकर सदन भेजेंगे, प्रश्रय देने वाले दलों को छोड़ देंगे।

धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी, दुर्गादेवी मंदिर मार्ग चौक, पटना

भाषा का सर्वोत्तम उपयोग हो

'विज्ञान और कानून की भी भाषा बने हिंदी' संपादकीय आलेख पढ़ा, भाषा का बोध हमें सही मायने में आमजन के भाग्य निर्माण में मदद करता है। बात जब राजभाषा हिंदी की हो तो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। ज्ञान का माध्यम स्थापित करने के लिए भाषा का सर्वोत्तम उपयोग होना चाहिए। इसी क्रम में अब वह घड़ी आ गई है कि हम हिंदी को दुनिया के हर तबके से लेकर रोजगार तक से जोड़ने का काम करें। यह व्यवस्था तभी स्थापित होगी, जब हम इसे लचीला बनाने का काम करेंगे, ताकि दुनिया के हर कोने तक लोग इसे अपनाने से ना कतराएं। एआइ (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के युग में हम प्रवेश कर चुके हैं। एआइ के सही उपयोग से हम डिजिटल सहित समाज के हर तबके तक हिंदी को सही मायने में स्थापित कर सकते हैं। आज और अभी से हम सभी को वैश्विक पटल पर हिंदी के सुनहरे भविष्य को गढ़ना होगा। तमाम शैक्षणिक संस्थानों की गतिविधियां और सरकारी कार्यों में हिंदी का व्यवहार बढ़ाना होगा, तभी जाकर यह संभव हो सकेगा अन्यथा हमें पाश्चात्य भाषा के पिंजरे में कैद रहना होगा। इस दिशा में सरकार व न्यायालयों को गंभीर प्रयास करने होंगे। आमजन को सहज समझ में आने वाली भाषा हिंदी में दस्तावेज लेखन एवं न्यायिक कार्यों को प्रोत्साहन देना होगा। इससे आमजन सरकार व न्यायालय से जुड़ाव अनुभव करेंगे और वे अपने कानूनी अधिकारों व कर्तव्यों को बेहतर समझ सकेंगे।

निखिल नयन, दरभंगा

पोस्ट

अरविंद केजरीवाल को जिन शर्तों के साथ सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिली थी, उनमें स्पष्ट था कि वह मुख्यमंत्री के रूप में अपने दायित्व का अपेक्षित रूप से निर्वाह नहीं कर पाएंगे। ऐसे में मुख्यमंत्री पद से इस्तीफे की उनकी पेशकश 'आपदा में अवसर' तलाशने का राजनीतिक प्रयास ही कही जा सकती है। अब सवाल यही है कि क्या इससे उन्हें लाभ मिलेगा? संकेत उपाध्याय@sanket

हवाला कांड में नाम आने के बाद लालकृष्ण आडवाणी ने एलान किया था कि जब तक अदालत से उन्हें क्लीन चिट नहीं मिल जाती, तब तक वह संसद में कदम नहीं रखेंगे। अरविंद केजरीवाल को भी ऐसी ही कोई घोषणा करनी चाहिए थी। इससे भारतीय राजनीति में नैतिकता का एक नया प्रतिमान स्थापित होता।

आशुतोष@ashutosh83B

एशियाई चैंपियंस ट्राफी में पाकिस्तान को हराकर भारतीय हाकी टीम ने यही साबित किया कि मानसिक दृढ़ता में उसका कोई सानी नहीं। बाल टैपिंग, गोलकीपिंग से लेकर पेनाल्टी कार्नर को गोल में बदलना-तीनों मोर्चों पर भारत ने चमत्कारिक सुधार किया। धनराज पिल्लै ने सही कहा है कि हरमनप्रीत तो धौनी और विराट के मिश्रण लगते हैं।

सुशील दोशी@RealSushilDoshi

जनपथ

शासन करना है नहीं बंधन में आसान,
तभी केजरीवाल जी छोड़ भगे मैदान।
छोड़ भगे मैदान आप हैं नेता शातिर,
मारा तगड़ा दांव आज सिंपैथी खातिर!
अब रो-रो कर रोज दिया जाएगा भाषण,
सीएम पद फिर पाय करें जिससे वह शासन!!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त
जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प. बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 25 अंक 156

****

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

स्वास्थ्य ही असली धन है, न कि सोना-चांदी।
- महात्मा गांधी

कथित शराब घोटाले में करीब छह महीनों तक जेल में रहने के बाद शीर्ष अदालत द्वारा जमानत पर रिहा हुए मुख्यमंत्री केजरीवाल अगर अब इस्तीफा दे रहे हैं, तो इसके पीछे उनकी लंबी राजनीतिक तैयारी दिखती है, ताकि वे विपक्षियों पर नैतिक बढ़त लेकर आसन्न चुनावों में अपनी दावेदारी मजबूत कर सकें।

अब इस्तीफा

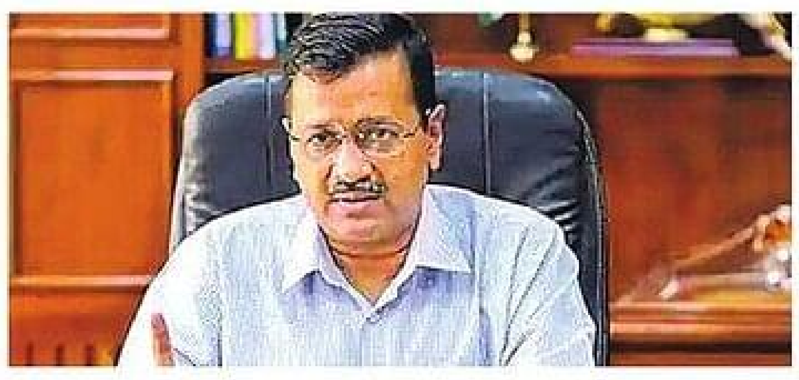

कथित शराब घोटाले में 177 दिनों तक जेल में रहने के बाद शीर्ष अदालत से जमानत पर रिहा हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का अपने पद से इस्तीफा देने का एलान एकबारगी चौंकाने वाला बेशक हो, लेकिन इसके निहितार्थ स्पष्ट ही हैं। हालांकि, ऐसा नहीं है कि उनके इस्तीफे की बात पहले न उठी हो। विपक्षी दल लगातार नैतिक आधार पर उनसे इस्तीफे की मांग करते रहे हैं। यह दीगर बात है कि अपने करीब छह महीने के जेल-प्रवास के दौरान उनके मन में इस्तीफे का ख्याल कभी आया नहीं। उल्टा उन्होंने तो यह तर्क भी दिया कि उनके इस्तीफे से गलत परंपरा कायम होगी और केंद्र सरकार को मनमानी करने का मौका मिल जाएगा। दरअसल, भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन से जन्मी और सबको ईमानदारी का पाठ पढ़ाने वाली पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल लंबे समय से कथित शराब घोटाले के आरोपों के घेरे में हैं। लेकिन, चुनाव से महज चंद महीनों पहले सियासी शतरंज पर इस्तीफे का दांव चल कर उन्होंने एक साथ कई लक्ष्यों को साधने की कोशिश की है। उन्होंने अंतिम फैसले की जिम्मेदारी दिल्ली की जनता पर छोड़ते हुए आसन्न विधानसभा चुनाव के लिए माहौल बनाया है। वैसे भी शीर्ष अदालत के फैसले के मुताबिक, वह न तो मुख्यमंत्री कार्यालय या सचिवालय जा सकते हैं और न ही किसी फाइल पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। जाहिर है इस्तीफे के बाद उनके द्वारा मनोनीत व्यक्ति ही मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारियां निभाएगा, जो कहने की जरूरत नहीं कि उनका ही प्रतिनिधि होगा। इसके अतिरिक्त, सर्वोच्च न्यायालय में जमानत पर सुनवाई के दौरान केजरीवाल पर लगाए गए आरोपों पर दोनों न्यायाधीशों के मत बेशक अलग हों, लेकिन केजरीवाल उनके द्वारा अपने पक्ष में कही गई हर बात को आगामी विधानसभा चुनावों में जरूर भुनाएंगे। उल्लेखनीय है कि उन्नीस दिन बाद हरियाणा विधानसभा चुनाव होने हैं, जहां की सभी 90 सीटों पर आप ने उम्मीदवार खड़े किए हैं, वहीं इस वर्ष के अंत तक होने वाले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भी वह सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान कर चुकी है। दिल्ली में चुनाव अगले वर्ष फरवरी में होने हैं। केजरीवाल महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के साथ ही दिल्ली में भी चुनाव कराने की मांग कर रहे हैं। लेकिन इसके लिए उन्हें विधानसभा को समय-पूर्व भंग करने का एलान करना होगा। केजरीवाल का दांव मतदाताओं को कितना प्रभावित कर पाता है, वह तो देखने वाली बात होगी, लेकिन इस्तीफे के एलान के पीछे उनकी लंबी राजनीतिक तैयारी जरूर दिखती है, ताकि वे विपक्षियों पर नैतिक बढ़त लेकर आसन्न चुनावों में अपनी दावेदारी मजबूत कर सकें।

बढ़ती उम्र और 'आयुष्मान' का सहारा

उम्र बढ़ने पर लोगों की चिंता का प्रमुख कारण स्वास्थ्य देखभाल पर होने वाला खर्च होता है। केंद्र सरकार ने 70 वर्ष से अधिक उम्र के सभी आय वर्गों के बुजुर्गों को आयुष्मान भारत योजना में शामिल कर बड़ी राहत दी है।

जैसे-जैसे बुजुर्ग लोगों की उम्र बढ़ती जाती है, खासकर वैसे बुजुर्गों की, जिनके पास न कोई पैतृक संपत्ति होती है, न पेंशन और न घर के किराये से होने वाली आमदनी, भविष्य में चिकित्सा खर्च की बढ़ती लागत उनकी सबसे बड़ी चिंताओं में से एक होती है। मेरे जैसे मध्यमवर्गीय परिवार के एक व्यक्ति को, जिसके पास थोड़ी बचत होती है और सिर पर एक छत होती है, थोड़ी सुविधा रहती है। लेकिन जहां तक स्वास्थ्य देखभाल की बात है, तो सभी जानते हैं कि बीमा कंपनियां भी इलाज के सारे खर्चों को वहन नहीं करती हैं।

ऐसे में, यह अच्छी बात है कि केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 70 वर्ष या उससे ज्यादा उम्र के बुजुर्गों के लिए आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबीपीएम-जेएवाई) के तहत स्वास्थ्य देखभाल बीमा को मंजूरी दी है, चाहे वे किसी भी आय वर्ग के हों। ऐसे कई परिवार हैं, जो पहले से ही आयुष्मान योजना में शामिल हैं और उनमें वरिष्ठ नागरिक भी हैं। अब वैसे परिवारों को पांच लाख रुपये का अतिरिक्त बीमा कवरेज मिलेगा। हालांकि इसका अंतिम प्रारूप अभी आना बाकी है, तभी पता चलेगा कि इसे विभिन्न राज्यों द्वारा जमीनी स्तर पर कैसे लागू किया जाता है। लेकिन यह भी देखना होगा कि स्वास्थ्य देखभाल पर जेब से किए जाने वाले खर्च के मामले में हम कहां खड़े हैं। आर्थिक सर्वेक्षण, 2023-24 में बताया गया है कि स्वास्थ्य देखभाल पर भारत में जेब से किया जाने वाला खर्च अब भी कुल स्वास्थ्य व्यय का लगभग 50 प्रतिशत है। हालांकि पिछले दस वर्षों में स्थिति में सुधार हुआ है। वर्ष 2019-20 में स्वास्थ्य देखभाल पर जेब से खर्च 47 प्रतिशत से अधिक था, जो निश्चित रूप से 2013-14 के 64 प्रतिशत के उच्च स्तर से कम है, लेकिन यह अब भी तीन साल पहले आर्थिक सर्वेक्षण में सुझाए गए 35 फीसदी की सीमा से बहुत ज्यादा है।

पत्रलेखा चटर्जी
वरिष्ठ पत्रकार

ध्यान रहे कि ज्यादातर भारतीय असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं, जिसका मतलब है कि उनके पास कोई निश्चित वेतन वाली कमाई नहीं है, जिसमें अन्य लाभ भी होते हैं और सेवानिवृत्ति के बाद उनके लिए सामाजिक सुरक्षा का भी कोई प्रावधान नहीं होता है। भारत की पारंपरिक सामाजिक सुरक्षा प्रणाली-संयुक्त परिवार तेजी से बिखर रहे हैं। बच्चे अक्सर दूसरे शहरों या देशों में रहते हैं। ऐसे में, उनसे यह उम्मीद करना कि वे स्वास्थ्य देखभाल का पूरा खर्च उठाएंगे, नासमझी होगी।

तो फिर उपाय क्या है? इस मामले में हम एशिया के कुछ अन्य देशों से सीख सकते हैं। जैसे, पड़ोसी देश थाईलैंड उच्च मध्यम आय वाला देश है। राजनीतिक अस्थिरता के बावजूद स्वास्थ्य देखभाल के मामले में इसका रिकॉर्ड बेहतर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक, थाईलैंड में वर्ष 2021 में स्वास्थ्य पर नौ फीसदी खर्च जेब से हुआ था, जबकि भारत में यह आंकड़ा 49.82 प्रतिशत था। यह देखते हुए कि वर्ष 2007 में भारत में स्वास्थ्य देखभाल पर जेब से किया जाने वाला खर्च कुल स्वास्थ्य व्यय का 70 प्रतिशत से अधिक था, हम कह सकते हैं कि भारत की स्थिति में पहले से सुधार हुआ है, लेकिन हमें अब भी एक लंबा रास्ता तय करना है।

थाईलैंड में बूढ़ी होती आबादी के साथ अन्य चुनौतियां भी हैं, लेकिन वहां सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल (यूएचसी) महज एक वादा नहीं, बल्कि हकीकत है। यूएचसी का लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति को बिना वित्तीय समस्या के गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करना है। वर्ष 2002 में ही वहां यूएचसी लागू किया गया और थाईलैंड स्वास्थ्य देखभाल पर अपनी जीडीपी का पांच फीसदी खर्च करता है, जिसका 70 फीसदी हिस्सा सरकार देती है। कई अन्य उच्च मध्य आय वाले देशों की तुलना में स्वास्थ्य पर कम खर्च करने के बावजूद थाईलैंड काफी कुछ करने में सफल रहा है। वर्ष 2000 से 2021 के बीच वहां जीवन प्रत्याशा 72.3 वर्ष से बढ़कर 78.7 वर्ष हो गई। नवजात मृत्युदर 1.67 फीसदी से घटकर मात्र 0.62 फीसदी रह गई है और स्वास्थ्य देखभाल पर जेब से खर्च 34.2 फीसदी से घटकर नौ फीसदी रह गया है।

थाईलैंड में तीन मुख्य सार्वजनिक स्वास्थ्य बीमा योजनाएं हैं, जो लगभग वहां की पूरी आबादी के लिए हैं। इनमें शामिल हैं, लोक सेवक स्वास्थ्य लाभ योजना (सीएसएमबीएस), जिसमें सरकारी कर्मचारी और उनके रिश्तेदार आते हैं और इसका प्रबंधन वित्त मंत्रालय करता है। सामाजिक सुरक्षा योजना (एसएसएस), जिसमें संगठित क्षेत्रों के निजी कर्मचारियों को कवर किया जाता है, जिसका खर्च कर्मचारी, नियोक्ता और सरकार, तीनों उठाते हैं और इसका प्रबंधन श्रम मंत्रालय करता है और यूनिवर्सल कवरेज योजना (यूसीएस) के तहत शेष बची ज्यादातर आबादी को कवर किया गया है, जिसका खर्च सामान्य कराधान से पूरा किया जाता है और राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यालय (एनएचएसओ) इसका प्रबंधन करता है। लोक स्वास्थ्य मंत्रालय इसकी देखभाल करता है, जबकि एनएचएसओ यूसीएस के लिए देखभाल क्रेता के रूप में कार्य करता है, तथा देखभाल प्रदान करने में क्रय शक्ति और दक्षता सुनिश्चित करता है।

यूसीएस को गोल्ड कार्ड भी कहा जाता है, जो थाईलैंड की तीनों योजनाओं में सबसे बड़ी है और सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करती है। यूसीएस ज्यादातर आबादी को कवर करती है और इसकी फंडिंग सीधे राष्ट्रीय बजट से होती है तथा एनएचएसओ द्वारा प्रति व्यक्ति आधार पर बजट आवंटित किया जाता है। यह कार्यक्रम वर्ष 2002 में शुरू हुआ था। अब वर्ष 2024 में थाईलैंड की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली महत्वपूर्ण बदलाव के दौर से गुजर रही है, जिसमें यूनिवर्सल कवरेज योजना के तहत 'सभी बीमारियों का इलाज किसी भी जगह' कराने जैसे प्रयास शामिल हैं।

थाईलैंड की स्वास्थ्य देखभाल सहित कोई भी स्वास्थ्य व्यवस्था पूर्ण नहीं है और न ही किसी स्वास्थ्य व्यवस्था की हूबहू नकल किसी दूसरे देश में की जा सकती है, खासकर भारत जैसे विशाल और विविधता पूर्ण देश में, लेकिन हम अपने एशियाई पड़ोसियों से काफी कुछ सीख सकते हैं। विशेषकर उन देशों से, जिनका अपना स्वास्थ्य तंत्र काफी मजबूत है।

edit@amarujala.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

जीवन धारा

राल्फ वाल्डो इमर्सन

आप अपने कार्यों की सफलता को लेकर बहुत ज्यादा डरपोक और संकोची न बनें, क्योंकि जीवन एक प्रयोग है। आप जब कोई काम करें, तो उसे अपनी पूरी ताकत से करें। उसमें अपनी पूरी आत्मा लगा दें।

जीवन इंद्रधनुष के रंगों की तरह है

पृथ्वी पर जीवन इंद्रधनुष के रंगों की तरह है। हमें इस मनमोहक प्रकृति को समझना चाहिए, जो इस भीड़-भाड़ वाले संसार के बीच भी एकांत की स्वतंत्रता को मधुरता के साथ बनाए रखता है। जीवन में जब कभी समस्याओं का अंधेरा छाए, तो आप सितारों को देख सकते हैं। प्रकृति को ध्यान से देखें, आप समझ पाएंगे कि यह कितनी अनमोल है। बहुत-सी आंखें घास के मैदान से गुजरती हैं, लेकिन बहुत कम लोग इसमें फूल देख पाते हैं। सर्द रात दुनिया के लोगों को नदी की तरह नहलाती है, और उनकी आंखों को फिर से लाल भोर के लिए तैयार करती है। प्रकृति का रहस्य अनोखा है। प्रकृति सभी प्राणियों को स्वतंत्र रूप से अनाज वितरित करती है। सच कहूं तो, बहुत कम लोग प्रकृति को देख पाते हैं। प्रकृति का प्रेमी वह है, जिसकी आंतरिक और बाहरी इंद्रियां एक-दूसरे के साथ पूरी तरह से समायोजित हैं। मनुष्य ने अपने लाभ के लिए हमेशा प्रकृति को नष्ट किया है। हमें प्रकृति की रक्षा के लिए एक रास्ता ढूंढना होगा। जीवन के हर क्षेत्र में हमें साहस की आवश्यकता होती है। आप कोई भी रास्ता चुनें, अक्सर कोई न कोई आपको यह बताने के लिए मौजूद होता है कि आप गलत हैं। हमेशा ऐसी कठिनाइयां आती रहती हैं, जो आपको यह विश्वास दिलाती हैं कि आपके आलोचक सही हैं। इन सब से निपटने के लिए उसी साहस की आवश्यकता होती है, जो एक सैनिक को चाहिए। शांति की अपनी जीत होती है, लेकिन उन्हें पाने के लिए बहादुर पुरुषों और महिलाओं की आवश्यकता होती है। हमें प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए। हमें उस नदी की धारा की तरह उत्साहित होना होगा, जो अंत में अपने लक्ष्य को पा लेती है। उत्साह सफलता के लिए सबसे शक्तिशाली इंजनों में से एक है। जब आप कोई काम करें, तो उसे पूरी ताकत से करें। उसमें अपनी पूरी आत्मा लगा दें। सक्रिय रहें, ऊर्जावान और वफादार रहें, फिर आप अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे। उत्साह के बिना कोई महान उपलब्धि हासिल नहीं की जा सकती। अपने कार्यों की सफलता को लेकर बहुत ज्यादा डरपोक और संकोची न बनें, क्योंकि जीवन एक प्रयोग है। आप जितना अधिक प्रयोग करेंगे, उतना ही बेहतर होगा। प्रकृति की गति को अपनाएं : उसका रहस्य धैर्य है। प्रकृति और पुस्तकें उन आंखों के लिए हैं, जो उन्हें देखती हैं। अपने सपनों के नेतृत्व में आगे बढ़िए। अपने खुद के विचार पर विश्वास करना कि आपके हृदय में जो आपके लिए सत्य है, वह सभी मनुष्यों के लिए सत्य है, यही प्रतिभा है। एक बात हमेशा याद रखें, सबसे सुखी मनुष्य वह है, जो प्रकृति से पूजा का पाठ सीखता है। ध्यान देने वाली आंखों के लिए प्रत्येक क्षण की अपनी सुंदरता होती है, और उसी क्षेत्र में वह हर घंटे एक ऐसी तस्वीर देखती है, जो पहले कभी नहीं देखी गई थी, और जो फिर कभी नहीं देखी जाएगी। प्रकृति उस आदमी के लिए रास्ता बनाती है, जो जानता है कि वह कहां जा रहा है। खुशी बांटिए, क्योंकि जीवन एक यात्रा है, कोई मंजिल नहीं।

प्रकृति से सीखें

सूत्र

एकांत में जाने के लिए एक व्यक्ति को अपने कमरे से उतना ही दूर रहना पड़ता है, जितना समाज से। जब मैं पढ़ता-लिखता हूं, तो मैं अकेला नहीं रहता, हालांकि उस समय मेरे साथ कोई व्यक्ति नहीं होता। लेकिन अगर कोई व्यक्ति अकेला रहना चाहता है, तो उसे प्रकृति को देखना चाहिए और प्रकृति से सीखना चाहिए।

दूसरा पहलू

राजगीर की पहाड़ियों में स्थित कथित खजाने वाली गुफाओं का सदियों पुराना रहस्य आज भी अनसुलझा है।

राजगीर की गुफाओं के खजाने का रहस्य

बिहार के नालंदा जिले में कदम-कदम पर पुरावशेष बिखरे हैं। इन्हीं में से एक है सोन भंडार यानी स्वर्ण भंडार। जैसा नाम है, वैसा ही इसका मिथक है। हरे-भरे जंगल के बीच स्थित इन गुफाओं का रास्ता बेहद सुरम्य है। इस आख्यान की शुरुआत छठी शताब्दी ईसा पूर्व हर्यक वंश के प्रतापी शासक महाराज बिंबिसार से होती है, जिन्होंने राजगृह (राजगीर) का निर्माण कराया था। बिंबिसार 543 ईसा पूर्व में मगध पर राज करते थे। बताया जाता है कि उन्हीं के काल में सोन भंडार गुफाओं का निर्माण खजाने को रखने के लिए किया गया। इस आयताकार गुफा में दो हिस्से हैं। एक हिस्सा सैनिकों के लिए था, जो खजाने की रक्षा करते थे और दूसरा हिस्सा चट्टान से बंद है। इसके पीछे ही खजाना बताया जाता है।

अंग्रेजों ने खजाने की खोज के लिए तोपों का सहारा लिया, लेकिन दीवार को तोड़ नहीं पाए। दरअसल खजाने का तिलिस्म एक ऐसी प्राचीन शंख लिपि से जुड़ा है, जिसे कभी पढ़ा नहीं जा सका। किंवदंती है कि गुफा की दीवार पर शंख लिपि में खजाने के दरवाजे को खोलने का तरीका लिखा है। ये गुफाएं विभागिरी पहाड़ियों की तलहटी में हैं। सम्राट बिंबिसार के पुत्र अजातशत्रु ने जब उन्हें बंदी बनाकर कारागार में डाला, तो उनकी रानी ने खजाना इन गुफाओं में छिपा दिया। बाद में बिंबिसार की मौत हो गई थी। इसके बाद खजाने के बारे में कहीं कोई लिखित वृतांत नहीं मिलता।

वायु पुराण में लिखा है कि हर्यक वंश से 2500 साल पहले मगध पर सम्राट वृहद्रथ का शासन था। उनका पुत्र जरासंध महाप्रतापी शासक था, जिसने 80 राजाओं को हराकर जो संपत्ति अर्जित की, उसे इसी गुफा में छिपा दिया था। *महाभारत* से जुड़े प्रसंग के अनुसार, जरासंध को भीम ने मार डाला था और इसी के साथ खजाने का राज भी दफन हो गया। हालांकि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संस्थापक सर अलेक्जेंडर कनिंघम और कुछ अन्य इतिहासकार इन गुफाओं को बौद्ध धर्म से जोड़ते हैं। वहीं दर्ज इतिहास में इन गुफाओं को जैन मुनियों द्वारा ईसा पूर्व चौथी सदी में निर्मित माना जाता है। यहां जैन धर्म से जुड़ी छह मूर्तियां मिली हैं। भगवान विष्णु की प्रतिमाएं भी मिली हैं। चौथी शताब्दी के एक शिलालेख पर लिखा है कि मुनि वैरादेव ने दो शुभ गुफाओं का निर्माण कराया, जो तपस्वियों के योग्य हैं और जिनमें अर्हतों (तीर्थंकरों) की मूर्तियां स्थापित हैं। हालांकि विशेषज्ञ कहते हैं, यह गुफाओं का पुनर्निर्माण भी हो सकता है। बहरहाल, इन गुफाओं के अंदर की चमक बेमिसाल है, जो किसी खजाने से कम नहीं है।

भूपेंद्र कुमार

हर्यक वंश से 2500 साल पहले मगध पर सम्राट वृहद्रथ का शासन था। उनके पुत्र जरासंध ने 80 राजाओं को हराकर जो संपत्ति पाई, उसे इस गुफा में छिपाया।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संस्थापक सर अलेक्जेंडर कनिंघम और कुछ अन्य इतिहासकार इन गुफाओं को बौद्ध धर्म से जोड़ते हैं। वहीं दर्ज इतिहास में इन गुफाओं को जैन मुनियों द्वारा ईसा पूर्व चौथी सदी में निर्मित माना जाता है।

आंकड़े

कृषि का योगदान

अर्थव्यवस्था के कुल सकल मूल्यवर्धन (जीवीए) में कृषि का योगदान 1990-91 के 35 से घटकर 2022-23 में 15 फीसदी रह गया है।

1990-91	35%
2000-01	26%
2010-11	18%
2020-21	16%
2022-23	15 %

आंकड़े प्रतिशत में हैं। | स्रोत : DA & FW

द्रौपदी को सूर्य भगवान ने एक बटलोई दी थी। उसमें यह गुण था कि जब तक द्रौपदी जी स्वयं भोजन न करें, तब तक उसमें कभी भोजन घटता ही नहीं था।

महारानी द्रौपदी की भक्ति

एक बार दुर्योधन के कहने से दुर्वासा ऋषि दस शिष्यों के साथ वन में महाराज युधिष्ठिर के अतिथि हुए। दुर्योधन ने सोचा कि इतने अतिथियों का जंगल में पांडव आतिथ्य-सत्कार न कर सकेंगे। फिर ऋषि दुर्वासा पांडवों को शाप से भस्म कर देंगे।

लेकिन द्रौपदी को सूर्य भगवान ने एक बटलोई दी थी। उसमें यह गुण था कि जब तक द्रौपदी जी स्वयं भोजन न कर लें, तब तक उसमें कभी भोजन घटता ही नहीं था। दुर्वासा जी ठीक उसी समय पहुंचे, जब द्रौपदी भोजन कर चुकी थीं। युधिष्ठिर ने दुर्वासा ऋषि और उनके शिष्यों का स्वागत किया और प्रार्थना की कि आप नदी में स्नान कर आएं, तब तक भोजन तैयार होता है। ऋषि भोजन के लिए शीघ्रता करने को कहकर स्नान के लिए चले गए। इधर धर्मराज ने अपना धर्मसंकट द्रौपदी को बताया। द्रौपदी ने संकट में श्रीकृष्ण को पुकारा। भगवान कृष्ण उसी क्षण द्रौपदी जी के सम्मुख उपस्थित हुए और बोले, मुझे बड़ी भूख लगी है, कुछ खाने को दो। द्रौपदी ने स्नेह भरे स्वर में कहा, तुम्हें सदा हंसी ही सूझती है। कुछ खाने को होता, तो तुम्हें क्यों बुलाती? भगवान कृष्ण ने बटलोई में लगे हुए शाक के एक पत्ते को खाकर बहुत जोर से डकार ली। और उन विश्वात्मा की तृप्ति होने पर तीनों लोक तृप्त हो गए। महर्षि दुर्वासा और उनकी शिष्य मंडली तो इतने तृप्त हो गए कि उन्हें भी डकार आने लगीं। इस प्रकार द्रौपदी की लाज भगवान कृष्ण ने बचाई।

अंतर्यात्रा
संकलित

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 9 फरवरी 1959

नेपाल के संविधान में जनता को पूर्ण नागरिक अधिकार

नेपाल के संविधान में जनता को पूर्ण नागरिक अधिकार
संसद के दो सदन होंगे; चुनाव बालिग मताधिकार से होगा;

आज नेपाल का संविधान घोषित किया गया, जिसमें नेपाली जनता को अभिव्यक्ति के साथ नेपाल में कहीं भी बसने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गई है और वहां वयस्क मताधिकार से चुनाव होंगे।

समावेशी विकास की दिशा में

जिला खनिज फाउंडेशन (डीएमएफ) का लक्ष्य रणनीतिक रूप से खनन प्रभावित क्षेत्रों के स्थानीय समुदायों का कल्याण सुनिश्चित करना है।

जी. किशन रेड्डी | पहल

सर्वोच्च न्यायालय ने 25 अगस्त, 2014 को अपने एक निर्णय में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा किए गए कोयला ब्लॉकों के आवंटन को मनमाना और अवैध करार दिया था। उसके बाद वर्ष 2015 में नरेंद्र मोदी सरकार ने खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम में संशोधन करके नीलामी को अनिवार्य बना दिया और जिला खनिज फाउंडेशन (डीएमएफ) के नाम से एक नई संस्था बनाई, जिसे लाइसेंसधारी और पट्टाधारक रॉयल्टी की एक निश्चित राशि का भुगतान करते हैं।

डीएमएफ की स्थापना के पीछे सोच यह थी कि स्थानीय समुदाय देश के प्राकृतिक संसाधन आधारित विकास में प्रमुख हितधारक हैं, इसलिए प्राकृतिक संसाधनों से होने वाले लाभ से उनका विकास होना चाहिए। उनकी यह सोच गरीब कल्याण और भ्रष्टाचार से लड़ाई के उनके दृढ़ विश्वास को दर्शाती है। आज 10 वर्ष बाद डीएमएफ को लगभग एक लाख करोड़ का कोष प्राप्त हुआ है, जिससे खनन प्रभावित जिलों में विकास कार्य हुए हैं। डीएमएफ प्रधानमंत्री खनिज कल्याण योजना के तहत तीन लाख से अधिक परियोजनाओं के साथ अब 23 राज्यों के 645 जिलों में पहुंच गया है। यह सबका साथ-सबका विकास की मूल भावना को चरितार्थ करता है। जिला कलेक्टर के नेतृत्व में खनन प्रभावित जिलों के उत्थान के लिए ज्यादा जरूरत वाले स्थानों पर धन का आवंटन होता है। हाल ही में लॉन्च 'राष्ट्रीय डीएमएफ पोर्टल' पूरे देश में इसके प्रशासन और निगरानी को डिजिटल बना रहा है, जिससे इसमें अधिक पारदर्शिता और दक्षता आएगी। डीएमएफ न केवल राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का नेतृत्व कर रहा है, बल्कि क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक और मानव विकास सूचक को बेहतर बना रहा है।

हाल ही में नई दिल्ली में डीएमएफ गैलरी के शुभारंभ के अवसर पर मुझे ओडिशा के जिला खनिज फाउंडेशन द्वारा स्थापित स्वयं सहायता समूहों की कई प्रतिभाशाली महिलाओं से मिलने का सौभाग्य मिला। ये महिलाएं केवल शिल्पकार नहीं थीं, बल्कि उद्यमी बनने की राह पर थीं। अपने शिल्प को प्रदर्शित करने और पहचान हासिल करने की महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर, वे अपने परिवारों का वित्तीय स्तंभ बनने के लिए प्रतिबद्ध थीं।

मध्य प्रदेश के कटनी में डीएमएफ हमारे 'यंग माइंड्स' को ड्रोन तकनीक में महारत हासिल करने, वायु-गति-विज्ञान और उड़ान संचालन की बारीकियों को सिखाने में मदद कर रहे हैं। कई लोगों को नौकरी मिल गई है और अनेक लोग नए अवसरों के लिए तैयार हो रहे हैं। इस पहल ने खनन प्रभावित क्षेत्रों में हजारों परिवारों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाया।

डीएमएफ यह सुनिश्चित करता है कि यह लक्ष्य रणनीतिक रूप से खनन प्रभावित क्षेत्रों के स्थानीय समुदायों के कल्याण से जुड़ा हो। उदाहरण के लिए, ओडिशा के क्योंझर में धरणीधर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, लगभग 480 करोड़ रुपये की डीएमएफ-वित्तपोषित सुविधा से बना, जो अपने 25 लाख निवासियों के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करता है। झारखंड के रामगढ़ जिले में एक विशेष नवजात शिशु देखभाल यूनिट है, जो महत्वपूर्ण नवजात देखभाल प्रदान करती है और शिशु मृत्युदर को कम कर रही है। मध्य प्रदेश के सिंगरौली में, 'ब्रेकिंग बैरियर्स' परियोजना दिव्यांगों के लिए सुलभता बढ़ा रही है। तेलंगाना के मंचेरियल में जिला विज्ञान केंद्र दूरदराज के छात्रों के लिए विज्ञान को आकर्षक बना रहा है और युवा प्रतिभाओं को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में योगदान दे रहा है।

केंद्र सरकार का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्थानीय संदर्भ और जिले में मौजूद व्यवस्था को हटाए बिना सर्वोत्तम प्रशासनिक प्रथाओं को सभी डीएमएफ में मानकीकृत किया जाए। इससे डीएमएफ की भूमिका और अधिक प्रभावशाली बनेगी।

डीएमएफ सहकारी संघवाद का एक आदर्श उदाहरण है और इसमें केंद्र और राज्य की योजनाओं को आपस में जोड़ने का अनूठा लाभ है। यह शासन के तीन स्तरों पर लक्ष्यों और संसाधनों में तालमेल सुनिश्चित करता है कि राष्ट्रीय प्राथमिकताएं स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करें, सकारात्मक प्रभाव डालें और पहुंच को सुगम बनाएं। डीएमएफ वास्तव में समावेशी विकास के लिए शक्तिशाली उपकरण बन रहा है। डीएमएफ के जरिये भारत संसाधन प्रबंधन के बारे में दुनिया के सामने एक उदाहरण पेश कर रहा है कि कैसे अन्य देशों को भी आर्थिक विकास को सामाजिक कल्याण और अधिकारों के साथ संतुलित करना चाहिए।

-लेखक केंद्रीय कोयला एवं खनन मंत्री हैं।

चिंतन

केजरीवाल के इस्तीफे के पीछे खास रणनीति तो नहीं

देर से ही सही आखिरकार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पद छोड़ने का ऐलान कर ही दिया। दो दिन पहले जेल से जमानत पर बाहर आए बाहर आए अरविंद केजरीवाल ने कहा कि वे दो दिन में मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे देंगे और दो-तीन दिन में विधायकों की बैठक में नया मुख्यमंत्री चुना जाएगा। वैसे भी दिल्ली शराब नीति केस में अरविंद केजरीवाल 177 दिन बाद जेल से जमानत पर बाहर आए। सुप्रीम कोर्ट ने शर्त रखी कि वो मुख्यमंत्री ऑफिस नहीं जाएंगे और न ही किसी फाइल पर साइन करेंगे। यानी जेल से बाहर आने और मुख्यमंत्री रहते हुए भी उनके पास पावर नहीं है। सरकार कैबिनेट भरोसे चल रही है। लोकसभा चुनाव के दौरान भी केजरीवाल जेल से बाहर आए थे, तब भी यही शर्तें थी। ऐसी में दिल्ली की व्यवस्था पटरी से उतर रही थी। अगर सरकार प्रभावी न हो तो प्रशासन लापरवाह हो जाता है। राजधानी दिल्ली में बीते 177 दिनों में इसका नजारा साफ दिखाई दिया। सरकारी स्तर पर अनेक कार्य लटके हुए थे। इसका खामियाजा जनता को भुगतना पड़ रहा था। असल में जिस दिन से दिल्ली में आप की सरकार बनी है, उसका केंद्र सरकार से टकराव जगजाहिर है। दोनों एक दूसरें को घेरने के प्रयास में रहते हैं। जिससे न केवल दिल्ली सियासी मैदान बन गई है बल्कि जनता से जुड़े अनेक मसले अदालतों की फाइलों में घूम रहे हैं। अब केजरीवाल ने इस्तीफे का ऐलान करके नई चर्चाओं को जन्म दे दिया है। माना जा रहा है कि विधायक दल की बैठक में आतिशी, कैलाश गहलोत, गोपाल राय, सौरभ भारद्वाज और सुनीता केजरीवाल में से किसी एक को मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है। क्योंकि केजरीवाल ने अपने इस्तीफे के साथ-साथ यह भी ऐलान कर दिया है कि उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया भी किसी पद पर नहीं रहेंगे। इस ऐलान के पीछे अरविंद केजरीवाल की खास रणनीति भी देखी जा रही है। पांच अक्टूबर को हरियाणा में वोटिंग है। वहां आप ने सभी 90 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे हैं। केजरीवाल का पूरा फोकस अब हरियाणा में चुनाव प्रचार पर होगा। जम्मू-कश्मीर में भी आप विधानसभा चुनाव चुनाव लड़ रही है। केजरीवाल वहां भी प्रचार की कमान संभालेंगे। असल में केजरीवाल मुख्यमंत्री पद के दबाव से मुक्त होकर खुद को पूरे देश में स्थापित करने का प्रयास करेंगे। वैसे भी दिल्ली विधानसभा का कार्यकाल फरवरी 2025 में खत्म हो रहा है। यानी सरकार के पास चुनाव में जाने के सिर्फ 5 महीने ही बचे हैं। इस दौरान सरकारें लोकलुभावन चुनावी फैसले लेती हैं। केजरीवाल कोर्ट की शर्तों में बंधे हैं। जेल से छूटने के बाद केजरीवाल के साथ सिंपथी है। दो-तीन महीने पहले दिल्ली में चुनाव की मांग कर केजरीवाल इस सिंपथी को भुनाना चाहेंगे। दिल्ली शराब नीति केस में नाम आने और गिरफ्तारी के बाद से ही भाजपा के नेता अरविंद केजरीवाल से मुख्यमंत्री पद छोड़ने की मांग कर रहे थे। केजरीवाल अब भाजपा नेताओं के हर हमले का जवाब देंगे कि मैंने तो इस्तीफा दे दिया। वे अपने इस्तीफे का प्रचार केवल दिल्ली ही नहीं पूरे देश में करने की योजना पर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जनता को तय करना है कि केजरीवाल ईमानदार है या बेईमान। चुनाव के बाद जनता ने चुना तो पद पर बैठूंगा। इशारा साफ है कि उनकी नजर पांच माह बाद होने वाले दिल्ली विधानसभा के चुनाव पर है। वो किसी भी तरह से दिल्ली के लोगों को प्रभावित करके एक बार फिर मुख्यमंत्री बनने की तैयारी में है। अब देखना होगा कि दिल्ली की जनता उनके इस्तीफे को किस रूप में लेती है।

योजना
प्रो. महेश चंद गुप्ता

बुजुर्गों के मुफ्त इलाज का फैसला सही

इस हकीकत से इनकार नहीं किया जा सकता कि बहुत से बुजुर्गों के पास इलाज के लिए आर्थिक संसाधन नहीं होते, जिससे वे सही समय पर और गुणवत्तापूर्ण इलाज से वंचित रह जाते हैं। ऐसे में, सरकार द्वारा उनके मुफ्त इलाज की दिशा में बढ़ाए इस कदम को परिहार्य पहल के रूप में देखा जाना चाहिए। इस फैसले से देश के वंचित, शोषित, दलित वर्ग और ग्रामीण परिवेश के बुजुर्गों को सर्वाधिक राहत मिलेगी। अधिकांश बुजुर्गों की आय सीमित अथवा नगण्य होती है और उनके लिए बीमार होने पर इलाज करा पाना एक बड़ी चुनौती व चिंता का विषय होता है। आर्थिक रूप से परेशान बुजुर्गों को जब शारीरिक व्याधियां घेरती हैं तो मानसिक समस्याएं भी दस्तक देने लगती हैं।

केंद्र सरकार ने 70 साल से अधिक उम्र के बुजुर्गों का निःशुल्क इलाज कराने का जो फैसला लिया है, वह दूरगामी फैसला है, जिसकी सराहना की जानी चाहिए। यह एक ऐसा फैसला है, जिसकी वास्तव में जरूरत थी और अगर इसका यथार्थ के धरातल पर सुचारू क्रियान्वयन हो जाता है तो यह निर्णय बुजुर्गों के स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुरक्षा को नई दिशा देने वाला साबित होगा। यह निर्णय हर लिहाज से महत्वपूर्ण है और इससे बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील सोच के बारे में पता चलता है। भाजपा ने लोकसभा चुनाव के घोषणा पत्र में इस बारे में वादा किया था, जिसे पूरा कर दिया गया है। सरकार ने इस फैसले के तहत 70 साल से अधिक आयु के बुजुर्गों को सरकारी और निजी अस्पतालों में मुफ्त इलाज की सुविधा देना तय किया है। इसके तहत हर साल पांच लाख रुपये तक का इलाज मुफ्त में कराया जा सकेगा। माना जा रहा है कि इस योजना के दायरे में देश के करीब साढ़े चार करोड़ परिवार शामिल होंगे और छह करोड़ बुजुर्ग सीधे तौर पर लाभान्वित होंगे। इस फैसले की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि 70 साल और उससे ज्यादा उम्र के सभी बुजुर्ग, चाहे उनकी आर्थिक स्थिति कैसी भी हो, उन्हें इस योजना के दायरे में लाया गया है। जैसा कि केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा है कि शुरुआत में इस योजना के लिए 3,437 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

यह भी सराहनीय है कि जो परिवार पहले से आयुष्मान योजना के दायरे में हैं, उन परिवारों के 70 साल पार के बुजुर्गों के लिए हर साल 5 लाख तक का एडिशनल कवर मिलेगा। इसका इस्तेमाल परिवार के अन्य लोग नहीं कर सकेंगे। कई लोगों को यह फैसला मुफ्त की रेवड़ी लग सकता है लेकिन भारत में बुजुर्गों की तेजी से बढ़ रही जनसंख्या के दृष्टिगत यह फैसला सचमुच कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के अनुकूल है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष और उससे अधिक आयु) की जनसंख्या 10.38 करोड़ है। राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग द्वारा गठित जनसंख्या अनुमानों पर तकनीकी समूह की रिपोर्ट के अनुसार 2026 में देश में 60 वर्ष से ऊपर वाले वरिष्ठ नागरिकों की अनुमानित जनसंख्या 17.32 करोड़ होने की उम्मीद है। जिस प्रकार बुजुर्गों की जनसंख्या बढ़ रही है, उसके साथ-साथ उनकी स्वास्थ्य संबंधी जरूरतें भी बढ़ रही हैं। हमारे समाज में बुजुर्गों की उपेक्षा के मामले सामने आते रहते हैं। देश में वृद्धाश्रमों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है, उससे भी घरों में बुजुर्गों की दशा का संकेत मिलता है। भारतीय आबादी के बुजुर्ग होने से आने वाली समस्याओं और उनके निदान व समाधान को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष व भारत इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पापुलेशन साइंसेज ने पिछले साल जो इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 जारी की है, उसके मुताबिक आज का युवा भारत आने वाले दशकों में तेजी से वृद्ध होते समाज में बदल जाएगा।

2050 तक हर पांच में से एक शख्स बुजुर्ग होगा। सदी के अंत में कुल आबादी में 36 फीसदी वृद्ध होंगे, जो अभी महज 10.1 फीसदी हैं। देश में बुजुर्गों की आबादी बढ़ने का सिलसिला 2010 से शुरू हुआ है। मौजूदा

चलन के मुताबिक तकरीबन 15 साल में 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के नागरिकों की संख्या दोगुनी हो रही है। इस हकीकत से इनकार नहीं किया जा सकता कि बहुत से बुजुर्गों के पास इलाज के लिए आर्थिक संसाधन नहीं होते, जिससे वे सही समय पर और गुणवत्तापूर्ण इलाज से वंचित रह जाते हैं। ऐसे में, सरकार द्वारा उनके मुफ्त इलाज की दिशा में बढ़ाए इस कदम को एक परिहार्य पहल के रूप में देखा जाना चाहिए।

सरकार के इस फैसले से देश के वंचित, शोषित, दलित वर्ग और ग्रामीण परिवेश के बुजुर्गों को सर्वाधिक राहत मिलेगी। हमारे देश में इन वर्गों के अधिकांश बुजुर्गों की आय सीमित अथवा नगण्य होती है और उनके लिए बीमार होने पर इलाज करा पाना एक बड़ी चुनौती व चिंता का विषय होता है। आर्थिक रूप से परेशान बुजुर्गों को जब शारीरिक व्याधियां घेरती हैं तो मानसिक समस्याएं भी दस्तक देने लगती हैं। कई बुजुर्ग तो दूसरों को बीमार देखकर असहज और चिंतित महसूस करते हैं कि अगर वह बीमार पड़ गए तो इलाज कैसे हो पाएगा? यकीनन, मुफ्त इलाज की इस व्यवस्था से उन्हें न केवल इस चिंता से मुक्त करने में मदद मिलेगी, बल्कि इससे उनके खुश रहने का मार्ग भी प्रशस्त होगा। यह बात प्रमाणित है कि जब बुजुर्गों को स्वास्थ्य सेवाएं सहजता से सुलभ होती हैं तो वे समय पर अपना इलाज करवा सकते हैं। इससे उनकी स्वास्थ्य स्थिति में सुधार होता है और उम्र संबंधी बीमारियों की गंभीरता को कम करने में भी मदद मिलती है। यह निर्णय सामाजिक न्याय और सामाजिक सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे सरकार यह सुनिश्चित करना चाह रही है कि आर्थिक रूप से कमजोर बुजुर्गों को भी समान स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिले, जो उनके सामाजिक अधिकारों का हिस्सा है। इसे फैसले के कई लाभ और भी होंगे। जब निःशुल्क उपचार होगा तो परिवार में बुजुर्गों को बोझ नहीं माना जाएगा। यह योजना निश्चित रूप से सराहनीय है लेकिन इसका सही एवं सुचारू क्रियान्वयन हो, इसे सुनिश्चित करना भी सरकार की बड़ी जिम्मेदारी होगी। इस योजना के कारण सरकारी अस्पतालों पर काम का दबाव बढ़ना स्वाभाविक है। हमारे दूरदराज के अस्पतालों में संसाधनों एवं डॉक्टरों व नर्सिंग स्टाफ की कमी इसमें बाधक हो सकती है। इसके लिए न केवल डॉक्टरों व नर्सिंग स्टाफ के रिक्त पद भरने होंगे बल्कि अन्य जरूरी संसाधन भी जुटाने होंगे।

योजना के तहत इलाज कराने आए बुजुर्गों को अस्पतालों में प्राथमिकता के आधार पर देखा जाए, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए क्योंकि बुजुर्ग व्यक्तियों के लिए लंबी कतारों में घंटों तक बारी आने का इंतजार बहुत कष्टदायक होता है। इससे वह इलाज के प्रति विमुख भी होते हैं। इसी के साथ-साथ एक प्रभावी प्रशासनिक ढांचे को भी विकसित करना जरूरी होगा, जो इस महत्वाकांक्षी योजना के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित बना सके। सरकारी अस्पतालों के ढांचे में सुधार, जरूरी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की शुरुआत और संसाधनों के प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

यह फैसला एक सामाजिक और स्वास्थ्य सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। सरकार अगर इसकी आयु सीमा को घटा कर साठ वर्ष कर दे तो यह और ज्यादा प्रभावकारी होगा क्योंकि रिटायरमेंट की उम्र 58 या 60 साल ही है। सरकार को इस योजना में भी इसी उम्र को आधार मानना चाहिए। यह फैसला न केवल बुजुर्गों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाएगा, बल्कि समाज को बुजुर्गों के प्रति और न्यायपूर्ण बनाने में भी योगदान देगा। अगर यह निर्णय सही तरीके से यथार्थ के धरातल पर लागू हो पाता तो यह हमारे समाज के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि साबित हो सकता है।

(लेखक शिक्षाविद व चिंतक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।
लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

जिहाद
कल्लोल चक्रवर्ती

निशाने पर भारतीय रेल

पिछले कुछ समय से खासकर उत्तर प्रदेश और राजस्थान में रेलगाड़ियों को पलटाने की साजिश रचने की घटनाएं भीषण और चिंताजनक हैं। विगत आठ सितंबर को कानपुर-कासगंज रेलवे लाइन पर मुंडेरी रेलवे क्रॉसिंग के पास भिवानी की ओर जा रही कालिंदी एक्सप्रेस एल.पी.जी. से भरे एक सिलेंडर से टकराई, तो ड्राइवर ने इमरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन रोकी। गनीमत यह रही कि सिलेंडर फटा नहीं। ट्रैक पर पेट्रोल की आधी भरी बोतल, माचिस और सफेद पाउडर से भरा बैग मिला। माना जा रहा है कि यह ट्रेन को डिरेल करने की कोशिश थी। आतंकी साजिश के शक में एन.आई.ए. इसकी जांच कर रही है। उसी दिन राजस्थान में अजमेर जिले के सराधना और बांगड़ग्राम रेलवे स्टेशन के बीच डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर की दो रेल पटरियों पर सीमेंट के 70-70 किलोग्राम के वजनी ब्लॉक डालकर मालगाड़ियों को पटरी से उतारने की कोशिश की गई।

दो मालगाड़ियां सीमेंट के ब्लॉक से टकराईं भी, लेकिन कोई नुकसान नहीं हुआ। डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर को निशाना बनाने की कोशिश का अर्थ है कोयला, लोहा, सीमेंट, अनाज आदि ले रही मालगाड़ियों को ध्वस्त कर भारत को आर्थिक झटका देना। रेल मंत्रालय ने इस मामले का संज्ञान लिया है और पुलिस ने इसकी जांच के लिए एसआईटी बनाई है। ये इस तरह की इक्का-दुक्का घटनाएं नहीं हैं। पिछले महीने भी रेल पटरियों पर साजिश रचने के कई मामले सामने आए थे। इन दिनों रेल पटरियों को निशाना बनाने की टाइमिंग पर गौर करना भी जरूरी है। लोकसभा चुनाव के बाद अब आगे-पीछे चार राज्यों में चुनाव होने जा रहे हैं, जिनमें से केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में दस साल बाद हो रहे चुनाव भारतीय लोकतंत्र के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। यह मानने का कारण है कि जम्मू-कश्मीर में पिछले कई दशकों से आतंकी घटनाओं को प्रायोजित और वित्तपोषित करने वाला पाकिस्तान वहां होने जा रहे चुनाव से खुश नहीं है, और किसी न किसी तरह भारत के विकास पथ को बाधित या अवरुद्ध करने की साजिश में लगा है। चुनावी माहौल के बीच सुरक्षा के मामले में चाक-चौबंद जम्मू-कश्मीर में आतंकी हमला करना आसान नहीं है। इसी कारण देश के अलग-अलग इलाकों में रेल ट्रैक पर साजिश रचकर भारत को आर्थिक झटका देने की साजिश रची जा रही है। दूसरी बात यह कि अपने देश में यह त्योहारों का समय है। दुर्गा पूजा, दिवाली और छठ के दौरान ट्रेनों में भारी भीड़ रहती है। लिहाजा इस समय रेलगाड़ियों को पटरी से उतारने की बड़ी साजिश रची जा रही है, ताकि ट्रेनों को बेपटरी कर जान-माल के बड़े नुकसान को अंजाम दिया जा सके।

क्या कुख्यात पाक खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. की शह पर अपने यहां रेलगाड़ियों को निशाना बनाया जा रहा है, जिसे रेल जिहाद बताया जा रहा है? हाल ही में पाक आतंकवादी फरहतुल्ला गोरी ने टेलीग्राम पर एक वीडियो जारी कर अपने लोगों को भारत में रेल ढांचे को अस्थिर करने के लिए उकसाया है। गोरी पर इससे पहले भी भारत में हुए आतंकी हमलों पर हाथ होने का शक है। एनआईए और रेल सुरक्षा से जुड़े अधिकारियों का मानना है कि इन हमलों के पीछे किसी संगठित आतंकी गिरोह का नहीं, बल्कि ऑनलाइन आतंकी ट्रेनिंग लेने वाले सिरफिरों का हाथ हो सकता है। कालिंदी एक्सप्रेस को पलटाने की साजिश में आईएसआईएस के खुरासान मॉड्यूल पर भी शक है। आईएसआई की लिप्तता से तो इनकार किया ही नहीं जा सकता, जिसे भारत की लोकतांत्रिक प्रगति हजम नहीं हो रही। घटनास्थलों से गन पाउडर, पेट्रोल और विस्फोटक पदार्थों की मौजूदगी बड़े नुकसान की साजिश के बारे में बताती है। वे यह भी कह रहे हैं कि षड्यंत्रकारी सड़क, खासकर जी.टी. रोड से नजदीक पड़ने वाली रेल पटरियों को निशाना बना रहे हैं, क्योंकि सड़कों से रेल पटरियों तक विस्फोटक और दूसरे सामान ले जाना आसान है। ऐसी लगातार घटनाओं का होना न केवल षड्यंत्रकारियों की खूनी साजिश के बारे में बताता है, बल्कि पटरियों की सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद न होने पर बड़ा रेल हादसा हो सकता है, और निशाने पर और भी जगहें हो सकती हैं। अब भी यही कहा जा रहा है कि रेलवे ट्रैक की निगरानी बढ़ाकर ही देश-विरोधी साजिशों को विफल किया जा सकता है। लेकिन रेलवे का कहना है कि देश भर में फैले लगभग 67,000 किलोमीटर लंबे रेल ट्रैक पर हर जगह कर्मचारी तैनात करना संभव नहीं। जब अपेक्षाकृत सुरक्षित मानी जाने मेट्रो रेल के ट्रैक से बिजली के तार चोरी चले जाते हैं, तो भारतीय रेल के ट्रैक की स्थिति की सहज कल्पना की सकती है, जो रास्ता पार करने वाले के लिए भी सुलभ है, और सुबह शौच करने वालों के लिए भी। ऐसे में, रेल ट्रैक की सुरक्षा बनाए रखने के लिए सरकार और सुरक्षा एजेंसियों के साथ-साथ नागरिकों को भी बेहद सतर्क रहने की जरूरत है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

सुख की चाह के लिए तप की साधना जरूरी

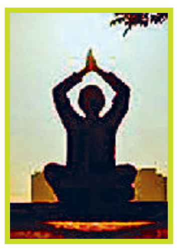

संकलित
दर्शन

तप संकल्प की प्राप्ति का एकमात्र उपाय है। जिसे सत्य संकल्प द्वारा सुख की चाह है, उसे तप की साधना अवश्य करनी चाहिए। संकल्प के दृढ़ एवं सत्य न होने का सबसे बड़ा कारण तप की कमी होता है। जो व्यक्ति अपने स्थूल और सूक्ष्म शरीर के द्वारा तप नहीं करता, वह अपने संकल्पों को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। तप से हमें अपने मन और तन, दोनों को पक्का बनाना होता है। जैसे मिट्टी का कच्चा घड़ा पानी डालने पर गल जाता है। वह अग्नि में बिना तपे कभी जल नहीं ला सकता। इसी प्रकार जब तक मनुष्य अपने जीवन को तप द्वारा पक्का नहीं बनाता, तब तक वह कभी भी अपने संकल्पों की सिद्धि को धारण नहीं कर सकता। तप से जीवन की समस्त अशुद्धियां दूर होती हैं। अशुद्धियों के दूर होने से शरीर और इंद्रियों को विशेष सिद्धि मिलती। तभी कहा जाता है कि तप से सभी कुछ साध्य है। वेदों में भी तप की महिमा और आवश्यकता का अनेक स्थानों पर वर्णन किया गया है। कल्याण की कामना करने वाले ऋषिगण भी प्रथम तप और दीक्षा का ही अनुष्ठान करते हैं। श्रीमद्भागवत कथा के द्वितीय स्कंध में श्री भगवान ब्रह्मजी से कहते हैं कि 'मैं इस दृश्यमान अखिल प्रपंच को तप द्वारा रचता हूं और पुनः तप द्वारा ही ग्रसित कर लेता हूं। मैं तप द्वारा ही इस विश्व का भरण-पोषण करता हूं और मेरा अत्यंत तेजस्वी पराक्रम तप ही है। तप द्वारा वह तेज और वह शक्ति प्राप्त की जा सकती है, जो किसी भी संकल्प की प्रतिपूर्ति का आधार बनती है।'

ऐसे काम न करें, जिससे गलत लोगों की ताकत बढ़े

संकलित
प्रेरणा

बाल कृष्ण माखन चोरी की लीला कर रहे थे। गोकुल के लोग इस वजह से काफी परेशान थे। एक दिन गांव के नंद बाबा और यशोदा के पास पहुंचे और कान्हा की शिकायत करने लगे। नंद बाबा ने कृष्ण से पूछा कि तुम माखन चोरी क्यों करते हो, जबकि हमारे घर में तो बहुत माखन है। कृष्ण ने कहा कि आप लोग मेहनत से दूध, दही, घी, माखन तैयार करते हैं और फिर ये चीजें कर के रूप में दुष्ट कंस को दे देते हैं और इस वजह से गांव के बच्चों को माखन नहीं मिलता है। आपके इस काम से कंस की ताकत लगातार बढ़ रही है। अगर आप कंस को कर देना नहीं रोकेंगे तो मैं तोड़-फोड़ करता रहूंगा। ताकि ये माखन कंस के पास न पहुंचे और गांव के बच्चों को मिल सके। कंस गांव के लोगों से कर के रूप में दुध, मक्खन वसूला करता था। कृष्ण ने देखा की लोग अपने बच्चों को न देकर कर के रूप में मक्खन कंस को देते हैं। कृष्ण ने इस बात का विरोध किया। ताकि लोग अपनी ताकत समझ सके और मिलकर कंस का विरोध कर सके। इस कथा में श्रीकृष्ण ने संदेश दिया है कि हमें ऐसे काम नहीं करना चाहिए, जिनकी वजह से गलत लोगों की ताकत बढ़ती है। और व हम पर हावी हो जाए।

अंतर्मन

आज की पाती

हिंदी राष्ट्रभाषा क्यों नहीं

14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। भारत में कई राज्य और कुछ केंद्र शासित प्रदेश हैं। इन सभी में लोग अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं। यह अच्छी बात है कि मातृभाषा का प्रयोग करना चाहिए, लेकिन देश की राजभाषा हिंदी को भी उतना ही सम्मान देना चाहिए जितना मातृभाषा को। आज हिंदी कुछ अंग्रेजी कारण तो कुछ स्थानीय भाषाओं के बीच पिस रही है। इस कारण आजादी के इतने सालों बाद भी हिंदी को वो उच्च स्थान नहीं मिल सका है, जो मिलना चाहिए। कहा जाता है कि चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर वाणी। इसलिए यहां कोई एक बोली नहीं है, बल्कि कई बोलियां हैं। वो प्रदेश के एक-दूसरे व्यक्ति को समझ कम आती हैं, इसलिए यहां हिंदी का प्रयोग भी महत्वपूर्ण है। यह दुखद है कि हिंदी ओछी राजनीति के कारण राष्ट्रभाषा नहीं बन पा रही है। – *संजय सोनी, बिलासपुर*

करंट अफेयर

पाक को भारत की शिक्षा प्रणाली अपनाने की सलाह

एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने पाकिस्तान को खराब शिक्षा प्रणाली को सुधारने और अपने नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए भारत की योजना 'उल्लास' को अपनाने की सलाह दी है। समाज में सभी के लिए आजीवन शिक्षा की समझ (उल्लास) को भारत सरकार द्वारा पिछले वर्ष जुलाई में निरक्षरों और औपचारिक स्कूली शिक्षा से वंचित वयस्कों की सहायता के लिए शुरू किया गया था। समाचार पत्र 'एक्सप्रेस ट्रिब्यून' की खबर के अनुसार, मनीला आधारित एडीबी ने यह टिप्पणी पाकिस्तान द्वारा अपनी शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने तथा स्कूल न जाने वाले सभी बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए वित्तीय सहायता का अनुरोध किए जाने के जवाब में की है। एडीबी ने सिफारिश की है कि सरकार एक रणनीतिक और बहु-हितधारक दृष्टिकोण अपनाए तथा भारत सरकार की नयी केन्द्र प्रायोजित 'उल्लास' जैसी योजनाओं को लागू करे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'सभी के लिए शिक्षा' के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए पांच वर्ष की अवधि के लिए नयी केन्द्र प्रायोजित योजना 'उल्लास' को मंजूरी दी थी। भारतीय 'उल्लास' योजना का लक्ष्य न केवल बुनियादी साक्षरता उपलब्ध कराना है, बल्कि इसमें 21वीं सदी के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण जीवन कौशल भी शामिल हैं।

ऑफ बीट

जीवों की मृत कोशिकाओं से उत्पन्न 'बायोबॉट्स'

अंग दान जैसी प्रथाएं इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि कैसे जीव की मृत्यु के बाद भी अंग, ऊतक और कोशिकाएं काम करना जारी रख सकती हैं। इस लचीलेपन से यह सवाल उठता है कि कौन सी क्रियाविधि कुछ कोशिकाओं को किसी जीव की मृत्यु के बाद भी काम करते रहने देती है? हम अनुसंधानकर्ता हैं जो यह जांच करते हैं कि जीवों के मरने के बाद उनके अंदर क्या होता है। हमारी हाल ही में प्रकाशित समीक्षा में, हमने बताया है कि कैसे कुछ कोशिकाएं मृत्यु के बाद नए कार्यों के साथ बहुकोशिकीय जीवों में बदलने की क्षमता तब रखती हैं जब पोषक तत्व, ऑक्सीजन, बायोइलेक्ट्रिसिटी या जैव रासायनिक संकेत प्रदान किए जाते हैं। जीवन, मृत्यु और कुछ नए का उद्भव तीसरी अवस्था वैज्ञानिकों को कोशिका व्यवहार को समझने में चुनौती देती है। हालांकि, 'कैटरपिलर' का तितली में रूपांतरित होना या 'टैडपोल' का मेंढ़क में विकसित होना, परिचित विकासात्मक परिवर्तन हो सकते हैं, लेकिन ऐसे बहुत कम उदाहरण हैं जहां जीवों में ऐसे परिवर्तन होते हैं जो पूर्वनिर्धारित नहीं होते। ट्यूमर, ऑर्गेनोइड्स (एक त्रि-आयामी ऊतक संवर्धन होता है, जो स्टेम सेल से विकसित होता है) और कोशिका रेखाएं जो पेट्री डिश में अनिश्चितकाल तक विभाजित हो सकती हैं।

ट्रेंड

आसान होगा सफर

टाटा नगर में आज जिन 6 'वंदे भारत' को हरी झंडी दिखाई गई है, उनसे पूर्वी भारत में लोगों का सफर आसान होगा। इससे जहां औद्योगिक विकास को और गति मिलेगी, वहीं युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

संघर्ष व समर्पण को सलाम

महिला कांग्रेस के स्थापना दिवस पर सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं को बधाई और शुभकामनाएं। आपका अथक परिश्रम भारत की महिलाओं को सशक्त बनाने में एक अहम भूमिका निभा रहा है। उनके सम्मान, समानता और सुरक्षा के लिए आपके संघर्ष और समर्पण को सलाम है।
-राहुल गांधी, कांग्रेस सांसद

अब 2025 में मिलेंगे

2024 ने मुझे एक बेहतर एथलीट और इंसान बनाया है। यह एक ऐसा सीजन था जिसमें मैंने बहुत कुछ सीखा। मैं आपके प्रोत्साहन के लिए आप सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं। 2025 में मिलेंगे।
- नीरज चोपड़ा, भारतीय एथलीट

बैकवर्ड इंटीग्रेशन

बचपन में जब बाबूजी के केबल बिजनेस को देखता, तो खुद से सवाल करता: "क्या ये केबल हम खुद बना सकते हैं?" बिजनेस लैंग्वेज में इसको बैकवर्ड इंटीग्रेशन कहा जाता है। यहीं से ज़मीन के नीचे दबे ख़ज़ाने से मेरी लव स्टोरी शुरू हुई।
-अनिल अग्रवाल, भारतीय व्यवसाई

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

https://t.me/AllNewsPaperPaid https://t.me/AllNewsPaperPaid

Want to get these Newspapers Daily at earliest

1. AllNewsPaperPaid
2. आकाशवाणी (AUDIO)
3. Contact I'd:- https://t.me/Sikendra_925bot

Type in Search box of Telegram
@AllNewsPaperPaid And you will find a
Channel
Name All News Paper Paid Paper join it and
receive
daily editions of these epapers at the earliest

Or you can tap on this link:

https://t.me/AllNewsPaperPaid

https://t.me/AllNewsPaperPaid https://t.me/AllNewsPaperPaid

https://t.me/AllNewsPaperPaid